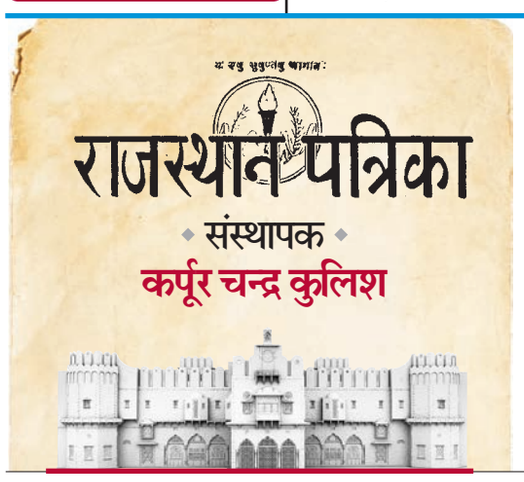

होली पर्व के संदेश को आत्मसात करे दुनिया

भारतीय संस्कृति का गौरवमयी पर्व होली केवल रंगों का उत्सव ही नहीं है। होलिका दहन बुराई, नकारात्मकता और अहंकार को जलाकर शुद्धता व धर्म की स्थापना का प्रतीक है। दो दिवसीय इस त्योहार में रंगों की होली के दौर में तो जैसे भेद मिट जाते हैं- जाति, वर्ग, लिंग या पद का कोई अंतर नहीं रहता। हर कोई एक ही रंग में रंग जाता है। बरसों से मनाया जाने वाला यह पर्व एक गहरा संदेश देने वाला भी है। ऐसा संदेश जिसमें यह बताया जाता है कि हर तरह के भेदभाव की दीवारों को तोड़ने से ही सब एक ही रंग में रंग सकते हैं और यह रंग है मानवता का रंग। ऐसे दौर में जब दुनिया के देशों में आपसी विद्वेष, एक-दूसरे को नेस्तनाबूद कर देने का दंभ और नस्लभेदी टकराव देखने को मिल रहे हैं तो होली का यह संदेश वैश्विक मंचों पर कहीं अधिक प्रासंगिक हो गया है।

होली के दिन वह नजारा सचमुच देखने योग्य होता है जब लोग मतभेद भूलकर एक-दूसरे पर उल्लास से रंग डालते हैं। दुनिया में कुछ अन्य देशों में भी आपसी सद्भाव को बढ़ाने वाले पर्व-त्योहारों का आयोजन होता होगा लेकिन भारत की होली जैसा माहौल शायद ही कहीं होता हो। ऐसा माहौल जिसमें अमीर-गरीब, स्त्री-पुरुष, शासक और शासित सभी एक ही रंग में रंग जाते हैं। यह पर्व हमें सिखाता है कि विविधताओं को स्वीकार कर ही हम एक सशक्त समाज बना सकते हैं। एक बड़ा संदेश यह भी कि रंग-गुलाल जीवन के उल्लास को बढ़ाने वाले तो हैं ही, यह पर्व हमें आपसी संवाद और मेल-मिलाप की राह भी दिखाता है। होलिका दहन हमें यह सिखाता है कि अन्याय और हिंसा चाहे कितनी भी प्रबल क्यों न हो, अंततः सत्य और धर्म की विजय होती है। युद्धग्रस्त देशों के लिए होली का यह पर्व इस उम्मीद का प्रतीक बन सकता है क्योंकि यह सच है कि युद्ध किसी समस्या का समाधान नहीं हो सकता। अंततः हिंसा और कट्टरता की जगह शांति और सहयोग का मार्ग ही किसी भी ऐसे संकट का समाधान निकालने वाला होगा।

होली का संदेश अपनी जगह है, लेकिन पिछले सालों में इस पवित्र पर्व में कुछ ऐसी सामाजिक बुराइयां भी हमने पनपते देखी है जो होली उत्सव की गरिमा को कमजोर करने वाली हैं। नशाखोरी तो भयावह रूप से सामने आने लगी है। ऐसे में कई बार रंगों के उल्लास के हिंसक माहौल में बदलते देर नहीं लगती। वहीं रंग लगाते वक्त महिलाओं से छेड़छाड़ व उत्पीड़न की घटनाएं भी चिंता पैदा करने वाली होती है। बात चाहे देश की हो या दुनिया की। होली का वास्तविक संदेश है- समानता, भाईचारा और आनंद। इस संदेश के अनुरूप भी बर्ताव दुनिया में सबको करना होगा ताकि समरसता बनी रहे। तभी हम नफरत, हिंसा और विभाजन की प्रवृत्तियों को परास्त कर पाएंगे। रंगों की यह ऊर्जा मनुष्यता के विश्वास को मजबूत करे, संवाद के नए सेतु बनाए और विविधताओं के बीच एकता का स्थायी आधार तैयार करे।

ईरान पर हमला : दशकों से अमरीका मध्य पूर्व देशों में 'प्यार से' या 'मार से' अपनी कठपुतली सरकार बनाने में जुटा है

सनकी सत्ता का युद्धोन्माद: वैश्विक चिंता का कारण

राज कुमार सिंह
वरिष्ठ पत्रकार एवं राजनीतिक विश्लेषक
@patrika.com

अमरीका द्वारा सद्दाम हुसैन और कर्नल कद्दाफी की हत्या के बाद इराक और लीबिया बर्बादी की हालत में हैं तो कई इस्लामी देश खुद ही अमरीकी सैन्य ठिकाना बनने को तैयार हो गए। अपेक्षाकृत ताकतवर ईरान इस अमरीकी कवायद को अपनी घेराबंदी के रूप में देखता है।

रमजान के पवित्र महीने में ही ईरान-अमरीका-इजरायल युद्ध से सुलगता मध्य पूर्व इस बात का भी गवाह है कि ज्ञान-विज्ञान, सभ्यता और संस्कृति की बताई जाती रही इक्कीसवीं शताब्दी में भी सनकी सत्ता का युद्धोन्माद थम नहीं रहा। अपनी सुरक्षा के नाम पर अथवा सत्ता परिवर्तन के घोषित इरादे से किसी देश पर हमला वैश्विक व्यवस्था पर ही सवालिया निशान है। इजरायल और अमरीका से ईरान की तनातनी नई नहीं। 1979 में इस्लामी क्रांति के बाद से ही ईरान, अमरीका के निशाने पर रहा है। इजरायल भी ईरान को अरसे से अपने लिए खतरा बताता रहा है। पिछले साल जून में दोनों के बीच युद्ध भी हुआ था। उसके बावजूद सैन्य टकराव टालने के लिए अमरीका और ईरान के बीच तीसरे देश में शांति वार्ताएं जारी थीं। गत गुरुवार को दोनों देशों में जिनेवा में बातचीत हुई थी, लेकिन वार्ता के अगले दौर से पहले ही भारतीय समय के अनुसार शनिवार सुबह अमरीका और इजरायल ने मिलकर ईरान पर जोरदार हमला बोल दिया, जिसमें उसके सर्वोच्च नेता अयातुल्लाह अली खामेनेई समेत कई शीर्ष नेता मारे गए। 40 दिवसीय शोक की घोषणा के बीच भी ईरान द्वारा मध्य पूर्व में अमरीकी सैन्य ठिकाना बने देशों पर जारी हमले साफ संदेश हैं कि युद्ध लंबा चलेगा, जिसका प्रभावित देशों के नागरिकों और अर्थव्यवस्था पर दूरगामी नकारात्मक असर पड़ेगा।

अमरीका की घोषित चिंताएं ईरान के परमाणु कार्यक्रम को लेकर रही हैं। बताया जा रहा है कि ईरान अपने परमाणु कार्यक्रम को सीमित रखने पर राजी भी हो गया था, बशर्ते उस पर 1979 से लागू अंतरराष्ट्रीय प्रतिबंध हटा लिए जाएं। इन प्रतिबंधों के चलते ईरान की अर्थव्यवस्था बदहाल है, लेकिन अमरीकी दादागिरी के सामने तन कर खड़ा होने की उसकी हिम्मत नहीं टूटी। ईरान और अमरीका के बीच तनातनी का दूसरा बड़ा मुद्दा मध्य पूर्व में सक्रिय हमास, हिजबुल्लाह और हूती जैसे आतंकी संगठन हैं। इजरायल समेत तमाम अमरीकी मित्र देशों के लिए खतरा बने हुए इन आतंकी संगठनों को ईरान से लगातार हरसंभव मदद मिल रही है।

शांति वार्ताओं के बावजूद तकरार के सैन्य टकराव तक पहुंच जाने की वजह भी यही बताई जा रही है कि ईरान इन संगठनों को मदद बंद करने को तैयार नहीं हुआ। बेशक आतंकवाद को मदद चिंताजनक है, पर यही काम पाकिस्तान दशकों से भारत के विरुद्ध कर रहा है, जिसके प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ और सेना प्रमुख आसिम मुनीर को अमरीकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप महान नेता बताते नहीं थकते। किसी भी न्यायपूर्ण वैश्विक व्यवस्था में ऐसे दोहरे मापदंड स्वीकार्य नहीं हो सकते। जानकारों के मुताबिक असल मुद्दा तेल और गैस संसाधनों से समृद्ध मध्य पूर्व पर कब्जे का है। दशकों से अमरीका मध्य पूर्व देशों में 'प्यार से' या 'मार से' अपनी कठपुतली सरकार स्थापित करने में जुटा है, ताकि वहां के संसाधनों पर तो कब्जा हो ही जाए, कूटनीति-राजनीति भी उसी के इशारे पर चले। अमरीका द्वारा सद्दाम हुसैन और कर्नल कद्दाफी की हत्या के बाद इराक और लीबिया बर्बादी की हालत में हैं तो कई इस्लामी देश खुद ही अमरीकी सैन्य ठिकाना बनने को तैयार हो गए। अपेक्षाकृत ताकतवर ईरान इस अमरीकी कवायद को अपनी घेराबंदी के रूप में देखता है। इसीलिए अमरीकी-इजरायली हमलों के जवाब में उसने उसके मित्र देशों को भी निशाना बनाया है। खामेनेई सर्वोच्च नेता भले ही ईरान के थे, लेकिन वह दुनिया भर में शिया मुस्लिम समुदाय के सर्वोच्च धार्मिक नेता भी थे। शिया समुदाय इसे अपने धर्मगुरु की हत्या के रूप में देख रहा है, जिसकी कड़ी प्रतिक्रिया इराक और पाकिस्तान में अमरीकी वाणिज्य दूतावास पर स्थानीय नागरिकों के हमले के रूप में सामने आई है।

ईरान में अरसे से जारी खामेनेई विरोधी प्रदर्शनों को अमरीका और इजरायल ने सत्ता परिवर्तन की पटकथा लिखने के लिए अनुकूल संकेत माना। उन प्रदर्शनों को हवा देने में अमरीका और इजरायल की अप्रत्यक्ष भूमिका भी रही। इसीलिए इजरायल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ईरान के लोगों से सड़क पर उतर कर सत्ता पर कब्जा करने का आह्वान कर रहे हैं। दो राय नहीं कि खामेनेई के कट्टरपंथी शासन से ईरान में एक वर्ग असंतुष्ट है, लेकिन वह भी मुस्लिम ही हैं, जो अमरीका या इजरायल का साथ देने की हद तक हरगिज नहीं जाएंगे, जिनकी छवि इस्लाम विरोधी है।

'जेन जी' कहे जानेवाले शहरी युवाओं के बल पर ईरान में सत्ता परिवर्तन का सपना देख लेना दूरदर्शिता नहीं मानी जा सकती। खासकर पिछले साल जून के बाद से हमले की आशंका के साथ जीते रहे खामेनेई विस्तृत उत्तराधिकार योजना बना गए हैं। इसलिए नए नेतृत्व के सवाल पर ईरान में किसी संकट की संभावना नहीं, जिसे अमरीका कठपुतली सरकार के लिए अवसर में बदल सके। फरवरी, 2022 से जारी रूस-यूक्रेन युद्ध और तमाम अन्य संघर्षों के बीच ही अब युद्ध का बड़ा मैदान बनते दिख रहे मध्य पूर्व की अंतिम परिणति तो समय ही बताएगा, लेकिन न तो आतंकी संगठनों को ईरान की मदद सही मानी जा सकती है और न ही उस बहाने ईरान पर हमले की अमरीकी दादागिरी। सीनेट की मंजूरी बिना ही किए गए हमले का अमरीका में भी विरोध शुरू हो गया है। अमरीकी मीडिया की मानें तो ईरान पर हमला मित्र देश सऊदी अरब के दबाव में किया गया, जो दिखावे के लिए तो संवाद की पैरवी करता रहा, लेकिन वास्तव में अपनी प्रतिद्वंद्वी इस्लामी ताकत ईरान को कमजोर करना चाहता है। कहा जाता है कि युद्ध शुरू करना आसान है, मगर उसे रोकना मुश्किल। छल-बल से शुरू यह युद्ध लंबा चला तो मानवता के साथ-साथ वैश्विक आर्थिकी पर भी बहुत भारी पड़ेगा, पर उसकी चिंता व्यापार केंद्रित सनकी सत्ता को तो नहीं है।

आपकी बात

हर बूंद का मूल्य समझना जरूरी

हर जगह अब पेयजल संकट गहराता जा रहा है और पारंपरिक जल स्रोतों की उपेक्षा स्थिति को और गंभीर बना रही है। कुएं और बावड़ियां कभी स्वच्छ जल के प्रमुख साधन थे, परंतु आज वे दूषित और उपेक्षित हैं। कई स्थानों पर उनमें कचरा डाला जा रहा है। स्थानीय प्रशासन और नागरिकों को मिलकर इनके जीर्णोद्धार और स्वच्छता पर ध्यान देना चाहिए। ये स्रोत केवल पानी ही नहीं, हमारी सांस्कृतिक विरासत के प्रतीक भी हैं। जल का उपयोग संयम से कर, हर बूंद का मूल्य समझना आवश्यक है।

- डॉ. राजेन्द्र कुमावत, जयपुर

अपने स्वास्थ्य का रखें खयाल

सर्दी से गर्मी के बदलते मौसम में हम सभी को स्वास्थ्य का विशेष खयाल रखना चाहिए। शिकंजी-जूस जैसे तरल पेय-पदार्थों के सेवन के साथ-साथ भोजन में दाल व हरी सब्जियों का समावेश करना अतिआवश्यक है। जंक फूड से परहेज करना चाहिए और नियमित रूप से सैर-व्यायाम को प्राथमिकता देनी चाहिए। सूखी-खुरदुरी त्वचा पर नियमित तेल अथवा मॉइश्चराइजर लगाते रहना चाहिए। हल्के सूती कपड़े पहनें जो शरीर के लिए आरामदायक होते हैं। इस समय बच्चों का विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिए। क्योंकि बदलते मौसम में कई तरह के संक्रमण का खतरा रहता है।

- विभा गुप्ता, बेंगलूरु

सुरक्षित होली का संदेश फैलाएं

होली प्रेम, भाईचारे और आपसी सद्भाव का पर्व है। इसे सादगी और सौहार्द के साथ मनाया जाना चाहिए। रंग और गुलाल लगाकर पुराने मनमुटाव दूर करने का यह अवसर है, न कि हुड़दंग का। असामाजिक तत्वों की गतिविधियों से सतर्क रहना भी जरूरी है, ताकि किसी को नुकसान न पहुंचे। समाज की जिम्मेदारी है कि त्योहार की गरिमा बनाए रखे और इसे आनंद, सुरक्षा व आपसी सम्मान के साथ मनाएं। उसके अलावा होली खेलते समय प्राकृतिक रंगों का उपयोग करना चाहिए, ताकि त्वचा पर किसी तरह के संक्रमण या एलर्जी की आशंका न रहे।

- निर्मला वशिष्ठ, अलवर

समसामयिक विषयों पर पाठकों के विचार आमंत्रित हैं। चुनिंदा विचार प्रकाशित किए जाएंगे।
ईमेल करें: edit@epatrika.com

बुक इनसाइट

द फर्स्ट टाइम आइ सॉ हिम

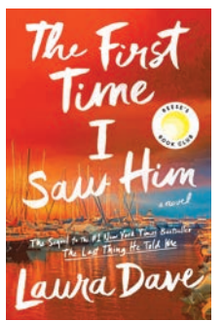

द फर्स्ट टाइम आइ सॉ हिम उपन्यास लेखिका लॉरा डेव की रचना है। वर्ष 2021 में प्रकाशित पिछली किताब ने उन्हें अंतरराष्ट्रीय पहचान दिलाई थी। सस्पेंस और भावनात्मक गहराई को साथ लेकर चलने की उनकी शैली ने उन्हें समकालीन थ्रिलर लेखकों की अग्रिम पंक्ति में खड़ा किया है। किताब की कहानी में हैना हॉल अपने पति ओवेन माइकल्स के गायब होने के बाद अपनी सौतेली बेटी बेली के साथ दक्षिणी कैलिफोर्निया में नई जिंदगी शुरू कर चुकी है। लेकिन ओवेन की अप्रत्याशित वापसी और बेली के दादा से जुड़ी एक चौंकाने वाली खबर सब कुछ बदल देती है। कहानी एक आपराधिक गिरोह से बच निकलने की जद्दोजहद के इर्द-गिर्द घूमती है, लेकिन इसका असली बल तेज रफ्तार एक्शन में नहीं, बल्कि लगातार बने रहने वाले तनाव में है। लॉरा डेव की लेखनी संयमित और संवेदनशील है। खासकर दु:ख और भय के क्षणों में मां-बेटी के रिश्ते की कोमलता पाठकों को छूती है। उपन्यास सवालों के जवाब देता है और पात्रों को एक तरह की पूर्णता प्रदान करता है।

फैक्ट फ्रंट

मेडागास्कर का अनोखा प्राइमेट 'ऐ-ऐ'

'ऐ-ऐ' दुनिया के सबसे अनोखे प्राइमेट्स में गिना जाता है। यह दुर्लभ जीव केवल मेडागास्कर में पाया जाता है और अपनी अजीब बनावट के कारण अक्सर लोगों को चौंका देता है। घने काले या गहरे भूरे बाल, बड़ी चमकदार आंखें, झबरीली लंबी पूंछ और बेहद संवेदनशील बड़े कान इसकी पहचान हैं। सबसे खास पहचान है इसकी लंबी और पतली बीच की अंगुली, जो दो जोड़ों वाली होती है। इसी अंगुली की मदद से यह पेड़ों पर

टैप कर कीड़ों को ढूंढता है। इस अनोखी तकनीक को 'पर्कसिव फॉरेजिंग' कहा जाता है। ऐ-ऐ पूरी तरह पेड़ों पर रहने वाला और रात में सक्रिय रहने वाला जीव है। यह दिन में पत्तियों और टहनियों से बने गोल घोंसलों में आराम करता है और रात होते ही भोजन की तलाश में निकलता है। यह सर्वाहारी है- कीड़ों के लार्वा, बीज, फल, पेड़ों का रस और फंगस तक खा लेता है। बताया जाता है कि यह हर सेकंड लकड़ी पर कई बार तेजी से टैप कर सकता है, ताकि भीतर छिपे लार्वा का पता लगा सके। प्रजनन के मामले में भी यह अलग है।

हास्य रंग भैया की आरक्षण वाली होली

रंग भी आरक्षित, पिचकारी चलेगी नियमावली से!

भूपेन्द्र भारतीय
स्वतंत्र लेखक एवं स्तंभकार
@patrika.com

इस बार भैया आरक्षण वाली होली खेलेंगे। पूरी व्यवस्था हो गई है। संवैधानिक आरक्षण व्यवस्था के अनुसार रंगों से संसदीय व विधायी पिचकारियों को भर लिया गया है। हर वार्ड व विधानसभा स्तर पर कार्यकर्ताओं को जनता पर रंग डालने की जिम्मेदारी दी है। आरक्षण अनुसार ही डीजे व ढोल वालों को भी बुक कर लिया गया है। जिन्हें आरक्षण नहीं मिला उनके साथ सिर्फ शोले फिल्म के ठाकुर काका वाली होली की तरह 'चुटकी वाली होली' खेली जाएगी। बाकी जिसको जिस अनुपात और प्रतिशत के अनुसार आरक्षण मिला है उन्हें उसी तरह रंगों से रंगरेज किया जाएगा।

इस बार की आरक्षणमय होली में भैया ने बकायदा अपने क्षेत्र में सरकारी आदेश की तरह घोषणा कर दी है कि सभी को होली खेलना है। पानी बचाने वाली बात कोई नहीं करेगा। भैया के पास पर्याप्त पानी है। उनके क्षेत्र में पानी के अधिकांश टेंकर उन्हीं के चलते हैं। बाकी समय वह व्यापार रहता है लेकिन होली पर पानी से भैया क्या कमाई करेंगे! ऐसा उनके स्वभाव में भी नहीं है और कोई लालच भी नहीं! वहीं होली पर पर्यावरण बचाओ वाले दूर रहें। भैया के टेंकर व बरसाने की लट्ठ से पानी की पर्याप्त मात्रा की व्यवस्था क्षेत्र में करते रहेंगे।

होली हो और भैया किसी तरह की मिठाई की व्यवस्था ना करें यह हो ही नहीं सकता। इस बार की होली पर भैया ने मिठाई वितरण में भी बकायदा आरक्षण व्यवस्था की है और साथ ही मिठाइयां विभिन्न रंगों की भी बनाई है। इसमें भी आरक्षण पद्धति का ही सहारा लिया गया है। संवैधानिक व्यवस्था के तहत जिसे जितना आरक्षण मिला है उसे होली पर मिठाई भी उतनी ही दी जाएगी और अलग अलग वर्ग आधारित रंग वाली मिठाई भी बांटी जाएगी। 'मिलावट वाली मिठाई व नकली मावे वाली बातों की इस पर्व पर चर्चा करने से बचें। नहीं तो आरक्षण वाली होली के साथ राजनीतिक रंगों वाली होली भी खेली जा सकती है।' यह सब पुण्य कार्य भैया स्वयं अपने हाथ से करेंगे और उनकी नजरों के सामने होगा।

इस होली पर हर बार की तरह ठंडाई का भी उचित प्रबंधन किया गया है। ठंडाई में आरक्षण व्यवस्था को थोड़ा शिथिल किया जा सकता है, यह भैया के विवेक पर निर्भर करेगा। इस बार की आरक्षण वाली होली इसलिए भी विशेष है कि भैया इस होली पर पूरे समय अपने क्षेत्र व जनता के बीच रहेंगे। उन्होंने इस होली पर एक भी विदेशी कार्यक्रम के लिए सहमति नहीं दी है। वहीं इस विशेष खबर को सुनकर जनता अभी से रंगारंग कार्यक्रमों का आयोजन करने के मूड में है लेकिन जनता के मन में एक प्रश्न घर कर गया है कि यह 'आरक्षण वाली होली' क्या कुछ रंग लाएगी? आखिर परंपरागत होली आयोजन से हटकर भैया इस आरक्षण वाली होली पर कौनसे रंगों से अपने क्षेत्र की जनता को रंगना चाहते है..?

परंपरागत शहरों से अलग, अनोखा बागान संसार
कोपेनहेगन के ओवल गार्डन्स

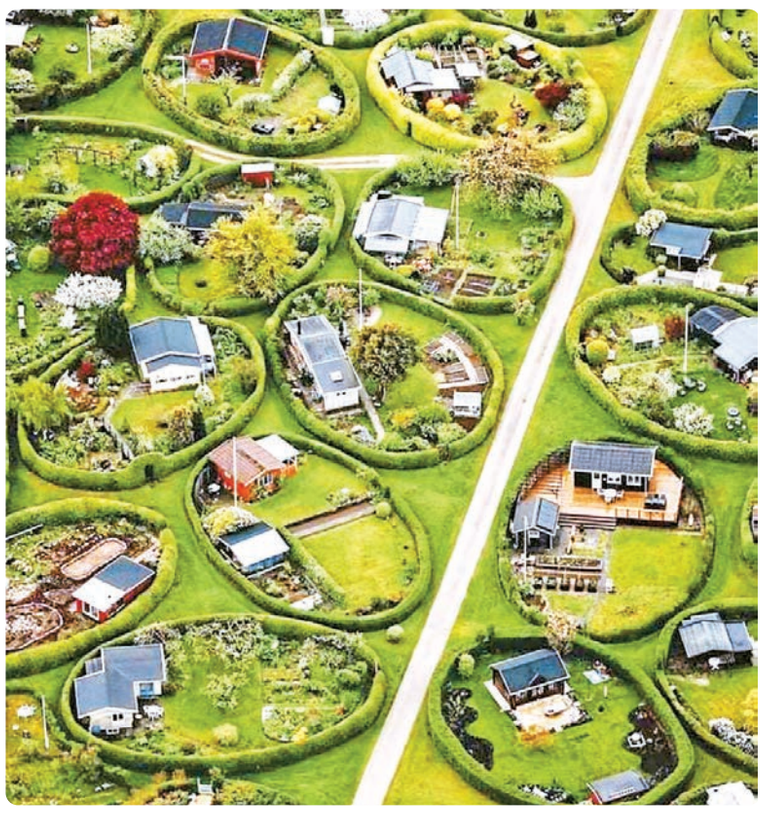

***डेनमार्क** की राजधानी कोपेनहेगन के नेरुम क्षेत्र में स्थित 'ओवल गार्डन्स' अपनी अनूठी बनावट के कारण आकर्षण का केंद्र हैं। वर्ष 1948 में लैंडस्केप आर्किटेक्ट कार्ल थियोडोर सोरेनसन ने इस परियोजना की परिकल्पना की थी। यह 40 अंडाकार भूखंड झाड़ियों की सुव्यवस्थित बाड़ से घिरे हुए हैं और प्रत्येक भूखंड के मध्य में एक छोटा-सा बगीचा-घर बनाया गया है। इसका उद्देश्य केवल सौंदर्य रचना करना नहीं, बल्कि सामाजिक संवाद और सामुदायिक भावना को बढ़ावा देना भी है।*

तनाव जज नहीं, सपोर्ट सिस्टम बनें पेरेंट्स

अंकों की अंधी दौड़ में खोते जा रहे मासूम सपने

इशिता पाण्डेय
'ड्रीम बिग' सहित अनेक पुस्तकों की लेखिका
@patrika.com

हर साल परीक्षाओं का मौसम आते ही देश के लाखों घरों में एक अजीब-सा खौफ पसर जाता है। जिस उम्र में बच्चों की आंखों में भविष्य के सतरंगी सपने होने चाहिए, वे विफलता के गहरे डर और तनाव तले दब जाते हैं। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) के नवीनतम आंकड़े किसी भी समाज की नींद उड़ाने के लिए काफी हैं। सरकारी आंकड़ों के मुताबिक, भारत में हर साल तेरह हजार से अधिक विद्यार्थी आत्महत्या कर रहे हैं। इसका सीधा मतलब है कि हम हर दिन औसतन पैंतीस होनहार बच्चों को हमेशा के लिए खो रहे हैं।

आज देश का हर शहर तनाव का ऐसा केंद्र बनता जा रहा है, जहां बच्चों का बचपन छिन रहा है। आखिर ऐसा क्यों है? क्या प्रतियोगी परीक्षाओं की रैंक हमारे बच्चों के जीवन से भी बड़ी हो गई है? इसका जवाब हमारी सामाजिक मानसिकता और दोषपूर्ण शिक्षा प्रणाली में छिपा है। हमने सफलता का पैमाना इतना संकीर्ण कर दिया है कि अगर बच्चा डॉक्टर या इंजीनियर या प्रशासनिक अधिकारी नहीं बन पाता, तो उसे लगता है कि जीवन में कुछ नहीं बचा है। माता-पिता अक्सर अपनी अधूरी महत्वाकांक्षाओं का भारी बोझ बच्चों के नाजुक कंधों पर डाल देते हैं। बारह-चौदह घंटे एकांत में पढ़ने के बाद भी उम्मीदों पर खरा न उतरने पर विद्यार्थी को लगता है कि उसके पास कोई 'प्लान बी' नहीं है। यही हताशा और बढ़ता दबाव उसे उस अंधेरे मोड़ पर ले जाता है जहां से वापसी का रास्ता नहीं बचता।

इस समस्या की जड़ें गहरी हैं। हमारा पूरा शिक्षा तंत्र अब 'सीखने' या रचनात्मक जिज्ञासा शांत करने के बजाय केवल 'रटने' और 'ज्यादा नंबर लाने' की अंधी दौड़ पर केंद्रित हो गया है। स्कूलों में मानसिक स्वास्थ्य पर बात करना आज भी टैबू माना जाता है। पूरे देश में हजारों विद्यार्थियों पर बमुश्किल एक काउंसलर उपलब्ध है। परीक्षा का दबाव, नींद की कमी, जंक फूड का सेवन और सोशल मीडिया पर दूसरों की 'परफेक्ट लाइफ' देखने से उपजा तनाव मिलकर बच्चों के दिमाग में अनचाहा स्ट्रेस पैदा कर रहे हैं। तनाव कम करने के अल्पकालिक उपायों के तौर पर विद्यार्थियों को अपनी दिनचर्या में तुरंत सुधार करना चाहिए। पर्याप्त नींद, संतुलित पौष्टिक आहार और परिवार के साथ खुला संवाद जीवन रक्षक साबित हो सकता है। माता-पिता को अपने बच्चों का 'जज' बनने के बजाय सबसे मजबूत 'सपोर्ट सिस्टम' बनना चाहिए। हमें समझना होगा कि कोई परीक्षा जीवन की आखिरी परीक्षा नहीं होती। इतिहास गवाह है कि दुनिया उन लोगों से भरी है जो स्कूली परीक्षाओं में अव्वल नहीं आए, लेकिन उन्होंने जुनून और मेहनत से दुनिया बदल दी। आइए, हम मिलकर एक ऐसा सुरक्षित माहौल बनाएं, जहां विद्यार्थी परीक्षा से डरें नहीं, बल्कि उसे अपनी क्षमता दिखाने के अवसर के रूप में देखें।

समरसता का पर्व जब रंग खेलें, तो केवल चेहरे पर नहीं, बल्कि मन पर भी रंग चढ़े- मित्रता का, करुणा का और मानवता का

होली केवल रंगों का नहीं, बल्कि जीवन की संपूर्णता का उत्सव है...

प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी 'रत्नेश'
लेखक एवं साहित्यकार
@patrika.com

भारत की सांस्कृतिक परंपरा में उत्सव केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि जीवन-दर्शन के जीवंत प्रतीक हैं। उन्हीं में से एक है होली, जो रंग, उल्लास, आध्यात्मिकता और सामाजिक समता का अद्भुत संगम है। यह पर्व भारतीय लोकजीवन में जितना रचा-बसा है, उतना ही शास्त्रों में भी प्रतिष्ठित है। होली केवल रंगों का त्योहार नहीं, बल्कि धर्म की विजय, अहंकार के पतन, प्रकृति के नवोदय और मानवीय संबंधों की पुनर्स्थापना का संदेश देने वाला उत्सव है।

होली का मूल आधार पुराणों में वर्णित भक्त प्रह्लाद की कथा से जुड़ा है। भागवत पुराण में वर्णित कथा के अनुसार असुरराज हिरण्यकश्यप ने अपने पुत्र प्रह्लाद की विष्णुभक्ति से क्रुद्ध होकर उसे अनेक यातनाएं दीं। अंततः उसने अपनी बहन होलिका को आदेश दिया कि वह अग्नि में बैठकर प्रह्लाद को जलाकर मार दे किंतु अग्नि में बैठने पर होलिका भस्म हो गई और भक्त प्रह्लाद सुरक्षित बच गया। यह प्रसंग धर्म की विजय और अधर्म के अंत का प्रतीक है। नारद पुराण में उल्लेख मिलता है- 'फाल्गुने पूर्णिमायां तु होलिका दहनं शुभम्।' अर्थात फाल्गुन पूर्णिमा के दिन होलिका दहन करना शुभ माना गया है। इसी प्रकार विष्णु धर्मोत्तर में भी यह कहा गया है कि यह अग्नि पापों के दहन और मंगल के उदय का प्रतीक है।

वैदिक साहित्य में भी वसंत ऋतु के स्वागत के उत्सवों का उल्लेख मिलता है। ऋग्वेद में वसंत को यज्ञ का अग्रदूत कहा गया है- 'वसन्तो अस्यासीदाज्यम्।' इसका तात्पर्य यह है कि वसंत प्रकृति के पुनर्जन्म का काल है। होली इसी ऋतु के आगमन का उत्सव है। खेतों में नई फसल, वृक्षों पर नई पत्तियां, वातावरण में मधुरता- सब मिलकर इसे जीवन की नवसृष्टि का पर्व बना देते हैं। होली का संदेश केवल बाहरी नहीं, बल्कि गहरा आध्यात्मिक है। होलिका दहन केवल लकड़ियों का दहन नहीं, बल्कि भीतर के अहंकार, ईर्ष्या, द्वेष और अन्य विकारों को जलाने का संकेत है। प्रह्लाद की कथा बताती है कि सच्ची श्रद्धा किसी भी शक्ति से बड़ी होती है। यही कारण है कि संत परंपरा में होली को भक्ति का उत्सव कहा गया है। संतों ने कहा- 'मन का मैल जले जब भीतर, तब सच्ची होली हो।' रंगों का खेल जीवन की विविधता और आनंद का प्रतीक है। जैसे अलग-अलग रंग मिलकर सुंदर चित्र बनाते हैं, वैसे ही विभिन्न स्वभाव के लोग मिलकर समाज बनाते हैं।

होली भारतीय समाज में समरसता का उत्सव है। इस दिन जाति, वर्ग, पद और संपत्ति के भेद गौण हो जाते हैं। सभी एक-दूसरे को रंग लगाते हैं और गले मिलते हैं। यह सामाजिक समानता का जीवंत अभ्यास है। पुराने मनमुटाव भूलकर लोग पुनः संबंध स्थापित करते हैं। होली सामाजिक मनोविज्ञान की दृष्टि से तनावमुक्ति का पर्व भी है। फाग, धमार, होरियां और लोकगीत इस पर्व की आत्मा हैं। गांवों में ढोलक की थाप पर गाए जाने वाले गीत केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि पीढ़ियों से चलती सांस्कृतिक धरोहर हैं। भारतीय साहित्य में होली का अत्यंत सुंदर चित्रण मिलता है। सूरदास ने कृष्ण की होली का वर्णन करते हुए लिखा- 'आजु ब्रज में होरी रे रसिया।' मीरा ने होली को प्रेम का उत्सव बताया- 'मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई।'

रीतिकालीन कवियों ने इसे श्रृंगार और सौंदर्य का पर्व कहा। वहीं आधुनिक साहित्य में होली सामाजिक चेतना और मानवीय एकता का प्रतीक बनकर उभरी। प्राचीन काल में होली के रंग प्राकृतिक होते थे- टेसू के फूल, चंदन, हल्दी, गुलाल आदि। टेसू के फूल त्वचा रोगों से रक्षा करते हैं। हल्दी रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ाती है। शीत ऋतु के बाद बदलते मौसम में शरीर को अनुकूल बनाने के लिए यह उत्सव सामूहिक उल्लास और सक्रियता का अवसर देता है। होलिका दहन से वातावरण की शुद्धि का लोकविश्वास भी जुड़ा है। होली भारतीय राष्ट्रीय चेतना का भी उत्सव है। यह विविधता में एकता का प्रतीक है। सामाजिक दूरी को समाप्त करती है। सामूहिकता की भावना को मजबूत करती है। लोक परंपराओं को जीवित रखती है।

भारत के विभिन्न प्रदेशों में इसकी अलग-अलग शैली- ब्रज की लठमार होली, बंगाल की डोल यात्रा, पंजाब की होला मोहल्ला- सब मिलकर इसे राष्ट्रीय उत्सव बनाते हैं। आज के समय में जब समाज में तनाव, अकेलापन और प्रतिस्पर्धा बढ़ रही है, होली का महत्व और बढ़ जाता है। यह उत्सव मनुष्य को भावनात्मक संतुलन देता है। डिजिटल युग में घटते प्रत्यक्ष संवाद को यह पुनर्जीवित करता है। वैश्वीकरण के दौर में होली हमारी सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ती है। होली हमें तीन प्रमुख संदेश देती है- अधर्म चाहे कितना भी शक्तिशाली हो, अंततः धर्म की विजय होती है। मनुष्य को अपने भीतर के विकारों को जलाना चाहिए। समाज प्रेम, हंसी और समानता से ही सुंदर बनता है।

होली केवल रंगों का नहीं, बल्कि जीवन की संपूर्णता का उत्सव है। इसमें धर्म है, दर्शन है, लोक है, साहित्य है और प्रकृति भी। यह हमें सिखाती है कि जीवन का वास्तविक सौंदर्य प्रेम, विश्वास और समरसता में है। जब हम होलिका दहन में लकड़ियां डालते हैं, तब हमें अपने भीतर की ईर्ष्या, क्रोध और अहंकार भी उसमें अर्पित कर देने चाहिए। और जब रंग खेलें, तो केवल चेहरे पर नहीं, बल्कि मन पर भी रंग चढ़े- मित्रता का, करुणा का और मानवता का। इसी भाव के साथ कहा जा सकता है- जहां मन निर्मल हो, संबंध सच्चे हों और समाज समरस हो, वहीं सच्ची होली है।

होली के रंगों में रंग जाएं, अपने भीतर की नकारात्मकता मिटाएं

बिहार के अररिया जिले में लगे सोलर सिस्टम से हर महीने 13 लाख यूनिट से ज्यादा का उत्पादन, सालाना करोड़ों की बचत

सरकारी विभागों में लगा 1528 केवी का सोलर पैनल

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

पटना. बिहार के अररिया जिले के सरकारी और सार्वजनिक भवनों पर लगाए गए 1528 केवी के सोलर सिस्टम से हर महीने न सिर्फ लाखों यूनिट सौर ऊर्जा का उत्पादन हो रहा है, बल्कि इससे सालाना करोड़ों रुपए की बचत भी की जा रही है। वर्ष 2019 से शुरू जल-जीवन-हरियाली अभियान के तहत राज्य भर में सरकारी और गैर-सरकारी संस्थानों को सौर ऊर्जा पैनल लगाने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। इसका उद्देश्य पर्यावरण संरक्षण के साथ आर्थिक बचत और हरित ऊर्जा को बढ़ावा देना है। इसी योजना के तहत अररिया जिले में 114 सरकारी और सार्वजनिक भवनों पर सोलर पैनल की स्थापना की गई है। बिजली विभाग के सहयोग से स्थापित इन सोलर पैनल से आज हर महीने एक लाख 37 हजार यूनिट ऊर्जा का उत्पादन हो रहा है।

अनुकरणीय मॉडल प्रस्तुत किया

प्रशासन और दूसरे विभागों के सहयोग से इस चुनौती को अवसर में बदला गया। सौर ऊर्जा को सरकारी तंत्र में शामिल करते हुए एक अनुकरणीय मॉडल प्रस्तुत किया गया। नतीजा, आज सरकारी और गैर-सरकारी संस्थानों के लिए ऊर्जा आत्मनिर्भरता और सतत विकास की एक नई राह बनकर तैयार हो चुकी है।

अक्षय ऊर्जा को अपनाना समय की मांग

इससे विभागों की हर माह 11 लाख से भी अधिक की बिजली बिल बचत सुनिश्चित हो पा रही है।ग्रामीण विकास विभाग के अधिकारियों का कहना है कि अररिया एक कृषि प्रधान जिला है। यहां ऊर्जा की बढ़ती मांग, अनियमित विद्युत आपूर्ति और पर्यावरणीय चुनौतियों को देखते हुए अक्षय ऊर्जा को अपनाना समय की मांग थी।

दिल्ली-सहारनपुर मार्ग पर बस बनी आग का गोला, यात्री सुरक्षित

बागपत @ पत्रिका. उत्तर प्रदेश के बागपत जिले में बड़ौत नगर के पास दिल्ली-सहारनपुर हाईवे पर सोमवार सुबह एक टूरिस्ट बस शॉर्ट सर्किट के कारण आग का गोला बन गई। चालक की सूझबूझ से बस में सवार छह लोग बाल-बाल बच गए, जबकि बस पूरी तरह जलकर नष्ट हो गई।

बस चालक सहेंद्र पाल ने बताया कि वह कंपनी के कर्मचारियों को लेने मुजफ्फरनगर गए थे और वहां से वापस बागपत लौट रहे थे। जैसे ही बस बड़ौत क्षेत्र में बावली गांव के निकट पहुंची, अचानक वाहन से धुआं निकलने लगा। स्थिति की गंभीरता को भांपते हुए चालक ने तुरंत बस को सड़क किनारे रोका और सभी यात्रियों को सुरक्षित बाहर निकाल दिया। कुछ ही देर में बस ने भीषण आग पकड़ ली और देखते ही देखते आग का गोला बन गई। चालक समेत कुल छह लोग समय रहते बाहर निकल आए। घटना की सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची और क्षतिग्रस्त बस को सड़क किनारे कर यातायात को सुचारु कराया।

चंद्रग्रहण की वजह से गंगा आरती के समय में बदलाव

फाइल फोटो

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

वाराणसी . तीन मार्च को वर्ष का पहला चंद्रग्रहण लगने वाला है, जिसे ध्यान में रखते हुए दशाश्वमेध घाट पर विश्व विख्यात मां गंगा की दैनिक आरती का समय बदल दिया गया है। सामान्यतः शाम 6:15 बजे शुरू होने वाली यह आरती अब शाम 7:30 बजे से प्रारंभ होगी, जो ग्रहण के मोक्ष काल (समापन) के बाद होगी।

गंगा सेवा निधि के अध्यक्ष सुशांत मिश्रा ने बताया कि चंद्रग्रहण के कारण काशी में मां गंगा की आरती का समय परिवर्तित किया गया है। भारतीय समयानुसार चंद्रग्रहण 3 मार्च को दोपहर 3 बजकर 20 मिनट पर शुरू होगा और शाम 6 बजकर 46-47 मिनट के आसपास समाप्त होगा।

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार ग्रहण का सूतक काल 9 घंटे पहले से लागू हो जाता है, इसी कारण आरती का समय बदला गया है। गौरतलब है कि पिछले वर्ष 2025 में 7 सितंबर को चंद्रग्रहण के कारण माँ गंगा की दैनिक आरती दोपहर 12 बजे संपन्न कराई गई थी। यह बदलाव 35 वर्षों में छठी बार हो रहा है। इससे पहले 28 अक्तूबर 2023, 16 जुलाई 2019, 27 जुलाई 2018 और 7 अगस्त 2017 को भी चंद्रग्रहण के कारण आरती समय में बदलाव किया गया था।

सारण में युवक का शव बरामद

छपरा (सारण) @ पत्रिका. बिहार के सारण जिले के रिविलगंज थाना क्षेत्र में सोमवार को कटरा नेवाजी टोला दियारा इलाके से एक युवक का शव बरामद हुआ। स्थानीय लोगों ने शव देखकर पुलिस को सूचना दी। मौके पर पहुंची पुलिस ने शव की पहचान प्रभुनाथ नगर मोहल्ला निवासी राजा बांसफोड़ के पुत्र चंदन कुमार (30) के रूप में की। शव को पोस्टमार्टम के लिए सदर अस्पताल भेज दिया गया है। पुलिस सूत्रों के अनुसार मृतक के पाकेट से मिले आधार कार्ड से उसकी पहचान हुई। मृतक के भाई ने पुलिस को दिए आवेदन में बताया कि चंदन पिछले दो दिनों से लापता था और परिजन उसकी तलाश कर रहे थे। उन्होंने यह भी कहा कि चंदन की मानसिक स्थिति ठीक नहीं थी। पुलिस ने मृतक के पास से एक मोबाइल चार्जर बरामद किया है। मामले में प्राथमिकी दर्ज कर पुलिस मामले की जांच कर रही है।

शादी के 3 महीने बाद नवविवाहिता की मौत

छपरा @ पत्रिका. बिहार के सारण जिले के नगरा थाना क्षेत्र में दहेज की मांग पूरी न होने पर एक नवविवाहिता की हत्या का सनसनीखेज मामला सामने आया है। विवाह के मात्र तीन महीने बाद ही ससुराल पक्ष पर हत्या का आरोप लगा है। मृतका की पहचान औली गांव निवासी कमल यादव की पुत्री सरिता कुमारी (28) के रूप में हुई है। पिता कमल यादव ने पुलिस को दिए आवेदन में बताया कि उनकी पुत्री की शादी 29 नवंबर को रामचौरा गांव निवासी जितेंद्र कुमार यादव से हुई थी। जितेंद्र सेना में कार्यरत हैं और वर्तमान में जम्मू-कश्मीर में तैनात हैं। रविवार देर रात उन्हें सूचना मिली कि सरिता की तबीयत खराब है। जब वे ससुराल पहुंचे तो सरिता का शव आंगन में पड़ा मिला, जबकि ससुराल वाले फरार थे। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए सदर अस्पताल भेज दिया। साथ ही प्राथमिकी दर्ज कर आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए छापेमारी शुरू कर दी है।

मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने किया पटना में नाला परियोजनाओं का निरीक्षण

सैदपुर नाले पर बनेगी फोर लेन सड़क, 259 करोड़ की लागत से होगा निर्माण

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

पटना. बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने सोमवार को पटना शहर में सैदपुर और बाकरगंज भूमिगत नाला निर्माण कार्यों का निरीक्षण किया।

उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिया कि नाला और सड़क निर्माण कार्य को तेजी से और गुणवत्तापूर्ण ढंग से पूरा किया जाए।

निरीक्षण के दौरान मुख्यमंत्री को पटना प्रमंडल आयुक्त अनिमेष परासर और जिलाधिकारी डॉ. त्यागराजन एस.एम. ने विस्तृत जानकारी दी।

5.61 किलोमीटर लंबा भूमिगत नाला और सड़क का कराया जा रहा निर्माण

बाकरगंज नाला परियोजना

मुख्यमंत्री ने इसके बाद बाकरगंज भूमिगत नाला और सड़क निर्माण कार्य का भी निरीक्षण किया। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिया कि इस परियोजना को जल्द और बेहतर ढंग से पूरा किया जाए। इसके पूर्ण होने से जल निकासी की समस्या दूर होगी और जलजमाव से राहत मिलेगी। नाले के ऊपर सड़क बनने से आवागमन भी सुगम होगा। बाकरगंज नाला शहर के भीतरी हिस्से में स्थित है, जो उमा सिनेमा हॉल से शुरू होकर अंटा घाट तक

गंगा नदी की ओर जाता है। इस परियोजना के तहत लगभग 1.4 किलोमीटर लंबी सड़क नाले के ऊपर बनाई जा रही है।

समाप्त होगी ट्रैफिक जाम की समस्या

मुख्यमंत्री ने कहा कि सैदपुर नाले का जीर्णोद्धार कर इसके ऊपर फोर लेन सड़क का निर्माण तेजी से किया जाए। इस परियोजना के पूर्ण होने से सैदपुर, राजेंद्र नगर, मुसल्लहपुर हाट, गायघाट और पहाड़ी क्षेत्र में ट्रैफिक जाम की समस्या समाप्त होगी। साथ ही न्यू पटना बाईपास से जुड़ने का वैकल्पिक मार्ग उपलब्ध होगा। गौरतलब है कि नगर विकास विभाग के तहत बुडको द्वारा 259.81 करोड़ रुपए की लागत से 5.61 किलोमीटर लंबा भूमिगत नाला और सड़क का निर्माण कराया जा रहा है।

वाराणसी में सरस मेले का भव्य समापन समारोह

उप मुख्यमंत्री मौर्य ने किया महिलाओं को लखपति क्लब से जोड़ने का आह्वान

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

वाराणसी . प्रदेश के उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य की उपस्थिति में 11 दिवसीय रीजनल (राष्ट्रीय स्तर) सरस मेला का भव्य समापन सोमवार को संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय में संपन्न हुआ।

इस आवासीय मेले में विभिन्न प्रदेशों तथा उत्तर प्रदेश के विभिन्न जनपदों से आए महिला समूहों द्वारा लगभग एक करोड़ रुपए का व्यापार किया गया। मेले में सजावटी सामग्री, खाद्य प्रसाद, पीतल की सामग्री, अचार-मुरब्बा, लेदर के सामान, आर्टिफिशियल ज्वेलरी, कुर्ती, चादर, कालीन, जूट के उत्पाद, मूंज के उत्पाद आदि प्रमुख थे।

मेले में समूह की महिलाओं को संबोधित करते हुए उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने आह्वान किया कि समूह से और अधिक महिलाओं को जोड़ा जाए। उन्होंने प्रदेश में एक करोड़ महिलाओं को लखपति महिला क्लब में शामिल करने तथा उन्हें करोड़पति महिला बनाने का आह्वान किया। आने वाले दिनों में सरस मेलों के आयोजन कराने की घोषणा की, जिससे अन्य प्रदेशों तथा जनपदों से आने वाली महिलाओं से प्रेरित होकर अन्य महिलाएं भी आगे आकर कार्य करें।

उन्होंने महिलाओं के कार्यों तथा उनके उत्पादों की सराहना की। उप मुख्यमंत्री ने स्टालों का अवलोकन किया, उत्पादों की जानकारी ली तथा आजीविका मिशन की ओर से लगाए गए फूड कोर्ट के कार्य की प्रशंसा की।

बीमा सखियों व लखपति महिलाओं को प्रमाण पत्र से सम्मानित

उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने वाराणसी की दो बीमा सखियों मीना देवी व प्रतिभा देवी तथा दो लखपति महिलाओं शर्मीला देवी व लक्ष्मी वर्मा को प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया। जनपद के 703 समूहों को सामुदायिक निवेश निधि तथा 20 समूहों को रिवॉल्विंग फंड मद में कुल 10 करोड़ 60 लाख 50 हजार रुपये का प्रतीकात्मक रूप से चेक प्रदान किया गया। साथ ही दो समूह की महिलाओं को ई-रिक्शा उपलब्ध कराते हुए प्रमाण पत्र वितरित किए गए।

कार्यक्रम में एकता और सौहार्द का दिया संदेश

खेल मंत्री श्रेयसी सिंह ने राजग समर्थकों के साथ खेली होली

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

जमुई. बिहार की खेल मंत्री और जमुई की विधायक श्रेयसी सिंह ने सोमवार को राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) के कार्यकर्ताओं और स्थानीय लोगों के साथ पूरे उत्साह से होली मनाई। ढोल-नगाड़ों की गूंज और अबीर-गुलाल की उड़ती बौछारों के बीच उत्सव का माहौल देखते ही बन रहा था। मंत्री श्रेयसी सिंह मंच से उतरकर कार्यकर्ताओं के बीच पहुंचीं और उन्हें रंग लगाकर गले मिलकर शुभकामनाएं दीं। समर्थकों ने भी जोश के साथ 'होली है' के नारों से वातावरण को जीवंत बना दिया।

कार्यक्रम में बड़ी संख्या में राजग समर्थक, पार्टी पदाधिकारी और आम नागरिक मौजूद रहे। रंगों की मस्ती और पारंपरिक गीतों के बीच सियासी और सामाजिक एकजुटता का संदेश साफ तौर पर नजर आया। मंत्री ने सभी को सुरक्षित, शांतिपूर्ण और सौहार्दपूर्ण होली की शुभकामनाएं दीं।

खेल मंत्री श्रेयसी सिंह।

प्रेम और सद्भाव के साथ मनाएं पर्व : मंत्री

श्रेयसी सिंह ने कहा कि होली केवल रंगों का त्योहार नहीं, बल्कि सामाजिक समरसता और भाईचारे का प्रतीक है। उन्होंने लोगों से अपील की कि सभी मतभेद भुलाकर प्रेम और सद्भाव के साथ पर्व मनाएं।

गांव-गांव पहुंचेगा जनसंख्या स्थिरीकरण का संदेश

परिवार नियोजन सेवा पखवाड़ा शुरू, 48 जागरूकता रथ रवाना

सजग, तत्पर और प्रतिबद्ध रहकर पखवाड़े को सफल बनाने का आह्वान

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

पटना. पटना के जिलाधिकारी डॉ. त्यागराजन एस.एम. ने सोमवार को परिवार नियोजन सेवा पखवाड़ा (6 से 20 मार्च) के तहत जनसंख्या स्थिरीकरण को लेकर जागरूकता फैलाने के उद्देश्य से ई-रिक्शा आधारित 'सारथी रथों' को समाहरणालय से हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।

इस अवसर पर जिलाधिकारी ने कहा कि जनसंख्या नियंत्रण बेहतर विकास दर और मानव विकास सूचकांक के लिए आवश्यक है। उन्होंने सभी संबंधित विभागों और संस्थानों से सजग, तत्पर और प्रतिबद्ध रहकर पखवाड़े को सफल बनाने का आह्वान किया।

जन-जागरूकता अभियान

पखवाड़े के दौरान पूरे जिले में कुल 48 जागरूकता रथ गांव-गांव जाकर लोगों को परिवार नियोजन के लिए प्रेरित करेंगे। इन रथों के माध्यम से स्वास्थ्य संस्थानों में उपलब्ध नि:शुल्क परिवार नियोजन सेवाओं की जानकारी दी जाएगी और जनसंख्या स्थिरीकरण को लेकर व्यापक जन-जागरूकता अभियान चलाया जाएगा। यह पहल जिले में स्वास्थ्य और विकास लक्ष्यों को सुदृढ़ करने की दिशा में अहम मानी जा रही है।

नोएडा में गुलशन मॉल के सामने मिला युवती का शव

नोएडा@पत्रिका. उत्तर प्रदेश के नोएडा स्थित एक्सप्रेस-वे थाना क्षेत्र में सोमवार को उस वक्त हड़कंप मच गया जब सेक्टर-129 स्थित गुलशन मॉल के सामने सर्विस रोड किनारे एक युवती का शव संदिग्ध परिस्थितियों में मिला। थाना एक्सप्रेस-वे पुलिस ने बताया कि घटनास्थल का निरीक्षण कर फील्ड यूनिट टीम को बुलाया और आवश्यक साक्ष्य जुटाए गए। शव को कब्जे में लेकर पंचायतनामा भरते हुए पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है।

मृतका की पहचान कविता (23) पुत्री जय सिंह के रूप में हुई है। प्रारंभिक जांच में युवती के शरीर पर किसी प्रकार के बाहरी चोट के निशान नहीं मिले हैं। पुलिस ने मामले की जांच कर रही है।

आगरा में ऑटो चालक की हत्या के आरोप में दो आरोपी गिरफ्तार

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

आगरा . उत्तर प्रदेश के आगरा जिले में ऑटो चालक विजय पाल की हत्या का पुलिस ने खुलासा करते हुए दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है।

पुलिस ने आरोपी विष्णु और अमित को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है। पुलिस के अनुसार थाना सैंया क्षेत्र में 14 फरवरी को दोनों आरोपियों ने विजय पाल का ऑटो किराये पर लिया था। देर शाम तक विजय पाल के घर न लौटने पर परिजनों ने उसकी तलाश शुरू की। खोजबीन के दौरान इरादत नगर रोड पर ऑटो खड़ा मिला और कुछ दूरी पर नाले में उसका शव बरामद हुआ था।

पोस्टमार्टम रिपोर्ट में मृत्यु का कारण डूबना बताया गया, हालांकि शरीर पर चोट के निशान पाए गए थे। इन चोटों के आधार पर पुलिस को संदेह हुआ और मामले की गंभीरता को देखते हुए चार टीमों का गठन किया गया। जांच में सामने आया कि आरोपियों ने पहले स्वयं शराब पी और चालक विजय पाल को भी शराब पिलाई। नशे की हालत में दोनों ने उसके साथ कुकर्म करने का प्रयास किया। विरोध करने पर आरोपियों ने उसकी पिटाई कर दी और गंभीर रूप से घायल अवस्था में उसे नाले में फेंककर फरार हो गए। आरोपी उसका बैग भी साथ ले गए थे।

पुलिस ने बताया कि गिरफ्तार आरोपी विष्णु पूर्व में भी जेल जा चुका है। दोनों के खिलाफ विधिक कार्रवाई कर उन्हें न्यायालय में पेश कर जेल भेज दिया गया है। मामले में आगे की जांच जारी है।

एसएसबी की कारवाई : नौ मवेशी और वाहन जब्त, तीन गिरफ्तार

सुपौल@पत्रिका. बिहार के सुपौल जिले में सशस्त्र सीमा बल (एसएसबी) ने मवेशी तस्करी के प्रयास को विफल कर दिया। बीरपुर की सीमा चौकी नरपतपट्टी क्षेत्र में विशेष पेट्रोलिंग के दौरान एसएसबी ने नौ मवेशी (आठ गाय और एक बछड़ा), एक टाटा पिकअप वाहन जब्त करते हुए तीन तस्करों को गिरफ्तार किया।

कमांडेंट गौरव सिंह ने बताया कि विश्वसनीय सूचना के आधार पर विशेष पेट्रोलिंग दल गठित किया गया था। दल ने स्पर संख्या 1775 के पास एक संदिग्ध पिकअप वाहन को रोककर तलाशी ली, जिसमें मवेशी पाए गए। पूछताछ में गिरफ्तार आरोपियों ने अपने नाम मोहम्मद फयाज, मोहम्मद राजमूल और मोहम्मद शमीबिल्ला बताए, जो सुपौल जिले के निवासी हैं। गिरफ्तार आरोपियों ने मवेशियों से संबंधित कोई वैध दस्तावेज प्रस्तुत नहीं किया। इसके बाद नियमानुसार मवेशियों, वाहन और आरोपियों को आवश्यक कानूनी कार्रवाई के लिए फाटक कमलदाह, कुर्साकांटा (अररिया जिला) को सुपुर्द किया।

खामेनेई की मौत पर प्रदर्शन

अलीगढ़@ पत्रिका. इजरायल-अमेरिका के हमले में ईरान के सर्वोच्च नेता अयातुल्ला अली खामेनेई की मौत की खबर के बाद भारत में विरोध तेज हो गया है। इसी क्रम में अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी (एएमयू) परिसर में छात्रों और स्थानीय लोगों ने विरोध प्रदर्शन कर दुख और गुस्सा जाहिर किया। एएमयू परिसर में छात्रों ने नारेबाजी करते हुए कहा कि ईरान मजबूती से खड़ा रहेगा और जवाब देगा। प्रदर्शनकारियों ने खामेनेई को इंसानियत का नेता बताया। इससे पहले लखनऊ में लोगों ने खामेनेई की मौत पर शोक व्यक्त किया।

जलवायु परिवर्तन का संकेत दे रहा असामान्य तापमान

झारखंड में मार्च से ही मई-जून जैसी गर्मी, सरायकेला में तापमान 36 डिग्री के पार

रांची@पत्रिका. झारखंड में मार्च की शुरुआत ही असामान्य गर्मी लेकर आई है। राज्य के कई जिलों में कड़ी धूप और बढ़ते तापमान ने लोगों की दिनचर्या को प्रभावित कर दिया है। खासकर दक्षिणी जिलों जैसे जमशेदपुर, लातेहार और सरायकेला-खरसावां में हालात मई-जून जैसे हो गए हैं, जहां दिन और रात दोनों ही गर्म हो रहे हैं।

मौसम विभाग के अनुसार, जमशेदपुर और लातेहार में न्यूनतम तापमान 18.6 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया, जिससे रातों में भी गर्मी का एहसास हो रहा है। सरायकेला में अधिकतम तापमान 36 डिग्री तक पहुंच गया। दक्षिणी जिलों में न्यूनतम तापमान में 2 डिग्री की बढ़ोतरी दर्ज की गई है। वहीं, पश्चिमी सिंहभूम और सरायकेला में उमस भरी गर्मी ने लोगों को परेशान कर दिया है। स्थानीय निवासियों का कहना है कि इस गर्मी ने होली के उत्साह पर भी असर डाला है।

फाइल फोटो...

पूर्वी जिलों में राहत, दक्षिण में गर्मी चरम पर: देवघर, पाकुड़, साहिबगंज, धनबाद, दुमका और जामताड़ा जैसे पूर्वी जिलों में न्यूनतम तापमान में 2-3 डिग्री की गिरावट आई है। यहां तापमान 13-14 डिग्री तक रहने से शाम के समय थोड़ी राहत मिल रही है। लेकिन दक्षिणी और मध्य जिलों में गर्मी चरम पर है। रांची में अधिकतम तापमान 29-30 डिग्री के आसपास रहने की उम्मीद है। मौसम विभाग ने स्पष्ट किया है कि बंगाल की खाड़ी में कोई सक्रिय सिनॉप्टिक सिस्टम न होने से बारिश की संभावना नहीं है। होली और होलिका दहन के दौरान मौसम साफ रहेगा। आइएमडी वैज्ञानिकों ने लोगों को अधिक पानी पीने, हाइड्रेशन बनाए रखने और फलों का सेवन करने की सलाह दी है।

धर्मपाल सिंह ने कार्यशैली में नवाचार और जनसेवा पर दिया जोर

वाराणसी @ पत्रिका. भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) काशी क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले सभी 16 जिलों के जिला प्रभारियों, बीएलए-1 वाराणसी जिला एवं महानगर के सभी मंडल अध्यक्षों के साथ सर्किट हाउस में प्रदेश महामंत्री (संगठन) धर्मपाल सिंह ने अलग-अलग बैठकों में संगठनात्मक गतिविधियों की समीक्षा की।

बैठक में उन्होंने जनसेवा के मार्ग में आने वाली चुनौतियों के समाधान, कार्यशैली में नवाचार तथा संगठन को अधिक प्रभावी, गतिशील एवं जनकेंद्रित बनाने पर विस्तार से चर्चा की। सिंह ने मतदाता गहन पुनरीक्षण (एसआइआर) कार्यक्रम के अंतर्गत चल रहे कार्यों की समीक्षा करते हुए कहा कि होली का पावन पर्व है। इस अवसर पर सभी कार्यकर्ता अपने-अपने बूथों पर जाकर मतदाताओं से मिलें।

जौनपुर में होली और रमजान को लेकर पुख्ता सुरक्षा बंदोबस्त

जौनपुर @ पत्रिका. उत्तर प्रदेश के जौनपुर जिले में होली और रमजान को लेकर प्रशासन ने व्यापक सुरक्षा प्रबंध किए हैं। जिलाधिकारी डॉ. दिनेश चंद्र और वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक कुंवर अनुपम सिंह ने शासन के निर्देशों के क्रम में त्योहार को सौहार्दपूर्ण वातावरण में संपन्न कराने के लिए पूरे जिले को 7 सुपरजोन, 28 जोन और 161 सेक्टर में विभाजित किया है।

बस-ट्रक में टक्कर, 12 से ज्यादा लोग घायल

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

छपरा. बिहार में सारण जिले के मशरक थाना क्षेत्र में सोमवार को बस और ट्रक के बीच हुई टक्कर में 12 से अधिक लोग घायल हो गए।

पुलिस सूत्रों ने यहां बताया कि छपरा- मशरक राजकीय राजमार्ग संख्या 90 पर हनुमानगंज गांव के समीप बस और ट्रक के बीच आमने-सामने की टक्कर हो गई। इस घटना में बस पलट कर मुख्य पथ से उतर कर एक खेत में जा गिरी। इस घटना में बस में सवार 12 से अधिक यात्री घायल हो गए हैं। सूत्रों ने बताया कि घटना की सूचना मिलने पर मौके पर पहुंची पुलिस ने सभी घायलों को इलाज के लिए नजदीकी स्वास्थ्य केंद्र में पहुंचाया, जहां चिकित्सक ने प्राथमिक चिकित्सा के बाद घायल बस चालक को बेहतर इलाज के लिए सदर अस्पताल भेज दिया। पुलिस प्राथमिकी दर्ज कर जांच कर रही है।

रांची के चुटिया नगरी में 500 साल पुरानी अनूठी परंपरा निभाई

होलिका दहन से शुरू हुआ ऐतिहासिक होली उत्सव

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

रांची. राजधानी रांची के चुटिया नगरी में रविवार को ऐतिहासिक परंपरा के अनुसार होलिका दहन फगुआ का रस्म पूरा किया गया। लगभग 500 वर्षों से यहां होली उत्सव की यह अनूठी परंपरा निभाई जा रही है, जिसे झारखंड में सबसे पहले होलिका दहन के लिए जाना जाता है।

परंपरा और धार्मिक अनुष्ठान

मुहूर्त के अनुसार ग्राम पाहन ने स्नान कर नए वस्त्र पहनकर फरसा और जल लेकर डोल जतरा मैदान में फगुआ काटने की रस्म निभाई। अरंडी की डाल को एक ही वार में काटकर वे बिना पीछे मुड़े घर लौट गए। इसके बाद श्रीराम मंदिर के महंत ने पूजा-अर्चना कर होलिका प्रज्वलित की और आरती की। इससे पूर्व रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए गए।

चुटिया, जो कभी नागवंशी राजाओं की राजधानी रही, आज भी अपनी समृद्ध परंपराओं और आस्था की विरासत को संजोए हुए है। वर्ष 1685 में स्थापित राम मंदिर (राधाबल्लभ मंदिर) इस परंपरा का केंद्र है।

ऐतिहासिक मान्यता और फगडोल जतरा

मान्यता है कि नागवंशी राजाओं के समय से यह परंपरा निरंतर चली आ रही है। होलिका दहन के साथ ही पूरे क्षेत्र में होली उत्सव की शुरुआत मानी जाती है। इस अवसर पर सैकड़ों श्रद्धालु उपस्थित रहे। राम मंदिर ट्रस्ट के सदस्य कैलाश कुमार केसरी ने बताया कि 16वीं शताब्दी में महाराजा उदयनाथ प्रताप सहदेव चुटियागढ़ के राजा थे। उस समय की प्रथा थी कि राजा पहले फगुआ काटेंगे, उसके बाद ही अन्य लोग फगुआ काटेंगे। आज भी पाहन द्वारा अगजा काटने के बाद महंत पूजा-पाठ कर आरती करते हैं। चार मार्च को फगडोल जतरा यात्रा निकाली जाएगी। इस दिन लोग सुबह से ही रंगों वाली होली खेलेंगे और दोपहर बाद भगवान के विग्रहों को डोली में बिठाकर राम मंदिर से यात्रा निकाली जाएगी। अन्य प्राचीन मंदिरों से भी विग्रहों को डोल जतरा मैदान में लाया जाएगा। यह परंपरा वृंदावन की तर्ज पर होती है और वर्ष 1685 से चली आ रही है।

ऑटोरिक्शा और बाइक की टक्कर में युवक की मौत, दो घायल

भागलपुर @ पत्रिका. बिहार के भागलपुर जिले के लोदीपुर थाना क्षेत्र में रविवार देर रात ऑटोरिक्शा और मोटरसाइकिल की टक्कर में एक युवक की मौत हो गई, जबकि दो अन्य गंभीर रूप से घायल हो गए। हादसा गोराडीह-भागलपुर मार्ग पर हुआ। मृतक की पहचान पिथना गांव निवासी मो. मुमताज (18) के रूप में हुई है।

पुलिस सूत्रों के अनुसार मो. मुमताज अपने दो साथियों के साथ मोटरसाइकिल से गरोहतिया गांव जा रहा था। इसी दौरान सामने से तेज रफ्तार में आ रहे ऑटोरिक्शा ने उनकी मोटरसाइकिल को जोरदार टक्कर मार दी। टक्कर में मुमताज की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि उसके दोनों साथी घायल हो गए। घटना के बाद ग्रामीणों ने घायलों को जवाहरलाल नेहरू मेडिकल कॉलेज अस्पताल, भागलपुर में भर्ती कराया।

होली : राज्यपाल से उप मुख्यमंत्री, मंत्रीगण और गणमान्य नागरिकों की शिष्टाचार भेंट

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

लखनऊ . होली के पावन पर्व पर सोमवार को उत्तर प्रदेश की राज्यपाल आनंदीबेन पटेल से जन भवन में प्रदेश के उप मुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक, राज्यमंत्री उच्च शिक्षा रजनी तिवारी सहित अनेक जनप्रतिनिधियों, वरिष्ठ प्रशासनिक एवं पुलिस अधिकारियों, विश्वविद्यालयों के कुलपतियों तथा अन्य गणमान्य नागरिकों ने शिष्टाचार भेंट कर होली की शुभकामनाएं दीं।

इससे पूर्व विशेष कार्याधिकारी (अपर मुख्य सचिव स्तर) डॉ. सुधीर महादेव बोबडे के नेतृत्व में जन भवन में कार्यरत अधिकारियों, कर्मचारियों एवं उनके परिजनों ने भी राज्यपाल से भेंट कर उन्हें रंगोत्सव की बधाई दी। राज्यपाल ने सभी को होली की हार्दिक शुभकामनाएं देते हुए कहा कि यह पर्व आपसी प्रेम, सौहार्द और सकारात्मक ऊर्जा का संदेश देता है। प्रत्येक व्यक्ति को अपने भीतर के अवगुणों का त्याग कर समाज के कल्याण के लिए कार्य करना चाहिए।

प्रेरक फिल्म बनाई जानी चाहिए

राज्यपाल ने बताया कि आदर्श माध्यमिक विद्यालय, जन भवन में हाल ही में इसरो लैब की स्थापना की गई है, जिससे विद्यार्थियों को विज्ञान और अंतरिक्ष के क्षेत्र में व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त होगा। अपने हालिया गुजरात दौरे का उल्लेख करते हुए उन्होंने धोलावीरा को भारत की प्राचीन समृद्ध सभ्यता का उत्कृष्ट उदाहरण बताया और बनास डेयरी के माध्यम से पशुपालन एवं दुग्ध उत्पादन में हो रही प्रगति की सराहना की। उन्होंने सुझाव दिया कि इन उपलब्धियों पर आधारित एक प्रेरक फिल्म बनाई जानी चाहिए, जिससे नई पीढ़ी को देश की ऐतिहासिक और आधुनिक उपलब्धियों की जानकारी मिल सके।

अवसरों का अधिकतम लाभ उठाने का आग्रह

उन्होंने कहा कि जन भवन में विगत वर्षों में अनेक रचनात्मक और नवाचारपूर्ण कार्य हुए हैं तथा भविष्य में भी कई महत्वपूर्ण पहलें प्रस्तावित हैं। अधिकारियों और कर्मचारियों से उन्होंने अपने बच्चों के उज्ज्वल भविष्य के लिए शिक्षा एवं विकास के अवसरों का अधिकतम लाभ उठाने का आग्रह किया।

प्रेरणा

भविष्य उनका है जो अपने सपनों की सुंदरता में विश्वास करते हैं।- **क्वीन एलिजाबेथ द्वितीय**

संपादकीय

इस युद्ध का असर पूरी दुनिया पर पड़ने जा रहा है

अमेरिका और इजराइल का ईरान पर हमला मात्र तीन देशों का मामला नहीं है। तेल जैसे महत्वपूर्ण संसाधन की वैश्विक सप्लाई-चेन में व्यवधान दुनिया के लिए काफी महंगा पड़ेगा। भारत के लगभग एक करोड़ लोग अरब दुनिया में हैं और इनके जरिये भारत को भारी धन (रेमिटेंस) मिलता है। चूंकि इस युद्ध से अरब-जगत में उथल-पुथल लाजमी है, लिहाजा भारत को दो-तरफा मार पड़ेगी- पेट्रोल की कीमतों के रूप में और रेमिटेंस के स्तर पर। चूंकि ईरान शिया-बहुल देश है, लिहाजा तमाम अरब मुल्क जहां अमेरिकी बेस हैं, ईरानी मिसाइलों के शिकार हैं। वे या तो यूएस के साथ खुले तौर पर हैं या परोक्ष रूप से। भारत का ईरान से संबंध बहुत दोस्ताना नहीं रहा है और वहां के हुक्मरान अक्सर वर्तमान भारत सरकार के खिलाफ बोलते रहे हैं। लेकिन देश के भीतर भी शियाओं की प्रभावी आबादी वाले क्षेत्र कश्मीर, हैदराबाद और लखनऊ हैं। पिछले साल जब अमेरिका ने ईरान पर जीबीयू-57 (बंकर बस्टर) बी-2-बॉम्बर से गिराए तो ऐसा करने के पीछे तर्क था ईरान को परमाणु-शक्ति बनने से रोकना। लेकिन अबकी बार हमले के औचित्य को लेकर ट्रम्प का कहना है कि ईरानी शासन बदलना होगा। लेकिन ईरान और वेनेजुएला में अंतर है। इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड कॉर्प्स की कमान किसी एक व्यक्ति के हाथ में नहीं, एक समूह के पास होती है।

जीने की राह

पं. विजयशंकर मेहता
humarehanuman@gmail.com

मन को एकाग्र करें, नियंत्रित करें और तब कोई काम करें

शांति के मामले में धर्म और विज्ञान एक जगह पर सहमत हैं और वो ये कि मन पर काम किया जाए। विज्ञान कहता है माइंडसेट अगर ठीक है तो विपरीत परिस्थिति में भी आप शांत रह सकेंगे। यही बात धर्म भी अपने ढंग से कहता है। जब कथा सुना रहे थे गरुड़ जी को काकभुशुंडि तो तुलसी लिखते हैं- प्रभु अवतार कथा पुनि गाई, तब सिसु चरित कहेसि मन लाई। प्रभु के अवतार की कथा का वर्णन किया, उसके बाद मन लगाकर राम जी की बाल लीलाएं कहीं। ये जो मन लगाकर शब्द है, इसका अर्थ यह है कि मन को एकाग्र करें, नियंत्रित करें और तब कोई काम करें। पिछले दिनों दुनिया ने दिल्ली आकर एआई पर चिंतन किया। लेकिन जो एआई के जानकार हैं, जिनके पास थोड़ी भी आध्यात्मिक समझ है, उन्होंने यह बात अवश्य कही कि मन को नियंत्रित करके आत्मा तक जाया जाए तो एआई के नुकसान नहीं होंगे। अभी तो दुनिया के जिम्मेदार लोग एआई को कंधे पर लेकर चल रहे हैं और उन्हें भी समझ नहीं आ रहा कि यह पालकी है या अर्थी? • Facebook:Pt. Vijayshankar Mehta

दूरदृष्टि • सत्ताएं एक व्यक्ति पर आश्रित नहीं होतीं

क्या खामेनेई की मौत ईरान को तोड़ने के लिए काफी है?

महायुद्ध

लेफ्टिनेंट जनरल सैयद अता हसनैन
कश्मीर कोर के पूर्व कमांडर

ईरान, अमेरिका और इजराइल का टकराव अब एक खतरनाक दौर में प्रवेश कर चुका है। ईरान के सर्वोच्च नेता अली खामेनेई के साथ ही कई वरिष्ठ सैन्य अधिकारियों और आईआरजीसी कमांडरों के मारे जाने की खबरें बताती हैं कि मामला अब बहुत तूल पकड़ने जा रहा है। लेकिन एक महत्वपूर्ण सवाल अब भी बरकरार है कि क्या ईरान के सर्वोच्च नेता को मार देना वहां की हुकूमत को भी खत्म कर देने के बराबर है?

यकीनन, सैन्य और खुफिया दृष्टिकोण से अमेरिका-इजराइल का साझा अभियान एक उल्लेखनीय उपलब्धि है। नेतृत्व के ठिकानों की पहचान करना, कमांड नेटवर्क में प्रवेश करना और सटीक हमलों को अंजाम देना पुख्ता निगरानी और खुफिया पहुंच को दर्शाता है। ईरान के सत्ता-कुलीनों के लिए संदेश स्पष्ट है- आज कोई भी जगह अमेरिका की पहुंच से दूर नहीं है।

लेकिन राज्यसत्ताएं किसी एक व्यक्ति के इर्द-गिर्द निर्मित नहीं होतीं। वे संस्थाओं, सुरक्षा-संरचनाओं और वैचारिक आस्थाओं पर टिकी होती हैं। नेतृत्व को हुई क्षति के बावजूद इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड कॉर्प्स एक शक्तिशाली संगठन बना हुआ है। ईरान की सत्ता-व्यवस्था के पास उत्तराधिकार का औपचारिक तंत्र भी मौजूद है। विरोध-प्रदर्शनों के बावजूद ईरानी समाज का एक हिस्सा अब भी मौजूदा व्यवस्था को अपने देश की सम्प्रभुता की रक्षक के रूप में ही देखता है।

वॉशिंगटन और तेल अवीव के पास यकीनन इसके बाद अब एक मोमेंटम है। लेकिन अगर वे ऑपरेशन की सफलता को व्यवस्था-परिवर्तन की दिशा में ले जाने की कोशिश करेंगे तो यह इतना आसान नहीं होने जा रहा है। इतिहास बताता है कि बाहरी हमलों के दौरान देश टूटने के बजाय और सुदृढ़ हो जाते हैं। राष्ट्रवादी और धार्मिक भावनाएं आंतरिक असहमतियों पर भारी पड़ने लगती हैं। ईरान लगभग 9 करोड़ की आबादी वाला देश है, जिसकी एक सशक्त सभ्यतागत पहचान रही है। मौजूदा संघर्ष की स्थिति उसके राजनीतिक संकल्प को और मजबूत बना सकती है। ऐसे में यह एक लंबे और कठिन संघर्ष का रूप ले सकता है, जिसके साथ व्यापक अंतरराष्ट्रीय प्रभाव भी जुड़ा होगा।

यों भी, हवाई हमलों के जरिए शासन-परिवर्तन ऐतिहासिक रूप से कठिन सिद्ध हुआ है। हवाई हमलों से बुनियादी ढांचे को क्षति पहुंचाई जा सकती है और नेताओं को रास्ते से हटाया जा सकता है, लेकिन वे गहरी जड़ें जमाए वैचारिक तंत्रों को विरले ही ध्वस्त कर पाते हैं। इराक और लीबिया इसके उदाहरण हैं। सैन्य श्रेष्ठता, सत्ताबदल सुनिश्चित नहीं करती है ।

मौजूदा स्थिति में टकराव कई दिशाओं में आगे बढ़ सकता है। एक संभावना तो यह है कि ईरान युद्ध को आगे बढ़ाने से बचते हुए प्रतीकात्मक किंतु सीमित प्रतिक्रिया देता रहे। दूसरी संभावना यह है कि दोनों तरफ से लंबे समय तक मिसाइल और ड्रोन हमले जारी रहें और सैन्य ठिकानों को निशाना बनाया जाता रहे। यह सीमित युद्ध के दायरे में होगा, हालांकि इसके क्षेत्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर गहरे प्रभाव होंगे।

ईरान के पास प्रॉक्सी नेटवर्क सक्रिय करने या समुद्री मार्गों को निशाना बनाने की क्षमता बनी हुई है। इजराइल की सीमाओं के आसपास दबाव बढ़ाना या होर्मुज की खाड़ी में व्यवधान उत्पन्न करना संघर्ष के क्षेत्र को व्यापक बना सकता है और वैश्विक बाजारों पर दबाव डाल सकता है। लेकिन अगर ईरान किसी प्रमुख अमेरिकी या इजराइली ठिकाने पर गम्भीर प्रहार कर देता है और किसी हाई वैल्यू टारगेट- जैसे विमानवाहक पोत

पश्चिम एशिया में लगभग 95 लाख भारतीय काम करते हैं और हर साल करीब 50 अरब डॉलर घर भेजते हैं। भारत के ऊर्जा आयात का 60% हिस्सा इसी क्षेत्र से आता है। अगर हालात बिगड़े तो भारत पर भी असर पड़ेगा।

या हेलीकॉप्टर वाहक को सीमित क्षति भी पहुंचती है तो यह उनकी ओर से कड़े प्रतिशोध को उकसा सकता है।

इस संघर्ष में भारत का भी बहुत कुछ दांव पर है। पश्चिम एशिया में लगभग 95 लाख भारतीय काम करते हैं और हर साल करीब 50 अरब डॉलर घर भेजते हैं। भारत के ऊर्जा आयात का लगभग 60 प्रतिशत हिस्सा इसी क्षेत्र से आता है। अगर हालात लंबे समय तक बिगड़े, तो तेल की कीमतें, शिपिंग लागत और आर्थिक वृद्धि- तीनों पर असर पड़ेगा। इसलिए पश्चिम एशिया की स्थिरता कोई दूर की कूटनीतिक चिंता नहीं, बल्कि इससे भारत के प्रत्यक्ष राष्ट्रीय हित जुड़े हैं। यदि बड़े पैमाने पर संघर्ष हुआ, तो अपने नागरिकों की सुरक्षित निकासी अपने आप में बड़ी चुनौती होगी।

शुरुआती बढ़त अक्सर अति-आत्मविश्वास पैदा करती है। इस समय दोनों पक्षों के सामने अपने-अपने प्रलोभन हैं- एक के लिए दूसरे को पूरी तरह से ध्वस्त कर देने का, दूसरे के लिए प्रतिशोध लेकर अपने वजूद को साबित करने का। ऐसे माहौल में शांति की बात आदर्शवादी लग सकती है। लेकिन रणनीतिक संयम कई बार अनियंत्रित एस्केलेशन से बेहतर साबित होता है। **(ये लेखक के अपने विचार हैं)**

विश्लेषण • सीबीआई की साख पर भी सवाल उठे हैं

'आप' नेताओं की रिहाई के बाद कांग्रेस क्यों चिंतित है?

सियासत

आरती जेरथ
राजनीतिक टिप्पणीकार
aratijerath@gmail.com

दिल्ली के कथित शराब घोटाला मामले को ट्रायल कोर्ट द्वारा खारिज किया जाना आम आदमी पार्टी के नेताओं अरविंद केजरीवाल और मनीष सिसोदिया के लिए एक अहम मोड़ पर आया है। 2027 में पंजाब, गोवा और गुजरात में विधानसभा चुनाव होने हैं। इन तीनों राज्यों में आप का सियासी दखल है- खासकर पंजाब में, जहां उसे अपनी सरकार बचानी है। ऐसे में अदालत का यह फैसला पार्टी के लिए मनोबल बढ़ाने वाला है। इससे कार्यकर्ताओं में नई ऊर्जा आएगी और पार्टी नैतिक बढ़त का दावा करते हुए तीनों राज्यों में आक्रामक चुनावी मुकाबले की तैयारी करेगी।

इसका असर सीधे कांग्रेस पर पड़ेगा। कांग्रेस को पहले ही अपने घटते जनाधार की चिंता है। वह पंजाब और गोवा में वापसी की उम्मीद कर रही थी और गुजरात में भाजपा को कड़ी टक्कर देने की रणनीति बना रही थी। इस घटनाक्रम पर कांग्रेस की प्रतिक्रिया में बेचैनी साफ झलक रही थी। पार्टी प्रवक्ता पवन खेड़ा ने यह कहते हुए कि चुनाव से ठीक पहले आप नेताओं को राहत मिलना महज संयोग नहीं हो सकता, भाजपा पर आरोप लगाया कि वह कांग्रेस को कमजोर करने के लिए उसके प्रतिद्वंद्वियों को खड़ा कर रही है। उनकी यह थ्योरी भले अतिरंजित लगे, लेकिन हकीकत यह है कि अगर आप दोबारा उभरती है, तो उसका सीधा नुकसान कांग्रेस को हो सकता है- और अप्रत्यक्ष फायदा भाजपा को।

पंजाब में कांग्रेस इस उम्मीद पर दांव लगाए बैठी है कि आप सरकार के खिलाफ एंटी-इंकम्बेंसी और अंदरूनी खींचतान उसे स्वाभाविक बढ़त देगी। भाजपा फिलहाल राज्य में हाशिये की खिलाड़ी है। जब तक वह अपने पूर्व एनडीए सहयोगी शिरोमणि अकाली दल के साथ कोई ठोस गठबंधन नहीं कर पाती, तब तक अगले चुनाव में उसकी बढ़त सीमित ही रहने की संभावना है।

हालांकि, अगर नतीजा त्रिशंकु विधानसभा के रूप में सामने आता है, तो भाजपा को 'किंगमेकर' की भूमिका निभाने की उम्मीद होगी। यह वही रणनीति है, जिसने पूर्वोत्तर के उन कई राज्यों में उसे सफलता दिलाई है, जहां आज वह क्षेत्रीय दलों के साथ गठबंधन में एक जूनियर पार्टनर के रूप में सत्ता में है।

गोवा और गुजरात में भी पिछले विधानसभा चुनावों में आप ने कांग्रेस की कीमत पर ही अपनी पैठ बनाई थी, जिससे दोनों राज्यों में भाजपा की आसान जीत का रास्ता साफ हुआ। ऐतिहासिक रूप से, त्रिकोणीय मुकाबला हमेशा भाजपा के लिए फायदेमंद रहता है, क्योंकि इससे विपक्षी वोट बंट जाते हैं। अदालती फैसले ने केजरीवाल को जैसे नया जीवन दे दिया है। वे इस मौके को पूरी ताकत से भुनाना चाहते हैं, ताकि चार साल तक चले भ्रष्टाचार के दाग और कानूनी लड़ाई के बाद राजनीतिक वापसी की जमीन तैयार की जा सके।

लेकिन इस फैसले ने सीबीआई की साख पर गंभीर सवाल खड़े किए हैं और इस बहस को फिर से जिंदा कर दिया है कि क्या जांच एजेंसियों का इस्तेमाल राजनीतिक विरोधियों के खिलाफ हथियार की तरह किया जाता है। आरोप खारिज करते समय अदालत की भाषा बेहद सख्त थी। सीबीआई को फटकार लगाते हुए कोर्ट ने कहा कि पेश सबूत प्रथम दृष्टया मामला तक नहीं बनाते, गंभीर संदेह तो दूर की बात है। इतना ही नहीं, अदालत ने टिप्पणी की कि पूरी आबकारी नीति का मामला न्यायिक जांच की कसौटी पर खरा नहीं उतरता और पूरी तरह से अविश्वसनीय साबित होता है।

अदालत ने चार्जशीट तैयार करने वाले सीबीआई

कांग्रेस को पहले ही अपने घटते जनाधार की चिंता है। वह पंजाब और गोवा में वापसी की उम्मीद कर रही थी और गुजरात में भाजपा को कड़ी टक्कर देने की रणनीति बना रही थी। लेकिन अब कांग्रेस में बेचैनी साफ झलक रही है।

जांच अधिकारी के खिलाफ विभागीय कार्रवाई की भी सिफारिश की। एक कमजोर मामले ने केजरीवाल को 150 दिन और सिसोदिया को 530 दिन जेल में रखा। इस दौरान भाजपा और कांग्रेस ने उनकी साख पर हमले किए। अंततः आप ने दिल्ली की सत्ता गंवाई और तब से राजनीतिक रूप से दबाव में नजर आ रही थी। चार साल इस मुकदमे की भेंट चढ़ गए। आप नेताओं के पास इसका विरोध करने का कोई ठोस तंत्र भी नहीं है। न्याय की मांग है कि उन्हें सीबीआई के खिलाफ मानहानि, उत्पीड़न और मानसिक प्रताड़ना का मुकदमा दायर करने की अनुमति मिले, खासकर तब, जब अदालत स्वयं जांच अधिकारी के खिलाफ कार्रवाई का संकेत दे चुकी है। लेकिन अभी तो उलटे सीबीआई ही उच्च अदालत में पुनर्विचार याचिका दायर करने पर विचार कर रही है।

(ये लेखिका के अपने विचार हैं)

इस लेख को मोबाइल पर सुनने के लिए **QR कोड** को स्कैन करें।

दैनिक भास्कर अब आप NYT के सभी आर्टिकल **DB एप** पर हर मंगलवार पढ़ सकते हैं। डाउनलोड करें डीबी एप।

© The New York Times

दैनिक भास्कर से विशेष अनुबंध के तहत

इस हफ्ते चर्चा में

40 साल में दस हजार न्यूज शो ब्रॉडकास्ट किए

10 हजार
न्यूज शो ब्रॉडकास्ट कर चुकी है ऑस्ट्रेलिया के न्यूज एंकर रिक आर्डन और सुसान कार की जोड़ी 1985 से अब तक। उन्हें गिनीज रिकॉर्ड बुक में जगह मिली है।

20 प्रतिशत
गिरावट आई है, अमेरिका में 20 -24 साल की ग्रेजुएट महिलाओं की प्रजनन दर में।

10 लाख करोड़ रुपए
जुटाए हैं ओपन एआई कंपनी ने निवेशकों से। अब उसका बाजार मूल्य 66 लाख करोड़ रुपए हो गया है।

एजुकेशन

एआई को लेकर 50% अमेरिकी आशावादी नहीं

विवियन वांग

चीन में शिक्षा के क्षेत्र में गलाकाट होड़ के बीच पैरेंट्स ने अपने बच्चों को आगे बढ़ाने के लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का सहारा लेना शुरू कर दिया है। कुछ लोग बच्चों को संवाद करने वाले लर्निंग गेम्स दे रहे हैं या उनका होमवर्क कराने के लिए चैटबॉट का इस्तेमाल करते हैं। अन्य लोग भाषा की पढ़ाई के लिए एआई गैजेट्स का उपयोग करते हैं। अमेरिका में बहुत लोग चिंतित रहते हैं कि एआई बच्चों को गलत जानकारी देता है, लेकिन चीनी यूजर एआई से पढ़ाई कर रहे हैं। केपीएमजी के 2025 के एक ग्लोबल सर्वे में 90 फीसदी चीनियों ने बताया कि वे टेक्नोलॉजी के बारे में आशावादी हैं। जबकि अमेरिका में ऐसे सिर्फ 50 फीसदी लोग हैं। लोगों की दिलचस्पी के कारण चीन में शिक्षा टेक्नोलॉजी का बाजार तेजी से बढ़ रहा है। अनुमान है, यह 3.94 लाख करोड़ रुपए का है। कई परिवार एआई के कारण बच्चों की पढ़ाई में राहत महसूस करने लगे हैं।

© The New York Times

ओपिनियन अमेरिका फर्स्ट पर फोकस का वादा कर सत्ता में आने वाले राष्ट्रपति ट्रम्प अब दुनिया में ताकत दिखाने लगे हैं

ट्रम्प भाषणों में युद्ध का विरोध करते रहे, अब सरकारें बदल रहे हैं

पीटर बेकर

डोनाल्ड ट्रम्प ने 2016 के अपने पहले राष्ट्रपति चुनाव में कहा था सैन्य अभियानों से शासन में किया गया परिवर्तन पूरी तरह विफल साबित होता है। साथ ही विदेशी सरकारों को गिराने की होड़ बंद करने की बात कही थी। 2024 के चुनाव में जंग न छेड़ने का दावा किया था। यह भी कहा था कि यदि कमला हैरिस जीतेंगी तो वे निश्चित तौर पर हमें दूसरे विश्व युद्ध में झोंक देंगी।

चुनाव जीतने के बमुश्किल एक साल बाद ही ट्रम्प विदेशी शासनों को उखाड़ फेंकने की होड़ में जुट गए हैं। उन्होंने सरकार हटाने के एकमात्र लक्ष्य के लिए ईरान में अमेरिका की पूरी फौजी ताकत लगा दी है।

अमेरिका फर्स्ट पर फोकस का वादा करके सत्ता में आए ट्रम्प विदेशों में ताकत दिखा रहे हैं। ईरान को मिलाकर ट्रम्प ने अपने दूसरे कार्यकाल में नौवीं बार सैनिक कार्रवाई का आदेश दिया है। उन्होंने वेनेजुएला में सरकार गिरा दी है। क्यूबा के तानाशाह का तख्ता पलटने की धमकी है। नई

भाषणों में इस तरह युद्ध का विरोध करते रहे ट्रम्प

ट्रम्प ने कई भाषणों में युद्ध का विरोध किया है। इनमें से कुछ ये हैं-

2012- अब जनमत सर्वेक्षणों में ओबामा की लोकप्रियता में गिरावट आ रही है तो देखिए कि वे लीबिया या ईरान पर हमला करेंगे। वे आमादा हैं।

2013- याद करें मैंने बहुत पहले कहा था कि राष्ट्रपति ओबामा ईरान पर हमला करेंगे क्योंकि उनमें ठीक से बातचीत करने का हुनर नहीं।

2016- हम शासन बदलने की बेकार और खर्चीली नीति बंद करने वाले हैं।

2024- मैं युद्ध शुरू नहीं करने वाला हूं। मैं तो जंग रोकूंगा।

जंग की घोषणा के बारे में अपने सोशल मीडिया वीडियो में ट्रम्प ने ईरान के पिछले करीब पचास सालों का ब्योरा दिया है। इसमें ईरान द्वारा परमाणु हथियार, बैलिस्टिक मिसाइल बनाने, अमेरिका और सहयोगियों पर हमला करने वाले आतंकवादी गुटों का समर्थन,1979 में तेहरान में अमेरिकी दूतावास पर कब्जा और अभी हाल में पुलिस के हाथों ईरानी प्रदर्शनकारियों के जनसंहार जैसी घटनाएं शामिल हैं, लेकिन उन्होंने नहीं बताया कि इन आक्रामक कार्रवाइयों पर पहले की बजाय अब कार्रवाई की जरूरत क्यों पड़ी है।

ट्रम्प ईरानी खतरे के संबंध में अपने विरोधाभासी बयानों को स्पष्ट नहीं कर सके हैं। पिछले साल इजराइल के साथ ईरान पर हमले के बाद उन्होंने कहा कि हमने देश का परमाणु कार्यक्रम खत्म कर दिया है। इसे कई बार दोहराया भी, लेकिन उन्होंने ये नहीं बताया कि, जो कार्यक्रम पहले ही खत्म हो चुका है, उस पर हमला करने की क्या जरूरत थी।

कैटो इंस्टीट्यूट में विदेश नीति अध्ययन के रिसर्चर ब्रेंडन बक का कहना है, ईरान में शासन परिवर्तन का घोषित लक्ष्य उनके 2016 के विचारों के खिलाफ है। ट्रम्प के आलोचकों ने उन पर अपने वादों को भुलाने का आरोप लगाते हुए उनके पिछले बयानों की याद दिलाई है।

पिछले एक साल में ट्रम्प का सार्वजनिक रुख बदला है। वे किसी समय स्वयं को ऐतिहासिक शांति निर्माता के बतौर पेश करते हैं। अफसोस जताते हैं कि उन्हें नोबल शांति पुरस्कार नहीं मिला है। ईरान सहित आठ युद्धों को खत्म कराने का दावा करते हैं। वे अगले क्षण ग्रीनलैंड पर कब्जे, पनामा नहर हासिल करने, क्यूबा को दबाने और वेनेजुएला के समान कोलंबिया के राष्ट्रपति को पकड़ने की धमकी देते हैं।

कुछ समर्थक भी जता रहे विरोध

ट्रम्प की आलोचना करने वालों में सिर्फ उदारवादी नहीं बल्कि ट्रम्प के मेक अमेरिका ग्रेट अगेन आंदोलन के प्रमुख नेता भी शामिल हैं। उनकी शिकायत है, वे जिन लोगों को कभी ठुकराते थे, अब उनके कब्जे में हैं। दक्षिणपंथी पॉडकास्ट होस्ट टकर कार्लसन और जॉर्जिया की रिपब्लिकन नेता मार्जोरी टेलर ग्रीन ने ट्रम्प पर प्रहार किए हैं।

आक्रामक सलाहकारों की टीम

ट्रम्प ने पहले कार्यकाल में अनुभवी रिपब्लिकन नेताओं या सैनिक अधिकारियों की टीम बनाई थी। यह टीम अक्सर उनके आक्रामक तेवरों को शांत करती थी, लेकिन इस बार जॉन केली, जिम मैटिस, मार्क एस्पर या मार्क मिली जैसे लोगों के बजाय रक्षा मंत्री पीट हेगसेथ, विदेश मंत्री मार्को रूबियो और व्हाइट हाउस की चीफ ऑफ स्टाफ सुसी वाइल्स जैसे आक्रामक सलाहकार हैं। ये लोग राष्ट्रपति की इच्छा को आगे बढ़ाने में यकीन रखते हैं।

© The New York Times

टेक्नोलॉजी कल्पनाशीलता प्रभावित होती है

असली लगने वाले एआई कॉन्टेंट से बच्चों का दिमागी ढांचा बिगड़ता है

अरिजेता लाजका

यूट्यूब पर बच्चों के लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) से बने वीडियो भले ही उन्हें अक्षरों और जानवरों के बारे में पढ़ाने का दावा करते हों, लेकिन उनका बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक असर हो सकता है। कुछ वीडियो में जानवरों या लोगों के चेहरे विकृत रहते हैं। जानकारी भी गलत होती है।

एआई टूल्स और ऑनलाइन ट्यूटोरियल्स की मदद से बने ऐसे कई वीडियो को लाखों व्यू मिलते हैं। अधिकांश वीडियो 30 सेकंड के होते हैं। लिहाजा, बच्चों को आइडिया सोचने और सीखने के लिए कम समय मिल पाता है। इससे उनका मानसिक विकास प्रभावित होता है। मिशिगन यूनिवर्सिटी के मेडिकल कॉलेज में बाल व्यवहार विशेषज्ञ डॉ. जेनी राडेस्की कहती हैं। ये वीडियो केवल ध्यान खींचते हैं।

डॉ. राडेस्की और अन्य विशेषज्ञ मानते हैं कि जरूरत से ज्यादा असली लगने वाले एआई कॉन्टेंट से बच्चों को नुकसान है क्योंकि वे कल्पना और असलियत में अंतर नहीं कर पाते हैं। जार्जटाउन यूनिवर्सिटी में मनोवैज्ञानिक और रिसर्चर मैककाल बूथ का कहना है कि भविष्य में बच्चों को नकली कॉन्टेंट पहचानने में मुश्किल होगी क्योंकि उनका मानसिक ढांचा असंभव, लेकिन असली लगने वाली गतिविधियों के अनुकूल हो जाता है।

बच्चों के लिए नियंत्रित डिजिटल वातावरण मुहैया कराने वाले यूट्यूब किड्स चैनल पर प्रसारित हुए एआई निर्मित जानवरों के वीडियो टिकटॉक पर ट्रेंड कर रहे थे।

© The New York Times

छोटे वीडियो से बचें

अमेरिकन पीडियाट्रिक्स अकादमी ने पैरेंट्स के लिए गाइडलाइन जारी की है। अकादमी ने बच्चों के लिए वीडियो चुनते समय एआई जनरेटेड या बेहद सनसनीखेज कंटेट से बचने की सलाह दी गई है। शॉर्ट वीडियो देखने के खिलाफ भी आगाह किया है।

क्राइसिस

ठिठुरने को मजबूर हो रहे हैं रूस के नागरिक

नतालिया वासिल्येवा

दिसंबर से अब तक रूस के कई हिस्सों में एक दर्जन बड़े ब्लैकआउट और सेंट्रल हीटिंग सिस्टम के ठप होने की घटनाएं हुई हैं। हजारों रूसी नागरिकों को बिना हीटिंग सिस्टम के रातें ठंड में गुजारनी पड़ रही हैं। लंबे समय से यूक्रेन के साथ चल रहे युद्ध के कारण रूस में यह समस्या गहरी हो गई है। सिस्टम फेल होने की घटनाएं बढ़ती जा रही हैं।

एक आधिकारिक जांच में सामने आया कि कुछ बिजली टावर 60 वर्ष से भी पुराने हैं जबकि उन्हें 20 साल पहले बदल दिया जाना चाहिए था। मरमान्स्क की एक लाइब्रेरी में शरण ले रही एक निवासी ने टेलीविजन पर बयान दिया 'स्थिति बहुत खराब है, हमारे पास न पानी है, न बिजली। आप नहाने नहीं जा सकते, खाना नहीं बना सकते, न अपने बच्चे को नहला सकते हैं।' रूस के निर्माण एवं उपयोगिता मंत्री इरेक फैजुल्लिन ने 2024 में संसद को बताया कि देश की 40 प्रतिशत यूटिलिटी गंभीर रूप से जर्जर हालत में हैं।

© The New York Times

क्राइम डिजिटल अरेस्ट जैसे मामले बढ़े

अमेरिका में बुजुर्गों से हर साल 2.56 लाख करोड़ रुपए के फ्रॉड

पाउला स्पान

अमेरिका में साइबर अपराधी लोगों से हर साल करोड़ों रुपए ठग रहे हैं। ठगी का शिकार होने वाले लोगों में ज्यादातर सीनियर िसटीजन हैं। चिंता की बात यह है कि इनमें कई लोग शर्म के मारे ऐसे अपराधों की रिपोर्ट नहीं करते हैं। फेडरल ट्रेड कमीशन के अनुसार 2024 में 21965 करोड़ रुपए की धोखाधड़ी हुई है। अधिकतर मामले इन्वेस्टमेंट, रोमांस और किसी दूसरे के नाम पर ठगी से जुड़े हैं। कुल नुकसान बहुत अधिक है।

कमीशन ने 2023 में अनुमान लगाया था कि 60 साल से अधिक आयु के अमेरिकियों से हर साल 2.56 लाख करोड़ रुपए ठगे जाते हैं। आबादी के बुजुर्ग होने और ठगों के ज्यादा साधन संपन्न होने की वजह से ऐसे मामले बढ़े हैं। बैंकों और इन्वेस्टमेंट कंपनियों ने धोखाधड़ी बढ़ने पर बचाव के कदम उठाना शुरू कर दिए हैं। ध्यान रहे, भारत में पिछले कुछ वर्षों में डिजिटल अरेस्ट जैसे इस तरह के बहुत मामले सामने आए हैं।

वाशिंगटन ट्रस्ट कम्युनिटी बैंक की चीफ ऑपरेटिंग अधिकारी मैरी नून्स कहती हैं, फाइनेंशियल घोटालेबाज बुजुर्गों को निशाना बना रहे हैं, इसलिए हमारा फोकस उन पर बढ़ा है। अभी हाल में बैंक की सतर्कता से एक 75 वर्षीय महिला धोखाधड़ी का शिकार होने से बच गई। बैंक ने बुजुर्ग कस्टमर और उनके परिवारिक सदस्यों को फ्राड और शोषण के खतरों के बारे में सलाह देना शुरू किया है। रिटायर्ड लोगों की संस्था एएआरपी ने एक मुफ्त वीडियो प्रोग्राम बैंकसेफ बनाया है। यह बैंकों, वित्तीय संस्थाओं के कर्मचारियों को बुजुर्गों के संभावित आर्थिक शोषण को पहचानने के तरीके बताती है। 1500 वित्तीय संस्थान प्रोग्राम का इस्तेमाल करते हैं। कुछ वर्ष पहले तक फाइनेंशियल संस्थाएं ग्राहक की स्वायत्तता पर ज्यादा जोर देती थीं, लेकिन सरकार और इंडस्ट्री की नीतियों में बदलाव से सतर्कता बढ़ी है। संसद ने सीनियर सेफ एक्ट पास किया है। इसमें संदिग्ध आर्थिक शोषण और घोटाले की जानकारी सरकारी अधिकारियों को देने पर बैंकों और वित्तीय संस्थाओं को सुरक्षा दी गई है।

© The New York Times

बिज़नेस भास्कर
Business Standard और TheEconomist की ख़बरों के साथ
नई दिल्ली, मंगलवार 3 मार्च, 2026

भास्कर विश्लेषण 2026 में अब तक 6% गिरने के बाद भारतीय शेयरों के दाम वाजिब हुए

67 फीसदी शेयर 200 दिन के एवरेज से नीचे, ईरान युद्ध 1 हफ्ते में शांत हुआ तो बड़ा मौका

भास्कर न्यूज | मुंबई

सेंसेक्स सोमवार को 1,048 अंक गिरकर 80,239 पर आ गया। साथ ही इस साल इसमें 6% गिरावट आ चुकी है। अभी यह छह महीने के निचले स्तर पर है। दूसरी तरफ निफ्टी 500 के 67% शेयर 200 दिन के औसत स्तर से नीचे हैं। यह व्यापक कमजोरी का संकेत है। इस बीच भारतीय शेयर बाजार में डर का पैमाना इंडिया विक्स एक ही दिन में 23% बढ़कर 16.86 पर पहुंच गया। इस घबराहट की मोटे तौर पर एक ही वजह है। ब्रेंट क्रूड 14 महीने की ऊंचाई 82.40 डॉलर प्रति बैरल पर पहुंच गया है, जबकि भारत जरूरत का करीब 90% तेल आयात करता है। कारण यह है कि ईरान पर इजराइल और अमेरिका के हमले के बाद कच्चे तेल की आपूर्ति बड़े पैमाने पर बाधित होने की आशंका है। लेकिन शेयर मार्केट के एक्सपर्ट्स इस घबराहट भरी बिकवाली को फौरी सेंटीमेंट का नतीजा मान रहे हैं।

स्वतंत्र विश्लेषक अंबरीश बालिगा ने कहा कि यदि ईरान युद्ध एक हफ्ते में शांत हो जाता है तो भारतीय अर्थव्यवस्था पर कोई असर नहीं होगा। ऐसे में बाजार की गिरावट न सिर्फ थमेगी, बल्कि तेजी भी शुरू हो सकती है। हालिया गिरावट के बाद भारतीय बाजार फेयर वैल्युएशन पर आ गया है यानी शेयरों के दाम वाजिब हो गए हैं।

मौका या रिस्क... बेंचमार्क सेंसेक्स 6 महीने के निचले स्तर पर आया

बेंचमार्क	लेवल	मौजूदा स्थिति
सेंसेक्स	80,238	6 महीने का निचला स्तर
निफ्टी 500	67% शेयर नीचे	तकनीकी कमजोरी इंडिया विक्स
200 दिन औसत	1 दिन में +23%	ऊंची अस्थिरता
ब्रेंट क्रूड	82.40/बैरल	14 माह की ऊंचाई (महंगाई का जोखिम)
मिडकैप	20% नीचे	आकर्षक होने लगा
स्मॉलकैप	30% नीचे	आकर्षक पर रिस्की

आगे क्या... डिफेंस, ऑयल-गैस सेक्टर के शेयरों में मजबूती के संकेत

सेक्टर	मौजूदा असर	आगे की संभावना
एविएशन	ईंधन लागत बढ़ेगी	दबाव जारी
पेंट, टायर, केमिकल	कच्चे माल की लागत बढ़ी	मार्जिन पर दबाव
ऑयल मार्केटिंग कंपनियां	अंडर-रिकवरी का खतरा	मिला-जुला असर
ऑयल-गैस	क्रूड बढ़ा, आय बढ़ेगी	फायदे में
डिफेंस	तनाव से मांग बढ़ी	मजबूत रुझान
बैंकिंग / फाइनेंशियल	दबाव, फंडामेंटल्स मजबूत	लंबी अवधि में मौका

शेयर सस्ते: स्मॉल-मिडकैप शेयर आकर्षक, धीरे-धीरे पैसे लगा सकते हैं

निफ्टी-50 ऐतिहासिक औसत के आसपास हैं। पर स्मॉल, मिडकैप शेयर सितंबर 2024 के रिकॉर्ड ऊंचे स्तर से 25-35% तक गिर चुके हैं। कोविड महामारी, रूस-यूक्रेन और गाजा जैसे संकटों के बाद के आंकड़े बताते हैं कि छह महीने बाद बाजार पर इन घटनाओं का स्थायी असर नहीं रहा। इसलिए घबराहट में बेचना बड़ी गलती होगी। आईसीआईसीआई डायरेक्ट के पंकज पांडे के मुताबिक, इस सेगमेंट में थोड़ा-थोड़ा निवेश शुरू करना चाहिए। बैंकिंग, ऑटो, कैपिटल गुड्स और डिफेंस जैसे सेक्टर में खरीदारी सही रणनीति हो सकती है।

क्या कहते हैं विशेषज्ञ...

हफ्तेभर युद्ध खिंचा तो बेअसर

ईरान युद्ध हफ्ते भर भी खिंचा तो भारतीय अर्थव्यवस्था को कोई नुकसान नहीं होगा। इतने दिन तक झटका झेलना आसान है। लेकिन यदि लड़ाई इससे ज्यादा चली तो दिक्कतें शुरू हो सकती हैं। ऐसे में बाजार और गिर सकता है।
-अंबरीश बालिगा, स्वतंत्र विश्लेषक

अप्रैल से पलट सकता है ट्रेंड

बाजार में अगले कुछ दिन अस्थिरता रहेगी, लेकिन बड़ी गिरावट की आशंका कम है। अप्रैल, 2026 से बाजार का रुख पलटने की उम्मीद है। छोटी-मझोली कंपनियों के शेयरों के दाम अब बहुत आकर्षक हो गया हैं।
-जी. चोक्कालिंगम, एमडी, इक्विनॉमिक्स

निफ्टी: 24,750 पर मजबूत सपोर्ट

निफ्टी को 24,750 पर बड़ा सपोर्ट है। यानी इसके इससे नीचे आने की आशंका कम है। यदि यह इससे ऊपर रहे तो 25,075 तक की रिकवरी संभव है। मौजूदा रुझान कमजोर, लेकिन ओवरसोल्ड है। ऐसे में बाउंस बैक से इनकार नहीं किया जा सकता।
-श्रीकांत चौहान, हेड इक्विटी रिसर्च,

न्यू ट्रेंड्स • प्रोटीन सप्लीमेंट मार्केट 7,461 करोड़ का, एफएमसीजी से तेज वृद्धि

देश में प्रोटीन मार्केट की रफ्तार 4 गुना, टियर-2 शहरों में 40% ग्रोथ

भास्कर न्यूज | मुंबई

भारत में प्रोटीन प्रोडक्ट की बिक्री तेजी से बढ़ रही है। अमेजन इंडिया के आंकड़े बताते हैं कि प्रोटीन और न्यूट्रिशन पोर्टफोलियो में 35% की बढ़ोतरी हुई, जबकि सामान्य एफएमसीजी सेक्टर की ग्रोथ सिर्फ 9% है। आईएमएआरसी का अनुमान है कि 2024 में भारत का प्रोटीन सप्लीमेंट बाजार 7,461 करोड़ रुपए का था, जिसके 2033 तक 13,186 करोड़ तक पहुंचने की संभावना है।

प्रोटीन सप्लीमेंट्स के प्रीमियम प्रोडक्ट (₹4,500 से अधिक दाम वाले) की बिक्री सामान्य से 3.5 गुना तेजी से बढ़ रही है। यह ग्रोथ केवल बड़े शहरों तक नहीं है, जहां बेंगलुरु जैसे शहर 50-59% की दर से बढ़ रहे हैं। कोल्हापुर, मंगलुरु, देहरादून और अंबाला जैसे टियर-2,3 शहरों में भी 40% की ग्रोथ देखी जा रही है। रेडसीर स्ट्रैटजी कंसल्टेंट्स के मृगांक गुटगुटिया का कहना है कि भारत में अब लोग सेहत के लिए प्रीमियम देने को तैयार हैं। अंडे को ही लें, 2011 में खपत 2,500 टन थी, जो 2024 में 5 हजार टन पहुंच गई। अंडे का बाजार सालाना 7% बढ़ रहा है और 70 हजार करोड़ रुपए का हो गया है।

भास्कर नॉलेज
क्या प्रोटीन सप्लीमेंट्स वाकई पोषण की समस्या सुलझाने में सक्षम हैं?

▪ जो प्रोडक्ट किफायती दाम पर 60 ग्राम प्रोटीन उपलब्ध कराएंगे, वो ही टिकेंगे

आईसीएमआर के अनुसार, एक स्वस्थ वयस्क को रोजाना औसतन 60 ग्राम प्रोटीन लेना चाहिए। शहरी भारत में प्रोटीन की खपत औसतन 37 ग्राम है। कंपनियां ने इसी गैप को पहचान लिया है। प्रोटीन कुल्फी, प्रोटीन लस्सी, प्रोटीन छाछ और प्रोटीन पनीर जैसे टर्म से प्रोडक्ट की ब्रांडिंग कर रही हैं। उदाहरण के लिए जो प्रोडक्ट ₹20 में बिकता था, उसके हाई-प्रोटीन वर्जन को ₹30 या ₹40 में बेचना आसान हो गया है।

▪ 'हेलो हेल्थ' को भी पहचानें

विशेषज्ञों का कहना है कि एक कुल्फी में 10 ग्राम प्रोटीन है, जो दैनिक जरूरत का 15-20% है। वैसे ही, प्रोटीन ब्रेड में सामान्य ब्रेड से 1-2 ग्राम प्रोटीन ज्यादा होता है। कई बार हाई प्रोटीन के नाम पर बेचे जाने वाले स्नैक्स में शुगर और फैट की मात्रा ज्यादा होती है। ये 'हेल्थ हेलो' इफेक्ट है, जहां हम एक अच्छी चीज के चक्कर में बाकी नुकसानदेह चीजों को नजरअंदाज कर देते हैं।

▪ दावे खोखले, रिस्की भी...

75% प्रोटीन प्रोडक्ट्स में लेड, 27.8% में कैडमियम और 94.4% में कॉपर मिली। 69.4% यानी 25 प्रोडक्ट्स पर जितना प्रोटीन लिखा था, असल में उससे 10 से 50% कम प्रोटीन था। ये नतीजा जर्नल मेडिसिन में 2024 में प्रकाशित केरल के राजगिरी हॉस्पिटल के डॉ. सिरिएक एब्बी फिलिप्स की रिसर्च में निकाला गया है।

▪ ...तो बेक्ड नॉट फ्राइड की तरह यह ट्रेंड खत्म हो सकता है

प्रोटीन की कमी असली समस्या है। कंपनियां इसे एक मौके की तरह देख रही हैं। जो कंपनियां स्वाद से समझौता नहीं करेंगी, दाम सामान्य रखेंगी वहीं टिकेंगी वरना यह ट्रेंड भी 2016 के 'बेक्ड नॉट फ्राइड' की तरह खत्म हो जाएगा, जहां चिप्स, नमकीन के पैकेट पर ऐसे दावे किए गए, पर स्वाद और संतुष्टि की कमी के कारण सफल नहीं हो पाया।

बिजनेस ब्रीफ

भारत का चालू खाता घाटा बढ़कर जीडीपी का 1.3%

मुंबई | अक्टूबर-दिसंबर तिमाही में भारत का चालू खाता घाटा (सीएडी) बढ़कर 13.2 अरब डॉलर (जीडीपी का 1.3%) हो गया। एक साल पहले इसी अवधि में यह 11.3 अरब डॉलर था। व्यापार घाटा बढ़ने और सोने के आयात में उछाल को इस गिरावट का मुख्य कारण है। यह देश में आने वाले और बाहर जाने वाले विदेशी पैसे का अंतर है। घाटा बढ़ने से रुपए की वैल्यू और विदेशी मुद्रा भंडार पर दबाव पड़ सकता है।

युद्ध से भारतीय चाय निर्यात पर संकट, भुगतान अटके

नई दिल्ली| अमेरिका-ईरान संघर्ष के कारण भारतीय चाय निर्यात संकट में है। चाय निर्यातक संघ के अनुसार, ईरान को भेजी गई चाय के भुगतान अटक गए हैं और कई खेप समुद्र में फंसी हैं। भारत के कुल चाय निर्यात का लगभग 41% (11.45 करोड़ किलो) हिस्सा खाड़ी देशों को जाता है। होर्मुज स्ट्रेट जैसे समुद्री रास्तों पर तनाव से शिपिंग भाड़ा और बीमा लागत बढ़ सकती है। हालांकि चीन में बढ़ती मांग से कुछ राहत है।

एयरबस बेंगलुरु में 'ग्लोबल कैपेबिलिटी सेंटर' बना रही

बिजनेस संवाददाता | बेंगलुरु

फ्रेंच एयरक्राफ्टी कंपनी एयरबस ने बेंगलुरु के व्हाइटफील्ड में 1.51 लाख वर्ग फुट का ऑफिस स्पेस लीज पर लिया है। टाइटेनियम टेक पार्क में लिए गए इस अतिरिक्त जगह का मासिक किराया 97 लाख रुपए है। इस विस्तार के साथ, इस इमारत में एयरबस का कुल लीज क्षेत्र बढ़कर 8 लाख वर्ग फुट हो गया है। एयरबस यहां अपना विशाल 'ग्लोबल कैपेबिलिटी सेंटर' (जीसीसी) बना रही है। यहां विमानों की डिजाइनिंग और इंजीनियरिंग से जुड़े महत्वपूर्ण तकनीकी काम होंगे। इससे भारत में एयरोस्पेस इंजीनियरिंग के क्षेत्र में बड़े निवेश और विशेषज्ञता का विस्तार होगा। एयरबस ने इस सौदे के लिए 6.27 करोड़ रुपए का सिक्योरिटी डिपॉजिट जमा किया है और कर्मचारियों के लिए 203 पार्किंग स्लॉट सुरक्षित किए हैं।

इलेक्ट्रिक कार की बिक्री फरवरी में 50% बढ़ी

ई-कारों में टाटा अव्वल, महिंद्रा की बिक्री 50 गुना

बिजनेस संवाददाता | मुंबई

फरवरी में इलेक्ट्रिक कारों के रजिस्ट्रेशन में 50% उछाल आया। वाहन पोर्टल के मुताबिक, कुल रजिस्ट्रेशन बीते साल फरवरी के 8,787 यूनिट्स से बढ़कर 13,185 यूनिट्स हो गया। हालांकि जनवरी की तुलना में यह 28% कम है।

ओवरऑल इलेक्ट्रिक वाहनों की बिक्री फरवरी में जनवरी के मुकाबले 12% गिरावट आई, लेकिन पिछले साल फरवरी के मुकाबले 38% बढ़ोतरी हुई। ई-कारों की बिक्री में टाटा पैसेंजर मोटर्स ने 5,230 यूनिट्स के साथ 40% मार्केट शेयर पर कब्जा बरकरार रखा। महिंद्रा भी पिछले साल 55 के मुकाबले इस साल करीब 50 गुना 2,783 कारें बेचकर दूसरे नंबर के करीब पहुंच गई।

अब हर महीने 1 लाख ई-दो पहिया बिक रहे, ग्रोथ 45%

ई-दोपहिया: यह ईवी बाजार का सबसे बड़ा हिस्सा है। माह-दर-माह 9.5% की गिरावट आई, पर अब भी हर महीने 1 लाख से ज्यादा स्कूटर बिक रहे हैं। पिछले साल से तुलना करें तो इसमें 45.6% की शानदार बढ़त है।

थ्री-व्हीलर: इसमें महीने के आधार पर 12.4% की गिरावट रही, लेकिन सालाना आधार पर 25.1% की वृद्धि दर्ज की गई।

पैसेंजर व्हीकल (कारें): कारों की बिक्री में जनवरी के मुकाबले 28.3% की सबसे बड़ी गिरावट देखी गई, फिर भी पिछले साल के मुकाबले यह 50% ऊपर है।

एमजी को झटका, बाजार हिस्सेदारी 39% से घटकर 25%

कंपनी	फरवरी-26 (यूनिट्स)	मार्केट शेयर (%)	फरवरी-25 (यूनिट्स)	मार्केट शेयर (%)
टाटा पैसेंजर इलेक्ट्रिक	5,230	40%	3,465	39.43%
जेएसडब्ल्यू एमजी मोटर	3,243	25%	3,440	39.15%
महिंद्रा इलेक्ट्रिक	2,783	21%	55	0.63%
हुंडई	303	2%	775	8.82%

सोर्सः वाहन डेटा

कोलकाता और शंघाई के बीच डायरेक्ट डेली फ्लाइट 29 मार्च से

भास्कर न्यूज | कोलकाता

इंडिगो 29 मार्च से कोलकाता और शंघाई के बीच रोजाना डायरेक्ट फ्लाइट शुरू कर रही है। फ्लाइट नंबर 6ई 1709 कोलकाता से रात 9:45 बजे रवाना होगी और अगले दिन सुबह 4:40 बजे शंघाई पहुंचेगी। वापसी में यह शंघाई से सुबह 5:40 बजे रवाना होगी और सुबह 9:05 बजे कोलकाता लौटेगी। इंडिगो के ग्लोबल सेल्स हेड विनय मल्होत्रा ने कहा, 'कोलकाता-शंघाई के बीच डायरेक्ट फ्लाइट भारत को प्रमुख वैश्विक गंतव्यों से जोड़ने की हमारी प्रतिबद्धता दर्शाता है।' यह सर्विस भारत-चीन के बीच द्विपक्षीय व्यापार को बढ़ावा देगी, पर्यटन को प्रोत्साहन मिलेगा और सांस्कृतिक आदान-प्रदान बढ़ेगा। पश्चिम बंगाल से चीन को समुद्री उत्पाद, चमड़ा और विशेष टेक्सटाइल निर्यात बढ़ाने के संदर्भ में यह महत्वपूर्ण कदम है।

आसमान में तैरता 236 करोड़ का स्मार्ट होम

प्राइवेट जेट में 4के फिल्मों का मजा, वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग भी, 5580 किलोमीटर की रेंज

न्यूयॉर्क| ये तस्वीर ब्राजीलियाई विमान कंपनी एम्ब्रेयर के नए प्राइवेट जेट प्रेटर 600ई की है। यह बिना रुके लंदन से न्यूयॉर्क तक (5,580 किमी) की उड़ान भर सकता है। सबसे बड़ी खूबी इसकी स्मार्ट विंडो है, जो इसे दूसरे प्राइवेट जेट्स से अलग बनाती है। 42 इंच के 4के ओएलईडी टचस्क्रीन पर फिल्में देख सकते हैं, वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग कर सकते हैं या विमान के बाहर लगे तीन कैमरों की मदद से बाहर का नजारा लाइव देख सकते हैं। इसमें यात्री फोन के एप बोलकर केबिन की लाइट, तापमान और मनोरंजन सिस्टम कंट्रोल कर सकते हैं। इस लग्जरी जेट की कीमत लगभग 2.58 करोड़ डॉलर (करीब 236 करोड़ रुपए) होने का अनुमान है।

सितंबर 2024 का सर्वसम्मत प्रस्ताव बरकरार

टाटा ट्रस्ट्स का सपोर्ट अब भी चंद्रशेखरन को

निवेदिता मुखर्जी | नई दिल्ली

टाटा संस के चेयरमैन एन चंद्रशेखरन के तीसरे कार्यकाल को लेकर अनिश्चितता बनी हुई है। लेकिन

उनके पद पर बने रहने की संभावना ज्यादा है। इसकी सबसे बड़ी वजह टाटा ट्रस्ट्स का एक प्रस्ताव है, जिसमें चंद्रशेखरन को तीसरा कार्यकाल देने की सिफारिश की गई थी। वह प्रस्ताव अब भी वैध है। सितंबर 2024 में ट्रस्ट्स के चेयरमैन नोएल टाटा और वाइस चेयरमैन वेणु श्रीनिवासन ने यह प्रस्ताव रखा था, जो सर्वसम्मति से पारित हुआ था।

यह मामला हाल में तब सुर्खियों में आया जब 24 फरवरी को हुई टाटा संस की बोर्ड बैठक में नोएल टाटा ने कुछ चिंताएं जताईं। उन्होंने कहा कि जब तक कंपनी के प्राइवेट रहने की गारंटी न मिले, चंद्रशेखरन के कार्यकाल के नवीनीकरण पर फैसला न हो। चंद्रशेखरन ने भी कहा कि यह निर्णय टाटा संस और ट्रस्ट्स की सहमति से ही होना चाहिए। अब तक टाटा ट्रस्ट्स की इस विषय पर कोई बैठक नहीं हुई है।

चंद्रशेखरन की तीसरी पारी की संभावना इसलिए...

टाटा ट्रस्ट्स का सर्वसम्मत प्रस्ताव अभी निरस्त नहीं हुआ है। 62 वर्षीय चंद्रा 2017 से टाटा समूह को बदलाव की राह पर ले जा रहे हैं। तीसरे कार्यकाल के अंत में वे 68 वर्ष के होंगे, जो नियमों के दायरे में। सरकार भी ट्रस्ट्स के आंतरिक विवादों पर नजर रख रही है और स्थिरता चाहती है। ऐसे में नेतृत्व में निरंतरता की संभावना बनी हुई है।

बंद पड़े 1.3 लाख खातों के ऑटो-सेटलमेंट को मंजूरी

बिना आवेदन बैंक अकाउंट में आएगी ईपीएफ की रकम

भास्कर न्यूज | नई दिल्ली

संगठित क्षेत्र के करोड़ों कर्मचारियों को बड़ी राहत मिली है। केंद्रीय मंत्री डॉ. मनसुख मांडविया की अध्यक्षता

में केंद्रीय न्यासी बोर्ड (सीबीटी) की बैठक में वित्त वर्ष 2025-26 के लिए ईपीएफ पर 8.25% ब्याज की सिफारिश की गई। सीबीटी ने निष्क्रिय ईपीएफ खातों में 1,000 रुपए या उससे कम बकाया के लिए स्वतः ऑटो-सेटलमेंट की पायलट परियोजना को मंजूरी दी। पहले चरण में करीब 1.33 लाख खाते और लगभग 5.68 करोड़ रुपए इस दायरे में आएंगे। राशि सीधे आधार-लिंक्ड बैंक खातों में जमा होगी।

विवाद निपटारे के लिए 'एकमुश्त माफी' को मंजूरी

श्रमिकों के हितों की रक्षा और विवादों के त्वरित समाधान के लिए छूट प्राप्त प्रतिष्ठानों के लिए एकमुश्त माफी योजना को हरी झंडी दी गई। तय अवधि में अनुपालन पर हर्जाना, ब्याज और जुर्माने में राहत मिलेगी बशर्ते कर्मचारियों को वैधानिक या उससे बेहतर लाभ मिले हों।

नैसकॉम की एडवाइजरी...

आईटी कर्मचारियों को ट्रैवल टालने की सलाह

बिजनेस संवाददाता | नई दिल्ली

मिडिल ईस्ट में बढ़ते भू-राजनैतिक तनाव और अमेरिका-ईरान संघर्ष को देखते हुए आईटी संस्था नैसकॉम ने सदस्य कंपनियों को प्रभावित क्षेत्रों की यात्रा टालने की सलाह दी है। इसके साथ ही वहां मौजूद कर्मचारियों के लिए 'वर्क फ्रॉम होम' प्रोटोकॉल लागू करने का आग्रह भी किया गया है। वर्तमान में कामकाज सामान्य है, पर कंपनियों को दूतावासों के संपर्क में रहने और सतर्कता बरतने को कहा गया है। खाड़ी देशों में लगभग 1 करोड़ भारतीय रहते हैं। इनमें से करीब 35% प्रोफेशनल्स की श्रेणी में आते हैं। आईटी, फाइनेंस, इंजीनियरिंग, हेल्थकेयर इनमें शामिल हैं।

निवेशकों को गुमराह करने वालों पर 'सुदर्शन' नजर

सेबी की बड़ी कार्रवाई... 1.2 लाख फिनफ्लुएंसर की पोस्ट हटाई गईं

मुंबई | बाजार नियामक सेबी ने सोशल मीडिया पर भ्रामक वित्तीय सलाह देने वाले 'फिनफ्लुएंसर्स' के

खिलाफ कार्रवाई तेज कर दी है। सेबी के चेयरमैन तुहिन कांत पांडे के मुताबिक, नियामक ने अब तक अलग-अलग सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स से 1.2 लाख से अधिक भ्रामक पोस्ट हटवाए हैं। डिजिटल दुनिया में बढ़ती धोखाधड़ी और गलत सलाह को रोकने के लिए सेबी ने एआई टूल सुदर्शन तैनात किया है। पांडे के मुताबिक, यह टूल अलग-अलग भाषाओं में ऑडियो, वीडियो और टेक्स्ट कंटेंट ट्रैक करने में सक्षम है। सेबी उन कंटेंट की पहचान कर रहा है जहां नियमों का उल्लंघन हो रहा है। उन्होंने कहा कि सेबी अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और वित्तीय शिक्षा के खिलाफ नहीं है, पर नियमों की एक स्पष्ट लक्ष्मण रेखा है। अगर आपको निवेश की सलाह देनी है, सेबी के साथ पंजीकृत होना पड़ेगा। मतलब है आपके लिए कुछ नियम और शर्तें तय हैं। उन्होंने कहा कि जब लोग शिक्षा के नाम पर निवेशकों को गुमराह करना शुरू करते हैं, तब नियामक को दखल देना पड़ता है।

बिजनेस एंकर

जिस लड़की को चूहों से डर लगता था, उसके नेतृत्व में दुनिया की पहली जीन-एडिटिंग दवा तैयार की गई

मुंबई की रेशमा की लीडरशिप में बायोटेक दिग्गज वर्टेक्स का मार्केट कैप 5 साल में दोगुना 11 लाख करोड़, दुनिया की 100 शक्तिशाली महिलाओं में शुमार

भास्कर न्यूज | मुंबई

साल 1988 की बात है। मुंबई की 11 साल की लड़की माता-पिता के साथ अमेरिका के लॉन्ग आइलैंड पहुंची। सामान कम था, सपने ज्यादा। परिवार छोटे से अपार्टमेंट में रहने लगा। बच्ची का नाम था रेशमा केवलरामानी। आज रेशमा अमेरिका की किसी बड़ी सार्वजनिक बायोटेक कंपनी की पहली महिला सीईओ और प्रेसिडेंट हैं। हाल ही में प्रतिष्ठित 'टाइम' पत्रिका ने उन्हें 'टाइम वुमन ऑफ द ईयर 2026' चुना है और वे 2025 के 100 सबसे प्रभावशाली हस्तियों की लिस्ट में भी हैं। रेशमा के नेतृत्व में वर्टेक्स का बाजार मूल्य काफी बढ़ा है। अप्रैल 2020 में जब रेशमा सीईओ बनीं, उस वक्त कंपनी का मार्केट कैप लगभग 69 बिलियन डॉलर था। अब करीब दो गुना बढ़कर करीब 120 बिलियन डॉलर (करीब 11 लाख करोड़ रुपए) है। वे फॉर्च्यून और टाइम जैसी पत्रिकाओं की प्रभावशाली वैश्विक हस्तियों की सूची में मुकेश अंबानी, मार्क जुकरबर्ग और सुंदर पिचाई जैसे दिग्गजों के साथ हैं। टाइम पत्रिका ने लिखाः 'रेशमा की कहानी 'अमेरिकी सपने' का एक जीवंत उदाहरण है।' रेशमा यह सफर आसान नहीं था। उनके पिता ने न्यूयॉर्क के मैनहट्टन में कपड़े और इलेक्ट्रॉनिक्स छोटी दुकान शुरू की। रेशमा अक्सर वहां काउंटर पर बैठकर ग्राहकों से बात करतीं और शाम को पिता के साथ दिनभर की कमाई का हिसाब रखती थीं। उन्होंने एक इंटरव्यू में कहा था, 'हमारे परिवार में करिअर के लिए सीमित विकल्प थे- इंजीनियरिंग, डॉक्टर या पुजारी। मैंने चिकित्सा चुना।' 1998 में बोस्टन यूनिवर्सिटी से सर्वोच्च सम्मान के साथ स्नातक की डिग्री ली। किडनी विशेषज्ञ बनीं। हार्वर्ड मेडिकल स्कूल से जुड़े संस्थानों में रिसर्च करने लगीं। रेशमा अपनी इस यात्रा पर अक्सर एक रोचक किस्सा साझा करती हैं कि लैब में रिसर्च के दौरान उनका सबसे बड़ा डर चूहे थे। वे मजाक में कहती हैं कि उनके करिअर के बदलाव में इस डर का भी योगदान था।

वो फोन कॉल जिसने सब बदल दिया: वर्ष 2004 में एमजेन बायोटेक कंपनी से उनके पास एक प्रस्ताव आया। यह अवसर कैलिफोर्निया में रिसर्च और डेवलपमेंट विभाग में था। फैसला कठिन था क्योंकि उनका पूरा परिवार और छह महीने के जुड़वां बेटे बोस्टन में थे। जोखिम उठाते हुए उन्होंने और उनके पति ने पुरानी नौकरियां छोड़ीं। कैलिफोर्निया चले गए। रेशमा ने एमजेन में 12 वर्षों तक काम किया और वाइस प्रेसीडेंट तक बनीं।

रेशमा की इन तीन उपलब्धियों ने बायोटेक इंडस्ट्री को नई ऊंचाई दी

1. सिस्टिक फाइब्रोसिस: इस घातक फेफड़ों की बीमारी से जूझ रहे मरीजों की औसत आयु, जो पहले 27 वर्ष थी, वर्टेक्स की दवाओं के कारण अब 70 वर्ष से अधिक होने का अनुमान है।

2. जीन-संपादन: वर्टेक्स ने दुनिया की पहली जीन-एडिटेड चिकित्सा 'कैसगेवी' को मंजूरी दिलाई। यह थैलेसीमिया जैसी बीमारियां अनुवांशिक स्तर पर ठीक करने की दिशा में कारगर है।

3. नशे का हल: जनवरी 2025 में रेशमा ने एक ऐसी दर्द निवारक दवा को स्वीकृति दिलाई जो अफीम पर आधारित नहीं है। इसे नशे की लत का समाधान माना जा रहा है।

विज्ञापन
सारथी वनस्पति (अलवर) और सरिस्का मक्का खल परिवार की ओर से समस्त दूध किसानों को
होली की हार्दिक शुभकामनाएं
देश में सरिस्का मक्का खल क्वालिटी व उत्पादन में प्रथम स्थान पर। सरिस्का मक्का खल में बिनौला खल से कई गुना ज्यादा गुणवत्ता होती है।

अन्य खल की जगह सरिस्का मक्का खल के सेवन से पशुओं में एक समय में एक किलो से ज्यादा दूध में बढ़ोतरी होती है जिससे पशुपालकों को फायदा होता है। सरिस्का मक्का खल में तेल की मात्रा 12% से 14% होती है जिससे दूध फैट्स बढ़ता है और दाम ज्यादा मिलते हैं। जिससे घी और मक्खन भी ज्यादा निकलता है। 1 किलो बिनौला खल लगभग 3 किलो पानी सोखती है तथा 1 किलो मक्का खल लगभग 8 किलो पानी सोखने की क्षमता रखती है। मक्का खल में बिनौले से ज्यादा गुणवत्ता होती है जिससे पशुओं की पाचन क्षमता बढ़ती है। इसमें विटामिन ई होता है। दूध की गुणवत्ता बढ़ती है और दूध पौष्टिक हो जाता है, **आज का किसान जागरूक है– मिलावटी खल दुकानदार को लौटा रहा है।** गुजरात की मिलावटी खल से बचें – **शुद्ध खल अपनाएँ। पशु स्वस्थ किसान समृद्ध।** दूध किसानों को सरिस्का मक्का खल में 100 प्रतिशत विश्वास है इसलिए अच्छी गुणवत्ता व पौष्टिक होने की वजह से किसान दुकानदार से सरिस्का मक्का खल ही लेता है इससे पशु स्वस्थ रहता है तथा दूध किसानों की आमदनी बढ़ती है। सरिस्का मक्का खल की हरियाणा में 5 वर्ष में कई गुना मांग बढ़ गई है और निरंतर बढ़ रही है।
सैनिक पतंजली पशु आहार अग्रोहा मोड़ हिसार 9466088410, बाछोद नारनौल 9416604925, अनाज मंडी नारनौल 9416444741, गर्ग ट्रेडर्स गुड़ मंडी सोनीपत 9416475132, महेन्द्र फीड स्टोर बहादुरगढ़ 8882696329, गुप्ता ट्रेडिंग कम्पनी रेवाड़ी 9466792055, गुड़गांव 8700150131, सोहना तावडू 9416294761, पवन कुमार गुप्ता 8851487655

दुनिया भर में लोग महज ध्यान आकर्षित करने के लिए युद्ध करते हैं। युद्ध के दौरान सभी हत्याएं दरअसल आत्म-घृणा की अभिव्यक्ति हैं।

- एलिस वाकर

वापसी की फिक्र

ईरान पर इजराइल और अमेरिका के साझा हमले के बाद युद्ध का स्वरूप बिगड़ता जा रहा है और कहना मुश्किल है कि आने वाले दिनों में यह कौन-सी दिशा अख्तियार करेगा। खासतौर पर हमले में ईरान के सर्वोच्च नेता अयातुल्ला अली खामेनेई की मौत के बाद ईरान की ओर से जिस तरह की प्रतिक्रिया सामने आ रही है, उसमें मध्य-पूर्व के देशों में भी स्थिति चिंताजनक हो रही है। इस बीच भारत के लिए एक बड़ी फिक्र यह खड़ी हुई है कि अलग-अलग उद्देश्य से मध्य-पूर्व के देशों में गए जो भारतीय फंस गए हैं, उन्हें वहां से सुरक्षित कैसे निकाला जाए। अमेरिका और इजराइल के साझा हमले के जवाब में ईरान ने इजराइल को निशाना बनाने के साथ-साथ बहरीन, सऊदी अरब, कतर समेत कई देशों में स्थित अमेरिकी सैन्य अड्डों पर मिसाइल से हमले किए हैं। ऐसे में समझा जा सकता है कि वहां रहने वाले लोगों के सामने किस तरह की मुश्किलें खड़ी हो रही होंगी। स्वाभावकि ही भारत के सामने बड़ी चिंता उन इलाकों में फंसे भारतीयों को वापस लाने की है।

दरअसल, समूचे पश्चिम एशिया का इलाका इस समय युद्ध क्षेत्र में तब्दील हो गया लग रहा है। स्वाभाविक ही वहां रह रहे तमाम आम लोगों के सामने खुद को सुरक्षित रखना एक बड़ी चुनौती है। दूसरी ओर, जो लोग दूसरे देशों से वहां गए हैं, वे किसी तरह वहां से निकलने की उम्मीद में हैं। ऐसे में भारत सरकार ने युद्ध प्रभावित देशों से भारतीयों को सुरक्षित निकालने के लिए कोशिश शुरू की है, लेकिन ठोस नतीजे के लिए समय रहते कदम उठाना जरूरी है। सुरक्षा मामलों की मंत्रिमंडलीय समिति (सीसीएस) ने पश्चिम एशिया में तेजी से बदलते हालात की समीक्षा की और सभी संबंधित विभागों को निर्देश दिया कि वे घटनाक्रम से प्रभावित भारतीयों की सहायता के लिए जरूरी और व्यावहारिक कदम उठाएं। सरकार की ओर से आश्वस्त किया गया है कि युद्ध के असर से जूझ रहे देशों में भारतीयों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए संबंधित भारतीय दूतावासों से बातचीत की गई है। भारत ने शांति और सुरक्षा के साथ-साथ विवादों के समाधान के लिए संवाद तथा कूटनीति का समर्थन किया है, लेकिन फिलहाल ज्यादा जरूरत इस बात की है कि युद्धग्रस्त इलाकों में फंसे लोगों की सुरक्षित वापसी की प्रक्रिया शुरू की जाए।

गौरतलब है कि ईरान में करीब दस हजार भारतीय नागरिक रहते हैं, जो पढ़ाई और काम करते हैं। वहीं इजराइल में चालीस हजार से ज्यादा भारतीय रहते हैं। इसके अलावा, खाड़ी देशों और पश्चिम एशिया में लगभग नब्बे लाख भारतीय रहते हैं। इन देशों में सैन्य तनाव बढ़ने और युद्ध का दायरा फैलने की वजह से उड़ान सेवाएं व्यापक पैमाने पर बाधित हुई हैं और बहुत सारे वैसे भारतीय उन जगहों के हवाईअड्डों पर फंसे हुए हैं, जो किसी तरह वतन लौटना चाहते हैं। हालांकि इससे पहले कई बार अलग-अलग देशों में भड़के युद्ध के दौरान भारत ने अपने हजारों नागरिकों की सुरक्षित वापसी सुनिश्चित की है। मगर इस बार सबसे बड़ी मुश्किल यह है कि युद्ध में शामिल देशों के बीच हमले अपनी पूरी तीव्रता के साथ जारी हैं और आम लोगों के लिए हवाई क्षेत्र बंद है। जब तक हमलों में कमी नहीं आएगी और यात्री उड़ानों की गुंजाइश नहीं बनेगी, तब तक बचाव अभियान शुरू करना शायद मुश्किल हो। ऐसे में कूटनीतिक पहल और संवाद के सहारे युद्ध प्रभावित इलाकों से भारतीयों की सुरक्षित वापसी का रास्ता निकालने की जरूरत है।

जिम्मेदारी किसकी

उत्तर प्रदेश के फतेहपुर जिले में मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण अभियान में कार्यरत एक बूथ स्तरीय अधिकारी की आत्महत्या की घटना ने प्रशासनिक व्यवस्था और मानवीय मूल्यों एवं संवेदनशीलता को लेकर फिर से गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। खबरों के मुताबिक, यह कर्मी अपनी बेटी की शादी के लिए छुट्टी नहीं मिलने से इस कदर परेशान था कि प्राथमिक विद्यालय के भवन में फंदा लगाकर अपनी जान दे दी। विभिन्न राज्यों में पुनरीक्षण की प्रक्रिया में जुटे कर्मियों पर काम का दबाव होने की खबरें पहले भी आती रही हैं, लेकिन यह मामला सीधे तौर पर व्यवस्था में मनमानी, लापरवाही और असंवेदनशीलता से जुड़ा हुआ है। यह बात सही है कि पुनरीक्षण के कार्य का दबाव विभागीय स्तर पर महसूस किया जा रहा है, लेकिन क्या काम की अत्यधिक व्यस्तता के नाम पर किसी कर्मी को अपनी अति महत्त्वपूर्ण पारिवारिक जिम्मेदारी निभाने से रोका जा सकता है? वह भी ऐसी व्यवस्था में जहां कर्मचारियों के लिए वर्ष भर के अवकाश तय होते हैं!

गौरतलब है कि मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण के दौरान अब तक उठे विवादों में एक मामला बूथ स्तरीय अधिकारियों पर काम के अत्यधिक दबाव का भी रहा है। इस कारण कई कर्मियों के आत्महत्या करने तथा दिल का दौरा पड़ने या अन्य स्वास्थ्य संबंधी दिक्कतों की वजह से मौत हो जाने की खबरें अक्सर आती रहती हैं। अब काम पूरा करने की समयसीमा नजदीक आते ही बूथ स्तरीय अधिकारियों पर दबाव और बढ़ गया है और उन्हें आसानी से अवकाश भी नहीं मिल पा रहा है। ऐसे में एक कर्मी के आत्महत्या कर लेने की यह घटना इसी ओर इशारा करती है। यह समझना भी जरूरी है कि किसी भी व्यक्ति के लिए नौकरी का मतलब यही होता है कि वह अपने परिवार का ठीक से पालन-पोषण कर सके और पारिवारिक जिम्मेदारियों को अच्छी तरह निभा सके। अगर बेटी या बेटे की शादी जैसे अत्यावश्यक कार्यों या आपात स्थिति में किसी कर्मी को छुट्टी ही न मिले, उस नौकरी के क्या मायने रह जाते हैं। बहरहाल, आत्महत्या की इस घटना की गहन जांच होनी चाहिए और दोषियों की जवाबदेही तय कर उन्हें कानून के कठघरे में लाया जाना चाहिए।

भंडारण के संकट से जूझते किसान

किसानों को फसलों की उचित कीमत मिले, इसका ध्यान रखा जाना चाहिए। इसके लिए गोदाम चाहिए, जहां किसान अपनी फसलों को रख सकें। यह समझ से परे है कि विकास के इतने दावे के बावजूद मंडियों में अनाज भंडारण की समस्या आज तक क्यों नहीं सुलझी है?

सुरेश सेठ

भारत एक कृषि प्रधान देश है। पंजाब और हरियाणा जैसे उपजाऊ राज्यों में जो फसलें पैदा की जाती हैं, वही भारत सरकार के अनाज वितरण कार्यक्रमों का आधार बनती हैं। निस्संदेह कृषि प्रधान राज्यों में पंजाब सबसे आगे है। आंकड़े बताते हैं कि पिछले साल की जो नियमित फसल खरीद सरकारी एजंसियों ने की है, उसमें उन्होंने सबसे अधिक अनाज पंजाब से ही उठाया है। फिर भी देश का किसान और विशेष रूप से पंजाब का किसान हाड़-तोड़ मेहनत के बावजूद अभी तक आर्थिक मदद का मोहताज क्यों है? साठ के दशक में पंजाब में कृषि क्रांति हुई थी। इस दौरान चावल और गेहूं की कई किस्में पेश की गईं। जिससे पंजाब अनाज उत्पादन में आत्मनिर्भर बना। मगर इसके सकारात्मक प्रभाव बाद में समाप्त हो गए। दूसरी ओर, कृषि की जो मूल कठिनाइयां थीं, उन्हें हल करने का प्रयास नहीं हुआ। जब किसान अपनी फसलों को लेकर कृषि मंडियों में जाता है, तो उसे अपनी फसल का भंडारण करने के लिए उचित जगह नहीं मिलती। जबकि कायदे से गोदामों में फसलें तब तक रहनी चाहिए, जब तक उसकी उचित कीमत नहीं मिल जाती।

यह निराशाजनक ही है कि कृषि नीति में स्पष्ट लक्ष्य नहीं दिखता। जिन फसलों की खरीद केंद्रीय एजंसियां करती हैं, उसमें किसानों को उचित कीमत मिले, इसका ध्यान रखा जाना चाहिए। इसके लिए गोदाम चाहिए, जहां किसान अपनी फसलों को रख सकें। मगर ऐसे गोदामों की कमी है। कई गोदामों में तो खाद्य वितरण के लिए अनाज रखा होता है। इस अनाज के उपयोग की ठोस नीति आज तक नहीं बनाई जा सकी है। पिछले सत्र की फसलों का ही उपयोग नहीं हो पाता, दूसरी ओर नए सत्र की फसल आ जाती है। गोदाम लगभग भरे होते हैं। ऐसे में किसानों की नई फसल वहां रखी नहीं जा सकती। इसलिए उसे खुले प्रांगण में रखना पड़ता है। यहां ये फसलें वायु प्रदूषण और मौसम की दोहरी मार झेलती हैं। बारिश हो जाए, तो फसल खराब होना तय है। जरूरत से अधिक धूप पड़ जाए, तब भी फसल खराब होने का डर। इसे ढकने के लिए पालिथिन भी नहीं मिलती। सबसे बड़ी बात यह है कि इन मंडियों को नियमित मंडियां कहा जाता है। इसके बावजूद रखरखाव का उचित इंतजाम नहीं होता। कई बार तो बोरियां भी नदारद होती हैं। बोरियों की आपूर्ति करने वाले ठेकेदारों की अपनी शिकायतें हैं। ऐसे में अनाज खुले में पड़ा रहता है और खराब होता रहता है। नतीजा गरीब किसानों को उनकी फसलों का उचित दाम नहीं मिल पाता।

अब रबी फसल की खरीद आरंभ होने वाली है। यह अप्रैल 2026 से गेहूं की खरीद के साथ शुरू होगा। देश में फसल विविधीकरण के प्रचार के बावजूद आज भी किसानों के लिए फसल चक्र में दो ही फसलें हैं। एक गेहूं और दूसरी धान की। रबी का खरीद सीजन गेहूं की खरीद से शुरू होता है। किसानों को उनके श्रम का मूल्य मिलता है। दूसरी ओर खरीफ के मौसम में धान उपजाया और बेचा जाता है। सरकार और कृषि विज्ञानियों का बहुत जोर रहा कि इस चक्र को तोड़ा जाए। विविध फसलों पर काम शुरू हो। कपास उपजाने से लेकर दलहन और तिलहन की खेती पर बहुत जोर दिया गया। मगर अभी तक फसलों में विविधता नहीं लाई जा सकी

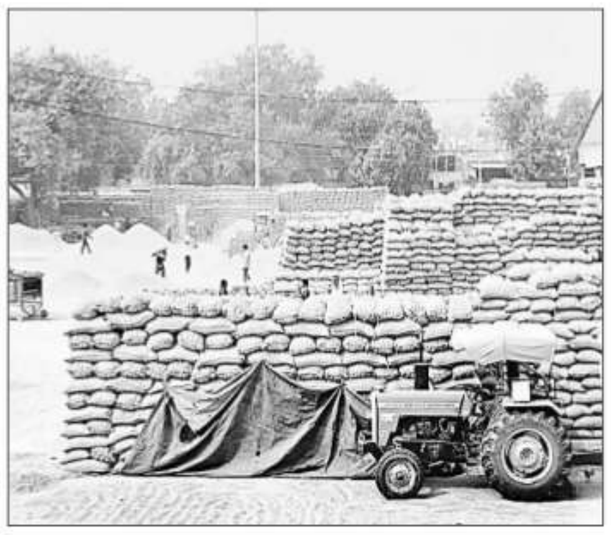

है। इसके कई कारण हैं, लेकिन सबसे बड़ा कारण यह है कि मंडियों में गेहूं और धान रखने के लिए पर्याप्त गोदाम नहीं हैं, तो ऐसे में दूसरी फसलें भी उसी तरह मंडियों में पड़ी रहेंगी और धूप तथा बारिश में खराब होंगी। उनकी गुणवत्ता कम होने पर ऐसे में किसानों के पल्ले क्या आएगा? यह

> यह निराशाजनक ही है कि कृषि नीति में स्पष्ट लक्ष्य नहीं दिखता। जिन फसलों की खरीद केंद्रीय एजंसियां करती हैं, उसमें किसानों को उचित कीमत मिले, इसका ध्यान रखा जाना चाहिए। इसके लिए गोदाम चाहिए, जहां किसान अपनी फसलों को रख सकें। मगर ऐसे गोदामों की कमी है। कई गोदामों में तो खाद्य वितरण के लिए अनाज रखा होता है। इस अनाज के उपयोग की ठोस नीति आज तक नहीं बनाई जा सकी है। पिछले सत्र की फसलों का ही उपयोग नहीं हो पाता, दूसरी ओर नए सत्र की फसल आ जाती है। गोदाम लगभग भरे होते हैं। ऐसे में किसानों की नई फसल वहां रखी नहीं जा सकती।

समझ से परे है कि विकास के इतने दावे के बावजूद मंडियों में अनाज भंडारण की समस्या आज तक क्यों नहीं सुलझी है?

इस समय केवल पंजाब में ही 48.49 लाख मीट्रिक टन गेहूं और 172 लाख मीट्रिक टन धान गोदामों में रखा है। अब पंजाब के अधिकारी केंद्रीय अधिकारियों के साथ बैठक कर रहे हैं। इस बात पर विचार हो रहा है कि गेहूं की फसल खरीदने का वक्त आ गया है, इसलिए बचे हुए समय में भंडारण की समस्या का क्या समाधान किया जाए? स्थानीय प्रशासन अपने-अपने इलाकों में गोदामों से अनाज उठाने का आग्रह सरकार से बार-बार करता है। मगर इसके लिए कोई नीति नजर नहीं आती। पिछले वर्ष घोषणा की गई थी कि अनाज को संभाल कर रखने के लिए नए गोदाम बनाए जाएंगे, लेकिन अभी तक यह घोषणा केवल कागजों में ही हैं। अब अगर समय रहते मौजूदा गोदामों से अनाज उठाने से लेकर और उससे जुड़े वित्तीय मामलों का समाधान केंद्र नहीं कर पाता, तो पिछले मौसम की तरह आगामी खरीफ के मौसम में भी वही समस्याएं सामने आएंगी। इसका खमियाजा अंततः किसानों को ही भुगतना होगा। जब फसलों की खरीद की तैयारियां शुरू होती हैं, तभी समस्याओं पर विचार क्यों किया जाता है? जबकि मालूम है कि साल में दो बार फसलों की खरीद की जानी है। पुराने अनाज को निकालना है और नई फसलों को सहेजना है, तो ऐसे में नए गोदाम बनाने की प्रक्रिया लगातार क्यों नहीं चलनी चाहिए?

अब अगर पंजाब में ही 15 अप्रैल, 2026 तक कम से कम 30 लाख मीट्रिक टन गेहूं का उठान नहीं किया जाता, तो नई फसल के लिए जगह कहां बनेगी? उधर, चावल मिल मालिकों की मांग है कि धान खरीद की प्रक्रिया में उन्हें भी शामिल होने दिया जाए। इसके लिए वे खरीद मूल्य भी कम करवाना चाहते हैं। उनकी ये मांगें मानी जाएंगी, इसकी उम्मीद नहीं है। इसलिए लगता है कि धान की खरीद के समय भी जटिलता बनी रहेगी। गोदामों में जगह की समस्या फिर सामने होगी। ऐसे में किसानों का भला कैसे हो सकेगा?

गौरतलब है कि किसानों को फसल बेचने के लिए मंडियों में उचित ग्राहक तलाशने में कुछ समय लगता है। सरकार न्यूनतम समर्थन मूल्य जरूर घोषित करती है। मगर सच्चाई यह है कि इस मूल्य पर भी किसानों की फसल नहीं बिकती। अगर वह गोदामों में माल उतार कर ग्राहक का इंतजार कर सके, तो उसे ठीक-ठाक दाम मिल सकता है। मगर यहां भी वही कठिनाई है कि उसकी फसल को रखने के लिए सुरक्षित जगह नहीं है। चाहे गेहूं हो या धान, जब यह मंडी में उतारा जाता है, तो पिछला अनुभव यही बताता है कि कभी न कभी, किसी न किसी वजह से मौसम बिगड़ ही जाता है। कभी गेहूं का दाना छोटा हो जाता है, तो कभी धान गीला हो जाता है।

किसान अगर अपनी मेहनत का उचित मूल्य मांग रहा है, तो इसका खयाल क्यों नहीं रखा जाना चाहिए। उनकी समस्याओं का निराकरण तो होना ही चाहिए। ऐसा हो सके, तो किसान पैदावार बढ़ाने के लिए और अधिक मेहनत करेंगे। फिलहाल, भारतीय किसान यथास्थिति के दुश्चक्र में फंसा है। वहीं वे परंपरागत दो फसलों के चक्र से आगे नहीं बढ़ रहे हैं। आज ज्यादातर किसानों की आर्थिक स्थिति कमजोर है। पर्याप्त अनाज उगा भी लें, तो भी उसे तुरंत बेचने की मजबूरी के कारण औने-पौने दाम में उसे निकालना पड़ता है। वह मंडियों में लाचार अपने खून-पसीने को कौड़ियों के दाम नीलाम होते हर बार देखता है।

समावेशी पाठ

अमित कुमार

आधुनिक शिक्षा व्यवस्था लंबे समय से एक संकीर्ण दृष्टिकोण से ग्रस्त रही है, जिसमें ज्ञान का मूल्यांकन केवल पाठ्यक्रम, परीक्षा परिणाम और अंकों की प्राप्ति तक सीमित कर दिया गया है। विद्यालयों और विश्वविद्यालयों की गुणवत्ता आज भी मुख्य रूप से मेधा सूचियों, कटआफ अंकों और रैंकिंग के माध्यम से आंकी जाती है। इस प्रवृत्ति ने शिक्षा को मानव निर्माण की प्रक्रिया के स्थान पर एक यांत्रिक उत्पादन प्रणाली में परिवर्तित कर दिया है। ऐसे परिवेश में सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों की भूमिका पर गंभीर, तर्कसंगत और नीतिगत पुनर्विचार की आवश्यकता है। सह-पाठ्यक्रम गतिविधियां किसी भी अर्थ में शिक्षा के 'परिशिष्ट' नहीं हैं। खेल, साहित्य, कला, वाद-विवाद, विज्ञान प्रदर्शनियां, सामाजिक सेवा, छात्र संगठन, सांस्कृतिक उत्सव और विद्यार्थियों द्वारा संचालित मंच, ये सभी शिक्षा के उस व्यापक उद्देश्य की पूर्ति करते हैं, जो केवल बौद्धिक दक्षता नहीं, बल्कि व्यक्तित्व, चरित्र और नागरिक चेतना के निर्माण से जुड़ा है। औपचारिक पाठ्यक्रम जहां ज्ञान का सैद्धांतिक आधार प्रदान करता है, वहीं सह-पाठ्यक्रम गतिविधियां उस ज्ञान को सामाजिक, नैतिक और व्यावहारिक संदर्भ देती हैं।

बाल्यावस्था में प्राप्त अनुभव व्यक्ति के आत्मविश्वास, जिज्ञासा, नेतृत्व-क्षमता और नैतिक दृष्टि की आधारशिला रखते हैं। खेलकूद विद्यार्थियों में अनुशासन, सहनशीलता और सामूहिकता की भावना विकसित करते हैं। साहित्यिक गतिविधियां भाषा-बोध, आलोचनात्मक चिंतन और वैचारिक परिपक्वता को सुदृढ़ करती हैं। कला और संगीत सौंदर्यबोध तक सीमित नहीं रहते, बल्कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता के विकास में भी केंद्रीय भूमिका निभाते हैं। एक ऐसा गुण, जिसकी आज के वैश्विक कार्यक्षेत्र में अत्यधिक मांग है। प्रशासनिक और संस्थागत दृष्टि से भी सह-पाठ्यक्रम गतिविधियां अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं। छात्र परिषदें, स्कूल कैबिनेट और नेतृत्व कार्यक्रम विद्यार्थियों को शासन, प्रतिनिधित्व और उत्तरदायित्व की प्रारंभिक समझ प्रदान करते हैं। यही मंच उन्हें नियमों के पालन के साथ-साथ निर्णय-निर्माण की जटिलताओं से भी परिचित कराते हैं। लोकतंत्र का अभ्यास अगर कक्षा में नहीं, तो कम से कम विद्यालयी जीवन में आरंभ होना चाहिए।

बढ़ती प्रतिस्पर्धा, अंकों का दबाव और अपेक्षाओं का बोझ विद्यार्थियों को तनाव, अवसाद और सामाजिक अलगाव की ओर धकेल रहे हैं। सामूहिक खेल, नाटक, संगीत और सामाजिक परियोजनाएं विद्यार्थियों को भावनात्मक अभिव्यक्ति और आत्म-स्वीकृति का अवसर देती हैं। शिक्षा यदि मानसिक संतुलन प्रदान न कर सके, तो उसकी बौद्धिक उपलब्धियां भी अर्थहीन हो जाती हैं। पारंपरिक ढांचे में संचालित शिक्षा व्यवस्था और समाज की शिक्षा के बारे में धारणा ने ऐसी बहुत सारी प्रतिभाओं को समय पर खिलने से बाधित कर दिया, जो किसी अन्य गतिविधि में सक्रिय रह कर या हिस्सा लेकर नए शिखर को छू सकती थीं। किताब पढ़ने को एकमात्र सबसे महत्त्वपूर्ण काम मानना ही शिक्षा को बच्चों के लिए बोझ बनाने की कोशिश है।

उच्च शिक्षा के क्षेत्र में सह-पाठ्यक्रम गतिविधियां, विशेषकर विद्यार्थियों द्वारा संचालित कालेज में होने वाले उत्सवों या मेलों के रूप में एक और अधिक परिपक्व स्वरूप ग्रहण करती हैं। सांस्कृतिक, तकनीकी और साहित्यिक महोत्सव जीवन की प्रशासनिक संरचनाओं के सूक्ष्म प्रतिरूप होते हैं। इन आयोजनों में विद्यार्थी बजट निर्धारण, प्रायोजन प्रबंधन, मीडिया समन्वय, समय-सीमा का पालन और आपदा-प्रबंधन जैसे जटिल कौशल अर्जित करते हैं। ऐसे कौशल, जिन्हें कोई औपचारिक पाठ्यक्रम पूरी तरह नहीं सिखा सकता।

दरअसल, सह-पाठ्यक्रम गतिविधियां भविष्य की कार्यशक्ति को अधिक प्रतिस्पर्धी बनाती हैं। आज की वैश्विक अर्थव्यवस्था केवल विशेषज्ञता नहीं, बल्कि बहु-कौशलता, यानी एक साथ कई काम को कुशलतापूर्वक करने की क्षमता रखने वाले व्यक्ति की मांग करती है। नवाचार, सहयोग, नेतृत्व और संप्रेषण, ये सभी गुण सह-पाठ्यक्रम सहभागिता से ही विकसित होते हैं। यही कारण है कि विश्व के प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय और कारपोरेट संस्थान अकादमिक प्रदर्शन के साथ-साथ छात्र गतिविधियों को भी समान महत्त्व देते हैं। तकनीकी और नवाचार के क्षेत्र में भी सह-पाठ्यक्रम गतिविधियां निर्णायक भूमिका निभाती हैं। रोबोट संचालित गतिविधियों वाले क्लब, नवउद्यमों के तहत बिक्री, आधुनिक तकनीकी के महोत्सव और नवाचार पर केंद्रित प्रयोगशालाएं विद्यार्थियों को प्रयोग, विफलता और फिर से प्रयास की संस्कृति से परिचित कराते हैं। यह संस्कृति भारत जैसे देश के लिए विशेष रूप से आवश्यक है, जहां नवाचार ही दीर्घकालिक विकास का आधार बन सकता है।

सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से कालेज में होने वाले महोत्सव और विद्यार्थियों की गतिविधियां विविधता, समावेशन और सहिष्णुता को बढ़ावा देती हैं। विभिन्न भाषाओं, क्षेत्रों और अलग-अलग सामाजिक पृष्ठभूमि से आए विद्यार्थी जब साझा लक्ष्य के लिए कार्य करते हैं, तो सामाजिक विभाजनों की दीवारें अपने आप ध्वस्त होती हैं। अफसोस की बात है कि हमारे शिक्षा तंत्र में सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों को आज भी आमतौर पर औपचारिकता, समय-व्यय या अकादमिक बाधा के रूप में देखा जाता है। कई संस्थानों में इन्हें परीक्षा-परिणामों के अधीन रख दिया जाता है, जिससे इनकी गुणवत्ता और उद्देश्य, दोनों प्रभावित होते हैं। यह दृष्टिकोण अव्यावहारिक के साथ ही आधुनिक शिक्षा दर्शन के भी विपरीत है। सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों को पाठ्यक्रम का पूरक नहीं, बल्कि उसका अभिन्न और अनिवार्य अंग मानते हुए उन्हें समान संसाधन, समय और संस्थागत समर्थन प्रदान किया जाना चाहिए।

दुनिया मेरे आगे

> सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से कालेज में होने वाले महोत्सव और विद्यार्थियों की गतिविधियां विविधता, समावेशन तथा सहिष्णुता को बढ़ावा देती हैं। विभिन्न भाषाओं, क्षेत्रों और अलग-अलग सामाजिक पृष्ठभूमि से आए विद्यार्थी जब एक साझा लक्ष्य के लिए कार्य करते हैं, तो सामाजिक विभाजनों की दीवारें अपने आप ध्वस्त होती हैं।

बेखौफ अपराधी

आए दिन अपराधी सरेआम वारदात कर रहे हैं। राजधानी में कभी खतरनाक हथियारों से हत्या की घटनाएं सामने आ रही हैं, तो कभी सड़क किनारे सो रहे लोगों पर गाड़ी चढ़ा कर निर्दोषों की जान ली जा रही है। महिलाओं पर अत्याचार की मानो सीमा लांघने की होड़ है। बच्चों को अगवा करने, फिरौती, चोरी और साइबर धोखाधड़ी की घटनाएं अमूमन हर रोज सुनने को मिलती है। ऐसे में विचारणीय है कि जो लोग अपराध करते हैं या करने के बारे में सोचते हैं, क्या उनमें कानून का जरा भी डर नहीं होता है? ऐसे में दो संभावनाएं हो सकती हैं। पहली यह कि शायद उनके भीतर सजा का भय समाप्त हो चुका है और दूसरी यह कि वे पुलिस तथा कानून-व्यवस्था से पार पाने या उससे बच निकलने का तरीका जानते हैं। यह हमारे पुलिस प्रशासन की विफलता है कि सख्ती के तमाम दावों के बावजूद अपराध घटने के बजाय बढ़ रहे हैं। एक ओर कुछ लोगों में कानून तोड़ने पर सजा का भय इस कदर होता है कि वे हेलमेट नहीं पहनने के जुर्माने से डरते हैं। दूसरी ओर कुछ अपराधी इस तरह बेखौफ हैं कि वे बिना हिचक के वारदात को अंजाम देते हैं।

- भगवती, नासिक, महाराष्ट्र

खो रहे शब्द

अक्सर कहा जाता है कि संसार में सबसे बड़ा अभाव धन का है, लेकिन सत्य इसके विपरीत है। आर्थिक दरिद्रता व्यक्ति के जीवन को कठिन बना सकती है, लेकिन 'शब्दों की दरिद्रता' व्यक्तित्व को ही बौना कर देती है। शब्दों का अभाव केवल मौन नहीं, बल्कि वैचारिक दिवालियेपन का भी संकेत है। शब्द ही सार हैं। बुद्धिजीवी वह है जो समाज को दिशा दे। यदि उसके पास शब्दों का अभाव है, तो वह उस जौहरी की तरह है, जिसके पास नजर तो हो सकती है, लेकिन दिखाने के लिए कोई रत्न नहीं। शब्द हमारे विचारों के वाहन हैं। यदि वाहन ही अक्षम हो, तो विचार कभी गंतव्य तक नहीं पहुंच सकते। एक प्रबुद्ध व्यक्ति का आभूषण उसकी भाषा और शब्द हैं। जब हम शब्दों के चयन में कंजूसी करते हैं या सतही शब्दों का इस्तेमाल करते हैं, तो हम अपनी बौद्धिक चेतना के साथ अन्याय करते हैं। ज्ञान का संचय तब तक अधूरा है, जब तक उसे व्यक्त करने के लिए समृद्ध शब्द-कोष न हो।

- प्रसिद्ध यादव, फुलवारी, पटना

संवेदनहीनता की कड़ियां

पूर्व अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट खिलाड़ी इमरान खान के साथ जिस तरह के दुर्व्यवहार की खबरें आई हैं, वे निंदनीय हैं। वे पूर्व प्रधानमंत्री रहे हैं। उन्हें विभिन्न अपराधों के तहत पिछले साल जेल में बंद किया गया था, तब से उनके साथ हो रहे व्यवहार को लेकर सवाल उठते रहे हैं। पूर्व भारतीय खिलाड़ी सुनील गावस्कर और कपिलदेव सहित पांच देशों के बारह क्रिकेट खिलाड़ियों ने पाकिस्तान सरकार को चिट्ठी लिख कर इमरान की बिगड़ती सेहत पर गहरी चिंता जताते हुए उनका सही इलाज कराने और सम्मानजनक बर्ताव करने का आग्रह किया है। पाकिस्तान सरकार को उनके स्वास्थ्य पर ध्यान देना चाहिए। एक पूर्व अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी और पूर्व प्रधानमंत्री के साथ किया रहा दुर्व्यवहार बेहद अमानवीय और अनुचित है। अब देखना यह है कि इमरान खान के साथ जो हो रहा है, उस पर लगाम कब लगेगा। पाकिस्तानी हुक्मरानों को उनके प्रति राजनीतिक समझदारी का परिचय देना चाहिए।

- एमएम राजावतराज, शाजापुर

पक्षियों की फिक्र

शहरी विस्तार, आर्द्रभूमियों पर अतिक्रमण, कीटनाशकों का बढ़ता उपयोग और अवैध शिकार ने पक्षियों के प्राकृतिक आवास को गहरा नुकसान पहुंचाया है। परिणामस्वरूप अनेक स्थानीय प्रजातियां या तो लुप्त हो चुकी हैं या संकटग्रस्त श्रेणी में पहुंच गई हैं। सरकार की ओर से संरक्षण योजनाएं और कानून मौजूद हैं, लेकिन चुनौती उनके प्रभावी क्रियान्वयन की है। आर्द्रभूमि और वनों को कानूनी सुरक्षा देकर अतिक्रमण मुक्त करना, कृषि में रासायनिक दवाओं के उपयोग को नियंत्रित करना और शिकार पर कठोर निगरानी आवश्यक है। शहरों के नियोजन में हरित पट्टियों और जलस्रोतों को अनिवार्य तत्त्व बनाया जाना चाहिए। स्थानीय समुदायों की भागीदारी, विद्यालय स्तर पर पर्यावरण शिक्षा और नागरिकों में संवेदनशीलता विकसित करना दीर्घकालिक समाधान का हिस्सा है। पक्षियों की उपस्थिति प्रकृति की जीवंतता का संकेत है।

- राकेश खुडिया, श्रीगंगानगर, राजस्थान

उत्सव

आगरा में होली के एक दिन पहले रंग-गुलालों से सराबोर लोग उत्सव मनाते हुए।

बोल

ईरानी शासन द्वारा अपने पड़ोसियों पर किए जा रहे अंधाधुंध हमलों से क्षेत्र में एक व्यापक युद्ध छिड़ने का खतरा है और हम इसकी कड़ी निंदा करते हैं। यह आवश्यक है कि युद्ध और आगे न फैले। – काजा कल्लास, यूरोपीय संघ की विदेश नीति प्रमुख

बोल

हमारा देश ईरान पर हमलों में शामिल नहीं है। हम क्षेत्र के देशों पर ईरान के हमलों की कड़ी निंदा करते हैं। ईरान को बिना सोचे समझे सैन्य हमले करने से बचना चाहिए। ईरानी लोगों को अपना भविष्य खुद तय करने देना चाहिए। – इमैनुएल मैक्रों, फ्रांस के राष्ट्रपति

सम-सामयिक

बांग्लादेश : आसान नहीं कानूनी एवं संवैधानिक सुधारों की राह

जनसत्ता संवाद

बांग्लादेश के 70 फीसद मतदाताओं ने राष्ट्रीय घोषणापत्र पर जनमत संग्रह में 'हां' में मतदान किया। इसमें लगभग 80 प्रमुख कानूनी और संवैधानिक सुधारों के प्रस्ताव हैं। लेकिन इन सुधारों को लेकर सत्ताधारी बीएनपी के प्रमुख एवं प्रधानमंत्री तारिक रहमान खुद असहमत हैं। दूसरी ओर, विपक्षी दल जमात समर्थन में है। इस कारण, वहां सुधारों का मार्ग कठिन प्रतीत होता है।

संसद के नव निर्वाचित सदस्यों ने 17 फरवरी को शपथ ली। 12 फरवरी को हुए आम चुनावों के साथ-साथ मुहम्मद यूनुस के नेतृत्व वाली अंतरिम सरकार द्वारा तैयार किए गए महत्त्वाकांक्षी संवैधानिक सुधारों के घोषणापत्र पर जनमत संग्रह भी कराया गया था।

सुधारों के लिए 'जुलाई राष्ट्रीय घोषणापत्र' नामक दस्तावेज के पक्ष में तीन सौ नए सांसदों को नई संवैधानिक सुधार परिषद के लिए दूसरी शपथ दिलाई गई, लेकिन विजयी बीएनपी के 208 सांसदों ने दूसरी बार शपथ लेने से इनकार कर दिया। यह तर्क दिया कि मौजूदा संविधान में इसके लिए कोई प्रावधान नहीं है। विपक्षी जमात-ए-इस्लामी (69 सीटें) और नेशनल सिटिजंस पार्टी (छह सीटें) ने बीएनपी के इनकार की आलोचना की और संवैधानिक सुधारों के लिए दूसरी शपथ को अनिवार्य बताया।

प्रस्तावित 80 सुधारों में से लगभग आधे संवैधानिक प्रकृति के हैं। जुलाई राष्ट्रीय घोषणापत्र का अनावरण अक्तूबर 2025 में किया गया था। मोटे तौर पर, बीएनपी और जमात दोनों इसके व्यापक सुधार क्षेत्रों – न्यायिक, चुनावी, संवैधानिक और भ्रष्टाचार-विरोध – पर सहमत हैं। वे विशिष्ट सुधारों पर भी सहमत हैं। इनमें आपातकाल घोषित करने के लिए प्रधानमंत्री के अधिकार पर अधिक नियंत्रण, बांग्लादेश की राज्य नीति के मूलभूत सिद्धांतों का विस्तार, संसद में महिलाओं के प्रतिनिधित्व का प्रगतिशील विस्तार और साथ ही बांग्लादेश की बहुसांस्कृतिक और बहुजातीय पहचान की पुनः पुष्टि शामिल है।

सभी दल प्रधानमंत्री के लिए 10 साल की कार्यकाल सीमा के पक्षधर हैं और चुनावों की देखरेख के लिए कार्यवाहक सरकार प्रणाली को बहाल करने पर सहमत हैं, जिसे हसीना ने 2011 में समाप्त कर दिया था, लेकिन घोषणापत्र के पाठ में विशिष्ट प्रस्तावों पर विभिन्न दलों की असहमति भी शामिल है। जमात ने इसके अधिकांश भाग का बिना शर्त समर्थन किया है, वहीं बीएनपी की कई असहमतियां हैं।

जिन विशिष्ट सुधारों पर दलों में असहमति होती है, उनके लिए संविधान के ढांचे में एक महत्त्वपूर्ण खंड शामिल है- 'यदि कोई राजनीतिक दल अपने घोषणापत्र में किसी भी मुद्दे पर अपनी स्थिति का स्पष्ट उल्लेख करके सार्वजनिक जनादेश प्राप्त करता है', तो 'वे तदनुसार आवश्यक उपाय कर सकते हैं'। यह खंड प्रभावी रूप से संविधान की सिफारिशों को कम प्राथमिकता देता है।

संविधान में प्रस्तावित उच्च सदन की आवश्यकता पर सभी दल सहमत हैं, लेकिन उच्च सदन की सदस्यता के लिए, बीएनपी लंबे समय से निर्वाचित निचले सदन में पार्टी की सीटों के अनुपात में प्रतिनिधित्व को प्राथमिकता देती रही है। इसके विपरीत, जमात/एनसीपी गठबंधन ने संसदीय विविधता को सक्षम बनाने के लिए प्रत्येक पार्टी के मत फीसद के अनुपात में प्रतिनिधित्व का लगातार समर्थन किया है।

सुधार का पथरीला रास्ता

जुलाई में हुए राष्ट्रीय जनमत संग्रह की आलोचना में बीएनपी भी शामिल थी, क्योंकि इसमें बारीकियों का अभाव था। मतदाताओं को एक ऐसे दस्तावेज के लिए 'हां' या 'ना' का विकल्प दिया गया था। इसमें कम से कम 80 संवैधानिक और कानूनी बदलावों का प्रस्ताव था। हालांकि, पार्टी इस बात से भी अवगत है कि फरवरी 2026 के चुनावों ने सुधारों के लिए जनादेश दिया था – न केवल जुलाई के प्रस्ताव के माध्यम से, बल्कि उसके घोषणापत्र के माध्यम से भी।

शोध

लिंग अनुपात को प्रभावित कर रहा है बढ़ता तापमान

जनसत्ता संवाद

जलवायु परिवर्तन अब केवल पर्यावरण नहीं, बल्कि लिंग के अनुपात को भी प्रभावित कर रहा है। आक्सफोर्ड से जुड़े शोधकर्ताओं के द्वारा 50 लाख से अधिक शिशु-जन्म के विश्लेषण पर आधारित अध्ययन में सामने आया है कि 20 डिग्री सेल्सियस से ऊपर का तापमान लड़कों के जन्म में कमी से जुड़ा है।

भारत और 33 अफ्रीकी देशों में किए एक नए चौंकाने वाले अध्ययन में यह तथ्य सामने आया है। यह अध्ययन यूनिवर्सिटी आफ आक्सफोर्ड के शोधकर्ताओं द्वारा किया गया है, जिसके नतीजे प्रतिष्ठित 'प्रोसीडिंग्स आफ द नेशनल एकेडमी आफ साइंसेज' (पीएनएएस) में प्रकाशित हुए हैं।

भारत में यह असर खासकर गर्भावस्था की दूसरी तिमाही के दौरान दिखा, जहां अधिक तापमान के समय लड़कों के जन्म में गिरावट दर्ज की गई। शोध के अनुसार, अत्यधिक गर्मी भ्रूण के जीवित रहने, मातृ स्वास्थ्य और परिवार नियोजन को प्रभावित कर सकती है।

अध्ययन के मुताबिक, जलवायु परिवर्तन केवल पर्यावरणीय या आर्थिक चुनौती नहीं है। यह जनसंख्या की संरचना, लैंगिक संतुलन और सामाजिक समानता तक को प्रभावित कर सकता है। यदि मातृ स्वास्थ्य और स्वास्थ्य सेवाओं तक समान पहुंच सुनिश्चित नहीं की गई, तो बढ़ती गर्मी आने वाली पीढ़ियों की बनावट पर स्थाई असर छोड़ सकती है।

डाक्टर जैस्मिन अब्देल घानी, डाक्टर जोशुआ वाइल्ड और प्रोफेसर रिद्धि कश्यप के नेतृत्व में किए गए इस अध्ययन में भारत सहित उप-सहारा अफ्रीका के 33 देशों के 50 लाख से अधिक जन्मों का विश्लेषण किया गया है। शोधकर्ताओं ने बड़े पैमाने पर जनसंख्या से जुड़े आंकड़ों को विस्तृत जलवायु रेकार्ड से जोड़कर समझने की कोशिश की है कि गर्भावस्था के दौरान गर्मी का असर बच्चे के लिंग अनुपात पर कैसे पड़ता है। जन्म के समय लिंग अनुपात, यानी लड़कों की संख्या लड़कियों के मुकाबले कितनी है। यह एक अहम जनसांख्यिकीय संकेतक माना जाता है। यह केवल आंकड़ा नहीं होता, बल्कि इससे मां के स्वास्थ्य, गर्भ में शिशु के जीवित रहने की स्थिति और कई मामलों में लैंगिक भेदभाव की झलक मिलती है।

उप-सहारा अफ्रीका में गर्भावस्था की पहली तिमाही के दौरान अत्यधिक गर्मी के संपर्क में आने से लड़कों के जन्म में गिरावट देखी गई। अत्यधिक गर्मी मां के शरीर पर दबाव डालती है, जिससे भ्रूण की मृत्यु का खतरा बढ़ सकता है। यह असर खासकर ग्रामीण क्षेत्रों, कम शिक्षित महिलाओं और अधिक बच्चों को जन्म देने वाली माताओं में ज्यादा देखा गया।

भारत में स्थिति थोड़ी अलग पाई गई। यहां गर्भावस्था की दूसरी तिमाही में अधिक तापमान के दौरान लड़कों के जन्म में कमी दर्ज की गई। यह असर खासकर अधिक उम्र की माओं, पहले से कई बच्चों की मां बनने वाली महिलाओं और उत्तरी राज्यों की उन महिलाओं में ज्यादा दिखा जिनके पहले से बेटा नहीं है। शोधकर्ता अब्देल घानी के अनुसार, 'अत्यधिक गर्मी सिर्फ स्वास्थ्य से जुड़ा संकट नहीं है। अध्ययन दर्शाता है कि तापमान यह भी प्रभावित करता है कि कौन जन्म लेता है और कौन नहीं। तापमान का असर गर्भ में शिशु के जीवित रहने और परिवार नियोजन से जुड़े फैसलों पर भी पड़ता है।

आक्सफोर्ड से जुड़े शोधकर्ताओं के द्वारा 50 लाख से अधिक शिशु-जन्म के विश्लेषण पर आधारित अध्ययन में सामने आया है कि 20 डिग्री सेल्सियस से ऊपर का तापमान लड़कों के जन्म में कमी से जुड़ा है। भारत और 33 अफ्रीकी देशों में किए अध्ययन में यह तथ्य सामने आया है। इस अध्ययन के नतीजे प्रतिष्ठित 'प्रोसीडिंग्स आफ द नेशनल एकेडमी आफ साइंसेज' (पीएनएएस) में प्रकाशित हुए हैं।

(फाइल फोटो)

विश्व परिक्रमा

अफगानिस्तान : सहायता में कटौती, कुपोषण का खतरा बढ़ा

जनसत्ता संवाद

अफगानिस्तान में अत्यधिक कुपोषित ढाई साल के अबू बकर का वजन मात्र छह किलोग्राम (13 पाउंड) है, जो उसके सामान्य वजन का लगभग आधा है। उसका परिवार उसे एक महीने पहले काबुल के इंदिरा गांधी बाल अस्पताल ले गया, जहां उसका उपचार किया जा रहा है, लेकिन सभी अबू की तरह नहीं हैं।

संयुक्त राष्ट्र के विश्व खाद्य कार्यक्रम के अफगानिस्तान (निदेशक) जान आयलीफ ने कहा, 'हमारे सामने एक भयावह पोषण संकट है, जिसमें देश का दो-तिहाई गंभीर भाग कुपोषण के संकट में है। देश में कुपोषण में अब तक की सबसे भारी वृद्धि दर्ज की गई है। 40 लाख बच्चों का जीवन अधर में है।' चार दशकों के संघर्ष से तबाह अफगानिस्तान लंबे समय से विदेशी सहायता पर निर्भर रहा है। हालांकि 2021 में तालिबान के सत्ता में आने के बाद प्रत्यक्ष विदेशी सहायता लगभग बंद हो गई, जिससे लाखों लोग गरीबी और भुखमरी की चपेट में आ गए। एक कमजोर अर्थव्यवस्था होने के साथ ही भीषण सूखा, 2025 के अंत में आए दो विनाशकारी भूकंप और पड़ोसी पाकिस्तान और ईरान से निकाले गए 53 लाख अफगानों के आने से स्थिति और भी जटिल हो गई।

अब, मानवीय सहायता संगठनों को दी जाने वाली धनराशि में कटौती होने से लाखों लोग मुश्किल में आ गए हैं। इसमें विश्व खाद्य कार्यक्रम (डब्ल्यूएफपी) के खाद्य वितरण जैसे कार्यक्रमों के लिए अमेरिकी सहायता को रोका जाना भी शामिल है। आयलीफ ने बताया, 'सहायता में कटौती विनाशकारी साबित हुई है।' उन्होंने कहा कि गंभीर रूप से कुपोषित 40 लाख बच्चों में से हमें अब चार में से तीन बच्चों को वापस भेजना पड़ रहा है क्योंकि हमारे पास पैसे नहीं हैं। यह अभूतपूर्व है और मैंने अपने 30 से अधिक वर्षों के करिअर में ऐसा कभी नहीं देखा।

जानें-समझें

खामेनेई के बाद नए ध्रुवीकरण की आहट

भारत के लिए बदल रहा रणनीतिक परिदृश्य

जनसत्ता संवाद

ईरान के सर्वोच्च नेता अयातुल्ला अली खामेनेई के मारे जाने के बाद वैश्विक रणनीतिक समीकरणों को लेकर अनिश्चितता का माहौल है और दुनिया ऊर्जा संकट की आशंका को लेकर चिंतित है। इन स्थितियों में भारत के लिए रणनीतिक परिदृश्य तेजी से बदल रहा है। तेहरान में आने वाले कुछ दिनों में जो भी होगा, उसका भारत पर दूरगामी असर होगा। भारत को मध्य एशिया में अपनी कूटनीति नए सिरे से परिभाषित करनी होगी। आने वाले हफ्तों में राजनीतिक सीमाओं का पुनर्निर्धारण हो सकता है, तेल की दरों का पुनर्गठन हो सकता है और वैश्विक स्तर पर नया ध्रुवीकरण सामने आ सकता है।

अहम सवाल

ईरान पर अमेरिका और इजराइल का संयुक्त हमला तेहरान में सत्ता परिवर्तन के घोषित उद्देश्य से शुरू किया गया। उस सत्ता को बदलने का उद्देश्य था, जिसने 1979 की इस्लामी क्रांति के जरिए आकार लिया था। उस क्रांति ने धार्मिक राजनीति का नया माडल तैयार किया, क्षेत्रीय शक्ति संतुलन को बदल दिया, वैश्विक ऊर्जा प्रवाह को उलट दिया और महाशक्तियों के संबंधों की संरचना को ही बदल दिया। भारत के लिए, 1979 की क्रांति और अफगानिस्तान में सोवियत संघ के हस्तक्षेप ने क्षेत्रीय राजनीतिक, आर्थिक, ऊर्जा और सुरक्षा परिदृश्य को पूरी तरह से बदल दिया। अब इस्लामी गणराज्य का भविष्य अधर में लटका हुआ है, ऐसे में नई दिल्ली को संभावित परिणामों को अपनी रणनीतिक गणना में शामिल करना होगा।

राजनीतिक दिशा का सवाल

ईरान में दशकों से चले आ रहे शासन को लेकर असंतोष उभरे। सदी की शुरुआत से लेकर अब तक ईरान में लगभग हर पांच साल में बड़े विरोध प्रदर्शन हुए हैं, जिनमें दिसंबर और जनवरी में हुए बड़े प्रदर्शन भी शामिल हैं। हर विद्रोह को कुचल दिया गया। हालांकि, इस इतिहास का यह मतलब नहीं है कि शासन के विरोधी अब सड़कों पर उतरकर सत्ता हथिया सकते हैं। अगले चरण में इस्लामी गणराज्य के समर्थकों की लामबंदी देखने को मिल सकती है, जबकि इसके विरोधी परिवर्तनकारी बदलावों के लिए दबाव डालेंगे।

(फाइल फोटो)

भारत को अपनी वैकल्पिक योजना पर भी विचार करना होगा, क्योंकि उसे नए उभरते किरदारों के लिए राजनीतिक परिदृश्य का ध्यान रखना होगा। भारत को उसके रणनीतिक संबंधों का ध्यान रखना होगा। वर्तमान उथल-पुथल से निपटने में दिल्ली की राजनयिक क्षमताओं की परीक्षा होगी। *– केसी सिंह, ईरान में भारत के पूर्व राजदूत*

ऊर्जा आपूर्ति श्रृंखला में किसी प्रकार की बाधा देश की अर्थव्यवस्था के लिए विनाशकारी होगी, खासकर ऐसे समय में जब भारत को रूस से तेल खरीदने से रोक दिया गया है। इससे भारत कूटनीतिक और आर्थिक रूप से कठिन और अनिश्चितता की स्थिति में आ गया है। *– आर स्वामीनाथन, पूर्व राजदूत*

भारत पर प्रभाव

खाड़ी और मध्य पूर्व क्षेत्र में भारत के लगभग 90 लाख प्रवासी फैले हुए हैं। पिछले तीन दशकों में, जब इन देशों में भारतीय समुदाय की आबादी में वृद्धि हुई है, तब से उनकी सुरक्षा और कल्याण भारत की प्रवासी कूटनीति का आधार रहा है। केरल, उत्तर प्रदेश, बंगाल, बिहार और ओड़ीशा के कई परिवारों में ये ही एकमात्र कमाने वाले हैं और ये श्रमिक ही भारत को सबसे अधिक धन भेजने वाले हैं। भारत को भेजे जाने वाले धन का एक तिहाई से अधिक हिस्सा मध्य पूर्व और खाड़ी देशों से आता है। दूसरा प्रभाव भारत की ऊर्जा सुरक्षा को लगने वाला झटका है, जो लंबे समय तक चलने वाले संघर्ष का शिकार हो सकती है – क्योंकि भारत के ऊर्जा आयात का लगभग 60 फीसद इसी क्षेत्र से आता है, जिसमें लगभग 50 फीसद तेल आयात और 70 फीसद एलएनजी आयात शामिल है।

भारत के लिए मौका

ईरान के पास दुनिया के सबसे बड़े हाइड्रोकार्बन भंडारों में से कुछ हैं, और होर्मुज जलडमरूमध्य में बढ़ता संघर्ष पहले से ही तेल की कीमतों को बढ़ा रहा है। यदि तेहरान में एक नई सरकार उभरती है, जो दुनिया के साथ कम टकराव वाली हो, तो प्रतिबंधों को हटाने से ईरानी तेल वैश्विक बाजारों में वापस आ सकता है। इससे ऊर्जा की कीमतें कम हो सकती हैं।

मध्य-पूर्व में साख पर सवाल

अतीत में ईरान के कई धार्मिक और राजनीतिक हस्तियों ने वहां की धार्मिक शासन प्रणाली का विरोध किया, लेकिन खामेनेई ने सभी चुनौतियों को दबा दिया और पूर्ण नियंत्रण स्थापित कर लिया। ईरान में इस्लामी क्रांति महज एक राष्ट्रीय परियोजना से कहीं अधिक थी; इसका उद्देश्य अपनी क्रांतिकारी इस्लामी विचारधारा को पूरे मध्य-पूर्व में फैलाना था। तेहरान ने अरब देशों की तुलना में फिलिस्तीन के मुद्दे को अधिक आक्रामक रूप से आगे बढ़ाकर और खुद को इजराइल और अमेरिका के एक कट्टरपंथी प्रतिद्वंद्वी के रूप में स्थापित करके एक स्थायी क्रांति को कायम रखने की कोशिश की।

मास्को और बेजिंग के लिए झटका

वर्ष 1979 से पहले ईरान सऊदी अरब के साथ-साथ मध्य पूर्व में वाशिंगटन के सबसे करीबी सहयोगियों में से एक था। यदि इस्लामी गणराज्य का तख्तापलट हो जाता है और उसके बाद आने वाली सरकार अमेरिका और इजराइल के साथ अधिक निकटता से जुड़ जाती है, तो इस क्षेत्र की भू-राजनीति में गहरा बदलाव आएगा। मध्य पूर्व से परे तेहरान का भाग्य व्यापक महाशक्ति प्रतिस्पर्धा को आकार देगा। ईरान अब तक रूस और चीन के लिए आर्थिक, रणनीतिक और संस्थागत रूप से एक महत्त्वपूर्ण भागीदार बन गया था। ईरान ब्रिक्स प्लस का हिस्सा बन गया और शंघाई सहयोग संगठन में शामिल हो गया, जिससे वह एक ऐसे यूरेशियाई ढांचे में मजबूती से जुड़ गया, जिसने पश्चिमी प्रभाव का मुकाबला किया।

व्यक्तित्व

रोहित : राष्ट्रमंडल व एशियाई खेलों में जगह बनाने वाले पहले सिद्दी युवक

जनसत्ता संवाद

'मिनी अफ्रीका' कहा जाने वाला गुजरात का गांव – जंबुर भारत के खेल मानचित्र पर नहीं दिखता। सिद्दी समुदाय के इसी जंबुर गांव के 21 वर्षीय रोहित मजगुल ने नस्लीय तानों और घोर गरीबी को हराकर नया इतिहास रचा है। रोहित मजगुल अपने समुदाय के पहले ऐसे जूडो खिलाड़ी हैं, जिन्होंने राष्ट्रमंडल और एशियाई खेलों के लिए जगह बनाई है।

इस गांव के ज्यादातर पुरुष दिन भर मजदूरी करते हैं और शाम को पास के होटलों में पर्यटकों के लिए पारंपरिक नृत्य प्रस्तुत करते हैं। इसी तरह मजगुल के पिता बशीर परिवार का भरण-पोषण करते हैं। उनके चचेरे भाई भी यही करते हैं। ये लोग अफ्रीकी मूल के हैं। इनके बीच से निकले रोहित के मन में नस्लीय टिप्पणियों को लेकर टीस है। वर्ष 2019 में गुजरात के नाडियाड में आयोजित राष्ट्रीय स्तर की अंडर-17 चैंपियनशिप में वे फाइनल तक पहुंचे थे। उनके चचेरे भाई और पूर्व जूडो खिलाड़ी अफारुद्दीन चोवत बताते हैं, 'जब वह तैयारी कर रहे थे, तब कुछ लोगों ने उन्हें अफ्रीकी और अन्य नस्लीय ताने देना शुरू कर दिया था।' यह पहली बार नहीं था जब मजगुल को इस तरह की टिप्पणियों का सामना करना पड़ा था। वे कहते हैं, 'मुझे अपनी शक्ल-सूरत और घुंघराले बालों की वजह से तरह-तरह के नामों से पुकारा गया है – कभी गाली के तौर पर, कभी मजाक में।'

उस दिन वे बहुत परेशान हो गए थे। हालांकि, कई लोगों ने उन्हें खेल पर ध्यान देने की सलाह दी। सात साल बाद 21 वर्षीय मजगुल इस साल के राष्ट्रमंडल और एशियाई खेलों के लिए चुने गए सिद्दी समुदाय के पहले एथलीय बने। हाल में नई दिल्ली में हुए चयन ट्रायल के रोमांचक फाइनल में, मजगुल ने – 66 किलोग्राम वर्ग में हरियाणा के गर्वित हुड्डा को हराया। मजगुल को सर्वश्रेष्ठ जूडोका खिलाड़ी घोषित किया गया। राष्ट्रीय चैंपियन मजगुल प्रशिक्षण और अनुभव प्राप्त करने के लिए जार्जिया के त्बिलिसी के लिए रवाना हो गए हैं।

वर्ष 1980 के दशक के उत्तरार्ध से भारत सरकार विशेष क्षेत्रीय खेल परियोजनाओं के माध्यम से सिद्दी समुदाय की खेल प्रतिभा को सामने लाने का प्रयास कर रहा है। सिद्दी समुदाय को लगभग 300 वर्ष पूर्व पुर्तगालियों द्वारा जूनागढ़ के राजा के लिए काम करने की खातिर भारत लाया गया था।

मजगुल के चाचा हेदुभाई ने अपने भतीजे को एथलेटिक्स अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया। हेदुभाई कहते हैं, मैं खुद एक एथलीट था और मेरे बेटों को सरकारी खेल कार्यक्रमों का लाभ मिला और खेल कोटा के जरिए उन्हें नौकरियां भी मिलीं।

लोकमानस

loksatta@expressindia.com

युद्ध लांबल्यास भारताचेही नुकसान...

'पश्चिम अशियात युद्धाग्नी' ही लोकसत्ता (०१/०३)मधील बातमी वाचली. इराणमधील राजवट उलथवून लावायचीच आणि आपल्या विचारांचे सरकार आणायचे असा अमेरिकेचा अट्टहास आहे. मी भारत-पाकसह आठ युद्ध थांबवली असा दावा करणारे ट्रम्प हे एकीकडे ते शांतिदूत असल्याचा आव आणतात तर दुसरीकडे जगाला युद्धाच्या खाईत ढकलतात. तिकडे गेल्या अडीच-तीन वर्षांपासून रशिया-युक्रेन युद्ध सुरू आहे, अधून मधून पाकिस्तान - अफगाणिस्ताना यांच्यात चकमकी होत आहेत. इराणने प्रत्युत्तर देताना शेजारी आठ देशांतील अमेरिकेच्या तळांना लक्ष केले असल्याने आजच्या घडीला जवळपास ११ देश युद्धात ओढले गेले आहेत आणि जगावर तिसऱ्या महायुद्धाचे सावट पसरले आहे. हा सर्व 'तेल का खेल' चालला आहे, हे खरे पण जाणारे जीव- होणारे नुकसान रोखणार कोण? संयुक्त राष्ट्र संघटना ही तर केव्हाच निष्प्रभ ठरली आहे. या सगळ्यात भारताचीदेखील मोठी कसोटी लागणार आहे, गेल्या काही वर्षांपासून भारताचे परराष्ट्र धोरण कुठेतरी चुकते आहे का याचा गांभीर्याने विचार होणे गरजेचे आहे. युद्ध लांबल्यास त्याचा विपरीत परिणाम भारतावरदेखील होऊ शकतो. जगात शांततेची गरज असताना युद्धामुळे मात्र जगात अशांतता निर्माण झाली आहे आणि यामुळे केवळ आणि केवळ नुकसानच होत आहे.

■ **अनंत बोरसे**, शहापूर (जि. ठाणे)

युद्ध लोकशाहीविरोधीच

'पश्चिम आशियात युद्धाग्नी' ही बातमी (लोकसत्ता १ मार्च) वाचली. एका स्वतंत्र देशावर अमेरिकेने जो हल्ला केलेला आहे. त्याचा निषेध प्रत्येक लोकशाहीवादी नागरिकांनी करणे आवश्यक आहे. अमेरिकेने अण्वस्त्र विकास कार्यक्रमाबाबतचे सर्व प्रश्न लोकशाही मार्गाने सोडवणे आवश्यक होते. त्याबाबत चर्चा करणे आवश्यक होते .परंतु चर्चा अपुरी असतानाच हल्ला करणे. एखाद्या राष्ट्राच्या सार्वभौमत्वावर हल्ला करण्यासारखे आहे. हा हक्क अमेरिकेला नाही. जगात शांतता आणण्यासाठी संयुक्त राष्ट्र संघटना मजबूत करणे आवश्यक आहे. दुसऱ्या महायुद्धानंतर स्थापन झालेल्या संघटनेला सर्वांनी मदत करणे आवश्यक होते. तरच लोकशाही आणि लोकांचे स्वातंत्र्य जपले गेले असते. इराणमध्ये जरी लोकशाही नसली तरी तेथील सामान्य नागरिकांच्या स्वातंत्र्याचा प्रश्न महत्त्वाचा आहे. युद्ध हे लोकशाहीच्या संकल्पनेलाच आव्हान आहे.

■ **युगानंद गुलाबराव साळवे**, पुणे

पालकांची संमती की समाजाचा दबाव?

'संमतीने प्रेम?' हे संपादकीय (२८ फेब्रुवारी) वाचले. कोणतीही नवीन गोष्ट एकाएकी स्वीकारली जात नाही. त्याला विरोध हा होतोच 'भारतीय विवाहसंस्थेचा इतिहास' या पुस्तकालासुद्धा विरोध झालाच. प्रेमविवाह होऊ द्यायचे नाहीत कारण 'मुलींना फसवले जाते' असा एक दृष्टिकोन आहे. परंतु जातीयवाद नष्ट करण्यासाठी ही योजना सर्वोत्तम आहे असे अनेक महापुरुषांनी सांगितले होते. हे प्रेमविवाह होऊ न देण्यामागे जातीयवादी दृष्टिकोन आजही असू शकतो. आजही ग्रामीण भागात विशेषतः आंतरजातीय प्रेमविवाह करणाऱ्या तरुण-तरुणीच्या आई-वडिलांना 'वाळीत टाकले जाते' हेही विसरून चालणार नाही. जे प्रेमविवाह करतात त्यांना उदाहरणासाठी मंजुळे यांचा 'सैराट' आहेच.

■ ओ. म. चिंचोलकर (पुणे)

'एआय' नव्या संधी निर्माण करेल...

'एआय'मुळे खरेच नोकऱ्या जाणार, की...?' हा लेख (रविवार विशेष- १ मार्च) वाचला. याचे उत्तर पूर्णपणे 'हो' किंवा 'नाही' असे सरळ नाही. 'एआय' ही मानवनिर्मित तंत्रज्ञान प्रणाली आहे. त्यामुळे तिची निर्मिती, देखभाल, नियंत्रण आणि सुधारणा करण्यासाठी माणूस आवश्यकच राहणार. मात्र, हेही तितकेच खरे आहे की 'एआय' काही पारंपरिक आणि पुनरावृत्तीच्या (रिपीटिटिव्ह) कामांमध्ये मानवी श्रमांची जागा घेऊ शकते. संगणकांचा उदय झाला, तेव्हादेखील अशीच भीती व्यक्त झाली होती की नोकऱ्या संपतील. काही कामे कमी झाली, पण त्याचबरोबर नवीन क्षेत्रे आणि नवी कौशल्ये निर्माण झाली. लोकांनी स्वतःला अद्ययावत केले आणि तंत्रज्ञानाशी जुळवून घेतले. 'एआय'च्याही बाबतीत असेच होणार आहे. नोकऱ्या पूर्णपणे नाहीशा होणार नाहीत; त्या बदलणार आहेत. आता गरज आहे ती नवीन कौशल्ये आत्मसात करणे, तांत्रिक ज्ञान वाढवणे, सर्जनशीलता/ विश्लेषण क्षमता जोपासणे याला महत्त्व देण्याची. 'एआय' एक साधन आहे. योग्य वापर केल्यास ते रोजगार हिरावून घेणार नाही, उलट नवीन संधी निर्माण करेल.

■ **अमोल आप्पा हारदे**, नाशिक

डेटा सेंटर्स अवकाशातच बरी...

''डिजिटल' भारताला आता आकाशाचे वेध' हा ऑर्बिटर एआय डेटा सेंटर्सविषयीचा चिन्मय गवाणकर यांचा माहितीपूर्ण लेख (रविवार विशेष- १ मार्च) वाचला. कृत्रिम बुद्धिमत्तेच्या (एआय) वाढत्या वापरामुळे डेटा सेंटर्सची आवश्यकता आणि ती चालवण्यासाठी पृथ्वीवरील वीज, पाणी अशा नैसर्गिक स्रोतांचा होणारा प्रचंड वापर ही पर्यावरणासाठी खूप मोठी धोक्याची घंटा आहे. सद्य परिस्थितीत मात्र सत्ताधारी आणि 'एआय'समर्थक फक्त चांगली आणि व्यावहारिक बाजूच दाखवत आहेत. अशा परिस्थितीत अवकाशातील डेटा सेंटर्स हा माहिती तंत्रज्ञान आणि कृत्रिम बुद्धिमत्ता क्षेत्रासाठी उत्तम पर्याय आहे. भारताच्या नवीन पिढीतील स्टार्टअप उद्योजक आणि अभियंते यांनी अशा नवीन क्षेत्रात अधिकाधिक लक्ष देण्याची गरज आहे.

■ **एम. एस. नकुल**, विरार

न्यायालयीन व्यवस्थापनात नियम निराळे?

'न्यायव्यवस्थेची शोकांतिका' हा हरीश एस वानखेडे यांच्या 'सिनेकारण' या सदरातील लेख (२६ फेब्रुवारी) वाचला. पूर्वापार ऐकत आलेले 'शहाण्याने कोर्टाची पायरी चढू नये' हेच खरे वाटावे अशी परिस्थिती चित्रपटांतूनही दिसणारच. माझी स्वतःची एक वैयक्तिक केस मी साधारणपणे जुलै २०२५ रोजी माननीय मुख्य न्यायालय, मुंबई येथे दाखल केली. पहिल्या तारखेला समोरच्या वकिलाने ऑब्जेक्शन घेतले की, ही केस ज्या माननीय न्यायाधीशांसमोर होती, त्यांच्याकडे कोर्टाच्या ठरलेल्या व्यवस्थेप्रमाणे नसायला हवी. माननीय न्यायाधीशांनी सांगितले की रजिस्ट्रारकडे चेक करा. रजिस्ट्रारसाहेबांनी नीट तपासून पुन्हा त्याच न्यायाधीशांकडे पाठवले. पुन्हा दुसऱ्या तारखेला तेच ऑब्जेक्शन. यथावकाश रजिस्ट्रारसाहेबांनी सांगितले, ही केस दुसऱ्या न्यायाधीशांकडे जायला हवी! दुसरा मुद्दा, जर एखाद्या कोर्टात सरासरी रोज ३० केसेस ऐकल्या जात असतील, तर बोर्डावर ६० केसेससाठी तारीख दिली जाते . म्हणजे ज्यांच्या केसेसचा नंबर शेवटी आहे, त्यांनी दिवसभर बसून पुन्हा पुढची तारीख घ्यायची. कदाचित माननीय कोर्टाच्या व्यवस्थापनाचे काही वेगळे नियम असू शकतील, असे म्हणत समाधान करून घ्यायचे.

■ **चंद्रशेखर सावंत**, मुलुंड

अंतर्मुख करणारा बौद्धिक आनंद!

बुकर विजेते लेखक ज्युलिआन बार्न्स यांची शैली प्रगल्भ आणि बौद्धिक आहे. मानवी स्मृती किती फसव्या असू शकतात आणि आपण आपल्या भूतकाळाची पुनर्रचना सोयीनुसार कशी करतो, हे त्यांच्या लेखनाचे मुख्य सूत्र आहे. त्यांच्या साहित्यात उपरोध व मानवी दुःखाचे सूक्ष्म, नेमके चित्रण आढळते.

या लेखकाची ओळख मला एका रंजक योगायोगाने झाली. 'शेवटचं प्रस्थान कसं असतं?' हा सई केसकर यांचा लेख (बुकमार्क- २८ फेब्रु.) वाचताना मला जयपूरप्रवासाची आठवण झाली. एका हॉटेलमध्ये पंधरा दिवस वास्तव्यास असताना एका पुस्तकप्रेमीच्या हातात त्यांचे पुस्तक दिसले. मी त्यांच्याशी गप्पा मारल्या; आणि त्या पुस्तकप्रेमींनीही वाचून झालेले ते पुस्तक मला वाचायला दिले. त्यानंतर मी 'नथिंग टु बी फ्रायटन्ड ऑफ' हे मृत्यूच्या भीतीवर आणि ईश्वराच्या अस्तित्वावर भाष्य करणारे चिंतनशील पुस्तक, तसेच 'द लेमन टेबल' हा वृद्धापकाळ आणि मृत्यू या विषयांवरील कथासंग्रह वाचला. याशिवाय 'फ्लोबेर्स पॅरट' आणि 'लेव्हल्स ऑफ लाइफ' या पुस्तकांतून त्यांनी जीवन आणि मृत्यूचे सूक्ष्म तत्त्वज्ञान उलगडले आहे. बार्न्स यांचे साहित्य आजही वाचकाला मानवी अस्तित्वाचा आणि आठवणींचा शोध घ्यायला भाग पाडते. हा लेखक वाचताना एक वेगळाच, बौद्धिक आणि अंतर्मुख करणारा आनंद मिळतो—हे मी स्वतः अनुभवले आहे.

■ **राघवेंद्र मण्णूर**, डोंबिवली

गंगेची मुक्ती...

गंगेच्या 'पहाडी' प्रवाहाला अडवण्याचे प्रकार ब्रिटिशांपासूनचेच, त्यास विरोधही झाला; तो गेल्या काही वर्षांत साधू-संन्याशांनीही केला...

चित्ततोष खांडेकर
नदी विषयक संशोधक अभ्यासक
chittatoshresearch@gmail.com

नदीकारण

हिमनद्यांमधून खळाळणारी, हरिद्वार-ऋषीकेशच्या घाटांमधून वाहणारी, काशी-गयेच्या घरादारात नांदणारी आणि शेवटी बंगालच्या उपसागरात मिसळणारी गंगा ही केवळ नदी नाही, एक जीवनप्रवाह आहे. हिमालयातील पर्वतीय कुरणे असतील, मैदानी प्रदेशातील सुपीक माती देणारे पाणथळ प्रदेश असतील किंवा मुखाजवळील सुंदरबनसारखी बहुविध नटलेली खारफुटीची अरण्ये असतील, जगात सापडणार नाहीत असे भूप्रदेश गंगेने तिच्या खोऱ्यात तयार केले आहेत. गंगेचा प्रवाहदेखील स्थिर नाही. दर काही दशकांनंतर गंगेचे पात्र थोडेसे सरकत जाते. आज जिथे जमीन असते, तिथे उद्या नदी येते, आज जिथे नदी असते, तिथे उद्या जमीन असते. गंगेमध्ये डॉल्फिन्सची एक दुर्मीळ प्रजातीही सापडते, तसेच नदी स्वच्छ करणारे अनेक दुर्मीळ जिवाणूही सापडतात. गंगेचे पर्यावरणीय-भौगोलिक महत्त्व अपरिमित असेल, तर तिचा आध्यात्मिक महिमा अपरंपार आहे. एखाद्या घाटावर संथ वाहणाऱ्या नदीकडे न्याहाळत बसले, तर या मुक्तिदायिनी नदीच्या तीरावर अनेक साधू संत, मोक्ष शोधत आलेले विदेशी, भक्तिभावाच्या शोधात आलेले भक्त, नदीकडे प्रेमाने पाहताना दिसतात. गंगा हा पाण्याचा प्रवाह राहात नाही- गंगा ही एक भावना आहे, गंगा हाच एक धर्म आहे. सगळ्या दुःखांपासून गंगा मानवाला मुक्ती देते अशी श्रद्धा आहे. तिच्या संवर्धनासाठी लढणाऱ्या, आपल्या प्रवाही जगण्यासाठी झगडणाऱ्या भगीरथांची कथा सांगणारा हा पहिला लेख. गंगेचे नदीकारण पाहायचे तर ते तीन भौगोलिक प्रदेशांत विभागता येईल. पहाडी गंगेचे प्रदेश, मैदानी गंगेचे प्रदेश आणि मुखाजवळच्या गंगेचे प्रदेश. या लेखात पहाडी गंगेच्या प्रदेशातील नदीकारण समजून घेऊ.

इंग्रजांनी १९व्या शतकाच्या उत्तरार्धात गंगेचे पाणी अडवून कालव्यांनी ते दुसरीकडे वळवणारे मोठाले बॅरेज बांधायला सुरुवात केली. यातून गंगेच्या नैसर्गिक पात्राची हानी झाली. शिवाय नदीचे पाणी तिच्या प्रवाहाचा विचार न करता वळवल्यामुळे काठावरची परिसंस्थाही नष्ट होऊ लागली. तेव्हा नदीचे नैसर्गिक पात्र अबाधित राहावे म्हणून उत्तराखंडमधील स्थानिकांनी, इथल्या श्रीनगरपासून हरिद्वारपर्यंत अनेक बॅरेज आणि बांधांना स्थानिकांनी २०व्या शतकाच्या सुरुवातीला प्रचंड विरोध केला. यामुळे काही बॅरेजचे बांधकाम तात्काळ थांबलेही पण नदीच्या प्रवाहाला हात घालणाऱ्या धरणांचा सपाटा, स्वातंत्र्यानंतर सुरू झाला. पण धरणांमुळे नदी आणि तिच्या काठच्या परिसंस्थेचे काय होते?

पहाडी गंगा आणि तिच्या उपनद्यांवर आज असंख्य धरणे उभी आहेत. धरण झाले की धरणाच्या एका बाजूचा प्रवाह आटतो, पण दुसऱ्या बाजूचा

जी. डी. अगरवाल (स्वामी ग्यान स्वरूप)

प्रवाह प्रचंड मोठा होतो. हा प्रचंड मोठा प्रवाह ज्या भागातून, जंगलांतून जातो, तिथे मुबलक प्रमाणात वन्यजीवांसाठी पाणी आणि जैवविविधता उपलब्ध होते. मग याच वन्यजीवांचे संरक्षण करण्याकरिता सरकार राष्ट्रीय उद्याने स्थापन करते. पण ही राष्ट्रीय उद्याने परिसरात वसलेल्या गावठाणांचा किती विचार करतात? गंगा खोऱ्यातील राष्ट्रीय उद्यानांकाठची गावे आज दुहेरी संकटांना सामोरी जात आहेत. पहिले संकट प्राण्यांचे. या नवीन जंगलांतले वाघ येऊन गावकऱ्यांच्या गायी-म्हशी खातात तर हत्ती आणि इतर शाकाहारी जीव सुपीक शेतीची प्रचंड नासधूस करतात. बरे राष्ट्रीय उद्यान झाले म्हणून शेकडो वर्षांपासून वसलेले नदीकाठचे सुपीक प्रदेश सोडावेत का हा प्रश्न गावकऱ्यांना पडतो. दुसरे संकट रिसॉर्ट उद्योजकांचे. ही गावे नदीच्या काठी, अरण्यांजवळ वसली असल्यामुळे जंगलाचा अतिशय सुंदर 'व्ह्यू' मिळतो. पर्यटकांना भुरळ घालायला ही जागा मोक्याची. तेव्हा या गावकऱ्यांना हाकलून, त्यांच्या जमिनींवर ताबा मिळवण्यासाठी रिसॉर्ट व्यावसायिक प्रचंड त्रास देतात. या त्रासाला कंटाळूनही अनेक गावकरी शहरांमध्ये निघून गेले. काही मजूर झाले.

काहीही असले, तरी बदलत्या पात्राच्या नदीसोबत कसे राहावे हे या गावकऱ्यांना व्यवस्थित कळते, पण रिसॉर्टचे तसे नाही. हे रिसॉर्ट्स नदीचे प्रदूषण करणार आणि तिची हानी करणार हे ओघाने आलेच. धरणांमुळे नदीच्या पुरामध्ये वाढ झाली आहेच, पण पात्रही वेगाने सरकू लागली आहेत. या दोन कारणांमुळे अनेक गावे आणि त्यांच्या शेतजमिनी नदीखाली गेल्या आहेत. पण नदीखाली गेलेल्या जमिनींचा मोबदला किंवा दुसरीकडे जमीन सरकार देणार का? याबद्दल सारा शुकशुकाट. आपल्या नदीखालच्या जमिनींसाठी आजही गावे लढा देत आहेत. हे झाले गावठाण असलेल्यांचे. पण गावठाण नसलेल्यांचे काय? पहाडी गंगेचे प्रदेश प्रसिद्ध आहेत भटक्या मेंढपाळ आणि गोपाळ जमातींसाठी. या जमातींचे कोणते गाव नाही. बर्फ वितळला की नदीच्या खोऱ्यातील पर्वतीय गवताळ कुरणे दिसू लागतात. या कुरणांना बुग्याल म्हटले जाते. इथे हे मेंढपाळ- गोपाळ गुरांना चरायला सोडतात. त्यांच्या देशी गायी-म्हशींच्या दुधाची मागणी प्रचंड असते. हिवाळा सुरू झाला की ते मैदानी प्रदेशात येतात आणि नदीकाठच्या मैदानी कुरणांवर गुरांना चरायला सोडतात. पण नदीपात्रात सतत होणाऱ्या अतिक्रमणांमुळे मैदानी कुरणे नष्ट होत आहेत, तर पहाडी कुरणांवर जाण्यास राष्ट्रीय उद्यानांमुळे बंदी आली आहे. इकडे आड तर तिकडे विहीर अशी इथल्या या गोपाळ-मेंढपाळ समूहांची स्थिती!

अशा परिस्थितीत मैदानी प्रदेशात बांधकाम व्यावसायिकांशी तर पहाडी भागात वन अधिकाऱ्यांशी हे जिकिरीने लढा देत आहेत. या साऱ्यात ज्यांची गावे उद्ध्वस्त झाली, पुरात गेली किंवा जे मेंढपाळ-गोपाळ काही करू शकत नाहीत, त्यांचे काय होते? यातले बरेच वाळू माफियांच्या हाती लागतात. उत्तर भारतात मोठ्या प्रमाणात शहरीकरण सुरू आहे. ही शहरे उभी करायला लागणारी वाळू गंगेच्या पात्रातून खणून आणली जाते. रोज ट्रक-ट्रकच्या भरून श्रीनगर-हरिद्वार मार्गे दिल्ली-लखनऊला येत आहेत. हे वाळू खनन इतक्या मोठ्या प्रमाणात होते आहे की नदीचे पात्र आणि प्रवाह दोन्ही अरुंद होत चालले आहेत. शिवाय गंगेकाठी नदीपात्रातील वाळूवर, पुराचे पाणी ओसरल्यावर, मोठ्या प्रमाणात भात आणि भाजीपाल्याची शेती होते (riverbed farming). या वाळू खननामुळे ती शेतीही संपत चालली आहे.

वाळू खननामुळे पवित्र गंगामाईचे होणारे नुकसान या भागातील साधू- संतांना अजिबात पाहवत नाही. त्यामुळेच त्यांनी या माफियांना चाप बसवण्यासाठी अहिंसक चळवळ सुरू केली आहे. यातील ठळक उदाहरण म्हणजे हरिद्वारजवळील मातृ सदन मठ. गेली दोन दशकं उत्तराखंडमधील अवैध वाळू खनन थांबवण्यासाठी हा मठ लढत आहे. या मठातील अनेक संन्यासी वाळू खननाविरोधात अनेकदा सत्याग्रहाला बसले, नदी वाचवण्यासाठी त्यांनी आमरण उपोषण केले. त्यातल्या काही संन्याशांचे शंभरहून अधिक दिवस आमरण उपोषण करताना निधनही झाले. गंगेसाठी आमचे प्राण गेले, तरी पर्वा नाही अशी या साधू-महंतांची भूमिका आहे. पण हे साधू-संत आमरण उपोषण करत मेले तरी त्याचा कळवळा काही मायबाप सरकारला आला नाही. एरवी कुंभमेळ्यांवरून साधू-संतांवर टीकेची झोड उठवली जाते, पण त्यांच्या नदी वाचवण्यासाठीच्या कार्याची पुरेशी दखल सरकार किंवा माध्यमे कोणीच घेत नाही. याचे सगळ्यात व्यवच्छेदक उदाहरण म्हणजे जी. डी. अग्रवाल ऊर्फ स्वामी ग्यान स्वरूप सानंद. खरंतर अग्रवाल हे आयआयटी कानपूर येथील अभियांत्रिकीचे प्राध्यापक. पण गंगेचे निस्सीम भक्तही. गंगा हाच त्यांचा धर्म आणि 'धर्मो रक्षति रक्षितः' हा त्यांचा बाणा. धरणे, वाळू खनन, खाणकाम, वाढते अतिक्रमण या साऱ्यापासून गंगेचा प्रवाह अबाधित राहायला हवा ही त्यांची प्रमुख मागणी. गंगेच्या अविरलतेसाठी अग्रवाल यांनी २००८ पासून अनेकदा सत्याग्रह केले. त्यांच्या सत्याग्रहांमुळे काही धरणांचे प्रकल्प सरकारला बंद करावे लागले. नदीच्या संवर्धनासाठी सरकारला कायदे करायलाही अग्रवाल यांनी भाग पाडले. २०१३ मध्ये त्यांनी नदी-सुधारणा, आणि वाळू खननाविरोधात १०१ दिवस अयशस्वी आमरण उपोषणाचा सत्याग्रह केला. सरकारने अग्रवाल यांच्या मागण्यांकडे पुरेसे लक्ष दिले नाही म्हणून चक्क तीन सरकारी अधिकाऱ्यांनी राजीनामा दिला. अग्रवाल यांनी २०१२-१३ मध्ये संन्यास स्वीकारला, पण नदीसाठी सत्याग्रह करणे सुरू ठेवले. त्यांनी नदीचा प्रवाह अबाधित ठेवण्यासाठी शेवटचा सत्याग्रह आणि आमरण उपोषण २०१८मध्ये केले. याच उपोषणात त्यांचे निधन झाले.

सुंदरलाल बहुगुणा, विमलभाईंसारख्या पर्यावरणप्रेमी कार्यकर्त्यांप्रमाणेच, गंगेसाठी सत्याग्रह करत मृत्यूला कवटाळणारे अग्रवालांसारखे संत-महंतही आता मुक्त झाले. पण या साऱ्यातून गंगेची मुक्ती कधी? हा प्रश्न आजही भेडसावतो आहे. पुढील लेखांत उत्तर प्रदेश-बिहारमधील मैदानी गंगेचे नदीकारण समजून घेऊ या.

कुतूहल

आवाज कुठे आणि का घुमतो?

एखाद्या गडकिल्ल्याच्या ठिकाणी डोंगरासमोर उभं राहून आपण जोराने बोललो, तर डोंगराच्या कडेकपारीतून आपला आवाज पुन्हा ऐकण्याचा अनुभव येतो. आवाज परत ऐकण्याचा हा अनुभव म्हणजे आवाजाच्या परत फिरण्याचा (परावर्तनाचा) एक आविष्कार! कधी आपण असा परावर्तीत होऊन येणारा ध्वनी म्हणजे 'प्रतिध्वनी' अनुभवतो, तर काही ठिकाणी आपला आवाज घुमतोय असं आपण म्हणतो.

जेव्हा आपल्या स्वरयंत्रातले स्वरतंतू कंप पावतात; तेव्हा त्या कंपनातून आवाज निर्माण होतो. हा आवाज हवेतून सर्व दिशांना पसरतो. हवेत निर्माण झालेली ही कंपनं जेव्हा आपल्या कानाच्या पडद्यावर येऊन आदळतात, तेव्हा कानाच्या पडद्यामागच्या द्रवाद्वारे आपल्या मेंदूला आवाजाच्या संवेदना पोहोचवतात. आपला मेंदू या कंपनांचा 'अर्थ' समजून घेतो आणि आपण 'ऐकतो'.

जेव्हा आपण एखाद्या विशिष्ट ठिकाणी असलेल्या डोंगरासमोर मोठ्याने बोलतो, तेव्हा आपल्या आवाजाची कंपनं हवेतून, आपल्या समोर असलेल्या डोंगरापर्यंत पोहोचतात आणि डोंगरावर आपटून, परावर्तित होऊन परत आपल्या कानावर आपटतात. याला 'प्रतिध्वनी' असं म्हणतात. आवाज आपटून परत फिरण्यासाठी विशिष्ट परिस्थिती असावी लागते. आवाज एखाद्या वस्तूवर आपटणं महत्त्वाचंच; पण मूळ आवाज आणि तो ज्या भागावर आपटून परत येतो ती जागा, यांच्यातलं अंतर कमीत कमी, साधारणपणे १७ मीटर असायला हवं. तो भाग कातळ किंवा दगडी भिंतीसारखा कठीण असेल; तर आवाजाचं परावर्तन उत्तम होतं. मऊ असेल, म्हणजे डोंगरावर दाट झाडी असेल तर आवाज शोषला जाऊन परावर्तन कमी होतं किंवा कधीकधी होतच नाही.

रिकाम्या खोलीत जेव्हा आपण बोलतो तेव्हाही आवाजाचं परावर्तन होतं, म्हणजेच प्रतिध्वनी होतो; परंतु हा आवाज स्पष्ट नसतो. आपला आवाज आणि भिंत यांच्यातलं अंतर १७ मीटरपेक्षा कमी असतं. त्यामुळे आपण बोलल्यावर लगेच आवाजाचं परावर्तन होतं. रिकाम्या खोलीत समोरासमोरच्या भिंतीवर आपटून आवाजाचं पुनःपुन्हा परावर्तन होतं. त्यामुळे आवाज सलग परत परत येत राहतो आणि त्याची स्पष्टता गमावून बसतो. यालाच सर्वसामान्य भाषेत आपण आवाज घुमतोय असं म्हणतो.

एखादी वास्तू घुमटाकार म्हणजे बाहेरच्या बाजूने फुगीर असेल, तर त्याच्या आतल्या गोलाकार भागावर आवाज अनेक ठिकाणी आपटतो आणि अखेरीस, मध्याशी एका विशिष्ट बिंदूत एकत्र येतो. त्या ठिकाणी उभं राहून बोलल्यावर परावर्तित आवाज मोठा आणि स्पष्ट येतो आणि घुमतही राहातो. विजापुरातल्या गोलघुमट या ऐतिहासिक वास्तूत, घुमटाखाली उभं राहून काही बोललं, तर प्रतिध्वनीचा उत्तम अनुभव येतो.

– **सुचेता भिडे**
मराठी विज्ञान परिषद
ईमेल : office@mavipa.org
संकेतस्थळ : www.mavipa.org

व्यक्तिवेध

'डोह', 'सोन्याचा पिंपळ', 'पाण्याचे पंख' आणि 'कोरडी भिक्षा' यांसारख्या साहित्यकृतींतून ललित लेखनाची 'मौज' अनुभवताना वाचकांना समृद्ध करण्याचे काम श्रीनिवास विनायक कुलकर्णी यांनी केले. अर्धशतकाहून अधिककाळ साहित्यसेवा करणाऱ्या व्रतस्थ लेखकाला विंदा करंदीकर जीवनगौरव पुरस्काराने सन्मानित केल्याने साहित्याचाच गौरव झाला आहे. श्रीनिवास कुलकर्णी यांचे लेखन महाराष्ट्रापुरतेच मर्यादित न राहता धारवाड आणि कोलकतापर्यंत पोहोचले असून त्यांच्या साहित्याचा इंग्रजी अनुवाद झाला आहे.

श्रीनिवास विनायक कुलकर्णी

सांगली जिल्ह्यातील औदुंबर या गावी जन्म झालेल्या श्रीनिवास यांचे प्राथमिक शिक्षण औदुंबरमध्येच झाले, तर सातवीपर्यंतचे शिक्षण अंकलखोप येथे झाले. त्यापुढील शिक्षण सांगलीच्या 'अनाथ विद्यार्थी आश्रम' या संस्थेत राहून पूर्ण केले. त्यांचे आजोबा व वडील दोघेही चित्रकार होते. या दोघांच्या सान्निध्यात होणारे कलेचे संस्कार आणि औदुंबरच्या परिसराच्या वातावरणाचा परिणाम यांमधून श्रीनिवास कुलकर्णी यांचे संस्कारशील, संवेदनक्षम मन तयार झाले. शिक्षण संपल्यावर प्रथम दोन वर्षे साइन बोर्ड पेंटिंगचा व्यवसाय व नंतर ओगलेवाडी येथील काचकारखान्यात हिशेब खात्यात नोकरी. त्यानंतर 'मौज' या नियतकालिकाच्या संपादन विभागात त्यांनी काम केले. कवितेवर आत्यंतिक प्रेम असलेल्या श्रीनिवास कुलकर्णी यांची पहिली कविता मराठी चौथीत असताना पां. ना. मिसाळ यांच्या 'बालसन्मित्र' मध्ये प्रसिद्ध झाली होती. पहिली गोष्ट का. रा. पालवणकरांच्या 'खेळगडी'च्या शेवटच्या बाललेखांकात प्रसिद्ध झाली. 'बालकवींच्या प्रतिभेने कविता न लिहिता गद्य लिहिले असते तर ते लेखन श्रीनिवास कुलकर्णी यांचेच झाले असते', अशा शब्दांत मंगेश पाडगावकर यांनी कुलकर्णी यांच्या लेखनाचे मोल उलगडले. 'मनातल्या उन्हात' हा त्यांचा ललित लेख १९६० मध्ये 'सत्यकथे'त प्रसिद्ध झाला. त्यांचे सर्व लेख प्रथम 'सत्यकथा' आणि 'मौज' या नियतकालिकांमधून प्रसिद्ध झाले. 'पाण्याचे पंख' या संग्रहात त्यांनी घरात आणि सभोवती असणाऱ्या, वावरणाऱ्या लहान मुलांचे भावविश्व साकारले आहे. अलोक, पदम, मनू, मिकी या लहान मुलांचे हसणे, खेळणे, बागडणे हे लेखकाच्या नजरेतून टिपताना आपल्या सभोवतालच्या लहान मुलांच्या जगाशी त्यांचे नाते जुळलेले दिसते. 'कोरडी भिक्षा' या संग्रहातील व्यक्तिचित्रांच्या चित्रणातून पुन्हा वेगळे अनुभव वाचकांसमोर उलगडतात.

त्यांच्या सर्व लेखनाला चित्रदर्शी शब्दकलेची जोड लाभली आहे. चित्रकलेच्या संस्कारातून येणारी दृश्यमयता, निसर्गाच्या सूक्ष्म निरीक्षणामधून वर्णनात येणारा बारकावा आणि अनुभवाचा तळ गाठणारी पारदर्शी लेखनशैली यांमुळे कुलकर्णी यांच्या लेखांमधील आशय एक वेगळीच उंची गाठतो. ललित लेखनाला एक वेगळेच परिमाण देऊन हे लेखन समृद्ध करणारा लेखक म्हणून श्रीनिवास विनायक कुलकर्णी यांचे नाव निश्चितच अग्रक्रमाने घ्यावे लागेल.

अशा सारस्वताला महाराष्ट्र फाउंडेशनच्या वतीने यापूर्वी साहित्य पुरस्काराने सन्मानित करण्यात आले होते. आता राज्य सरकारच्या 'विंदा करंदीकर जीवनगौरव पुरस्कारा'ने कुलकर्णी यांच्या शिपरेचात मानाचा तुरा खोवला गेला आहे.

राजवाडे विचारविश्व

पारदर्शी, प्रामाणिक 'भाषांतर'

विष्णुशास्त्री चिपळूणकर हे वि. का. राजवाडे यांचे एक प्रेरणास्थान होते. त्यांनी चिपळूणकरांच्या 'निबंधमाले'तला 'भाषांतर' हा तीस पानी निबंध वाचला, अभ्यासला असणार, हे उघड आहे. 'प्राचीन संस्कृतमध्ये भाषांतर हा शब्द आढळत नाही, कारण त्याच्या प्रयोगाचे कधी कारणच पडले नसावे... पुढे संस्कृत मागे पडून प्राकृतचा किंवा बोलभाषांचा प्रचार झाला, तेव्हा कुठे भाषांतर करण्याचा प्रसंग आला. पण त्याला भाषांतर ही संज्ञा नसून 'छाया' (म्हणजे प्रतिबिंब या अर्थाने) हे नाव होते'... वगैरे वगैरे माहितीबरोबरच चिपळूणकरांनी भाषांतराच्या एकूण प्रक्रियेबाबतच्या विविध पैलूंचे केलेले विवेचन राजवाडे यांनी लक्षात घेतले असणार. विशेषतः भाषांतरकर्त्यांच्या अडीअडचणींबद्दल त्यांनी केलेले सोदाहरण विवेचन. 'युरोपचा आद्य महाकवी होमरच्या 'इलियड' महाकाव्याची इंग्रजीमध्ये जी दहाबारा भाषांतरे झाली आहेत, त्यात पोप नामक कवीने केलेले भाषांतर विशेष प्रख्यात आहे. पण ते करताना काय त्रेधा उडाली, ती त्यानेच स्वतः वर्णिली आहे. भाषांतरास हात घालण्यापूर्वीच त्याने आपला बेत वर्तमानपत्रद्वारा जाहीर करून शेकडो बड्या लोकांच्या वर्गण्या घेऊन ठेवल्या. असा संकल्प केला की, दररोज ५० ओळींप्रमाणे सुमारे वर्ष सव्वा वर्षात सगळे २४ सर्ग संपवून टाकायचे. हे सर्व बेत होईपर्यंत ठीक होते, पण जेव्हा भाषांतराला त्याने प्रत्यक्ष आरंभ केला, तेव्हा त्याला कळून आले. चैन पडेनासे झाले, रात्री झोप येईनाशी झाली. पुढे पुढे तर मला कोणी फाशी देईल तर बरे होईल, असे त्याला होऊन गेले... जे काम तो वर्ष सव्वा वर्षात आटपणारा होता, ते रखडता रखडता पाच वर्षे झाली तरी आटपेना. वर्गणीदारांचा पैसा घेऊन अडकला नसता, तर त्याने ते ओझे झुगारूनही दिले असते... इतके करूनही भाषांतर कितपत उतरले?...' ग्रीक व ल्याटिन भाषेत निपुण अशा एका विख्यात पंडिताने पोपच्या तोंडावरच त्याला सांगितले की, 'तुमचे भाषांतर म्हणजे मजेशीर टुमदार कविता आहे खरी, पण तीत होमरचे गुण बिलकूल उतरलेले नाहीत!'... असे चिपळूणकरांनी त्या निबंधात म्हटले होते.

राजवाड्यांनी मराठीत तोपर्यंत रूढ नसलेल्या 'भाषांतर' या शब्दाचीच निवड आपल्या नियतकालिकाच्या नावासाठी केली आणि चिपळूणकरांच्या पुढे चार पावले टाकून ते मासिक प्रकाशित करताना सर्व प्रकारची सावधगिरीही घेतली. त्यांनी आपल्या मर्यादा ओळखल्या, वारेमाप आश्वासने दिली नाहीत किंवा अवास्तव दावेदेखील केले नाहीत. एखाद्या बाबतीतले आपले अज्ञान प्रकट करायलाही त्यांनी मागेपुढे पाहिले नाही. त्यांचा पारदर्शी प्रामाणिकपणा वाचकांना प्रभावित करणारा ठरला, यात नवल नाही.

प्लेटोचे भाषांतर सादर करताना त्यांनी केलेल्या निवेदनातला काही भाग या दृष्टीने मुद्दाम लक्षात घेण्याजोगा आहे. 'खरे म्हटले तर मूळ ग्रीक भाषेतून भाषांतर झाले पाहिजे होते; परंतु मला ग्रीक भाषा अवगत नसल्याकारणाने इंग्रजी भाषांतरांचीच कास धरावी लागली. प्लेटोच्या प्रासादिक वाणीचा इंग्रजी दुभाषांनी जो मजपुढे तर्जुमा करून ठेवला, त्यावरच सर्व भिस्त ठेवावी लागल्यामुळे मूळ ग्रीक प्लेटोचे म्हणणे मराठीत मला कितपत उतर(व)ता आले आहे, याविषयी माझी मलाच खात्री नाही. ग्रीक भाषेत संस्कृत व जर्मन भाषांच्याप्रमाणे समासरचना आहे. तेव्हा इंग्रजीसारख्या व्यस्त भाषेत त्या समासांचा उलगडा करतेवेळी जो घोटाळा होत असेल, त्याची कल्पना वाचकांना करता येईल. तथापि इंग्रज भाषांतरकार विद्वान, चिकित्साखोर व शोधक असल्याकारणाने त्यांच्या भाषांतरांवरून केलेल्या भाषांतरात प्लेटोचेच विचार असतील, यात संशय नाही. मराठी वाचकांना ग्रीक प्लेटो इंग्रजी दुर्बिणीतून दाखवण्याचा प्रसंग माझ्यावर आला आहे; खुद्द प्लेटोची भाषासरणी व बारीकसारीक खुब्या मराठी भाषांतरात क्वचितच साधल्या असतील, याची मला जाणीव आहे; परंतु प्लेटोसारख्या महात्म्याला पाहण्यास कितीही दगदग झाली, तरी ती साहसी वाचक सोसतील, हे मी जाणून आहे.'

राजवाड्यांनी असे स्वच्छ निवेदन करतानाच आपण प्लेटोच्या इंग्रजी भाषांतराच्या एकाच पुस्तकावर विसंबून न राहता दोन-चार पुस्तके परस्परांशी ताडून पाहिल्याचेही नमूद केले होते आणि प्लेटोला अरबीत 'अल्प्लातून' व फ्रेंचमध्ये 'प्लातों' म्हणतात, यासारखी अधिक माहिती पुरवताना आपला चौकस व्यासंगही सूचित केला होता.

त्यांनी अशी दक्षता घेऊनही 'भाषांतर' मासिक १८९७मध्ये बंद पडले. ते का, हे पुढील लेखांकात...

– **आनंद हर्डीकर**
anand47.hardikar@gmail.com

पोपटाचा पोपट!

मुद्दा केजरीवाल व कंपूचे राजकारण कसे हा नसून, त्यांना नामोहरम करण्यासाठी सत्ताधीश कोणत्या थरास जातात ही बाब उघडी पडली हा आहे...

राजधानीत एक विशेष न्यायालय अरविंद केजरीवाल, मनीष सिसोदिया यांना भ्रष्टाचार प्रकरणातून निर्दोष मुक्त करत असताना त्याच वेळी आर्थिक राजधानीत दुसरे विशेष न्यायालय दिवंगत उपमुख्यमंत्री अजित पवार, त्यांच्या पत्नी विद्यमान उपमुख्यमंत्री सुनेत्रा पवार यांच्या विरोधात चौकशी यंत्रणांचा 'दोषमुक्ती'चा अहवाल स्वीकारत होते. या दोन घटना भिन्न. चौकशी करणाऱ्या यंत्रणाही भिन्न. परंतु त्यातील अर्थ समान. याआधी हाच अर्थ राहुल गांधी, हेमंत सोरेन, छगन भुजबळ, अनिल देशमुख, संजय राऊत आदी अनेकांच्या उदाहरणांतून समोर आला होता. त्याहीआधी बोफोर्स, '२जी दूरसंचार', राष्ट्रकुल, कोळसा इत्यादी 'घोटाळ्यां'तूनही हाच अर्थ निघाला. त्याच अर्थांचीच सुधारून वाढवलेली आवृत्ती अरविंद केजरीवाल आणि मनीष सिसोदिया या दोघांस विशेष न्यायालय कथित अबकारी कर घोटाळ्यातून निर्दोष सोडताना पुन्हा एकदा देशाने अनुभवली. पण तोपर्यंत सिसोदिया यांनी जवळपास पावणेदोन वर्षे (५३० दिवस) तुरुंगवास अनुभवला आणि केजरीवाल यांनी १५६ दिवस. म्हणजे साधारण अर्धे वर्ष. याचा अर्थ आपल्यावरील बालंट दूर करण्याच्या प्रक्रियेत या दोहोंस इतका काळ संघर्ष करावा लागला. तो संपला असे अद्याप तरी म्हणता येणार नाही. कारण या दोहोंस निर्दोष ठरवण्याच्या निर्णयांस सत्ताधाऱ्यांचा शब्दही पडू न देणाऱ्या चौकशी यंत्रणा उच्च, सर्वोच्च न्यायालयात आव्हान देऊन विरोधकांची दमछाक करण्याचे आपले कर्तव्य इमानदारीने पार पाडतील. हे आता नेहमीचेच. पण तरीही केजरीवाल, सिसोदिया यांच्या बाबतच्या या निकालाची दखल आवश्यक ठरते.

कारण विशेष न्यायालयाने या प्रकरणी सदर दोहोंस निर्दोष तर ठरवलेच. वर दोषाचे पूर्ण माप केंद्रीय अन्वेषण विभागाच्या - म्हणजे सीबीआय - पदरात टाकले. ही बाब फार म्हणजे फारच महत्त्वाची. या प्रकरणातील विशेष न्यायाधीश या यंत्रणेविषयी जी काही विशेषणे वापरतात ती लक्षात घेतल्यास त्याचे महत्त्व जाणवेल. केजरीवाल आणि सिसोदिया यांवर करण्यात आलेले आरोप 'कपोलकल्पित', 'पूर्वग्रहप्रेरित' आहेत असे न्यायाधीश म्हणतात. पण पुढे जाऊन या प्रकरणी आधी या दोहोंस 'अडकवायचे' असे निश्चित करून नंतर त्यासाठी पुराव्यांची रचना करण्याचा प्रयत्न चौकशी यंत्रणा करते, असे हे न्यायाधीश ठणकावतात. यातून या प्रकरणातील संपूर्ण राजकारण आणि ते करणारे उघडे पडतात. हे राजकारण अर्थातच दिल्ली विधानसभा निवडणुकीत सत्ताधारी 'आम आदमी पक्ष' कसा पराभूत करता येईल, याविषयीचे. या पराभवाची नितांत गरज केंद्रातील सत्ताधारी भाजपस होती. दिल्लीचे अर्धवट राज्य, महापालिका इत्यादी निवडणुकांत 'आप'ला पराभूत करण्यासाठी भाजपने जंगजंग पछाडले. या प्रयत्नांत दिल्लीच्या नायब राज्यपालांनीही आपली घटनात्मक जबाबदारी प्रामाणिकपणे निभावली. पण 'आप' हरत नव्हता. अलीकडे प्रतिस्पर्ध्यांस नामोहरम करण्याचे दोन प्रमुख पर्याय केंद्रातील समर्थ सत्ताधारी भाजपकडून निवडले जातात. आपल्याला मिळवायची आहे ती सत्ता ज्यांच्या ताब्यात आहे त्यांच्या विरोधात बेछूट आरोप करत राहायचे, आज्ञाधारक माध्यमकर्मींकडून त्यांचा प्रतिध्वनी उमटत राहील याची योग्य ती खबरदारी घ्यायची, केंद्रीय चौकशी यंत्रणा मागे लावायच्या हा पहिला टप्पा. यातून गर्भगळीत होणारे पांढरे निशाण फडकावतात आणि भाजपच्या कळपात सामील होऊन भगवे उपरणे परिधान करून आपले काळ्याचे पांढरे करून घेतात. तरीही अन्य कोणी हिंमत दाखवलीच तर खटले भरणे, तुरुंगवास घडवणे आणि त्या मार्गाने आपणास आव्हान देणाऱ्यांस सत्ताच्युत करणे हा पर्याय आहेच. अजित पवार, प्रफुल्ल पटेल ते अशोक चव्हाण आणि अन्य लहानमोठे लुंगेसुंगे यांनी पहिला मार्ग निवडला. केजरीवाल आणि सिसोदिया हे दुसऱ्या गटातील.

त्याची किंमत त्यांना मोजावी लागली. पण त्याची दखल घेताना विशेष न्यायालयाने सीबीआयचे जे काही

अलीकडे वारंवार दिसून येणारी बाब म्हणजे संबंधित यंत्रणांच्या बाजूने भाजप नेत्यांनी मैदानात उतरणे. अशाही वातावरणात एखादा विशेष न्यायाधीश 'सीबीआय'च्या वस्त्रहरणाची हिंमत दाखवतो, हे अभिनंदनीयच...

वाभाडे काढले त्यासाठी संबंधित न्यायाधीश विशेष अभिनंदनास खचितच पात्र ठरतात. त्यांचे अभिनंदन करताना केजरीवाल आणि कंपूची तळी उचलली जात असल्याचा आरोप होईलही. पण तो करणारे स्वतःच्या विचारशक्तीची मर्यादाच दाखवून देतील. कारण मुद्दा केजरीवाल आणि कंपूचे राजरकारण योग्य की अयोग्य हा नाही. तर त्यांना नामोहरम करण्यासाठी सत्ताधीश कोणत्या थरास जातात ही बाब उघडी पडली हा आहे. बरोबरीच्या राजकीय लढाईतील निवडणुकीत कोणी जिंकणार, कोणी हरणार हे ओघाने आले. ते योग्यही. परंतु अलीकडे ही लढाई बरोबरीची राहिलेली नाही, ही यातील चिंतेची बाब. निवडणूक आयोग ते विविध शासकीय यंत्रणा अशा सगळ्याचा आधार सत्ताधीशांस असतो आणि न्यायालयीन लढाईत त्यामुळे विरोधकांना गुंतवणे त्यांच्यासाठी अत्यंत सोयीचे असते. ते त्यांना तुलनेने स्वस्तातही पडते. कारण खर्च स्वतः करावा लागत नाही. याउलट विरोधकांची बाब. सत्ताधारी-शरण यंत्रणा त्यांना भीक घालत नाहीत आणि न्यायालयीन प्रक्रियाही वेळखाऊ आणि खर्चीक. त्यामुळे पदरी नुसती दमछाक. ती करावयाची आणि सत्ता गेल्यानंतर न्यायालयाकडून निर्दोषतेचे प्रमाणपत्र घ्यायचे. यामुळे लोकशाहीचे अस्तित्व केवळ कागदोपत्रीच आहे असे वाटावे.

अशा 'दहशती'च्या वातावरणात एखादाच जितेंद्र सिंग यांच्यासारखा विशेष न्यायाधीश 'सीबीआय'च्या वस्त्रहरणाची हिंमत दाखवतो. या प्रकरणी न्या. सिंग यांनी सर्वच्या सर्व २३ आरोपींची निर्दोष मुक्तता केली. वर सीबीआयने दाखल केलेल्या हजारो पानी आरोपपत्रांच्या अक्षरशः या न्यायाधीशाने चिंध्या केल्या. यातील आरोपांस पुष्टी मिळेल असे काही कागदपत्र सीबीआय दाखल करू शकली नाहीच वा त्यांच्याकडे कोणी साक्षीदारही नव्हता असे हे निकालपत्र म्हणते आणि हे सगळे आरोप ऐकीव, कपोलकल्पित आणि दिशाभूल करणारे आहेत असे सुनावते. यात कोणी कुलदीप सिंग नामे व्यक्ती एक प्रमुख आरोपी होती. ''याला आरोपांशी जोडणारी एक बाब सीबीआय सादर करू शकली नाही'', असे म्हणत हे न्यायालय त्यांना मुळात या प्रकरणी गोवले का, असे विचारते. केजरीवाल, सिसोदिया यांचा या कथितप्रकरणी हात असल्याचा पुरावा, त्यांच्यावरील छाप्यात काही आक्षेपार्ह मिळाले किंवा काय इत्यादी काहीही सीबीआयकडे नाही, यासाठी हे न्यायालय सीबीआयच्या शब्दशः श्रीमुखात लगावते. ''या कथित कटाबाबतच्या आरोपपत्रात इतक्या विसंगती कशा'', हा प्रश्न न्यायालय सीबीआयला विचारत असले तरी तो वास्तवात सीबीआयच्या गळ्यातील पट्टा ज्यांच्या हाती आहे त्यांना उद्देशून असणार. यातील विसंगतींनी न्यायालय इतके संतप्त झाले की या प्रकरणाच्या तपासाची जबाबदारी असणाऱ्या सीबीआय अधिकाऱ्याच्याच चौकशीचा आदेश न्यायाधीशांनी दिला.

यानंतरची अलीकडे वारंवार दिसून येणारी बाब म्हणजे संबंधित यंत्रणांच्या बाजूने भाजप नेत्यांनी मैदानात उतरणे. आताही तेच. हा निकाल आहे सीबीआयच्या विरोधात. पण या यंत्रणेस आधार देताना दिसतात ते भाजप नेते. मुद्दा निवडणूक आयोगाचा असो वा अदानीसारख्या प्रकरणात 'सेबी'सारख्या बाजारपेठ नियंत्रकाचा. या यंत्रणांच्या बचावार्थ ज्या हिरिरीने भाजपनेते उतरतात ते पाहून उलट या यंत्रणा आणि सत्ताधारी यांच्यातील साटेलोटेच दिसून येते. हे केविलवाणे आहे. भाजपच्या चाणक्यादी धुरीणांनी या आपल्या उत्साही प्रवचनकारांस शहाणपणाचा आणि सबुरीचा सल्ला द्यायला हवा. त्याची नितांत गरज आहे. तीकडे दुर्लक्ष झाल्याने सीबीआय आणि तिच्या राखणकर्त्यांचीच अधिक अब्रू जाते. माजी सरन्यायाधीश आर एम लोढा यांनी सीबीआयचे वर्णन 'पिंजऱ्यातील पोपट' असे केले होते. सत्ताधाऱ्यांनी आपल्या बुणग्यांस आवरले नाही तर या पोपटाचा असा न्यायालयीन पोपट होण्याची वेळ वारंवार येईल.

भाजपसाठी केजरीवाल चीत आणि पटही!

लाल किल्ला

महेश सरलष्कर
mahesh.sarlashkar
@expressindia.com

आम आदमी पक्षाचे प्रमुख अरविंद केजरीवाल यांना कनिष्ठ न्यायालयाने राजकीय जीवदान दिले आहे. न्यायालयाने ज्या निष्ठुरपणे 'सीबीआय'चे वाभाडे काढले आहेत ते पाहता, केजरीवाल यांच्याविरोधातील गुन्हा आणि आरोपपत्र न्यायालयात टिकणारच नव्हते असे दिसते. एखादा खटला न्यायालयात टिकावा यासाठी पुरेसे पुरावे आहेत का, हे सीबीआयच्या तपास अधिकाऱ्यांना कळत नव्हते असे मानणे बाळबोधपणाचे ठरेल. तसे असेल तर केजरीवाल यांच्याविरोधातील खटला हा राजकीय हेतूने प्रेरित होता का, असा प्रश्न विचारला जाऊ शकतो आणि केजरीवाल यांनी निर्दोष सुटल्यानंतर पहिला प्रश्न हाच केला होता. 'गेल्या काही वर्षांत विरोधकांची राजकीय कोंडी करण्यासाठी भाजप 'ईडी' आणि 'सीबीआय'चा राजकीय हत्यार म्हणून वापर करते,' या विरोधकांच्या आरोपाला केजरीवाल यांची सुटका बळकटी देते. केजरीवाल दिल्लीच्या मुख्यमंत्रीपदी असताना त्यांना अटक केली गेली, त्यांना तिहार तुरुंगात डांबण्यात आले. लोकसभा निवडणुकीच्या (२०२४) प्रचारासाठी त्यांना जामीन देण्यात आला, नंतर हंगामी जामिनावर ते बाहेर आले. नैतिकतेच्या मुद्द्याला धरून केजरीवाल यांनी मुख्यमंत्रीपदाचा राजीनामा दिला. यानंतरच्या दिल्ली विधानसभा निवडणुकीत त्यांचा आणि त्यांच्या पक्षाचा पराभव झाला. दिल्लीत भाजप २६ वर्षांनंतर सत्तेत आला. समजा, कथित मद्यविक्री धोरणाचा मुद्दा नसताच तर केजरीवाल यांच्याविरोधात भाजपला राजकीय हत्यार मिळाले असते का? भाजपने दिल्लीची विधानसभा निवडणूक फक्त केजरीवाल यांच्याविरोधात प्रचार करून जिंकली. केजरीवालांचे सरकारी निवासस्थान असलेल्या शीशमहलमधील कथित आलिशानपणा आणि मद्यविक्री घोटाळा करून खिशात टाकलेले कथित १०० कोटी रुपये हेच दोन मुद्दे केजरीवाल यांचा पराभव करण्यासाठी वापरले गेले. मात्र, कनिष्ठ न्यायालयाने 'सीबीआय' आर्थिक निरक्षर असल्याची शेरेबाजी केली असेल तर, 'सीबीआय'ने केजरीवाल यांच्याविरोधात राजकीय दबावाने गुन्हा दाखल केला असा आरोप होऊ शकतो. पण, आता केजरीवाल यांची सुटका झाल्यानंतरही भाजपचा फायदा होऊ शकेल असे मानले जात आहे.

म्हणजे हवे तेव्हा विरोधकांना तुरुंगाची हवा खायला लावून राजकीय फायदा मिळवायचा आणि त्यांच्या सुटकेनंतर साळसूदपणाचा आव आणत, सद्यःस्थितीत निर्माण झालेल्या राजकीय परिस्थितीतूनही लाभ मिळवायचा असे दोन्ही बाजूने राजकीय लोणी खाण्याचे काम भाजप करू लागला असल्याचे केजरीवाल यांना मिळालेल्या नव्या राजकीय संधीतून दिसत आहे.

तरीही, भाजपने कनिष्ठ न्यायालयाला 'मॅनेज' केले वगैरे अफवांवर विश्वास ठेवण्याचे कारण नाही. मुळात तसे

केजरीवाल यांची सुटका झाल्यानंतरही भाजपचा फायदा होऊ शकेल. काँग्रेसविरोधात अनेक राज्यांत केजरीवाल उपयोगी पडू शकतात...

करण्याची भाजपला गरजच नव्हती. झाले फक्त इतकेच की, भाजपला अपेक्षा नसताना न्यायाधीशांनी 'सीबीआय'ला जबरदस्त फटके मारले. हा न्यायाधीशांचा उग्र अवतार अप्रत्यक्षपणे भाजपला उपयुक्त ठरला एवढेच म्हणता येईल. केजरीवाल भाजपच्या आदेशाने सुटलेले नाहीत; त्यांना कनिष्ठ न्यायालयाने पुराव्याअभावी निर्दोष सोडले आहे. पण, 'सीबीआय'ने हा खटला इतका कमकुवत आधारावर उभा केला होता की, केजरीवाल यांना सोडण्याशिवाय न्यायालयासमोर पर्याय नव्हता. यथावकाश केजरीवाल सुटणार हे कदाचित पहिल्यापासून भाजपलाही माहीत असू शकते. भाजपच्या निर्णयप्रक्रियेतील नेत्यांनाही खटला दुबळा असल्याचे कळत नव्हते असे मानणे चुकीचे ठरेल. त्यामुळे राजकीय फायदा घ्यायचाच असेल तर केजरीवाल यांच्या सुटकेसाठी भाजपला काहीही करण्याची गरज नव्हती. अर्थात, केजरीवालांच्या सुटकेनंतर उद्भवणाऱ्या नव्या राजकीय परिस्थितीचा लाभ भाजपला घेता येऊ शकतो हे मात्र खरे.

न्यायालयाच्या निकालामुळे केजरीवाल पुन्हा उसळी मारून नव्या जोमाने कामाला लागतील. त्यांच्या पक्षाला उभारी मिळेल. नवी संजीवनी जशी 'आप'ला तारू शकेल तसेच, तिचा भाजपला राष्ट्रीय राजकारणात तसेच, गुजरात, पंजाब, गोवा तसेच इतर काही राज्यांमध्येही उपयोग होऊ शकेल. या बदललेल्या राजकीय समीकरणात सर्वात मोठे नुकसान काँग्रेसला सहन करावे लागू शकते. आणि म्हणूनच केजरीवाल यांच्या सुटकेनंतर इतर विरोधी पक्षांनी आनंद व्यक्त केला असताना काँग्रेसचे नेते मात्र तोंड पाडून बसले होते. त्यांनी 'आप'वर भाजपचा 'ब' चमू असल्याचा आरोप केला. राष्ट्रीय स्तरावर भाजप हा काँग्रेसचा प्रमुख विरोधक असला तरी, त्या विरोधात लढण्यामध्ये 'आप'चा अडथळा येतो हे काँग्रेसला गेल्या गुजरात विधानसभा निवडणुकीत समजले होते. पंजाबमध्ये 'आप'ला सत्ता मिळाली, दिल्लीत 'आप'चा पराभव झाला. पण काँग्रेसला सत्ता मिळणे कठीण झाले. 'आप'चे हे 'बफर' भाजपसाठी फायद्याचे ठरते.

केजरीवाल न्यायालयातील प्रलंबित खटल्यांमुळे गलितगात्र झालेले होते, त्यात दिल्लीतील त्यांची सत्ताही गेली. त्यांच्याकडे पंजाब असले तरी तिथेही सर्व काही आलबेल आहे असे नव्हे. तिथल्या 'आप' सरकारच्या कारभारावर टीका केली जात आहे. मुख्यमंत्री मान यांची कार्यक्षमता, लाचखोरी, कायदा-सुव्यवस्थेची परिस्थिती असे अनेक मुद्दे 'आप' सरकारविरोधात जाऊ लागले आहेत. पण, केजरीवाल विजनवासात गेल्यामुळे आपच्या संघटनेलाही मरगळ आली होती. दिल्लीमध्ये आप प्रमुख विरोधी पक्ष असल्यामुळे 'आप'चे नेते पत्रकार परिषद वगैरे घेऊन पक्षाचे अस्तित्व टिकवण्याचा प्रयत्न करत होते. असे असले तरी, या पक्षाचे अस्तित्व केजरीवाल यांच्यावरच अवलंबून आहे. तेच निष्क्रिय असल्यामुळे पक्षाचे काय होणार हा प्रश्न होता. आता केजरीवाल निर्दोष सुटल्यामुळे आपला नैतिक विजय झाल्याचे त्यांना दाखवता येईल. राजकीय पुनर्वसनासाठी हा नैतिकतेचा मुद्दा त्यांना उपयुक्त ठरू शकेल. अण्णा हजारेंच्या २०१२ मधल्या भ्रष्टाचारविरोधी आंदोलनात केजरीवाल प्रमुख नेते होते. भ्रष्टाचारविरोधात लढणारा नेता ही प्रतिमा त्यांना दिल्लीतील सत्ता मिळवताना उपयोगी पडली. पण मद्यविक्री घोटाळ्याच्या खटल्यामुळे त्यांनी नैतिकतेचा मुद्दा गमावला होता. आता पुन्हा त्यांना याच मुद्द्याच्या आधारे राजकीय आगेकूच करता येणार आहे. ते मोदी-शहांविरोधात आक्रमक होतील. त्यांचे दिल्लीतच नव्हे तर पंजाब, गुजरात, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, गोव्यात दौरे सुरू होतील. या राज्यांमध्ये २०२७ मध्ये विधानसभा निवडणूक होणार आहे. या दौऱ्यातून केजरीवाल पक्ष संघटना पुन्हा बांधतील. त्यांचे नेते संसदेतही आक्रमक होतील.

या राज्यांत 'आप'ला मिळणारी मते भाजपसाठी महत्त्वाची असतात. 'आप' नेहमीच काँग्रेसची मते आपल्याकडे वळवतो आणि त्याचे नुकसान काँग्रेसला सहन करावे लागते. हे उलट बाजूनेही सिद्ध करता येते. गेल्या वर्षी दिल्ली विधानसभेच्या निवडणुकीत काँग्रेसने आपला मदत केली नाही. प्रचाराच्या अखेरच्या टप्प्यात मुस्लीमबहुल मतदारसंघांमधील काँग्रेसच्या उमेदवारांसाठी राहुल गांधींनी प्रचार केला होता. काही मतदारसंघांमध्ये काँग्रेसच्या उमेदवारांच्या मतांमुळे आपचा पराभव झाला. त्यावरून केजरीवाल यांनी काँग्रेसला बोल लावले होते. गुजरात विधानसभा निवडणुकीची एक प्रकारे परतफेड काँग्रेसने केल्याची चर्चा रंगली होती. दिल्लीत केजरीवाल पराभूत झाल्याशिवाय आपल्याला संधी मिळणार नाही हे ओळखून काँग्रेसने ही रणनीती आखल्याचे बोलले गेले. हे पाहता, आता केजरीवाल पुन्हा सक्रिय होणे भाजपला फायदेशीर कसे हे समजू शकते.

राष्ट्रीय दर्जासाठी...

केजरीवाल दोषी ठरले असते तर त्यांना तुरुंगात जावे लागले असते. मग, 'आप'ने कच खाल्ली असती. केजरीवाल निर्दोष सुटले नसते पण खटला प्रलंबित राहिला असता तरीही ते राष्ट्रीय राजकारणाच्या परिघाबाहेरच राहिले असते. त्याचा परिणाम त्यांच्या पक्षाच्या सत्ता मिळवण्याच्या आणि टिकवण्याच्या क्षमतेवर झाला असता. पंजाबमध्ये 'आप'चा पराभव निश्चित मानला जात होता. आता कदाचित 'आप'ला काँग्रेसविरोधात लढा देता येऊ शकेल. गेल्या वेळी 'आप'ने पंजाब हाती घेतला त्यामागे काँग्रेसमधील अनागोंदी जितकी कारणीभूत होती तितकीच शिरोमणी अकाली दल आणि भाजपची निष्क्रियताही होती. केजरीवाल रिंगणात आलेच नसते तर काँग्रेसचे पंजाबमधील पुनरागमन फारशी आश्चर्याची बाब नव्हती. पण, केजरीवालांच्या नव्या इनिंग्जमुळे अनेक राज्यांत चित्र बदलले आहे. गेल्या वेळी केजरीवाल यांनी उत्तराखंडमध्ये जोर लावला होता पण, ऐन मोक्याच्या वेळी त्यांनी उत्तराखंड सोडले आणि मोर्चा गुजरातकडे वळवला. तिथे 'आप'ने १३ टक्के मते घेतली होती. दिल्लीत निवडणूक व्हायला अद्याप चार वर्षे बाकी आहेत, त्या वेळी काय परिस्थिती निर्माण होते हे केजरीवालही सांगू शकत नाहीत. पण पुढच्या वर्षी पंजाब वगळता भाजपची सत्ता असलेल्या राज्यांत निवडणुका होणार आहेत. तिथे केजरीवाल 'आप'चा राष्ट्रीय पक्षाचा दर्जा टिकवण्यासाठी कामाला लागतील. समजा गुजरात, गोवा, उत्तराखंड आणि पंजाब या राज्यांत निकालांची पुनरावृत्ती झाली तर केजरीवाल पुन्हा एकदा स्वतःला राष्ट्रीय स्तरावरील नेते सिद्ध करतील. केजरीवाल मैदानात उतरल्यामुळे पंजाबची निवडणूक लक्षवेधी ठरेल यात शंका नाही.

अन्वयार्थ

'आनंदी आनंदा'त निवडक निर्देश...

विधानसभेत उत्तर देण्यासाठी आपल्याकडे माहितीच नाही कारण संबंधित अधिकाऱ्यांनी आपल्याला माहिती दिली नाही, अशी कबुली द्यावी लागणे ही मंत्री पंकजा मुंडे यांची केविलवाणी अवस्था. पण यावर 'अशा अधिकाऱ्यांना निलंबित करा,' असा आदेश तालिका अध्यक्ष देतात, सरकारही लगेच भारतीय प्रशासकीय सेवेतील (आयएएस) अधिकाऱ्याचे निलंबन करते, हे मात्र अनाकलनीय. अधिवेशन काळात वा अन्य वेळेलाही मंत्र्यांना माहिती पुरविणे हे अधिकाऱ्यांचे कर्तव्यच. त्यामुळे, पर्यावरणमंत्री पंकजा मुंडे यांनी अधिकारी आपल्याला माहिती देत नाहीत अशी व्यथा बोलून दाखवताच सर्वपक्षीय आमदार एकत्र आले. लगेच तालिका अध्यक्ष दिलीप लांडे यांनी अधिकाऱ्यांच्या निलंबनाचा आदेश दिला. मुख्यमंत्र्यांकडील सामान्य प्रशासन विभागाने अध्यक्षांच्या आदेशाची दखल घेत तात्काळ महाराष्ट्र प्रदूषण नियंत्रण मंडळाचे सदस्य सचिव डॉ. देवेंदर सिंह यांच्यावर शिस्तभंगाची कारवाई म्हणून त्यांना निलंबित केले. तालिका अध्यक्षांनी हा आदेश दिला असला तरी विधानसभेच्या अध्यक्षांच्या खुर्चीवरून निलंबनाचा आदेश देण्यात आल्याने कारवाई केल्याचा त्यावर सरकारचा युक्तिवाद. पण मुळात, अध्यक्षांच्या खुर्चीवरून सरकारला निर्देश दिले जातात; आदेश नव्हे. पीठासीन अधिकाऱ्यांनी दिलेल्या निर्देशाचे पालन करायचे की नाही याचा निर्णय सरकार घेईल, अशी ठाम भूमिका तत्कालीन मुख्यमंत्री शंकरराव चव्हाण यांनी घेतल्याचा इतिहास आहे. याचा निवडक उपयोग आजही होतो- अनेकदा विधानसभा /विधान परिषदेच्या पीठासीन अधिकाऱ्यांकडून सरकारला महत्त्वाच्या विषयांवर निर्देश दिले जाऊनसुद्धा सरकारकडून त्याचे पालन होतेच असे नाही. इथे मात्र तालिका अध्यक्षांचा आदेशही विधानसभा अध्यक्षांनीच दिल्याचे गृहीत धरून कारवाई झाली.

मात्र सनदी वा कोणत्याही अन्य अधिकाऱ्यांच्या थेट निलंबनाचे आदेश पीठासीन अधिकाऱ्यांनी देऊ नयेत, असे संकेत असतात. एखाद्या अधिकाऱ्याकडून चुकीचे वर्तन झाले असल्यास या अधिकाऱ्याच्या विरोधात कारवाई करून त्याचा अनुपालन अहवाल सादर करावा, असा आदेश विधानसभा अध्यक्ष देऊ शकतात. याआधीही, एका सनदी अधिकाऱ्याला निलंबित करण्याचा असाच आदेश तत्कालीन उपसभापती वसंत डावखरे यांनी दिला असता राष्ट्रवादीचे अध्यक्ष शरद पवार यांनी सनदी अधिकाऱ्यांच्या निलंबनाचे आदेश देण्याची 'चुकीची प्रथा पाडू नका,' असे स्वपक्षीय डावखरे यांना बजावले होते. इथे तालिका अध्यक्षांच्या आदेशात अध्यक्षांनीही सुधारणा केली नाही. पंकजा मुंडे यांच्या कबुलीतून मंत्र्यांचा खात्यावर वचक नाही हेच दिसते. पण प्रदूषण नियंत्रण मंडळाच्या अध्यक्षांकडून अधिकाऱ्यांवर कोणाला माहिती देऊ नये, असा दबाव होता का, हा आरोप गंभीर. महायुती सरकारमधील भाजप व शिवसेना शिंदे गटातील वादातून ही निलंबनाची कारवाई घडल्याची कुजबुज मंत्रालयात सुरू आहे. रायगड व नाशिकच्या पालकमंत्रीपदाचा वाद, मंत्र्यांचे अधिकार, मंत्री व राज्यमंत्र्यांमधील धुसफुस यातून महायुती सरकारमध्ये सारे काही आलबेल नाही हेच समोर येते. एखादा अधिकारी मंत्र्यांना विधिमंडळ कामकाजाशी संबंधित माहिती देण्यास टाळाटाळ करत असल्यास संबंधितांना मुख्यमंत्र्यांनी वेळीच सरळ करण्याची आवश्यकता आहे. तेलगी घोटाळ्याचा तपास न्यायालयाच्या देखरेखीखाली सुरू होता तेव्हाही, विधिमंडळास माहिती देण्यास नकार देणाऱ्या सुबोध जयस्वाल या पोलीस अधिकाऱ्याला तत्कालीन मुख्यमंत्री विलासराव देशमुख यांनी विधिमंडळात येऊन माहिती देण्यास भाग पाडले होते.

सनदी अधिकाऱ्याच्या निलंबनाचा आदेश अध्यक्षांच्या खुर्चीवरून देणे व सरकारने तात्काळ त्याची अंमलबजावणी करणे यातून चुकीचा पायंडा पडू नये एवढीच अपेक्षा. अन्यथा जुने हिशेब चुकते करण्यासाठी निवडक निर्देशच पाळण्याचे राजकारण वाढू शकते. त्यातही 'अध्यक्षांच्या खुर्चीवरून आदेश दिल्याने निलंबनाची कारवाई झाली,' असे समर्थन सरकारकडून करण्यात येते आहे. अर्थात सध्या अध्यक्षांच्या खुर्चीवर बसणाऱ्या कोणाला वंदावे नि कोणाल निंदावे हाच खरा प्रश्न. बाळासाहेब भारदे, वि. स. पागे, बॅ. शेषराव वानखेडे, जयंतराव टिळक, मधुकरराव चौधरी, शिवराज पाटील, रा. सू. गवई, ना. स. फरांदे अशा दिग्गजांनी उभय सभागृहांचे सभापती किंवा अध्यक्षपद भूषवले आहे. आता तर आनंदी आनंदच आहे.

कांदा उत्पादकांवर पुन्हा आंदोलनाची वेळ का आली? दर वाढणार का?

विश्लेषण

अनिकेत साठे
aniket.sathe@expressindia. com

कांद्याचे दर गेल्या दोन महिन्यांत क्विंटलला ८०० रुपयांनी घसरले. लाल कांद्याची आवक वाढलेली असताना देशांतर्गत मागणीत घट आणि निर्यातही कमी, म्हणून घाऊक बाजार घसरला. आता लक्ष उन्हाळ कांद्याकडे आहे...

शेतकरी नाराज का आहेत?

नाशिक जिल्ह्यात पावसामुळे 'लेट खरीप' या लाल कांद्याची लागवड काहीशी उशिराने झाल्यामुळे आवक आता वाढू लागली, ती उन्हाळ कांदा (रब्बी हंगामात लागवड झालेला कांदा) येऊ लागल्यानंतरही किमान महिनाभर सुरू राहण्याचा अंदाज आहे. आशिया खंडातील सर्वात मोठी कांदा बाजारपेठ म्हणून ओळखल्या जाणाऱ्या लासलगाव बाजार समितीत सध्या दररोज २५ ते ३० हजार क्विंटल आवक होत आहे. अन्य बाजार समित्यांत वेगळी परिस्थिती नाही. घाऊक बाजारात प्रचंड आवक असताना तुलनेत मागणी नाही. परिणामी, नववर्षाच्या सुरुवातीला १८०० रुपये क्विंटल असणारा कांदा सध्या एक हजार रुपयांखाली आला आहे. शेतकऱ्यांच्या उद्रेकाचे ते कारण असून या दरात उत्पादन खर्चही भरून निघत नसल्याचे त्यांचे म्हणणे आहे.

कृषी विभाग समाधानी कसा?

पाऊसमान चांगले राहिल्याने यंदा नाशिक जिल्ह्यात खरीप, उशिराचा खरीप (लेट खरीप) आणि रब्बी अशा तीनही हंगामात कांदा लागवडीत वाढ झाली. कृषी विभागाच्या अहवालानुसार २०२५-२६ वर्षात खरीप कांदा लागवड ४०७६८ हेक्टर (१६१.९२ टक्के), लेट खरीप ६९, २६८ हेक्टर (१६४.९२ टक्के) क्षेत्रावर झाली. तर रब्बी हंगामात २२५७९६ हेक्टर (११०.२६ टक्के) क्षेत्रात झाली आहे. खरीप आणि लेट खरीपच्या तुलनेत उन्हाळ कांद्याची उत्पादकता जास्त असते. खरीपची प्रति हेक्टरी उत्पादकता १३९७२.०२ किलो, तर रब्बी कांद्याची सरासरी उत्पादकता २६७६९.०९ किलो इतकी आहे. पोषक वातावरणामुळे पिकांची वाढ चांगली असल्याचे कृषी विभागाने म्हटले आहे.

वाढ चांगली, म्हणून दर खराब?

खरीप आणि उशिराच्या खरीप कांद्याला फारसे आयुर्मान नसते. शेतातून काढल्यानंतर साठवणूक करता येत नसल्याने तो थेट बाजारात न्यावा लागतो. लासलगाव बाजार समितीत फेब्रुवारी २०२१-२२ मध्ये लाल कांद्याला प्रति क्विंटलला सरासरी २१३३ रुपये, २०२२-२३ मध्ये ८०८ रुपये, २०२३-२४ वर्षात १३६७ रुपये, २०२४-२५ वर्षात २४६६ रुपये असा सर्वसाधारण भाव मिळाला होता. गेल्या वर्षीचा विचार करता दर बरेच खाली आल्याचे लक्षात येते.

शेतकऱ्यांची अपेक्षा काय?

कांदा दर वाढल्यानंतर सरकार लगेच हस्तक्षेप करते. निर्यात शुल्क वाढ, निर्यात बंदी आदी निर्णय तत्परतेने घेतले जातात. दर घसरतात तेव्हा मात्र तसा हस्तक्षेप वा आधार दिला जात नसल्याची शेतकऱ्यांची भावना आहे. शेतकरी संघटनांकडून भावांतर योजनेचा आग्रह धरला जात आहे. ज्या शेतकऱ्याचा कांदा दोन हजार रु. क्विंटल दराने विकला गेला नसेल, त्याला तसा फरक देण्याची मागणी आहे. कांदा पिकणाऱ्या भागात आंदोलने सुरू झाल्यानंतर सरकार नाफेड आणि एनसीसीएफतर्फे किंमत स्थिरीकरण योजनेंतर्गत कांदा खरेदी सुरू करते. या खरेदीवर सर्वांना आक्षेप आहे. ही खरेदी थेट बाजार समितीत न उतरता होते. त्याचा दरावर कोणताही परिणाम होत नसल्याकडे वारंवार लक्ष वेधले जाते.

बाजार समित्यांचे म्हणणे काय?

कांदा बाजारातील घसरण रोखण्यासाठी लासलगाव बाजार समितीने केंद्रीय वाणिज्यमंत्री पीयूष गोयल यांना पत्र लिहून शासन स्तरावर उपाययोजना करण्याचा आग्रह धरला आहे. बांगलादेश सरकारशी बोलणी करून भारतीय कांद्याची निर्यात पूर्ववत करण्यासाठी पाठपुराव्याची गरज मांडली. कांदा निर्यातीसाठी फिलिपीन्स, जॉर्डन, युरोप, अमेरिका आणि ऑस्ट्रेलियन बाजारपेठांचा आजवर कधीही विचार झाला नाही. त्या बाजारपेठेत कांदा पाठवण्याची व्यवस्था करण्यासाठी तेथील व्यापारी संस्थांशी संपर्क साधणे आवश्यक आहे. श्रीलंकेने आयात शुल्क वाढवल्याने निर्यातीवर परिणाम झाला. हे आयात शुल्क कमी करण्यासाठी प्रयत्न करणे, देशांतर्गत व परदेशात कांदा पाठविणाऱ्यांना प्रोत्साहन योजनेत अधिक अनुदान, किंमत स्थिरीकरण अंतर्गत तातडीने खरेदी सुरू करणे, कांद्याची रेल्वेद्वारे जलद वाहतूक, कांद्याचा तुटवडा असणाऱ्या नेपाळ आणि श्रीलंकेत निर्यातीसाठी प्रयत्न करावे, अशी मागणी बाजार समितीचे सभापती ज्ञानेश्वर जगताप यांनी केली. शेतीमाल निर्यातीसाठी वसूल केल्या जाणाऱ्या शुल्कातून भावांतर निधी म्हणून स्वतंत्र निधी तयार करता येईल. त्यातून बाजारभाव घसरल्यानंतर शेतकऱ्यांना मदत थेट खात्यावर वर्ग करावी, असेही बाजार समितीने सुचविले आहे.

ईरान पर हमला चीन तक धमक

21वीं सदी की वैश्विक राजनीति का केंद्रीय अक्ष आज अमेरिका और चीन के बीच बढ़ती रणनीतिक प्रतिस्पर्धा है। यह प्रतिस्पर्धा केवल सैन्य शक्ति तक सीमित नहीं है, बल्कि तकनीक, व्यापार, आपूर्ति-श्रृंखला, समुद्री मार्गों और वैश्विक संस्थानों के प्रभाव तक फैली हुई है। ऐसे समय में भारत के सामने सबसे बड़ी चुनौती यह है कि वह अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा करते हुए इस टकराव से कैसे अवसर भी निकाले। सबसे पहले, यह समझना आवश्यक है कि अमेरिका-चीन संबंध ''प्रत्यक्ष युद्ध'' की दिशा में नहीं, बल्कि ''रणनीतिक प्रतिस्पर्धा'' की दिशा में बढ़ रहे हैं। इंडो-पैसिफिक क्षेत्र, दक्षिण चीन सागर और ताइवान जलडमरूमध्य जैसे मुद्दे तनाव के केंद्र हैं। अमेरिका अपने सहयोगी देशों के साथ मिलकर क्षेत्रीय संतुलन बनाए रखना चाहता है, जबकि चीन आर्थिक और सैन्य शक्ति के आधार पर अपना प्रभाव बढ़ा रहा है। इसी संदर्भ में दर्ध्र (भारत, अमेरिका, जापान, ऑस्ट्रेलिया) जैसे मंच उभरे हैं, जिनका उद्देश्य मुक्त और समावेशी इंडो-पैसिफिक की अवधारणा को मजबूत करना है। भारत के लिए यह स्थिति एक दोधारी तलवार है। एक ओर, चीन के साथ वास्तविक नियंत्रण रेखा (छअउ) पर तनाव ने भारत को सुरक्षा दृष्टि से अधिक सतर्क बना दिया है। रक्षा सहयोग, संयुक्त सैन्य अभ्यास और तकनीकी साझेदारी के माध्यम से अमेरिका के साथ संबंधों में गहराई आई है। इससे भारत की सामरिक क्षमता और समुद्री सुरक्षा मजबूत हुई है। दूसरी ओर, भारत को यह भी सुनिश्चित करना है कि वह पूरी तरह किसी एक ध्रुव में न बंधे, क्योंकि उसकी विदेश नीति की आधारशिला ''रणनीतिक स्वायत्तता'' रही है।आर्थिक दृष्टि से देखें तो अमेरिका-चीन प्रतिस्पर्धा भारत के लिए अवसरों का द्वार भी खोलती है। ''चाइना+1'' रणनीति के तहत कई बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ अपनी आपूर्ति-श्रृंखला का विविधीकरण कर रही हैं। इलेक्ट्रॉनिक्स, सेमीकंडक्टर, रक्षा विनिर्माण और हरित ऊर्जा जैसे क्षेत्रों में भारत निवेश आकर्षित कर सकता है। उत्पादन आधारित प्रोत्साहन (ढछक) योजनाएँ इसी दिशा में एक प्रयास हैं। यदि भारत बुनियादी ढाँचे, श्रम-कौशल और लॉजिस्टिक्स में सुधार करता है, तो वह वैश्विक विनिर्माण का महत्वपूर्ण केंद्र बन सकता है। तकनीकी क्षेत्र में भी प्रतिस्पर्धा स्पष्ट है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, चिप निर्माण और साइबर सुरक्षा जैसे क्षेत्रों में नियम और मानक तय करने की होड़ है। भारत ने डिजिटल सुरक्षा को प्राथमिकता देते हुए कुछ चीनी ऐप्स पर प्रतिबंध तो लगाया है और डेटा संप्रभुता पर जोर दिया है। किंतु यह भी सच है कि भारत का पूरा डाटा संसार एनड्रॉयड के आंगन में खेल रहा है।हम अभी भी 35-40 साल पुराने विनडोज और माईक्रोसाफ्ट पर निर्भर हैं। किसी भी दिन हमें फ्रीज किया जा सकता है। हालांकि उन्नत तकनीक में पश्चिमी देशों के साथ सहयोग के नए अवसर भी सामने आए हैं। परंतु भारत को आत्मनिर्भर तकनीकी आधार विकसित करने की दिशा में निरंतर निवेश करना होगा, ताकि वह केवल उपभोक्ता न रहे, बल्कि आत्मनिर्भर नवाचार का केंद्र भी बने। प्रतिपरधी देशों की ऊर्जा नाकेबंदी,ईधन की सप्लाई में अवरोध और परिवहन पर नियंत्रण इस युद्ध का एक संभावित लक्ष्य हो सकता है।भारतीय नेतृत्व भी इस दबाव का शिकार हो सकता है। ऊर्जा और समुद्री मार्गों का प्रश्न भी महत्वपूर्ण है। खाड़ी क्षेत्र और दक्षिण चीन सागर में किसी भी प्रकार का तनाव भारत के व्यापार और ऊर्जा सुरक्षा को प्रभावित कर सकता है। इसलिए भारत के लिए समुद्री सुरक्षा सहयोग, ऊर्जा स्त्रोतों का विविधीकरण और रणनीतिक पेट्रोलियम भंडार की मजबूती आवश्यक है। अंततः, अमेरिका-चीन की प्रतिस्पर्धा भारत के लिए केवल चुनौती नहीं, बल्कि अवसर भी है। यदि भारत संतुलित कूटनीति, आर्थिक सुधार और तकनीकी क्षमता निर्माण पर ध्यान दे, तो वह इस वैश्विक शक्ति-संतुलन में एक स्वतंत्र और प्रभावशाली ध्रुव के रूप में उभर सकता है। भारत की ताकत उसकी बहु-संरेखीय विदेश नीति, लोकतांत्रिक मूल्यों और बढ़ती आर्थिक क्षमता में निहित है। यही संतुलन भविष्य में उसे वैश्विक राजनीति के इस जटिल दौर में स्थिर और सशक्त बना सकता है।तटस्थ और निर्गुट नीति से ही यह हासिल हो सकता है।

धर्मांधता का जहर सबसे बड़ी चुनौती

डॉ. योगेश दुबे

लेखक दिल्ली विश्वविद्याल में असोसिएट प्रोफेसर हैं और राजनीतिक और सामाजिक मुद्दों के जानकार

भारत जैसे विविधता भरे समाज में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, आस्था और असहमति-ये तीनों ही लोकतांत्रिक जीवन के महत्वपूर्ण स्तंभ हैं। लेकिन, बीते कुछ वर्षों में ऐसे कई घटनाक्रम सामने आए हैं, जिन्होंने दर्शाया है कि धार्मिक भावनाओं के नाम पर हिंसा का सहारा लेने की प्रवृत्ति बढ़ रही है। ऐसा ही मामला यूट्यूबर सलीम वास्तिक पर हुए हमले का भी है, जिसने इस बहस को फिर से जीवित कर दिया है कि क्या हम एक ऐसे दौर में जी रहे हैं जहां विचारों का जवाब तर्क से नहीं, बल्कि तलवार से दिया जाएगा?

असहमति को स्वीकार करने की क्षमता हो रही कमजोर: सलीम वास्तिक का मामला भी इसी व्यापक संदर्भ का नवीनतम उदाहरण है। वे खुद को सुधारवादी दृष्टिकोण रखने वाला बताते रहे हैं और कई सार्वजनिक बहसों में शामिल हुए हैं। उन पर हमला होना इस बात की ओर संकेत करता है कि कैसे समाज में असहमति को स्वीकार करने की क्षमता कमजोर हो रही है। विचारों का टकराव तो कि किसी भी सभ्य सामाज में स्वाभाविक है, मगर यह अब उस हिंसा का रूप ले रहा है जहां सार्वजनिक मंचों से खुलेआम धमकियां दी जा रही हैं और विचारों से इत्तेफाक न रखने वाले को खामोश कराने के लिए ऐसे बर्बर कृत्यों का सहारा लिया जा रहा है।

लगातार सवालों के कठघरे में: हालांकि, यह स्थापित तथ्य है कि पूरे समुदाय या धर्म को इन घटनाओं के आधार पर दोषी न ठहराया जाए। किसी भी धर्म के अधिकांश अनुयायी शांति और सह-अस्तित्व में विश्वास रखते हैं। कुछ व्यक्तियों या समूहों के कृत्यों के आधार पर पूरे समुदाय को दोष देना न केवल गलत है, बल्कि इससे समाज में और अधिक विभाजन पैदा होता है। मगर, यह भी सच है कि इस्लामिक कट्टरपंथियों की कार्यप्रणाली के कारण इस्लाम को लगातार सवालों के कटघरे में खड़ा किया जा रहा है। चाहे बात 2019 में लखनऊ में हुई कमलेश तिवारी की गला रेतकर हत्या हो, या फिर 2022 में उदयपुर में कन्हैयालाल व अमरावती में हुई उमेश कोल्हे की निर्मम हत्या, सबका पैटर्न और मकसद एक ही है। निखिल त्यागी, संजय कुमार, अंकित झा, निशांक राठौर, यति नरसिंहानंद और नुपूर शर्मा समेत कई नाम हैं जो इसी पैटर्न का शिकार हुए हैं।

भावनाओं का स्ट्रैटेजिक टूल के तौर पर इस्तेमाल: यह समझना जरूरी है कि किसी भी समाज में कट्टरता केवल कम पढ़े-लिखे या हाशिए पर खड़े लोगों तक सीमित नहीं रहती। कई बार शिक्षित,

यहां एक महत्वपूर्ण प्रश्न उठता है कि आखिर लोग इस तरह की चरमपंथी मानसिकता तक पहुंचते कैसे हैं? इसके पीछे कई कारण हो सकते हैं। पहला कारण है भावनात्मक उकसावा जिनके लिए धर्म आस्था का विषय है, और जब किसी को यह महसूस कराया जाता है कि उसकी आस्था खतरे में है, तो वह तर्कसंगत सोच खो सकता है। दूसरा कारण है समूह पहचान और दबाव, जहां जब व्यक्ति समूह के विचारों को अपनाने के लिए दबाव महसूस कर सकता है। इससे व्यक्तिगत सोच कमजोर हो जाती है। वहीं, तीसरा कारण गलत सूचना और प्रचार है जहां कई बार आधी-अधूरी या भ्रामक जानकारी लोगों को भड़काने का काम करती है। जबकि चौथा कारण कट्टर विचारधाराओं का प्रभाव है। किसी भी धर्म या विचारधारा में कुछ ऐसे तत्व हो सकते हैं जो उसे कठोर और असहिष्णु दिशा में ले जाएं। जब इनकी व्याख्या चरम रूप में की जाती है, तो हिंसा करने और उसे सही ठहराने की कोशिश की जाती है। किसी भी परिस्थिति में यह याद रखना बहुत जरूरी है कि हिंसा किसी भी समस्या का समाधान नहीं है। चाहे विचार कितना भी असहमतिपूर्ण क्यों न हो, उसका जवाब कानून और तर्क के दायरे में ही दिया जाना चाहिए। अगर समाज में यह प्रवृत्ति बढ़ती है कि असहमति का जवाब हिंसा से दिया जाए, तो यह लोकतंत्र के लिए गंभीर खतरा बन सकता है

सामाजिक रूप से स्थापित और जागरूक लोग भी भावनात्मक उकसावे, पहचान की राजनीति या समूह दबाव के कारण चरमपंथी सोच की ओर झुक जाते हैं। यही इस समस्या का सबसे खतरनाक पहलू है-कट्टरता अब केवल अज्ञान का परिणाम नहीं, बल्कि विचारधारात्मक प्रभाव, सूचना के गलत इस्तेमाल और संगठित प्रचार का परिणाम भी बन चुकी है। इस्लाम भी इसी समस्या से जूझ रहा है और ऐसे देश-प्रदेश व दुनिया में ऐसे कई मामले सामने आए हैं, जहां कट्टरपंथियों ने इसे स्ट्रैटेजिक टूल के तौर पर इस्तेमाल किया है।

समाज में भय और असुरक्षा का माहौल: साफ है कि पिछले वर्षों में कुछ घटनाएं ऐसी रही हैं, जिनमें धार्मिक भावनाओं के आहत होने के आरोप में लोगों को निशाना बनाया गया। इन घटनाओं ने समाज में भय और असुरक्षा का माहौल पैदा किया है। हालांकि, हर मामले की अपनी अलग कानूनी और सामाजिक परिस्थितियां होती हैं, लेकिन एक सामान्य पैटर्न यह दिखता है कि सोशल मीडिया या सार्वजनिक मंचों पर व्यक्त विचारों के कारण कुछ लोगों को हिंसा का सामना करना पड़ा। वैसे तो, यह स्थिति केवल एक समुदाय या एक विचारधारा तक सीमित नहीं है बल्कि दुनिया भर में विभिन्न धर्मों और समूहों में कट्टरता के उदाहरण मिलते हैं। मगर, इस्लामिक कट्टरपंथियों की धर्मांधता ने पूरी दुनिया में कई खतरनाक हमलों को अंजाम देने की पटकथाएं लिखी हैं, जिसके उदारहण भारत ही नहीं अमेरिका, फ्रांस, ब्रिटेन से लेकर ऑस्ट्रेलिया समेत दुनिया के सैकड़ों देशों में देखने को मिलते हैं।

क्या है ऐसी मानसिकता के पीछे का कारण ?: यहां एक महत्वपूर्ण प्रश्न उठता है कि आखिर लोग इस तरह की चरमपंथी मानसिकता तक पहुंचते कैसे हैं? इसके पीछे कई कारण हो सकते हैं। पहला कारण है भावनात्मक उकसावा जिनके लिए धर्म आस्था का विषय है, और जब किसी को यह महसूस कराया जाता है कि उसकी आस्था खतरे में है, तो वह तर्कसंगत सोच खो सकता है। दूसरा कारण है समूह पहचान और दबाव, जहां जब व्यक्ति समूह के विचारों को अपनाने के लिए दबाव महसूस कर सकता है। इससे व्यक्तिगत सोच कमजोर हो जाती है। वहीं, तीसरा कारण गलत सूचना और प्रचार है जहां कई बार आधी-अधूरी या भ्रामक जानकारी लोगों को भड़काने का काम करती है। जबकि चौथा कारण कट्टर विचारधाराओं का प्रभाव है। किसी भी धर्म या विचारधारा में कुछ ऐसे तत्व हो सकते हैं जो उसे कठोर और असहिष्णु दिशा में ले जाएं। जब इनकी व्याख्या चरम रूप में की जाती है, तो हिंसा करने और उसे सही ठहराने की कोशिश की जाती है।

हिंसा नहीं किसी भी समस्या का समाधान: किसी भी परिस्थिति में यह याद रखना बहुत जरूरी है कि हिंसा किसी भी समस्या का समाधान नहीं है। चाहे विचार कितना भी असहमतिपूर्ण क्यों न हो, उसका जवाब कानून और तर्क के दायरे में ही दिया जाना चाहिए। अगर समाज में यह प्रवृत्ति बढ़ती है कि असहमति का जवाब हिंसा से दिया जाए, तो यह लोकतंत्र के लिए गंभीर खतरा बन सकता है। सलीम वास्तिक पर हुआ हमला केवल एक व्यक्ति पर हमला नहीं है, बल्कि उस विचार पर हमला है जो असहमति और बहस की जगह को बनाए रखना चाहता है। इस घटना को एक चेतावनी के रूप में देखना चाहिए कि यदि हम समय रहते कट्टरता के खिलाफ खड़े नहीं हुए, तो यह जहर समाज के हर हिस्से को प्रभावित कर सकता है। इसलिए, जरूरी है कि हम एक समाज के तौर पर हर प्रकार की धार्मिक या वैचारिक कट्टरता के खिलाफ एकजुट होकर खड़े हों, और यह सुनिश्चित करें कि हमारे समाज में तर्क, संवाद और कानून का शासन सर्वोपरि रहे।

भक्त प्रह्लाद और उनका चुनौतीपूर्ण जीवन

॥ डॉ. श्रीमती शारदा मेहता ॥

भक्त प्रह्लाद विष्णु के सच्चे भक्त थे। वे निष्काम भक्त कहे जाते हैं क्योंकि उन्होंने हमेशा अपने स्वयं के सुख के लिए कभी नहीं सोचा तथा सर्वदा दूसरों के सुख के लिए ही विष्णु भगवान का स्मरण करते रहे। इनके पिता का नाम हिरण्यकश्येपु था। वह एक दुर्जेय राक्षस था। इसके पिता कश्यप तथा माता अदिति नाम से प्रसिद्ध थे। हिरण्यकश्यपु का एक भाई था जिसका नाम हिरण्याक्ष था। हिरण्यकश्यपु को प्र''ाद के पूर्व भी सन्ताने उत्पन्न हुई थीं जिनमें तीन पुत्र तथा एक पुत्री थी। इनके नाम थे- संल्हाद, अनुल्हाद, ल्हाद तथा चैथा पुत्र प्र''ाद था। एक पुत्री थी जिसका नाम सिंहिका था। प्र''ाद की माता (हिरण्यकश्यपु की पत्नी) का नाम कयाधु था। एक बार भगवान विष्णु से अपने भाई हिरण्याक्ष के वध का बदला लेने के लिए कठोर तपस्या कर रहा था। यह देख कर देवर्षि नारद को अत्यधिक चिन्ता हुई। इन्द्र कयाधु को हरण करके ले जा रहा था। मार्ग में उसे नारदजी मिले। उन्होंने इन्द्र को कहा था कि कयाधु गर्भवती है। इसके गर्भ में असाधारण व्यक्तित्व का शिशु पनप रहा है। तब इन्द्र ने नारदजी से कहा कि आप इसे अपने आश्रम में ले जाइए। आश्रम में कयाधु धार्मिक वातावरण में रहती थी। भक्तिमय वातावरण का प्रभाव गर्भस्थ शिशु प्र''ाद पर भी पड़ा। वहाँ उसने भगवान विष्णु की कथाएँ श्रवण की जिसका प्रभाव उसके सम्पूर्ण जीवन पर परिलक्षित होता है। त्रिलोकीनाथ श्री विष्णु ही उनको राक्षसकुल में जन्म लेने के बाद भी देवत्व की ओर शनैरूशनैरू अग्रसर करते गए और सम्पूर्ण संसार ही उनके लिए विष्णुमय हो गया-

स वर्द्धमानो विरराज बालैरू
सह त्रयीनाथपदेषु भक्त्या।
बालोऽल्पदेहो महतीं महात्मा
विस्तारयन्‍ भाति स विष्णु भक्तिम्‌।।
श्रीनरसिंह पुराण अध्याय ४१/३२

बालक प्र''ाद का विद्यारम्भ किया। राजा हिरण्यकश्यप ने उसे देखा। वह बड़ी-बड़ी सुन्दर आँखों वाला बालक हाथ में पट्टी (स्लेट) लिए हुए आ रहा था। उस पर भगवान श्रीकृष्ण का चक्र तथा नाम लिखा था। बालक प्र''ाद ने श्रीकृष्ण की स्तुति सुनाई। राक्षसराज हिरण्यकश्यपु ने कहा कि ये सब तो मेरे शत्रु हैं-

गृहीत्वा तु करे पुत्रं पट्टिका या सुशोभना।
मूर्ध्नि चक्रांकिता पट्टी कृष्णनामांकिताऽऽदरात।।
श्रीनरसिंह पुराण अध्याय ४१/३६

प्र''ाद ने भी अपने पिताजी से कहा आप भी सभी पापों का नाश करने वाले श्रीविष्णु भगवान की शरण में जाने का प्रयास करें-

गुरवेऽपि ब्रवीम्येतद्यतो हितकरं परम्‌।
शरणं व्रज सर्वेशं सर्वपापक्षयंकरम्‌।।
श्रीनरसिंह पुराण अध्याय ४१/४६

यह सुनकर असुरपति हिरण्यकश्यपु ने प्र''ाद के गुरु को बुलाया और उनसे बड़े ही अपमानजनक शब्दों में वार्तालाप की। सम्राट का पुत्र होकर मेरा बालक मेरे ही शत्रु की प्रशंसा करता रहता है। यह कृत्य अनुचित है, दण्डनीय है। प्र''ाद जब किशोरावस्था के सोपान पर पहुँचा तो पिताजी हिरण्यकश्यपु ने उसके सामने राज्य शासन का भार सौंपने का प्रस्ताव रखा। भक्त प्र''ाद ने विष्णु भगवान का गुणगान करते हुए वह प्रस्ताव भी अस्वीकार कर दिया। हिरण्यकश्यप ने क्रोधित होकर आदेश दिया कि इस मूर्ख पर अस्त्र-शस्त्र से वार किए जाए परन्तु महान आश्चर्य यह हुआ कि वे अस्त्र-शस्त्र विपरीत दिशा में जाकर मारने वाले दैत्यों का ही संहार करने लगे। यह देखकर हिरण्यकश्यपु ने विषैले सर्पों को कहा कि वे प्र''ाद को डस कर मार डालें। इस प्रकार

उसको मारने के लिए अनेक प्रयत्न किए गए परन्तु सभी प्रयास निष्फल रहे। दैत्यराज हिरण्यकश्यपु के पुरोहितों ने कहा कि आप अपने क्रोध पर अपना नियन्त्रण रखें क्योंकि भले ही पुत्र कुपुत्र हो परन्तु माता-पिता कभी भी कुमाता-कुपिता नहीं हो सकते-

तदलं देव रोषेण दयां कर्तुं त्वमर्हसि।
पुत्र कुपुत्रतामेति न मातापितरौ कदा।।
श्रीनरसिंह पुराण अध्याय ४२/३८

हिरण्यकश्यपु को तो श्री विष्णु भगवान का जाप पसन्द था ही नहीं। वह उनका कट्टर विरोधी था। उसने आदेश दिया कि प्र''ाद को जहरीले विशाल सर्पों से बँधवाकर समुद्र के खारे पानी में फिंकवा दिया जाए और उस पर पर्वत की चट्टानें रख दी जाएं-

बबन्धुस्तं महात्मानं फल्गुभिरू सर्परज्जुभिरू।
गरुडध्वजभक्तं तं बद्धवाहिभिरबुद्धयरू।।
श्री विष्णुपुराण अध्याय ४३/३२

भक्त प्र''ाद को ऊँचे पर्वतों के शिखर से नीचे फेंका गया। जंगल में वृक्ष से बाँधकर उसके वध के लिए जंगली पशुओं को छोड़ा गया। परन्तु हर समय वह सभी भीषण संकटों से बचकर सुरक्षित वापस आ गया कारण कि वह श्री विष्णु का परम भक्त था। हर संकट की घड़ी में भगवान विष्णु उसकी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सहायता करते थे। अंत में हिरण्यकश्यपु ने उसे आग में जलाने की युक्ति सोची। उसकी एक बहिन थी जो प्र''ाद की बुआ थी उसका नाम होलिका था। वह बालक प्र''ाद को गोद में लेकर आग में बैठ गई। प्र''ाद जीवित बच गए और होलिका जल गई। यहाँ भी श्रीविष्णु ने अपने भक्त की सहायता की। इस घटना की स्मृति में ही प्रतिवर्ष हमारे यहाँ होलिका दहन किया जाता है।

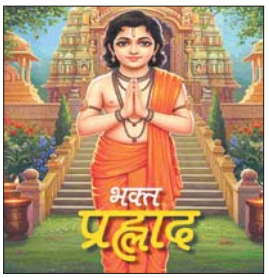

तपस्या करके ब्रह्माजी से हिरण्यकश्यप ने वर माँगा था कि न मुझे मनुष्य मार सके न जानवर ही मार सके। न मेरी मृत्यु दिन में हो न मैं रात्रि में ही मरूँ। न कोई मुझे घर में मार सके न घर के बाहर ही मार सके। मुझे मारने में न अस्त्र का प्रयोग हो न ही किसी शस्त्र का प्रयोग किया जाए। इस वर के प्रभाव से उसे अपनी मृत्यु का भय नहीं था। वह अत्यधिक निरंकुश हो गया था। भक्त प्र''ाद पर उसके पाशविक षड्यंत्र की निरन्तर वृद्धि होती आ रही थी। श्री विष्णु की निरन्तर भक्ति के कारण भक्त प्र''ाद सुरक्षित बच निकलते थे। एक दिन दैत्यराज हिरण्यकश्यपु अत्यधिक क्रोधित हुआ। उसने प्र''ाद से पूछा कि क्या तेरे भगवान इस स्तम्भ में भी हैं। प्र''ाद ने स्वीकार किया कि वे सर्वत्र व्याप्त हैं। इस स्तम्भ में भी उनका निवास है। यह सुनते ही राक्षसराज ने क्रोध में आग बबूला होकर स्तम्भ पर तलवार से वार किया। स्तम्भ में दरार पड़ गई और प्र''ाद को भगवान के नृसिंह रूप के दर्शन हो गए। नृसिंह दैत्यों से घिरे हुए हैं और उनका वध करते आ रहे हैं। जब सूर्यास्त का समय हुआ तब वे असुर हिरण्यकशिपु को घसीट कर द्वार तक ले गए। उसे अपनी जंघा पर लिटा कर तीक्ष्ण नाखूनों से उसके विशाल वक्षस्थल को विदीर्ण कर दिया-

संध्याकाले गृहद्वारि स्थित्वारौ स्थाप्य तं रिपुम्‌।
वज्रतुल्यमहोरस्कं हिरण्यकशिपुं रुषा।
नखैरू किसलयमिव दारयत्याह सोऽसुररू।।
श्रीनरसिंहपुराण अध्याय ४४/२९

इस प्रकार राक्षसराज हिरण्यकश्यपु का अन्त उसकी इच्छानुसार जो वरदान उसने ब्रह्माजी से माँगा था उसी के अनुरूप न घर में न बाहर, न दिन में न रात में, न शस्त्र से न अस्त्र से, न मनुष्य से न पशु से हो गया। इसके पश्चात ब्रह्माजी ने भक्त प्र''ाद को राजा के पद पर अभिषिक्त किया-

ब्रह्मा च दैत्यराजानं प्र''ादमभिषेचयेत।
धर्मे रतिरू समस्तानां जनानामभवत्तदा।।
श्रीनरसिंहपुराण अध्याय ४४/३७

इस वध के पश्चात बुराई का अन्त हो गया। प्र''ाद जी ने राज पद प्राप्त किया। उनके गृहस्थ जीवन का प्रारम्भ हुआ। उनका विवाह धृति नामक कन्या से हुआ। उनके पुत्र का नाम विरोचन था। विरोचन के पुत्र राजा बलि थे। बलि के पुत्र बाणासुर हुए। उनकी बेटी उषा का विवाह भगवान श्री कृष्ण के बेटे के साथ हुआ। इस प्रकार राक्षस कुल में जन्म लेने के उपरान्त भी प्र''ाद राक्षसी प्रवृत्ति से विरत रहे। उनकी सद्वृत्ति हमेशा भगवान विष्णु में रही। इसका प्रमुख कारण नारद मुनि का आश्रम जहाँ उन्होंने गर्भावस्था में ही ऋषि मुनियों की भक्ति और सत्संग सुने। बाल्यावस्था से ही उन्हें सत्संगति प्राप्त होती रही जिसके कारण वे जीवन की हर कठिनाइयों व चुनौतियों को जीतते हुए आगे बढ़ते रहे।

चिंतन

आज चंद्रमा सीधे पृथ्वी की छाया से गुजरेगा

तीन मार्च को चंद्रमा सीधे पृथ्वी की छाया से गुजरेगा, जिससे पूर्ण चंद्र ग्रहण लगेगा। सबसे अच्छी बात यह है कि ऑस्ट्रेलिया और ऑटेरोआ (न्यूजीलैंड) इस नजारे को देखने के लिए सबसे उपयुक्त स्थान पर हैं। इस बार तो ग्रहण एक सुविधाजनक समय पर लगेगा। ऐसे में अलार्म लगाने और बेतुके समय पर बिस्तर से उठने की कोई जरूरत नहीं है। मंगलवार शाम को, चमकीले और पूर्ण चंद्रमा पर एक गहरी छाया पड़नी शुरू हो जाएगी। एक बार जब चंद्रमा पूरी तरह से छाया में डूब जाएगा, तो वह लाल रंग की चमक लेने लगेगा। खगोलविद इसे "पूर्णता" कहते हैं। लेकिन आकाश में विशाल लाल चंद्रमा के भयावह रूप को देखते हुए, यह आश्चर्य की बात नहीं है कि इतिहास और विभिन्न संस्कृतियों में इसे अशुभ संकेत माना जाता रहा है। आज की दुनियाय में, "रक्त चंद्रमा (ब्लड मून)" नाम ने जनपरिकल्पना में तुरंत जगह बना ली है। चंद्र ग्रहण देखना हमें याद दिलाता है कि हम एक आकर्षक ब्रह्मांड का हिस्सा हैं। इसके लिए किसी विशेष उपकरण की आवश्यकता नहीं होती और आमतौर पर आकाश में चंद्रमा को ढूंढना मुश्किल नहीं होता। कल का ग्रहण 2029 तक रक्त चंद्रमा को देखने का हमारा आखिरी मौका होगा, जब उस साल एक जनवरी की सुबह नए साल के आगमन के साथ पूर्ण चंद्रग्रहण दिखेगा। चंद्र ग्रहण एक धीमी गति से होने वाली घटना है जिसे घटित होने में कुछ घंटे लगते हैं। इस बार चंद्रमा को पृथ्वी की छाया में प्रवेश करने में 75 मिनट लगेंगे - जिसे आंशिक ग्रहण कहा जाता है। इसके बाद एक घंटे का पूर्ण ग्रहण होगा, जब चंद्रमा लाल हो जाएगा। और फिर अगले 75 मिनट में चंद्रमा छाया से बाहर निकलकर अपनी पूरी चमक पर लौट आएगा। चूंकि पृथ्वी की छाया चंद्रमा की तुलना में बहुत बड़ी होती है, इसलिए पृथ्वी के रात्रि भाग में रहने वाले सभी लोग चंद्र ग्रहण को ठीक एक ही समय पर अनुभव करते हैं। पूर्ण ग्रहण देखने का समय जानने के लिए, हमें केवल विभिन्न समय क्षेत्रों के अनुसार समय में समायोजन करना होता है। पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया के अधिकांश हिस्सों में ग्रहण की शुरुआत चंद्रमा के क्षितिज के नीचे होने से होगी। जैसे-जैसे चंद्रमा ऊपर उठेगा, वह आंशिक रूप से छाया में आता जायेगा, जिससे उसे देखना मुश्किल हो जायेगा, खासकर तेज रोशनी वाले गोधूलि आकाश में (ध्यान दें कि चंद्रमा सूर्य के अस्त होने के समय उग रहा है)।हालांकि, बस थोड़ा समय देना होगा। और फिर ग्रहण लगा हुआ चंद्रमा पूर्व में ऊपर चढ़ने के साथ-साथ और गोधूलि बेला रात में बदलने के साथ-साथ आसानी से दिखाई देने लगेगा। ऑस्ट्रेलिया के बाकी हिस्सों में ग्रहण शाम को देर से शुरू होगा, जब चंद्रमा पूर्वी आकाश में होगा। न्यूजीलैंड में ग्रहण काफी देर से, स्थानीय समयानुसार रात 10 बजकर 50 मिनट पर शुरू होगा। इससे ग्रहण का सबसे अच्छा नजारा देखने को मिलेगा, क्योंकि आकाश में पूरी तरह से अंधेरा होगा और चंद्रमा उत्तर दिशा में काफी ऊपर होगा। चंद्रमा लाल क्यों हो जाता है? तेज रोशनी वाले चंद्रमा के सामने पृथ्वी की छाया पहले काली दिखाई देती है। चंद्रमा के पूरी तरह से इस छाया में डूबने पर ही लालिमा लिए हुए 'रक्त चंद्रमा' चमकता हुआ नजर आने लगता है। चंद्रमा कितना लाल दिखाई देता है, यह पूरी तरह से उस समय पृथ्वी के वायुमंडल की स्थिति पर निर्भर करता है। वायुमंडल जितना अधिक धूल भरा होगा, उतना ही कम प्रकाश उसमें से गुजर पाएगा, जिससे चंद्रमा गहरा लाल दिखाई देगा। एक साफ और अधिक पारदर्शी वायुमंडल अधिक सूर्य की रोशनी को गुजरने देता है, जिससे चंद्रमा एक चमकदार नारंगी रोशनी में नहा जाता है। वायुमंडल से केवल लाल प्रकाश ही गुजर पाता है क्योंकि नीला प्रकाश (जिसकी तरंगदैर्ध्य कम होती है) बिखर जाता है। इसे 'रेले प्रकीर्णन' कहा जाता है। यही वह प्रक्रिया है जिसके कारण आकाश नीला दिखाई देता है। नीला प्रकाश वायुमंडल से होकर चंद्रमा की ओर नहीं जाता, क्योंकि यह पूरे आकाश में बिखर जाता है। दिन के समय आकाश में हम कहीं भी देखें, हमारी नजर नीले प्रकाश की उन बिखरी हुई किरणों में से किसी एक पर ज़रूर पड़ेगी। चूंकि सूर्य के चारों ओर पृथ्वी की कक्षा के सापेक्ष चंद्रमा की कक्षा बहुत थोड़ी झुकी हुई है, इसलिए तीनों पिंड हमेशा पूरी तरह से एक सीध में नहीं आते जिससे हम पूर्ण चंद्र ग्रहण देख सकें। अगले छह चंद्र ग्रहणों के दौरान, चंद्रमा पृथ्वी की छाया में पूरी तरह से डूबने के बजाय केवल कुछ देर के लिए ही प्रवेश करेगा। दरअसल, 2027 के तीन चंद्र ग्रहणों के दौरान, चंद्रमा पृथ्वी की बाहरी और बहुत धुंधली उपछाया में ही प्रवेश करेगा। तकनीकी रूप से चंद्रमा थोड़ा धुंधला हो जाएगा, लेकिन इसे महसूस करना लगभग असंभव होगा।

द कन्वरसेशन

कूनो के नए मेहमान

बोत्सवाना से लाए गए नौ चीते मध्यप्रदेश के कूनो राष्ट्रीय उद्यान में अपने पृथक-वास बाड़ों में स्वस्थ हैं और उन्हें सोमवार को पहली बार भोजन परोसा गया। अफ्रीका से लाए गए चीतों का यह तीसरा दल है, जिसे शनिवार को भारतीय वायुसेना के विमान से भारत लाया गया। यह कदम देश में चीतों की आबादी पुनर्स्थापित करने की चार वर्षीय योजना के तहत उठाया गया है। दुनिया का सबसे तेज दौड़ने वाला स्थलीय जीव चीता करीब सात दशक पहले भारत से विलुप्त हो गया था। परियोजना चीता के निदेशक उत्तम शर्मा ने 'पीटीआई-भाषा' को बताया कि बोत्सवाना से लाए गए सभी नौ चीते पूरी तरह स्वस्थ हैं। उन्होंने कहा कि उन्हें सोमवार सुबह उनके पृथक-वास बाड़ों में पहला भोजन दिया गया। शर्मा ने बताया कि चीते आमतौर पर तीन से पांच दिन में एक बार भोजन करते हैं और औसतन लगभग 15 किलोग्राम मांस का सेवन करते हैं। वयस्क चीतों का वजन सामान्यतः 40 से 65 किलोग्राम के बीच होता है। नवीनतम आगमन के साथ देश में चीतों की कुल संख्या बढ़कर 48 हो गई है। शर्मा ने बताया कि तीन चीतों को गांधी सागर वन्यजीव अभयारण्य स्थानांतरित किया गया है, जबकि शेष चीते कूनो में ही रखे गए हैं। अधिकारियों ने बताया कि संकटग्रस्त वन्यजीवों को आमतौर पर किसी एक ही आवास में नहीं रखा जाता, ताकि बीमारी फैलने के जोखिम को कम किया जा सके। पिछले वर्ष कूनो में 12 शावकों का जन्म हुआ था, जिनमें से तीन शावकों सहित छह चीतों की मौत हो गई।

पाठकगण अपने विचार responsemail.hindipioneer@gmail.com पर भेज सकते हैं।

पश्चिम एशिया में संकट गहराने से शेयर बाजार लुढ़का

सेंसेक्स ने 1,048 अंक का लगाया गोता

एजेंसी। मुंबई

पश्चिम एशिया में तनाव बढ़ने के बीच निवेशकों की धारणा प्रभावित होने से स्थानीय शेयर बाजार में सोमवार को तेज गिरावट आई और बीएसई सेंसेक्स 1,048 अंक का गोता लगा गया जबकि एनएसई निफ्टी 313 अंक के नुकसान में रहा। वैश्विक बाजारों में कमजोर रुख और विदेशी संस्थागत निवेशकों की भारी पूंजी निकासी से भी निवेशकों की धारणा पर प्रतिकूल असर पड़ा। तीस शेयरों पर आधारित बीएसई सेंसेक्स शुरुआती कारोबार में 2,743.46 अंक यानी 3.37 प्रतिशत टूटकर 78,543.73 पर आ गया था। बाद में यह 1,048.34 अंक यानी 1.29 प्रतिशत की गिरावट के साथ 80,238.85 अंक पर बंद हुआ। इसी तरह, कारोबार के दौरान 50 शेयरों वाला एनएसई निफ्टी 575.15 अंक यानी 2.28 प्रतिशत का गोता लगाकर 24,603.50 अंक पर आ गया था। बाद में यह 312.95 अंक यानी 1.24 प्रतिशत की गिरावट के साथ 24,865.70 अंक पर बंद हुआ।सेंसेक्स की कंपनियों में इंटरग्लोब एविएशन, लार्सन एंड टुब्रो, अदाणी पोर्ट्स, मारुति, एशियन पेंट्स और बजाज फिनसर्व के शेयरों में सबसे ज्यादा गिरावट आई। केवल भारत इलेक्ट्रॉनिक्स, सन फार्मा और आईटीसी के शेयर लाभ में रहे। वैश्विक तेल मानक ब्रेंट क्रूड की कीमत में 8.34 प्रतिशत की तेजी आई और यह 78.95 अमेरिकी डॉलर प्रति बैरल पर पहुंच गया। ईरानी सरकारी मीडिया ने रविवार को कहा कि अमेरिका-इजराइल के शनिवार तड़के तेहरान पर हुए हमले में ईरान के सर्वोच्च नेता अयातुल्ला अली खामेनेई की मौत हो गयी है। ईरान ने अपने सर्वोच्च नेता की हत्या के विरोध में इजराइल और पश्चिम एशिया के अन्य देशों पर हमले किये हैं।

एशियाई बाजारों में, जापान का निक्की, हांगकांग का हैंग सेंग नुकसान में रहे, जबकि शंघाई का एसएसई कम्पोजिट बढ़त में रहा। दक्षिण कोरिया में अवकाश के कारण शेयर बाजार बंद रहे। यूरोप के प्रमुख बाजारों में दोपहर के कारोबार में भारी गिरावट देखी गई। अमेरिकी बाजार शुक्रवार को गिरावट के साथ बंद हुए थे। जियोजीत इन्वेस्टमेंट्स लि. के शोध प्रमुख विनोद नायर ने कहा,पश्चिम एशिया में बढ़ते तनाव ने वैश्विक बाजारों को अस्थिर कर दिया है। ईरान के सर्वोच्च नेता की हत्या के मद्देनजर स्थिति के बिगड़ने को लेकर चिंताएं हैं। उन्होंने कहा,कच्चे तेल की बढ़ती कीमतें और कमजोर भारतीय मुद्रा (आईएनआर) तेल आपूर्ति में संभावित व्यवधानों को लेकर चिंताओं को दर्शाते हैं। इससे भारत में मुद्रास्फीति का दबाव बढ़ सकता है और राजकोषीय व्यवस्था प्रभावित हो सकती है। साथ ही ऊर्जा और रसायन पर निर्भर क्षेत्रों के मार्जिन पर दबाव पड़ सकता है। शेयर बाजार के आंकड़ों के अनुसार, विदेशी संस्थागत निवेशकों (एफआईआई) ने शुक्रवार को 7,536.36 करोड़ रुपये के शेयर बेचे। वहीं, घरेलू संस्थागत निवेशकों (डीआईआई) ने 12,292.81 करोड़ रुपये के शेयर खरीदे। शुक्रवार को सेंसेक्स 961.42 अंक टूटा था। जबकि निफ्टी 317.90 अंक यानी 1.25 प्रतिशत टूटकर 25,178.65 पर रहा था। होली के अवसर पर मंगलवार को शेयर बाजार बंद रहेंगे।

ईपीएफओ ने कर्मचारी भविष्य निधि जमा पर ब्याज दर को 8.25 प्रतिशत पर बरकरार रखा

एजेंसी। नईदिल्ली।

कर्मचारी भविष्य निधि संगठन (ईपीएफओ) ने सोमवार को भविष्य निधि जमा पर 2025-26 के लिए ब्याज दर 8.25 प्रतिशत पर बरकरार रखी। यह लगातार तीसरा वर्ष है जब ब्याज दर को इस स्तर पर रखा गया है। एक सूत्र ने यह जानकारी दी। पिछले वर्ष फरवरी में, ईपीएफओ ने वित्त वर्ष 2024-25 के लिए 8.25 प्रतिशत ब्याज दर को बरकरार रखा था। ईपीएफओ ने 2024 में ब्याज दर को बढ़ाकर 2023-24 के लिए 8.25 प्रतिशत कर दिया था, जो 2022-23 में 8.15 प्रतिशत थी। श्रम मंत्रालय ने कहा कि केंद्रीय श्रम एवं रोजगार मंत्री मनसुख मांडविया की अध्यक्षता में सोमवार को केंद्रीय न्यासी बोर्ड (सीबीटी) ने अपनी बैठक में 2025-26 के लिए कर्मचारी भविष्य निधि (ईपीएफ) पर 8.25 प्रतिशत का ब्याज देने की सिफारिश की है। ईपीएफओ के निर्णय लेने वाले शीर्ष निकाय सीबीटी की सिफारिश पर

वित्त मंत्रालय मंजूरी देगा। सरकार द्वारा ब्याज दर आधिकारिक रूप से अधिसूचित करने के बाद ईपीएफओ अंशधारकों के खातों में ब्याज जमा करेगा। मंत्रालय ने कहा कि वैश्विक अनिश्चितताओं के बावजूद, ईपीएफओ ने मजबूत वित्तीय अनुशासन बनाए रखा है। इससे ब्याज खाते पर दबाव डाले बिना स्थिर और प्रतिस्पर्धी रिटर्न सुनिश्चित किया जा रहा है। सीबीटी ने आयकर विभाग द्वारा मान्यता प्राप्त उन ट्रस्ट के मामले में संबंधित अनुपालन मुद्दों को हल करने के लिए एकमुश्त माफी योजना को भी मंजूरी दी है, जो अभी तक कर्मचारी भविष्य निधि और विविध प्रावधान अधिनियम, 1952 के अंतर्गत नहीं आते हैं या जिन्हें छूट नहीं दी गई है। इसमें वित्त अधिनियम, 2026 के प्रावधानों को भी ध्यान में रखा गया है। प्रस्तावित योजना का उद्देश्य प्रतिष्ठानों और न्यासों को एक निर्धारित छह महीने की अवधि के भीतर अनुपालन के दायरे में लाना है। इसका मुख्य उद्देश्य श्रमिकों के हितों की रक्षा करना है, जबकि उन प्रतिष्ठानों और न्यासों के लिए जुर्माना, ब्याज आदि को माफ करना है जिन्होंने पहले ही वैधानिक योजना के बराबर या उससे बेहतर लाभ प्रदान किए हैं। इसके तहत पिछली तिथि से छूट की अनुमति है लेकिन यह कुछ शर्तों पर निर्भर है। साथ ही यह सुनिश्चित करता है कि सभी पात्र कर्मचारियों को वैधानिक लाभ प्राप्त हों। इस कदम से 100 से अधिक जारी मुकदमे और कई अन्य मामलों के निपटान की उम्मीद है, जिससे विभिन्न ट्रस्ट के हजारों सदस्यों को लाभ होगा।

खामेनेई की हत्या के विरोध में कश्मीर में प्रदर्शन

श्रीनगर। ईरान के सर्वोच्च नेता अयातुल्ला अली खामेनेई की हत्या के विरोध में कश्मीर के कई हिस्सों में सोमवार को विरोध प्रदर्शन के कारण प्राधिकारियों ने लोगों की आवाजाही पर प्रतिबंध लगा दिया और मोबाइल इंटरनेट की गति धीमी कर दी। अमेरिका और इजराइल के संयुक्त हवाई हमलों में रविवार को खामेनेई की मौत हो गई, जिसके विरोध में कश्मीर घाटी में लगातार दूसरे दिन प्रदर्शन हो रहे हैं। अधिकारियों के अनुसार, शहर के बेमिना, गुंड हसीभट और जहांगीर चौक इलाकों में तथा दक्षिण कश्मीर के पुलवामा कस्बे में विरोध प्रदर्शन भड़क उठे। शिया बहुल इलाकों में सैकड़ों प्रदर्शनकारी जमा हुए। उन्होंने सड़कों पर मार्च

किया और अमेरिका तथा इजराइल के विरोध में नारेबाजी की। कुछ क्षेत्रों में सुरक्षा बलों ने प्रदर्शनकारियों को तितर-बितर करने के लिए हल्के बल का प्रयोग किया। विरोध प्रदर्शनों को देखते हुए कश्मीर के कुछ हिस्सों में लोगों की आवाजाही पर कड़ी पाबंदियां लगा दी गई हैं। अधिकारियों ने बताया कि लाल चौक स्थित प्रतिष्ठित घंटाघर को चारों ओर अवरोधक लगाकर सील कर दिया गया। प्रदर्शनकारियों के जमावड़े को रोकने के लिए शहर भर में बड़ी संख्या में पुलिस और अर्धसैनिक बल केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के कर्मियों को तैनात किया गया। अधिकारियों ने कहा कि कानून और व्यवस्था बनाए रखने के लिए एहतियाती उपाय के तौर पर ये प्रतिबंध लगाए गए हैं। उन्होंने बताया कि शहर में प्रवेश करने वाले महत्वपूर्ण चौराहों पर कंटीले तार और अवरोधक लगाए गए हैं। घाटी के अन्य जिलों में शिया बहुल क्षेत्रों में भी इसी तरह के प्रतिबंध लगाए गए हैं। ये प्रतिबंध मुताहिदा मजलिस-ए-उलेमा (एमएमयू) के अध्यक्ष मीरवाइज उमर फारूक द्वारा दिए गए एक दिवसीय हड़ताल के आ''ान के मद्देनजर लगाए गए हैं। मीरवाइज ने कहा, हम लोगों से आग्रह करते हैं कि वे एकता और शांति के साथ इसमें शामिल हों। विपक्षी पीपुल्स डेमोकेटिक पार्टी (पीडीपी) अध्यक्ष महबूबा मुफ्ती सहित कई राजनीतिक दलों ने एमएमयू की हड़ताल के आहान का समर्थन किया।

नेकां सांसद मेहदी ने उमर अब्दुल्ला पर निशाना साधा

एजेंसी। श्रीनगर

नेशनल कॉन्फ्रेंस (नेकां) के सांसद आगा रुहुल्लाह मेहदी ने ईरान के सर्वोच्च नेता अयातुल्ला अली खामेनेई की हत्या की निंदा नहीं करने पर जम्मू कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला की आलोचना की।

मेहदी ने कहा कि अगर अब्दुल्ला खामेनेई की हत्या की निंदा करने का साहस नहीं दिखा सकते, तो खाड़ी देश ईरान की स्थिति पर उनकी चिंता के शब्द उन लोगों के लिए कोई मायने नहीं रखते जो ईरान के सर्वोच्च नेता का अनुसरण करते थे और उनका सम्मान करते थे। मेहदी ने मुख्यमंत्री का नाम लिए बिना 'एक्स' पर पोस्ट में कहा, ₹ट्वीट और बयान पढ़ने पर मुझे पता चला कि वह 'चिंता' तो जताते हैं, लेकिन निंदा तक नहीं करते; श्रद्धांजलि का एक शब्द भी नहीं कहते। श्रीनगर लोकसभा सीट से सांसद मेहदी ने कहा कि अगर अब्दुल्ला एक संप्रभु राष्ट्र के खिलाफ आक्रामकता की निंदा करने का साहस नहीं रखते, तो उन्हें अपनी चिंता अपने तक ही सीमित रखनी चाहिए। मेहदी के सत्तारूढ़ नेशनल कॉन्फ्रेंस से संबंधों में खटास देखी जाती रही है। मेहदी ने कहा, ₹यदि आप एक संप्रभु राष्ट्र के विरुद्ध आक्रामकता के कृत्य और एक अत्यंत सम्मानित धार्मिक व्यक्ति की हत्या की निंदा करने का साहस नहीं जुटा सकते हैं।

लेबनान पर इजराइली हवाई हमलों में 31 लोगों की मौत

दुबई । हिजबुल्ला के इजराइल पर हमले के बाद लेबनान में इजराइली हवाई हमलों में कम से कम 31 लोगों की मौत हो गई। लेबनान के स्वास्थ्य मंत्रालय ने सोमवार को यह जानकारी दी।अमेरिका व इजराइल द्वारा ईरान को निशाना बनाकर शुरू किए गए हवाई हमलों के बाद हिजबुल्ला के संघर्ष में कूदने तथा इजराइल की ओर से जवाबी कार्रवाई के कारण पश्चिम एशिया में जारी संघर्ष और बढ़ गया है।लेबनान के स्वास्थ्य मंत्रालय ने बताया कि इन हमलों में 149 लोग घायल भी हुए हैं। मंत्रालय के अनुसार मृतकों में से करीब दो-तिहाई दक्षिणी लेबनान के थे। इस बीच, कुवैत में जारी हमलों के मद्देनजर अमेरिका ने वहां मौजूद अमेरिकियों के लिए चेतावनी जारी करते हुए उन्हें घर के अंदर रहने को कहा।

ब्रिटेन के वायु सेना केंद्र पर ईरान का ड्रोन गिरा

लंदन। साइप्रस में ब्रिटिश रॉयल एयर फोर्स (आरएएफ) के एक अड्डे पर ईरान के ड्रोन से हमला किया गया। साइप्रस के राष्ट्रपति निकोस क्रिस्टोडूलाइड्स ने सोमवार को इसकी पुष्टि की। सप्ताहांत में ईरान पर शुरू हुए अमेरिका और इजराइल के हमलों के बीच ड्रोन से हमला किया गया। यह प्रधानमंत्री केअर स्टॉर्मर के वीडियो में जारी बयान के कुछ घंटों बाद आया, जिसमें पश्चिम एशिया में ब्रिटिश लोगों की जान और उनके हितों की रक्षा के लिए सीमित रक्षात्मक अभियान के लिए अमेरिका को ब्रिटिश बेस का इस्तेमाल करने की इजाजत देने के ब्रिटेन के फैसले की घोषणा की गई।

मचाडो ने वेनेजुएला लौटने का संकेत दिया

काराकस। वेनेजुएला की विपक्ष की नेता एवं 2025 के नोबेल शांति पुरस्कार की विजेता मारिया कोरिना मचाडो ने रविवार को कहा कि वह आने वाले हफ्तों में वेनेजुएला लौटेंगी और देश में चुनाव कराए जाएंगे। हालांकि, मचाडो ने वापसी की कोई तारीख नहीं बताई, लेकिन कहा कि उनका एक लक्ष्य आगामी चुनावों में ₹बड़ी जीत₹ के लिए तैयारी करना है।सोशल मीडिया पर साझा एक संदेश में नोबेल पुरस्कार विजेता ने अपने समर्थकों से अपील की कि वे ₹प्राइमरी चुनाव में दिखाई गई वेनेजुएला वासियों की एकता को और मजबूत करें। उन्होंने 2023 की उस प्रक्रिया का संदर्भ दिया, जिसमें पूर्व राष्ट्रपति निकोलस मादुरो के खिलाफ चुनाव लड़ने के लिए एक साझा उम्मीदवार चुनने के उद्देश्य से वोटिंग हुई थी और उसमें मचाडो ने जीत हासिल की थी। जनवरी में अमेरिका के सैन्य अभियान में मादुरो और उनकी पत्नी के पकड़े जाने के बाद से सत्ता संभाल रहीं कार्यवाहक राष्ट्रपति डेल्सी रोड्रीगेज ने चेतावनी दी है कि अगर मचाडो देश लौटती हैं।

सेमीकंडक्टर केंद्र के रूप में उभर रहा गुजरात

एजेंसी। गांधीनगर

गुजरात के उपमुख्यमंत्री हर्ष संघवी ने राज्य को भारत के उभरते सेमीकंडक्टर केंद्र के रूप में रविवार को प्रस्तुत किया और वैश्विक निवेशकों को आश्वासन दिया कि राज्य में किए गए निवेश न केवल वर्तमान पीढ़ी के लिए बल्कि आने वाले दशकों तक सुरक्षित रहेंगे। संघवी ने यहां आयोजित 'सेमीकनेक्ट कॉन्फ्रेंस 2026' में कहा कि भारत की कुल जनसंख्या का केवल पांच प्रतिशत और भौगोलिक क्षेत्रफल का छह प्रतिशत हिस्सा होने के बावजूद, गुजरात देश के विनिर्माण उत्पादन में 18 प्रतिशत से अधिक और कुल निर्यात में 30 प्रतिशत से अधिक का योगदान देता है। यह राज्य भारत के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में आठ प्रतिशत से अधिक का योगदान देता है और देश के 40 प्रतिशत से अधिक माल ढुलाई का प्रबंधन करता है। उपमुख्यमंत्री ने कहा कि गुजरात हीरा, इंजीनियरिंग, फार्मास्यूटिकल्स और रसायन जैसे क्षेत्रों में अग्रणी बना हुआ है। भारत की वैश्विक स्थिति को मजबूत करने का श्रेय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को देते हुए, संघवी ने कहा कि साहसिक सुधारों और नयी नीतियों ने देश को वैश्विक सेमीकंडक्टर

उद्योग में एक मजबूत स्थिति हासिल करने में मदद की है। इस मौके पर रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव और मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल भी मौजूद थे। संघवी ने 'माइक्रोन टेक्नोलॉजी' द्वारा गुजरात में सेमीकंडक्टर संयंत्र स्थापित करने को भारत के इलेक्ट्रॉनिक्स विनिर्माण क्षेत्र में एक और महत्वपूर्ण उपलब्धि बताया। उन्होंने कहा,राज्य के युवा इंजीनियरों ने मलेशिया, सिंगापुर और इंडोनेशिया जैसे देशों में विशेष प्रशिक्षण प्राप्त किया है और वे वैश्विक विशेषज्ञता के साथ लौट रहे हैं। संघवी ने निवेशकों को आश्वासन दिया कि गुजरात सरकार एक भागीदार और सुविधादाता के रूप में कार्य करती है, और भूमि, बुनियादी ढांचे, रसद और नीतिगत मंजूरी से संबंधित मामलों में त्वरित समर्थन का वादा करती है। उन्होंने कहा,जब निवेशक बढ़ते हैं, तो गुजरात बढ़ता है। जब गुजरात बढ़ता है, तो भारत बढ़ता है।

गर्भस्थ शिशु का हेल्थ इंश्योरेंस करवाना जरूरी क्यों?

नई दिल्ली। माता-पिता बनना जीवन का सबसे सुखद अहसास है, लेकिन भारत में हर साल होने वाले लगभग 2.5 करोड़ गर्भधारण के आंकड़ों के बीच आर्थिक तैयारी भी उतनी ही जरूरी है। वर्तमान में मेडिकल महंगाई 12-14 प्रतिशत की दर से बढ़ रही है, जिससे प्रसव का खर्च लाखों में पहुँच सकता है। ऐसे में सामान्य मैटरनिटी कवर के साथ-साथ प्रसव पूर्व सुरक्षा यानी फीटल इंश्योरेंस का महत्व काफी बढ़ गया है। बजाज जनरल इंश्योरेंस के एमडी और सीईओ तपन सिंघल के अनुसार, पारंपरिक मैटरनिटी पॉलिसियाँ मुख्य रूप से प्रसव और उसके बाद के खर्चों को कवर करती हैं, लेकिन गर्भ में पल रहे शिशु की विशेष देखभाल के लिए फीटल फ्लोरिश जैसे उत्पाद एक

सुरक्षा कवच की तरह काम करते हैं। भारत में अब लगभग 17 प्रतिशत महिलाएं 35 वर्ष की आयु के बाद माँ बन रही हैं, जिससे गर्भावस्था में जटिलताओं का जोखिम बढ़ गया है। फीटल इंश्योरेंस न केवल सामान्य जांचों को कवर करता है, बल्कि यह गर्भ के भीतर होने वाली इन-यूट्रो प्रक्रियाओं और एडवांस्ड सर्जिकल उपचारों के लिए भी वित्तीय सहायता प्रदान करता है। इसमें शिशु को गर्भ में रक्त चढ़ाना, जुड़वां बच्चों से जुड़ी जटिलताओं का लेजर उपचार और हृदय या रीढ़ की हड्डी से जुड़ी जन्मजात समस्याओं का प्रसव से पहले ही इलाज शामिल है। अक्सर लोग प्रसव पूर्व देखभाल को मैटरनिटी कवर का ही हिस्सा मान लेते हैं, जबकि दोनों में बड़ा अंतर है। जहाँ मैटरनिटी कवर में आमतौर पर 2 साल की प्रतीक्षा अवधि होती है, वहीं फीटल फ्लोरिश जैसे प्रीनेटल कवर में यह केवल 9 महीने होती है। यह उन दंपतियों के लिए सबसे उपयुक्त है जो भविष्य की योजना बना रहे हैं। अंततः, सही समय पर लिया गया यह बीमा न केवल मां और बच्चे के स्वास्थ्य को सुरक्षित करता है, बल्कि परिवार को किसी भी आपातकालीन स्थिति में वित्तीय तनाव से मुक्त रखकर खुशियाँ मनाने का अवसर देता है।

ऑल-न्यू निसान ग्रेवाइट की हुई लॉन्चिंग

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

निसान मोटर इंडिया प्राइवेट लिमिटेड ने सोमवार को राजधानी लखनऊ में अपनी ऑल-न्यू निसान ग्रेवाइट को 5.65 लाख रुपये (एक्स-शोरूम) की आकर्षक शुरूआती कीमत पर लॉन्च किया। बोल्ड और गेम चेंजिंग सात सीटर एमपीवी ग्रेवाइट भारत में निसान के सफर के एक नए अध्याय की शुरूआत का प्रतीक है।

ड्रीम निसान ने आयोजित इस भव्य लॉन्च समारोह में कंपनी के वरिष्ठ अधिकारियों एवं ड्रीम निसान परिवार की उपस्थिति रही। लॉन्च समारोह में विवेक पालीवाल (सेल्स डायरेक्टर), विशाल शर्मा (एरिया सेल्स मैनेजर), हनी धवन (एरिया सर्विस मैनेजर) और इमरान अबिदी (सीनियर मार्केटिंग मैनेजर) विशेष रूप से उपस्थित रहे। साथ ही ड्रीम निसान के निदेशकगण सुरेश कुमार अग्रवाल, सुशील कुमार अग्रवाल, रजनीश अग्रवाल, सुमीत अग्रवाल, अभिषेक अग्रवाल और ए चैतन्य अग्रवाल भी मौजूद रहे। लॉन्च के अवसर पर सेल्स डायरेक्टर ने कहा कि ऑल-न्यू निसान ग्रेवाइट भारतीय परिवारों की विविधता, व्यापकता एवं महत्वाकांक्षाओं से प्रेरित है। इसकी मॉड्यूलर सीटिंग से लेकर इसके कमांडिंग स्टांस तक, हर खूबी दिखाती है कि कैसे भारतीय ग्राहक रहते हैं, यात्रा करते हैं और साथ मिलकर आगे बढ़ते हैं। हमारे लिए ग्रेवाइट सिर्फ एक प्रोडक्ट की पेशकश नहीं है। बल्कि यह ग्राहकों के सपनों और विश्वास को साकार करने की दिशा में एक मजबूत कदम है।

म्यांमा की सैन्य सरकार ने 10 हजार से अधिक कैदियों को दी माफी

बैंकॉक। म्यांमा के सैन्य शासन प्रमुख ने 10,000 से अधिक कैदियों को माफी दी है और अन्य की सजा में कटौती की है। सरकारी मीडिया ने सोमवार को यह जानकारी दी।हालांकि, 2021 के सैन्य तख्तापलट में सत्ता से बेदखल की गईं पूर्व नेता आंग सान सू की की रिहाई का कोई संकेत नहीं है। सू की को तब से लगभग पूरी तरह बाहरी संपर्क से दूर रखा गया है।यह माफी संसद के पांच साल से अधिक समय बाद होने जा रहे पहले सत्र से करीब दो सप्ताह पहले दी गई है। हालिया चुनाव के बाद यह सत्र आहूत किया गया। हालांकि, आलोचकों ने कहा था ये चुनाव न तो पारदर्शी थे और न ही निष्पक्ष। सरकारी टेलीविजन 'एमआरटीवी' की खबर के मुताबिक, सैन्य शासन प्रमुख सीनियर जनरल मिन आंग ''इंग ने किसानों के सम्मान में मनाए जाने वाले राष्ट्रीय अवकाश 'किसान दिवस' पर 10,162 कैदियों को माफ किया जिनमें से 7,337 कैदी आतंकवाद रोधी कानून के तहत दोषी ठहराए गए थे।एक अलग बयान में कहा गया कि इसी कानून के तहत मुकदमों का सामना कर रहे या या छिपे 12,487 लोगों को भी माफी दी जाएगी और उनके खिलाफ उकसावे से जुड़े मामले बंद किए जाएंगे। इस कानून में मृत्युदंड तक का प्रावधान है और 2021 के बाद से इसका इस्तेमाल राजनीतिक प्रतिद्वंद्वियों, पत्रकारों और असहमति जताने वाले लोगों को गिरफ्तार कर जेल भेजने में व्यापक रूप से किया गया है।

ईरान संकट से भारत का खाद्य तेल प्रभावित होगा

एजेंसी। नईदिल्ली

उद्योग संगठनों ने सोमवार को कहा कि अमेरिका-ईरान सैन्य संघर्ष के बढ़ने से भारत के खाद्य योग्य सूरजमुखी तेल और ज़रूरी उर्वरकों के आयात में रुकावट आ सकती है, जबकि पश्चिम एशिया और यूरोप को कृषि जिंसों का निर्यात भी प्रभावित हो सकता है।

पोत परिवहन कंपनियों ने पश्चिम एशिया से गुज़रने वाले मालवाहक पोतों (कार्गो) पर आपात संघर्ष अधिभार लगाना शुरू कर दिया है, जिसमें फ्रांस की कंटेनर क्षेत्र की बड़ी कंपनी सीएमए सीजीएम प्रति कंटेनर 2,000 डॉलर से 4,000 डॉलर के बीच अधिभार लगा रही है, जिससे आयात की लागत बढ़ रही

है। घुलनशील उर्वरक उद्योग संघ (एसएफआईए) के अध्यक्ष, राजीब चक्रवर्ती ने पीटीआई-भाषा को बताया कि पश्चिम एशिया को निर्यात अभी रुका हुआ है। उन्होंने कहा, कि लड़ाई के जारी रहने के साथ, जोखिम भी बढ़ेगा और शिपिंग कंपनियां बीमा अधिभार लगा सकती हैं, जिससे आयात महंगा हो जाएगा। चक्रवर्ती ने जून में शुरू होने वाले भारत के खरीफ बुवाई सत्र से पहले डीएपी और एसएसपी उर्वरक बनाने के लिए ज़रूरी आदान की आपूर्ति पर चिंता जताई। कतर, सयुक्त अरब अमीरात (यूएई) और ओमान मिलकर भारत के गंधक (सल्फर) आयात का 76 प्रतिशत हिस्सा बनाते हैं। उन्होंने कहा कि इतने सारे बंदरगाह बंद होने से जाम लगेगा और कंटेनर की कमी हो जाएगी। भारत हर साल लगभग 1.6 करोड़ टन खाद्य तेल आयात करता है, जिसमें से सूरजमुखी का तेल लगभग 20 प्रतिशत हिस्सा है, जो मुख्य रूप से रूस, यूक्रेन और अर्जेंटीना से आता है। अगर जहाजों को लाल सागर से दूसरी तरफ जाने के लिए मजबूर किया जाता है, तो निर्यात खेप में देरी हो सकती है। सॉल्वेंट एक्सट्रैक्टर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया (एसईए) के कार्यकारी निदेशक, बी वी मेहता ने कहा कि अभी तक कोई असर नहीं पड़ा है। लेकिन अगर लड़ाई जारी रही, तो सूरजमुखी के तेल की आपूर्ति में रुकावट आ सकती है क्योंकि निर्यात खेप को दूसरा रास्ता अपनाना होगा। ऊर्जा की लागत, लॉजिस्टिक्स और वैश्विक जैव ईंधन बाजार के बीच संबंध को देखते हुए, कच्चे तेल की बढ़ती कीमतें दबाव बढ़ा सकती हैं।

संक्षिप्त समाचार

एसबीआई जनरल इंश्योरेंस ने पंकज त्रिपाठी के साथ अपना नया ब्रांड कैंपेन लॉन्च किया

मुंबई । भारत की अग्रणी जनरल इंश्योरेंस कंपनियों में से एक, एसबीआई जनरल इंश्योरेंस ने मशहूर अभिनेता पंकज त्रिपाठी को अपना ब्रांड एंबेसडर बनाने की घोषणा की है। इसके साथ ही कंपनी ने अपना नया ब्रांड कैंपेन चुनिए भरोसा, अपनों सा भी पेश किया है। यह साझेदारी एक ऐसी हस्ती पंकज त्रिपाठी को साथ लाती है जो अपनी विश्वसनीयता और सादगी के लिए जानी जाती है, और एक ऐसा ब्रांड (एसबीआई जनरल) जो विश्वास और पारदर्शिता पर टिका है। पंकज त्रिपाठी की सहज और जमीन से जुड़ी छवि ब्रांड के मूल वादे भरोसा को स्वाभाविक रूप से व्यक्त करती है, जो व्यक्तिगत और आश्वस्त करने वाला महसूस होता है। ब्रांड ने चुनिए भरोसा, अपनों साअभियान के तहत एक नई हेल्थ इंश्योरेंस फिल्म भी जारी की है, जिसमें परिवारों की सुरक्षा में एक भरोसेमंद साथी बनने के अपने वादे को रेखांकित किया गया है। इस साझेदारी पर बोलते हुए, एसबीआई जनरल इंश्योरेंस के एमडी एवं सीईओ नवीन चंद्र झा ने कहा, भारत में परिवार अब स्वास्थ्य और वित्तीय सुरक्षा को लेकर अधिक सजग हो रहे हैं। बढ़ती मेडिकल लागत और स्वास्थ्य जागरूकता के बीच व्यापक हेल्थ इंश्योरेंस अब विकल्प नहीं, बल्कि आवश्यकता बन गया है। ह्यचुनिए भरोसा, अपनों सा अभियान और पंकज त्रिपाठी के साथ हमारी साझेदारी के माध्यम से हम सक्रिय स्वास्थ्य सुरक्षा की आवश्यकता पर जागरूकता बढ़ाना चाहते हैं और बीमा को सरल, सुलभ और परिवारों की बदलती जरूरतों के अनुरूप बनाने की अपनी प्रतिबद्धता को मजबूत करना चाहते हैं।

श्रीराम ऑटो ऑक्शन में 195 करोड़ का बिज़नेस

नई दिल्ली। श्रीराम ऑटोमॉल इंडिया लिमिटेड जो प्री-ओन्ड गाड़ियों, इक्विपमेंट और दूसरे एसेट्स के लिए भारत का सबसे बड़ा फिजिटल मार्केटप्लेस है, ने रअटक्छ उत्सव 2026 को सफलतापूर्वक आयोजित किया, जिसमें देश भर में एक साथ 135+ लाइव ऑक्शन किए गए और एक ही दिन में 195 करोड़ से ज़्यादा की ग्रॉस ट्रांज़ेक्शन वैल्यू हुई। प्री-ओन्ड गाड़ियों का ऑक्शन 135 से ज़्यादा ऑटोमॉल में हुआ, जिन्होंने पूरे भारत में एक साथ लाइव ऑक्शन किए और 500 से ज़्यादा शहरों से 25,000 से ज़्यादा कस्टमर ने इसमें गहरी दिलचस्पी दिखाई। श्रीराम ऑटोमॉल इंडिया लिमिटेड के डायरेक्टर और उएड, समीर मल्होत्रा ने कहा कि ऑक्शन में अलग-अलग तरह के पोर्टफोलियो दिखाए गए।

शिवराजपुर बीच प्राकृतिक सौंदर्य और आधुनिकता का संगम

मुंबई। गुजरात का खूबसूरत शिवराजपुर बीच एक बार फिर चर्चा में है। इस बार यहाँ पहुँचीं फेमिना मिस इंडिया 2023 की फर्स्ट रनर-अप श्रेया पूंजा और 2024 की फर्स्ट रनर-अप रेखा पांडे, जिन्होंने इस ब्लू फ्लैग बीच के अनुभव को खास बताया।द्वारका के निकट स्थित यह समुद्र तट प्राकृतिक सौंदर्य और आधुनिक सुविधाओं का बेहतरीन मेल है। शांत समुद्र तल, साफ पानी और तय गतिविधि क्षेत्रों के कारण यहाँ वाटर स्पोर्ट्स सुरक्षित और व्यवस्थित तरीके से संचालित होते हैं। अरब सागर के विशाल दृश्य और खुला परिदृश्य पर्यटकों को आकर्षित करता है।रेखा पांडे ने कहा कि शिवराजपुर की सबसे बड़ी खासियत इसकी खुली और सकारात्मक ऊर्जा है। यहाँ रोमांच है, लेकिन साथ ही सुकून भी है।

सिमरन कौर धडली का नया सिंगल दिलबरजानी रिलीज

नई दिल्ली। पंजाबी पॉप की बेबाक आवाज सिमरन कौर धडली ने नया सिंगल दिलबरजानी रिलीज किया है, जिसमें उनके साथ नजर आते हैं सनी सिंह। यह हाई-एनर्जी लव ट्रैक आत्मविश्वास, बराबरी और आत्मनिर्भर महिला के नजरिए से रोमांस को नए अंदाज में पेश करता है। महिला द्वारा लिखा और महिला की ही दृष्टि से गाया गया यह गीत उस दौर की झलक देता है, जहां महिलाएं अपनी शर्तों पर प्यार करती हैं और नेतृत्व करती हैं। दमदार विजुअल्स में धडली चार अलग-अलग प्रभावशाली लुक्स में दिखती हैं, जबकि सनी सिंह के साथ उनकी केमिस्ट्री ट्रैक की एनर्जी को और बढ़ाती है। दिलबरजानी पारंपरिक रोमांटिक सोच को चुनौती देता है और उस महिला का जश्न मनाता है जो अपनी कीमत जानती है। यह ट्रैक धडली की लेखन, संगीत रचना और गायन की ताकत को सामने लाते हुए उन्हें उभरती इंडियन पॉप आइकॉन के रूप में मजबूत करता है। यह गाना स्पॉटिफाई, एप्पल म्यूजिक, यूट्यूब और अमेजन म्यूजिक पर स्ट्रीम हो रहा है।

हिंदी जी5 की थ्रिलर डालिंब का डरावना फर्स्ट लुक होली पर जारी

नई दिल्ली। इस होली जी 5 हिंदी अपने आगामी थ्रिलर-ड्रामा डालिंब का सिहरन पैदा करने वाला फर्स्ट लुक लेकर आया है। यह फिल्म यादों और सच्चाई, प्यार और हानि, वास्तविकता और भ्रम के बीच की सीमाओं को धुंधला करती एक बेचैन करने वाली कहानी का वादा करती है। यह एलिप्सिस एंटरटेनमेंट के साथ हिंदी जी5 का पहला सहयोग है। उपनगरीय मुंबई की पृष्ठभूमि में बनी इस फिल्म में जितेंद्र कुमार, प्रिया बापट, क्षितीश दाते, केविन डेव, साई प्रसाद, हरीश कुलकर्णी और सागर यादव प्रमुख भूमिकाओं में हैं। निर्देशन-लेखन प्रिया एवन का है, संवाद वरद भटनागर ने लिखे हैं और अतिरिक्त संवाद तनुज गर्ग ने तैयार किए हैं। हिंदी जी5 की बिजनेस हेड कावेरी दास के मुताबिक, यह फिल्म प्लेटफॉर्म की डी2डी रणनीति के तहत 2026 की सबसे महत्वाकांक्षी पेशकशों में शामिल है और साल के अंत तक रिलीज होगी।

मान पानू का नया गाना द लास्ट लेटर रिलीज

मुंबई । इंडी पॉप सिंगर-सॉन्गराइटर मान पानू ने अपना नया इमोशनल सिंगल द लास्ट लेटर रिलीज किया है। यह गीत उन अधूरी बातों और टूटे रिश्तों की खामोशी को आवाज देता है, जो बिछड़ने के बाद दिल में रह जाती है। मान की सॉफ्ट वोकल्स और ईमानदार लिरिक्स इस ट्रैक को निजी अनुभव जैसा बनाते हैं, लेकिन इसकी भावनाएँ हर सुनने वाले से जुड़ जाती हैं। रिलीज से पहले ही सोशल मीडिया पर इस गाने के परफॉर्मेंस क्लिप वायरल हो चुके थे, जिन्हें करीब 10 मिलियन व्यूज मिले, जिससे दर्शकों में उत्सुकता बढ़ी। मान के मुताबिक, यह गीत अतीत के साथ सुकून बनाने और आगे बढ़ने का साहस जुटाने के बारे में है। द लास्ट लेटर नाटकीयता से दूर रहते हुए दिल टूटने के बाद की शांति और स्वीकार्यता को संगीत में ढालता है। इस रिलीज के साथ मान पानू एक ऐसे कलाकार के रूप में अपनी पहचान और पुख्ता करते हैं, जो संवेदनशील भावनाओं को सादगी और गहराई के साथ पेश करता है।

77 साल बेमिसाल
निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक
स्थापना : 18 अप्रैल 1948 • आगरा

चुनाव हिंसा और अहिंसा के बीच नहीं, बल्कि अहिंसा और अस्तित्वहीनता के बीच है। -मार्टिन लूथर किंग, जूनियर

प्रतिशोध की आग में जलते ईरान के विभिन्न देशों में अमेरिकी सैन्य ठिकानों पर हमलों से युद्ध के नए मोर्चे खुलने की आशंका पैदा हुई है। अंतरराष्ट्रीय जमात को ध्यान देना होगा, क्योंकि जंग नहीं रुकी और वैश्विक शक्तियां खेमों में बंटकर प्रतिक्रियाएं देती रहीं, तो स्थितियां जटिल ही होंगी।

नए मोर्चे और आशंकाएं

ईरान के सर्वोच्च नेता अयातुल्ला अली खामनेई की हत्या ने न केवल तेहरान में सत्ता के शीर्ष पर एक बड़ा शून्य पैदा किया है, बल्कि पूरे क्षेत्र में प्रतिशोध की लहर को तेज कर दिया है। इस दौरान, ईरान समर्थित हिजबुल्ला के संघर्ष में कूदने और ईरान द्वारा साइप्रस में ब्रिटिश एयरबेस पर हमला किए जाने से पश्चिम एशिया में चल रही जंग में नए मोर्चे खुलने की आशंका भी पैदा हो गई है। इसी तरह, बदले की कार्रवाई करते हुए ईरान द्वारा जिस तरह से बहरीन, कुवैत और कतर समेत खाड़ी के आठ देशों में अमेरिकी सैन्य ठिकानों पर हमले किए गए हैं, उससे पूरा पश्चिमी एशिया युद्ध की जद में आता दिख रहा है। यह देखते हुए कि इस्लामी गणराज्य इसे अपने अस्तित्व के लिए खतरा मान रहा है, अब ईरान के पीछे हटने की संभावना कम ही दिख रही है। देखना यह है कि हिजबुल्ला के बाद यमन में हूती विद्रोही, इराक में पॉपुलर मोबिलाइजेशन फोर्स जैसे तेहरान के क्षेत्रीय सहयोगी, जो इस्राइल के हमलों से बेशक कमजोर हो चुके हैं, फिर भी पूरे क्षेत्र को अस्थिर बनाने की क्षमता रखते हैं, जंग में कब और किस तरह शामिल होते हैं। दरअसल, खामनेई की हत्या, 1979 की इस्लामी क्रांति के बाद ईरान के लिए सबसे बड़ा आंतरिक और बाहरी संकट है। 36 वर्षों से अधिक समय तक देश की सत्ता संभालने वाले इस नेता की मौत के बाद भले ही अंतरिम परिषद सक्रिय हो गई हो, लेकिन ईरान जिस तरह से अमेरिका और उसके समर्थक देशों के प्रति आक्रामक रुख अपनाए हुए है और बातचीत तक के लिए भी तैयार नहीं है, उससे लगता नहीं कि यह जंग जल्दी खत्म होने वाली है। ऐसे में, अंतरराष्ट्रीय समुदाय को तत्काल कूटनीतिक प्रयास तेज करने होंगे। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में आपात बैठकें, चीन और रूस की मध्यस्थता, या क्षेत्रीय देशों की संयुक्त अपील- ये सभी विकल्प अब भी उपलब्ध हैं। लेकिन समय तेजी से बीत रहा है। अगर प्रतिशोध की यह श्रृंखला नहीं थमी और वैश्विक शक्तियां भी खेमों में बंटकर प्रतिक्रिया देती रहीं, तो स्थितियां जटिल ही होंगी और पश्चिम एशिया में आकार ले रहे संघर्ष को एक पूर्ण पैमाने का युद्ध बनते देर नहीं लगेगी, जो अनगिनत निर्दोषों की जान ही नहीं लेगा, बल्कि वैश्विक अर्थव्यवस्था, ऊर्जा आपूर्ति और शांति को भी गहरी चोट पहुंचा सकता है। भारत के लिए यह गंभीर चिंता का विषय है, क्योंकि देश की ऊर्जा सुरक्षा, पश्चिम एशिया में बसे लाखों भारतीयों की सुरक्षा और व्यापारिक हित युद्ध से सीधे प्रभावित हो सकते हैं। यह समय किसी के पक्ष में खड़े होने से अधिक, संतुलित व व्यावहारिक कूटनीति अपनाते हुए तनाव कम करने की दिशा में प्रयास करने का है।

कुछ लोग कभी खुश नहीं हो सकते

1970 के दशक में जब ईरान विकास की राह पर था, तब भी इससे कुछ लोग खुश नहीं थे। अमेरिका व इस्राइल ने जो कुछ किया, उससे भी कुछ लोग खुश नहीं हैं। बावजूद इसके कि ईरान के करीब 80 फीसदी लोग वहां की सरकार को हटाने के पक्ष में ही हैं।

बीते शनिवार (28 फरवरी, 2026) को पश्चिम एशिया में युद्ध शुरू हो गया। अमेरिकियों ने (ऑपरेशन एपिक फ्यूरी) चलाया, जिसमें इस्राइल (लॉयन्स रोअर) भी शामिल हो गया। कुछ ही घंटों में ईरान पर भीषण बमबारी हुई और एक दिन के अंदर उन्होंने ईरान के रक्षा मंत्री, शीर्ष जनरलों और सर्वोच्च नेता खामनेई को मार गिराया। वर्ष 1979 से पहले ईरान 'पश्चिम एशिया का पेरिस' था। ईरान के शाह ने ईरान को आधुनिक बनाने में अहम भूमिका निभाई।

उन्होंने 1963 में ईरान को पाश्चात्य रंग-ढंग में ढालने के लिए श्वेत क्रांति शुरू की। तेल से अर्जित अकूत दौलत ने बांध, हाईवे बनाने में मदद की और युवा स्नातकों को पढ़ना-लिखना सिखाने के लिए ग्रामीण इलाकों में भेजा। ईरान ने अपनी कारें 'पेकान', स्टील और उपभोक्ता सामग्री बनानी शुरू कर दी। 1970 के दशक तक, वहां की अर्थव्यवस्था हर साल 9-10 फीसदी की दर से बढ़ रही थी। ऊपर से लेकर नीचे तक आधुनिकीकरण ने देश को एक क्षेत्रीय शक्ति केंद्र बना दिया। लेकिन इतना सब विकास होने के बावजूद वहां के कुछ लोग हमेशा दुखी रहते थे, चाहे जो भी हो जाए। कुछ लोगों को लगा कि आधुनिकता के कारण ईरान इस्लामी परंपरावादी संस्कृति से दूर जा रहा है और वे सरकार बदलना चाहते थे। खासकर व्यापारी वर्ग और मौलवियों को लगा कि शाह का पाश्चात्यीकरण का अभियान ईरानी-इस्लामी पहचान को खत्म कर रहा है। लोगों को उनके अपने ही लोगों द्वारा बेवकूफ बनाना मुश्किल नहीं है। देश अपनी सनक में उसी के खिलाफ चला गया, जिसने उन्हें आधुनिक बनाया था।

वीरेंदर कपूर
लेखक एवं शिक्षाविद

16 जनवरी, 1979 को शाह, मोहम्मद रजा पहलवी इलाज के लिए अवकाश पर ईरान छोड़कर मिस्र चले गए। 14 साल से निर्वासित अयातुल्ला खुमैनी देश की बागडोर संभालने के लिए लौटने वाले थे। हालांकि कुछ समझदार लोग ऐसा नहीं चाहते थे। 16 जनवरी से 31 जनवरी, 1979 तक का पखवाड़ा बहुत ज्यादा तनाव में बीता। प्रधानमंत्री बख्तियार ने हवाई अड्डे बंद करके खुमैनी की वापसी को रोकने की कोशिश की। एक फरवरी, 1979 को बड़े विरोध प्रदर्शनों के बाद सरकार को हवाई मार्ग फिर से खोलना पड़ा, तब अयातुल्ला खुमैनी तेहरान हवाई अड्डे पर उतरे। विदेशी अपनी जान बचाने के लिए ईरान से भाग गए। मुझे याद है कि मेरे रिश्तेदार कई दिनों तक बिना खाए-पीए वापस लौटे थे-एक के पास तो अपना काम खत्म करने का भी समय नहीं था, क्योंकि वह उस समय अपने कपड़े प्रेस कर रही थी! धर्मनिरपेक्ष 'बुद्धिजीवी', छात्र, अयातुल्ला खुमैनी के धार्मिक अनुयायी शाह को हटाने के एक ही लक्ष्य के साथ एकजुट हुए। और ईरान को खुद ईरानियों ने ही अंधकार के युग में धकेल दिया! नए शासन ने देश को पूरी तरह बदल दिया और हालात बिगड़ने लगे। 30-31 मार्च, 1979 को एक जनमत संग्रह हुआ, जिसमें ईरानियों से पूछा गया कि वे इस्लामी गणराज्य चाहते हैं या नहीं। उत्तर केवल 'हां' या 'न' में देना था। एक अप्रैल, 1979 को खुमैनी ने जनमत संग्रह की जीत का ऐलान किया (जिसे कथित तौर पर 98 फीसदी समर्थन मिला) और आधिकारिक तौर पर ईरान के इस्लामी गणराज्य के उदय की घोषणा की गई। उन्होंने फिर से इसकी मांग की। देश को सैन्य ताकत की तरफ धकेला गया, जिसमें मिसाइलों और रिवोल्यूशनरी गार्ड पर ध्यान केंद्रित किया गया, ठीक हिटलर के एसएस (रक्षा बल) की तरह, जो सरकार के प्रति वफादार थे।

ईरान परमाणु हथियार बनाना चाहता था, लेकिन हमेशा कहता रहा कि यह शांतिपूर्ण मकसद के लिए है। ईरान ने 60 फीसदी यूरेनियम (400 किलोग्राम से अधिक) का संवर्धन किया है, जो एक खतरनाक सीमा है। यह ईरान को कागजी तौर पर असैन्य परमाणु शक्ति बने रहने की काबिलियत देता है, जबकि वास्तविकता यह है कि अगर वह परमाणु हथियार बनाने का राजनीतिक फैसला लेता है, तो एक सक्रिय बम बनाने में उसे महीनों या वर्षों के बजाय कुछ दिन या हफ्ते ही लगेंगे। हालांकि इसे 90 फीसदी 'हथियार की श्रेणी' नहीं कहा गया है, लेकिन यह बहुत बड़ा नुकसान पहुंचाने में सक्षम है और परमाणु हथियार कार्यक्रम में आखिरी रुकावट है। 60 फीसदी संवर्धित यूरेनियम का इस्तेमाल करके कामचलाऊ परमाणु हथियार बनाए जा सकते हैं। हालांकि यह उपकरण मानक 90 फीसदी हथियार से काफी ज्यादा बड़ा और भारी होगा, फिर भी यह हिरोशिमा जैसा उत्सर्जन (15 किलो टन) पैदा कर सकता है। हिरोशिमा में पहले दिन 80,000 लोग मारे गए और पांच महीनों के अंदर कुल 1,40,000 लोग मारे गए।

क्या दुनिया इसे स्वीकार कर सकती है, यह सबसे बड़ा सवाल है। आप अमेरिका व इस्राइल के दबदबे की बात कर सकते हैं; लेकिन मुसीबत आपके सामने है। उनके नेतृत्व का संदेश साफ है। अगर वे पूरी तरह से बर्बाद हो जाते हैं, तो वे यह पक्का करना चाहते हैं कि आसपास का इलाका और तेल व व्यापार के जरिये वैश्विक अर्थव्यवस्था भी उनके साथ बर्बाद हो जाए। देखिए, अभी पूरे पश्चिम एशिया में क्या हो रहा है। ईरान ने अमेरिकी संपत्तियों को निशाना बनाकर इस्राइल, अबू धाबी, दुबई, बहरीन, कतर, कुवैत, इराक, जॉर्डन और सीरिया पर हमला किया है तथा उन्हें भारी नुकसान हुआ है। हालांकि अमेरिकियों और रूसियों के पास हजारों परमाणु हथियार हैं, लेकिन लगता है कि उनके पास निगरानी एवं संतुलन की क्षमता है। दूसरे परमाणु हथियार संपन्न देशों के पास भी ऐसा ही है। ईरान के मौजूदा खानाबदोश शासन पर समझदारी के लिए भरोसा नहीं किया जा सकता। बिल्कुल अनूठे हथियार के जरिये इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड कोर ने उन्नत क्षमताओं का इस्तेमाल करके 'निर्णायक और अफसोसनाक सजा' देने की कसम खाई है। हालांकि उन्होंने उनका नाम नहीं बताया है, लेकिन खतरा भयावह है। वे अब हताश हैं और अपने साथ-साथ दूसरों को भी बर्बाद कर सकते हैं। ज्यादातर ईरानी इस सरकार को हटाना चाहते हैं। लगभग 80 फीसदी लोग इसका विरोध करते हैं और सिर्फ 20 फीसदी लोग ही इसका समर्थन करते हैं। अमेरिका ने जरूर विरोधी समूहों को तैयार किया होगा, जो सरकार बदलने के लिए बहुत जरूरी है। कोई नहीं जानता कि इस युद्ध का नतीजा किसके पक्ष में जाएगा, लेकिन यह तो पक्का है कि यह सबकी जेब पर भारी पड़ेगा। रूस को तेल बेचने की इजाजत मिल सकती है, क्योंकि होर्मुज जलडमरूमध्य पर कब्जा है। हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि हम सभी देशवासी एकजुट रहें और अपने देश की मौजूदा स्थिर सरकार का साथ दें। कुछ लोगों की राय अलग हो सकती है, लेकिन आपको इसकी बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ती है। बुराई करने वालों को दूर रखें।

edit@amarujala.com

जीवन धारा

ओशो

हिरण्यकश्यप और प्रह्लाद दो नहीं हैं-प्रत्येक व्यक्ति के भीतर घटनेवाली दो घटनाएं हैं। जब तक तुम्हारे मन में संदेह है, हिरण्यकश्यप है। कितनी बार नहीं तुम्हारे मन में श्रद्धा का भाव उठता है, पर संदेह उसे झपटकर पकड़ लेता है।

हिरण्यकश्यप और प्रह्लाद दोनों तुम्हारे भीतर हैं

__होलिका__ दहन रहस्य पुराण इतिहास नहीं है। पुराण महाकाव्य है। पुराण में किन्हीं घटनाओं का अंकन नहीं है, वरन किन्हीं सत्यों की ओर इंगित है। पुराण शाश्वत है। ऐसा कभी हुआ था कि नास्तिक के घर आस्तिक का जन्म हुआ? ऐसा नहीं; सदा ही नास्तिकता में ही आस्तिकता का जन्म होता है। नास्तिकता आस्तिकता की मां है, पिता है। नास्तिकता के गर्भ से ही आस्तिकता का आविर्भाव होता है।

हिरण्यकश्यप कभी हुआ या नहीं, मुझे प्रयोजन नहीं है। प्रह्लाद कभी हुए, न हुए, प्रहलाद जानें। पुराण में जिस तरफ इशारा है, वह रोज होता है, प्रतिपल होता है, हमारे भीतर हुआ है, हमारे भीतर हो रहा है। जब भी कहीं भी मनुष्य होगा, पुराण का सत्य दोहराया जाएगा। पुराण सार-निचोड़ है; मनुष्य के जीवन का अंतर्निहित सत्य है। साधारणतः हम समझते हैं कि नास्तिक आस्तिक का विरोधी है। वह गलत है। नास्तिक बेचारा विरोधी होगा कैसे! नास्तिकता को आस्तिकता का पता नहीं है। आस्तिकता के विरोध में नहीं हो सकती नास्तिकता, क्योंकि आस्तिकता तो नास्तिकता के भीतर से ही आविर्भूत होती है।

नास्तिकता जैसे बीज है और आस्तिकता उसी का अंकुरण है। बीज का अभी अपने अंकुर से मिलना नहीं हुआ। जब तक बीज है, तब तक अंकुर नहीं है। अंकुर तो तभी होगा, जब बीज टूटेगा और भूमि में खो जाएगा। बीज से ही अंकुर पैदा होता है, लेकिन बीज के विसर्जन से, बीज के खो जाने से, बीज के तिरोहित हो जाने से। बीज अंकुर का विरोधी कैसे हो सकता है! बीज तो अंकुर की सुरक्षा है। लेकिन, बीज को अंकुर का कुछ पता नहीं है। इसी अज्ञान में बीज संघर्ष भी कर सकता है अपने को बचाने का-कि टूट न जाऊं, खो न जाऊं, मिट न जाऊं! उसे पता नहीं कि उसी की मृत्यु से महाजीवन का सूत्र उठेगा। उसे पता नहीं, उसी की राख से फूल उठनेवाले हैं। इसलिए बीज क्षमा योग्य है, उस पर नाराज मत होना। दया योग्य है।

इसलिए जब भी कोई धार्मिक व्यक्ति पैदा होगा, संप्रदाय से संघर्ष निश्चित है होगा ही। संप्रदाय यानी हिरण्यकश्यप, धर्म यानी प्रहलाद। निश्चित ही हिरण्यकश्यप शक्तिशाली है, प्रतिष्ठित है। सब ताकत उसके हाथ में है। प्रह्लाद नया-नया उगा अंकुर है। सारी शक्ति तो अतीत की है, वर्तमान तो अभी-अभी आया है। पर मजा यही है कि वर्तमान जीतेगा और अतीत हारेगा; क्योंकि वर्तमान जीवंतता है और अतीत मौत है। हिरण्यकश्यप के पास सब था। वह जो चाहता, करता। जो चाहा उसने करने की कोशिश भी की, फिर भी हारता गया। शक्ति नहीं जीतती, जीवन जीतता है। प्रतिष्ठा नहीं जीतती, सत्य जीतता है। संप्रदाय पुराने हैं।... इसलिए मैं कहता हूं, पुराण तथ्य नहीं है, सत्य है। कुछ एक शक्ति है, जो व्यक्ति की नहीं है, परमात्मा की है। वही तो भक्त का अर्थ है। भक्त का अर्थ है: जिसने कहा, 'मैं नहीं हूं, तू है'! भक्त ने कहा, 'अब जले तो तू जलेगा; मरे तो तू मरेगा; हारे तो तू हारेगा; जीते तो तू जीतेगा। हम बीच से हट जाते हैं।' नास्तिकता में ही आस्तिक पैदा होगा। तुम सभी नास्तिक हो। हिरण्यकश्यप बाहर नहीं है, न ही प्रह्लाद बाहर है। हिरण्यकश्यप और प्रह्लाद दो नहीं हैं-प्रत्येक व्यक्ति के भीतर घटनेवाली दो घटनाएं हैं। जब तक तुम्हारे मन में संदेह है, हिरण्यकश्यप है। कितनी बार नहीं तुम्हारे मन में श्रद्धा का भाव उठता है, पर संदेह उसे झपटकर पकड़ लेता है। कितनी बार नहीं, तुम किनारे-किनारे आ जाते हो छलांग लगाने के, संदेह पैर में जंजीर बनकर रोक लेता है, क्या कर रहे हो! पैर रुक जाते हैं। सोचते हो, कल कर लेंगे, इतनी जल्दी क्या है! क्रांति कितनी बार तुम्हारे भीतर नहीं उन्मेष लेती है! कितनी बार नहीं तुम्हारे भीतर क्रांति का झंझावात आता है--और तुम बार-बार संदेह का साथ पकड़कर रुक जाते हो! यह तुम अपने भीतर खोजो। यह कथा पुराण में खोजने की नहीं है। यह तुम्हारे प्राण में खोजने की है। यह पुराण तुम्हारे प्राणों में लिखा हुआ है।

- ओशो भक्ति-सूत्र प्रवचन - 16

दूसरा पहलू

सीपें पानी की सफाईकर्मी हैं। एक सामान्य आकार की सीप एक दिन में 20 से 40 लीटर तक पानी छान सकती है।

जलीय दुनिया की गुपचुप नायिकाएं

नदी की तलहटी में आधी गड़ी हुई, या समुद्र के किनारे चट्टानों से चिपकी हुई सीपों में न तो कोई चमक-दमक है, न कोई तेज गति। सीपों को अगर एक पंक्ति में समझना हो, तो कहा जा सकता है कि वे पानी की सफाईकर्मी हैं। बिना थके, बिना रुके सीप अपने शरीर में पानी खींचती है, उसमें से गंदगी, सूक्ष्म कण, बैक्टीरिया, शैवाल, रसायन और भारी धातु तक को छानती है और अपेक्षाकृत साफ पानी बाहर छोड़ देती है।

वैज्ञानिक बताते हैं कि एक सामान्य आकार की सीप एक दिन में 20 से 40 लीटर तक पानी छान सकती है। दुनिया भर में सीपों की लगभग 1,200 से अधिक प्रजातियां पाई जाती हैं। इनमें से करीब 1,000 प्रजातियां मीठे पानी में और बाकी समुद्री जल में रहती हैं। सीपों का कोमल शरीर दो मजबूत खोलों से ढका होता है, जो कैल्शियम कार्बोनेट से बने होते हैं। मोती बनने की प्रक्रिया भी इसी से जुड़ी है। जब कोई बाहरी कण उनके शरीर के भीतर फंस जाता है, तो सीप उसे ढंकने के लिए कैल्शियम की परतें चढ़ाती जाती है और धीरे-धीरे मोती बन जाता है। समुद्री सीपें आम तौर पर 10 से 20 साल तक, जबकि मीठे पानी की सीपें 50 से 100 साल तक जी सकती हैं।

कुमार सिद्धार्थ

समुद्री सीपें आम तौर पर 10 से 20 साल तक, जबकि मीठे पानी की सीपें 50 से 100 साल तक जी सकती हैं।

एशियाई देशों में सीपों को 'समुद्र का पौष्टिक उपहार' कहा जाता है। इनमें अनुकूलन की क्षमता है। सामूहिक मृत्यु के बाद कुछ सीपें बच जाती हैं। वहीं आगे चलकर नई पीढ़ी बनाती हैं।

चीन, जापान, थाईलैंड और वियतनाम जैसे देशों में सीपों को उगाने के लिए समुद्र के तट के पास बांस, लकड़ी या रस्सियों की कतारें लगाई जाती हैं। इन्हीं पर सीपों के लार्वा आकर चिपक जाते हैं। कुछ जगहों पर पुराने खोल, पत्थर या खास तरह की टाइलें भी डाली जाती हैं, ताकि सीपों को पकड़ बनाने के लिए ठोस सतह मिल सके। फिर समुद्र अपना काम करता है। पानी के साथ आने वाला पोषण, शैवाल और खनिज तत्व सीपों के भोजन बनते हैं। चीन इस क्षेत्र में सबसे आगे है। जापान में सीपों की खेती तकनीकी रूप से काफी उन्नत है। कुछ देशों में सीपों की खेती गरीब समुदायों के लिए एक स्थिर आमदनी का साधन बन चुकी है।

सीपों के खोलों का इस्तेमाल चूना बनाने, खाद कैल्शियम बढ़ाने व निर्माण सामग्री में भी होता है। कुछ जगहों पर सीपों के खोलों से सड़क और तटीय बांध मजबूत किए जाते हैं। पारंपरिक चिकित्सा प्रणालियों में भी सीपों के खोल का पाउडर उपयोग में लाया जाता रहा है। सीपें प्रोटीन, जिंक, आयरन और ओमेगा-3 फैटी एसिड से भरपूर होती हैं। यही कारण है कि एशियाई देशों में इन्हें 'समुद्र का पौष्टिक उपहार' कहा जाता है। पोलैंड की नीदा नदी में 1980 के दशक में सीपें पूरी तरह समाप्त हो गई थीं, पर सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट्स के प्रदूषण को काफी हद तक कम करके मोटे खोल वाली नदी-सीप को सफलतापूर्वक फिर से बसाया गया।

सीपों में अनुकूलन की अद्भुत क्षमता है। हर सामूहिक मृत्यु के बाद कुछ सीपें बच जाती हैं। वही आगे चलकर नई पीढ़ी बनाती हैं। यही विकास की प्रक्रिया है। यही उम्मीद है।

आंकड़े

व्यापार पर पाबंदी

इंडोनेशियाई नागरिक विदेशी सामान व सेवाओं के आयात पर अधिक व्यापारिक पाबंदियां लगाने को लेकर सबसे ज्यादा समर्थन करते हैं।

देश	प्रतिशत
इंडोनेशिया	92
भारत	63
फ्रांस	58
दक्षिण कोरिया	52
चीन	47

आंकड़े व्यापार पाबंदियों का समर्थन करने वाले लोगों के, प्रतिशत में | स्रोत : इप्सोस ग्लोबल ट्रेंड्स सर्वे

फाल्गुन पूर्णिमा के दिन बच्चों और नगरवासियों ने लकड़ियां जलाकर अग्नि प्रज्वलित की, तालियां बजाईं, मंत्रोच्चार किया, जिससे ढुंढा राक्षसी का अंत हुआ।

बाल उल्लास की पवित्र ऊर्जा

होली से जुड़ी एक अत्यंत अनूठी और आध्यात्मिक कथा राजा युधिष्ठिर और भगवान श्रीकृष्ण के संवाद के रूप में वर्णित है, जिसे 'ढुंढा राक्षसी' का प्रसंग कहा जाता है।

कथा के अनुसार, सतयुग में ढुंढा नाम की एक भयानक राक्षसी थी, जिसे शिवजी से वरदान प्राप्त था कि उसे देवता, असुर, मनुष्य या कोई भी अस्त्र-शस्त्र नहीं मार पाएगा। वह न तो सर्दी से मर सकती थी, न गर्मी से और न ही वर्षा से। इस अजेय शक्ति के कारण वह बच्चों को प्रताड़ित करने लगी और समाज में भय का वातावरण फैल गया। महर्षि वशिष्ठ ने इसका समाधान निकाला। उन्होंने बताया कि भले ही वह अस्त्रों से न मरे, पर बच्चों के सामूहिक उल्लास, खेल-कूद और शोर के सामने ढुंढा की शक्ति क्षीण हो जाएगी।

फाल्गुन पूर्णिमा के दिन सभी बच्चे और नगरवासी एकत्र हुए। उन्होंने लकड़ियां जलाकर अग्नि प्रज्वलित की, तालियां बजाईं, मंत्रोच्चार किया और हंसते-गाते हुए इतना शोर मचाया कि राक्षसी की एकाग्रता और नकारात्मक शक्तियां छिन्न-भिन्न हो गईं। सामूहिक आनंद की इस दिव्य ऊर्जा और अग्नि की पवित्रता के कारण ढुंढा का अस्तित्व समाप्त हो गया।

अंतर्यात्रा
संकलित

होली का उत्सव हमें सिखाता है कि जब हम रंगों में डूबकर अहंकार को भूल जाते हैं और सामूहिक रूप से आनंद मनाते हैं, तो जीवन की सारी जड़ता और नकारात्मकता जलकर भस्म हो जाती है।

अमर उजाला

पुराने पन्नों से — 3 मार्च, 1956

भ्रष्टाचार की शिकायत आने पर तुरंत कार्रवाई हो

भ्रष्टाचार की शिकायत आने पर तुरंत कार्रवाई हो
उत्तर प्रदेश सरकार का कड़ा आदेश

उत्तर प्रदेश सरकार ने बड़ा आदेश दिया है कि सरकारी कर्मचारियों के विरुद्ध भ्रष्टाचार की शिकायत आने पर तुरंत उचित कार्रवाई हो। यह आदेश विभागीय प्रमुखों को दिए गए हैं। कर्तव्यों का निर्वाह न करने वाले कर्मचारियों को दंडित किया जाएगा।

क्या नेपाल में चुनाव से स्थिरता आएगी

आर्थिक संकट, बढ़ती बेरोजगारी और शासन के प्रति असंतोष की पृष्ठभूमि में आगामी पांच मार्च को नेपाल में मतदान होने जा रहे हैं।

महेंद्र वेद | मुद्दा

भारत के पड़ोसी देशों में वर्ष 2024 में युवाओं के विरोध प्रदर्शनों के जरिये जो सत्ता परिवर्तन शुरू हुआ था, अब चुनावी तौर पर राजनीतिक फायदे दे रहा है। म्यांमार इसका अपवाद है, जहां सेना ने जीत हासिल की। लेकिन श्रीलंका और बांग्लादेश में हुए चुनावों से ऐसी सरकारें बनी हैं, जिनसे राजनीतिक स्थिरता की उम्मीदें बढ़ी हैं। अब नेपाल में पांच मार्च को मतदान होने जा रहा है। इन आंदोलनों की पृष्ठभूमि में आर्थिक संकट, बढ़ती बेरोजगारी और शासन के प्रति असंतोष प्रमुख कारण रहे।

डिजिटल प्लेटफॉर्म ने इन विरोध प्रदर्शनों को संगठित और प्रभावी बनाने में केंद्रीय भूमिका निभाई। बांग्लादेश में शेख हसीना सरकार के खिलाफ आंदोलन को सोशल मीडिया ने गति दी। नेपाल में जब सितंबर में के. पी. शर्मा ओली सरकार ने डिजिटल माध्यमों पर प्रतिबंध लगाया, तो उन्हें इस्तीफा देना पड़ा।

तकनीक के सहारे उभरी युवा शक्ति अब दक्षिण एशिया की राजनीति में निर्णायक बनती जा रही है। नेपाल में भी युवाओं का ऐसा ही उभार दिख रहा है। हालांकि, 78 वर्षीय पूर्व राजा ज्ञानेंद्र शाह ने वीडियो के जरिये अपील की, जिसमें नेपाली समाज में गहराई से बसी राजशाही परंपरा को बढ़ावा दिया है। खास बात यह है कि सितंबर, 2025 के विरोध प्रदर्शनों के दौरान, राजशाही की बहाली की बात फिर से उठी। जब भ्रष्टाचार, बेरोजगारी और विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग के बीच भाई-भतीजावाद जैसे मुद्दे प्रमुख हों, तब चुनाव टालने की ज्ञानेंद्र की अपील मतदाताओं को भ्रमित करती है।

इन सबके बावजूद, अंतरिम सरकार की प्रमुख और पूर्व प्रधान न्यायाधीश सुशीला कार्की ने गणतांत्रिक संविधान में निर्धारित समय-सारिणी के अनुसार देश में चुनाव कराने का निर्णय बरकरार रखा है। इस बार 19 लाख मतदाता दो मतपत्रों के माध्यम से निचले सदन और उच्च सदन के लिए मतदान करेंगे। इसमें प्रत्यक्ष बहुमत प्रणाली और आनुपातिक प्रतिनिधित्व प्रणाली का मिश्रण अपनाया गया है। यह नेपाल में पहली बार हो रहा है। 165 निर्वाचन क्षेत्रों में लगभग 3,500 उम्मीदवार मैदान में हैं और 33 प्रतिशत सीटें महिलाओं के लिए आरक्षित हैं। इस बार मतदाताओं में आठ लाख प्रथम बार वोट देने वाले युवा हैं।

सत्तर वर्षीय ओली, चौथी बार प्रधानमंत्री बनने की इच्छा रखते हैं। लेकिन उन्हें 35 वर्षीय बालेन शाह से चुनौती मिल रही है। बालेन शाह राष्ट्रीय स्वतंत्र पार्टी (आरएसपी) का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं, जो 2022 के आम चुनाव में चौथे स्थान पर रही थी। विश्लेषकों का कहना है कि इस बार उसका प्रदर्शन बेहतर हो सकता है। शाह को पार्टी ने प्रधानमंत्री पद का उम्मीदवार घोषित किया है। ओली के अन्य प्रतिद्वंद्वी और पूर्व सहयोगी पुष्प कमल दहल 'प्रचंड' भी दबाव में हैं। युवाओं के रुझान को देखते हुए नेपाली कांग्रेस पार्टी ने चार बार प्रधानमंत्री रहे अपने अध्यक्ष शेर बहादुर देउबा को हटा दिया है। पार्टी ने 49 वर्षीय गंगा थापा को संभावित प्रधानमंत्री पद का चेहरा बनाया है।

दक्षिण एशिया की बदलती भू-राजनीति के संदर्भ में नेपाल की स्थिति भी महत्वपूर्ण है। भारत को चीन और अमेरिका की सक्रियता से चुनौती मिल रही है। हालांकि नेपाल ने हमेशा संतुलन की नीति अपनाई है। वर्ष 2017 में नेपाल एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करके चीन की बेल्ट एंड रोड पहल का हिस्सा बना। 4 दिसंबर, 2024 को नेपाल और चीन ने बुनियादी ढांचा, पर्यटन और संपर्क परियोजनाओं को आगे बढ़ाने के लिए बीआरआई की नई सहयोगी रूपरेखा पर हस्ताक्षर किए। भारत, जो उसका पारंपरिक साझेदार रहा है, वित्त और परियोजनाओं के मामले में चीन की बराबरी नहीं कर पाया है। खासकर केपी शर्मा ओली के नेतृत्व में मार्क्सवादी-माओवादी सरकारों ने सीमा विवाद को हवा दी और भारतीय क्षेत्र के कुछ हिस्सों को अपने नक्शे में दर्शाया।

नेपाल ने बहुत ज्यादा राजनीतिक उतार-चढ़ाव देखा है, 2008 में संघीय लोकतांत्रिक गणराज्य बनने के बाद से नेपाल में 14 सरकारें और 14 प्रधानमंत्री बदल चुके हैं। पिछले वर्ष के विरोध प्रदर्शनों के बाद यह पहला चुनाव कई प्रश्न खड़े करता है। इन घटनाओं ने उस राजनीतिक सहमति को कमजोर किया है, जिसके आधार पर नेपाल भारत और चीन के बीच संतुलन बनाए रखता था। राजनीतिक स्थिरता के समय नेपाल ने रणनीतिक स्वायत्तता बनाए रखी थी, लेकिन वर्तमान राजनीतिक विखंडन और नए नेताओं के उभार से इस नीति की निरंतरता पर खतरा मंडरा सकता है। चुनावों से अब तक स्थिरता नहीं आई है और सरकारों में बार-बार बदलाव हुआ है। यदि अगली सरकार घरेलू वैधता और संस्थागत मजबूती बहाल नहीं कर पाती, तो नेपाल सक्रिय भू-राजनीतिक संतुलनकर्ता के बजाय महाशक्तियों की प्रतिस्पर्धा का अखाड़ा बन सकता है। कुल मिलाकर, नेपाल कमजोर अर्थव्यवस्था, युवा मतदाता वर्ग, विभाजित पुराने नेतृत्व और यथास्थिति को चुनौती देती नई पीढ़ी की लहर के बीच चुनाव की ओर बढ़ रहा है।

एआईआईबी अध्यक्ष ने समावेशी संचालन मॉडल को सराहा

दिल्ली-मेरठ नमो भारत कॉरिडोर का किया दौरा, विस्तृत जानकारी भी ली

एशियन इंफ्रास्ट्रक्चर इन्वेस्टमेंट बैंक के प्रेसिडेंट जू जियाई को डायरेक्टर शलभ गोयल और दूसरे सीनियर अधिकारी जानकारी देते हुए। संवाद

नई दिल्ली। एशियन इंफ्रास्ट्रक्चर इन्वेस्टमेंट बैंक (एआईआईबी) की अध्यक्ष जो जियाई ने सोमवार को प्रतिनिधिमंडल के साथ दिल्ली-मेरठ नमो भारत कॉरिडोर का दौरा किया। प्रतिनिधिमंडल ने सरायकाले खां स्टेशन पर नमो भारत सेवा के बारे में विस्तृत जानकारी ली।

यात्री-केंद्रित सुविधाओं, मल्टी-मोडल इंटीग्रेशन और समावेशी संचालन मॉडल की सराहना की। कॉरिडोर दौरे के दौरान राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र परिवहन निगम (एनसीआरटीसी) के प्रबंध निदेशक शलभ गोयल सहित अन्य वरिष्ठ अधिकारी मौजूद रहे।

एनसीआरटीसी के अनुसार, सरायकाले खां स्टेशन इस कॉरिडोर का पहला और सबसे बड़े स्टेशनों में से एक है। यह एक प्रमुख मल्टी-मोडल ट्रांजिट हब के रूप में विकसित किया है। मल्टी-मोडल इंटीग्रेशन (एमएमआई) के तहत आरआरटीएस स्टेशनों को मौजूदा सार्वजनिक परिवहन तंत्र से जोड़ा जा रहा है। ब्यूरो

सरायकाले खां से आनंद विहार तक की नमो भारत ट्रेन में यात्रा

एआईआईबी अध्यक्ष और प्रतिनिधिमंडल ने सरायकाले खां से आनंद विहार तक नमो भारत ट्रेन में यात्रा कर यात्री सुविधाओं का जायजा लिया। अध्यक्ष जियाई ने स्टेशनों व ट्रेनों के समावेशी डिजाइन की सराहना की। उन्हें एनसीआरटीसी के जेंडर-इनक्लूसिव परिचालन मॉडल से भी अवगत कराया गया। उन्होंने महिला ट्रेन ऑपरेटरों और स्टेशन कंट्रोलरों से बातचीत की।

दीपाली चौक से मजलिस पार्क खंड संचालन के लिए तैयार

दिल्ली मेट्रो चौथा चरण...9.9 किमी एलिवेटेड हिस्से में होंगे तीन इंटरचेंज

अमर उजाला ब्यूरो

नई दिल्ली। दिल्ली मेट्रो के फेज-चार विस्तार के तहत जनकपुरी वेस्ट-आरके आश्रम मार्ग कॉरिडोर का 9.9 किलोमीटर लंबा दीपाली चौक-मजलिस पार्क खंड संचालन के लिए लगभग तैयार है।

यह एलिवेटेड हिस्सा मैजेंटालाइन का विस्तार है और उत्तर व पश्चिमी दिल्ली के बीच सीधी कनेक्टिविटी उपलब्ध कराएगा। इस खंड में पांच स्टेशन पीतमपुरा, प्रशांत विहार, नॉर्थ पीतमपुरा, हैदरपुर बादली मोड़ और भलस्वा बनाए गए हैं। इनमें तीन इंटरचेंज स्टेशन शामिल हैं, जहां यात्रियों को रेड, येलो और पिंक लाइन से संपर्क मिलेगा।

29.3 किलोमीटर लंबा पूरा कॉरिडोर

फेज-4 के तहत 29.3 किलोमीटर लंबे इस पूरे कॉरिडोर में 22 स्टेशन प्रस्तावित हैं। इसमें से जनकपुरी वेस्ट से कृष्णा पार्क एक्सटेंशन तक 2 किलोमीटर का हिस्सा बीते वर्ष 5 जनवरी को शुरू किया जा चुका है। शेष खंड को 2026-27 के दौरान चरणबद्ध तरीके से खोलने की योजना है।

यात्रियों का अलग-अलग हिस्सों तक पहुंचना आसान होगा

इससे यात्रियों को बिना लंबा घुमाव लिए अलग-अलग हिस्सों तक पहुंचना आसान होगा।

आउटर रिंग रोड के 8 किलोमीटर लंबे दीपली चौक-भलस्वा खंड पर निजी वाहनों और बसों से मेट्रो की ओर यात्रियों के शिफ्ट होने से पीतमपुरा और हैदरपुर बादली मोड़ जैसे प्रमुख चोक प्वाइंट पर ट्रैफिक दबाव कम होने की उम्मीद है। यह कॉरिडोर राजधानी के उत्तरी और पश्चिमी इलाकों के बीच आवागमन को तेज और सुगम बनाएगा।

किसी के लिए आसान तो किसी के लिए मुश्किल रहा हिंदी का पेपर

नई दिल्ली । केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की दसवीं कक्षा के लिए सोमवार को हिंदी विषय की परीक्षा हुई। यह किसी के लिए आसान तो किसी को मुश्किल लगी। शिक्षकों ने प्रश्न पत्र को संतुलित बताया। एक छात्र ने कहा कि प्रश्न पत्र को हल करने के लिए गहरी समझ की जरूरत थी। शालीमार बाग स्थित मॉडर्न स्कूल की हिंदी की शिक्षिका कंचन सूद ने बताया कि अधिकतर प्रश्न स्पष्ट, सरल और समझने योग्य थे। गद्य और पद्य खंड के प्रश्न सीधे पाठ्यपुस्तक के अभ्यासों से न होकर विश्लेषण एवं चिंतन पर आधारित थे। उन्होंने व्याकरण खंड को भी संतुलित बताया। साथ ही कहा कि लेखन खंड, पत्र लेखन, अनुच्छेद, विज्ञापन और लघु कथा ने विद्यार्थियों की रचनात्मकता और अभिव्यक्ति को परखा। उन्होंने प्रश्नपत्र के स्तर को मध्यम बताया। वहीं, परीक्षा देने के बाद परीक्षा सेंटरों के बाहर छात्रों ने होली भी खेली। अब पांच मार्च को ही परीक्षा होगी। ब्यूरो

दिल्ली सरकार की घोषणाएं जनता को गुमराह करने वाली : कांग्रेस

नई दिल्ली। प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष देवेन्द्र यादव ने भाजपा की दिल्ली सरकार पर घोषणाओं के नाम पर जनता को गुमराह करने का आरोप लगाया है। उन्होंने कहा कि सीएम रेखा गुप्ता की होली-दिवाली पर मुफ्त गैस सिलिंडर देने की घोषणा महज प्रचार है। सरकार 15.50 लाख राशन कार्ड धारक परिवारों को लाभ देने की बात कर रही है, जबकि दिल्ली में 17 लाख से अधिक राशन कार्डधारी परिवार हैं और लाखों की जांच अब भी लंबित है। यादव ने कहा कि भाजपा सरकार पहले 500 रुपये में सब्सिडी वाला सिलिंडर देने का वादा पूरा करे। वहीं उन्होंने आरोप लगाया कि मुख्यमंत्री की इंदिरा गांधी स्टेडियम में करोड़ों रुपये खर्च कर मुफ्त सिलिंडर, लखपति बिटिया योजना और पिंक कार्ड की घोषणा करना केवल चेहरा चमकाने की राजनीति है। उन्होंने महिलाओं को 2500 रुपये मासिक देने के वादे की याद दिलाते हुए कहा कि यदि सरकार सचमुच महिलाओं को सशक्त बनाना चाहती है तो पहले यह वादा पूरा करे।

एआई समिट में प्रदर्शन करने वाले आईवाईसी कार्यकर्ताओं को जमानत

नई दिल्ली। पटियाला हाउस कोर्ट ने इंडिया एआई इम्पैक्ट समिट में शर्टलेस प्रदर्शन के मामले में गिरफ्तार नौ युवा कांग्रेस (आईवाईसी) कार्यकर्ताओं को जमानत दे दी है। अदालत ने कहा कि यह प्रदर्शन अधिकतम स्तर पर प्रतीकात्मक राजनीतिक आलोचना था और पूर्व-ट्रायल हिरासत पूर्व-निश्चित सजा का रूप ले सकती है। पटियाला हाउस कोर्ट के प्रथम श्रेणी न्यायिक मजिस्ट्रेट रवि ने रविवार को नौ आरोपियों कृष्णा हरि, नरसिम्हा यादव, कुंदन कुमार यादव, अजय कुमार सिंह, जितेंद्र सिंह यादव, राजा गुर्जर, अजय कुमार विमल उर्फ बंटू, सौरभ सिंह और अरबाज खान की जमानत याचिकाओं पर सुनवाई करते हुए यह आदेश दिया। अदालत ने कहा कि प्रदर्शन अधिकतम स्तर पर प्रतीकात्मक राजनीतिक आलोचना था। संपत्ति क्षति का सबूत नहीं मिला।

अदालत ने कहा कि पूर्व-ट्रायल हिरासत, सजा से पहले सजा का रूप ले सकती है। दिल्ली पुलिस ने जमानत याचिकाओं का विरोध करते हुए कहा कि संविधान शांतिपूर्ण विरोध का अधिकार देता है, लेकिन कुछ शर्तें भी हैं। पुलिस ने कहा कि पुलिसकर्मियों पर हमला किया गया, जिससे चोटें आईं। ब्यूरो

बेरोजगारी और नए श्रम कानूनों के खिलाफ प्रदर्शन

नई दिल्ली। लोक समाज पार्टी ने जंतर मंतर पर बेरोजगारी, निजीकरण, ठेकेदारी प्रथा, नए श्रम कानून और अमेरिका के साथ हुई कृषि डील के विरोध में प्रदर्शन किया। प्रदर्शन का नेतृत्व पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव बच्चन सिंह करौतिया ने किया। इस दौरान पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष गौरी शंकर शर्मा ने सभा को संबोधित करते हुए केंद्र सरकार पर तीखा हमला बोला। उन्होंने बताया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने साल 2014 के लोकसभा चुनाव में बेरोजगारी खत्म करने का वादा किया था, लेकिन आज देश में बेरोजगारों की संख्या 32 करोड़ तक पहुंचने का दावा किया जा रहा है। नए श्रम कानून को लेकर बच्चन सिंह करौतिया ने बताया कि यह कानून श्रमिकों के अधिकारों को कमजोर करता है और देश को सामंती व्यवस्था की ओर ले जाने जैसा है। ब्यूरो

सरकार का काम केवल स्कूल खोलना नहीं, बल्कि सुविधाएं भी देना : सीएम

केंद्रीय विद्यालय के स्थायी भवन के लिए सीएम ने किया भूमि पूजन

अमर उजाला ब्यूरो

नई दिल्ली। मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने सोमवार को उत्तर-पूर्वी दिल्ली के खजूरी खास में केंद्रीय विद्यालय के स्थायी भवन के लिए भूमि पूजन और अस्थायी भवन का उद्घाटन किया। इस दौरान उन्होंने कहा कि यह करावल नगर और पूरे उत्तर-पूर्वी दिल्ली क्षेत्र के लिए ऐतिहासिक कदम है। लंबे समय से बेहतर शैक्षणिक सुविधाओं की कमी झेल रहे इलाके के बच्चों को अब अपने ही क्षेत्र में केंद्रीय विद्यालय की सुविधा मिलेगी।

मुख्यमंत्री ने कहा कि सरकार का लक्ष्य केवल स्कूल खोलना नहीं, बल्कि उन्हें आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित करना भी है, ताकि बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिल सके। उन्होंने कहा कि ट्रिपल इंजन सरकार में शिक्षा, सड़क, पेयजल, सीवर और अन्य बुनियादी ढांचे के विकास को गति मिली है। करावल नगर क्षेत्र में प्रस्तावित मेट्रो परियोजना का भी उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि इससे क्षेत्र के विकास को नई दिशा मिलेगी।

बच्चों को मिलेगी विश्वस्तरीय सुविधा : शिक्षा मंत्री

इस दौरान शिक्षा मंत्री आशीष सूद ने कहा कि वर्षों तक यहां के विद्यार्थियों को 4-5 किलोमीटर दूर तक पढ़ाई के लिए जाना पड़ता था। नए केंद्रीय विद्यालय से प्रवेश का दबाव कम होगा और बच्चों को विश्वस्तरीय सुविधाएं मिलेंगी। वहीं, मंत्री कपिल मिश्रा ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और मुख्यमंत्री के नेतृत्व में यमुनापार में विकास कार्यों को नई गति मिली है। यमुनापार विकास बोर्ड के पुनर्गठन के बाद करोड़ों रुपये के विकास कार्य स्वीकृत हुए हैं।

भाजपा के होली मिलन में शामिल हुईं सीएम

नई दिल्ली। प्रदेश भाजपा के मीडिया विभाग ने सोमवार को होली मंगल मिलन कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता, राष्ट्रीय संगठन महामंत्री बीएल संतोष, राष्ट्रीय महामंत्री अरुण सिंह, केंद्रीय राज्य मंत्री हर्ष मल्होत्रा, प्रदेश अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा सहित अनेक वरिष्ठ नेता शामिल हुए। इस मौके पर मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में नारी सशक्तीकरण को नई गति मिली है। उन्होंने कहा कि दिल्ली में विकास का सिलसिला जारी है। होली के बाद योजनाओं को तेजी से आगे बढ़ाया जाएगा। वीरेन्द्र सचदेवा ने सभी दिल्लीवासियों को होली की शुभकामनाएं दीं। सचदेवा ने आरोप लगाया कि निचली अदालत की आड़ में खुद को निर्दोष साबित करने की कोशिश करने वाले अरविंद केजरीवाल को जनता ने अपना फैसला सुना दिया है। ब्यूरो

न्यूज डायरी

गोरक्षा वॉलेंटियर्स को किया सम्मानित

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष सौरभ भारद्वाज ने चिराग दिल्ली में 43 गायों को बचाने वाले गोरक्षा वॉलेंटियर्स को सम्मानित किया। इन्होंने कथित अवैध गौ व्यापार का खुलासा कर गायों को गोशाला भिजवाया था। भारद्वाज ने दावा किया कि सुबह एक व्यक्ति मोटरसाइकिल से गायों को नाले तक ले जाता है, दूध निकालने के बाद उन्हें फिर सड़कों पर छोड़ देता है। उन्होंने कहा कि गायों की तस्करी के पीछे संगठित नेटवर्क काम कर रहा है। ब्यूरो

शांति के संदेश संग मानव एकता सम्मेलन संपन्न

नई दिल्ली। कृपाल बाग में आयोजित सावन कृपाल रूहानी मिशन का 37वां अंतरराष्ट्रीय मानव एकता सम्मेलन शांति और एकता के संदेश के साथ संपन्न हुआ। इसकी अध्यक्षता मिशन प्रमुख संत राजिन्दर सिंह महाराज ने की। यह सम्मेलन संस्थापक अध्यक्ष संत कृपाल सिंह महाराज के 132वें प्रकाश पर्व पर हुआ। संत राजिन्दर सिंह महाराज ने कहा कि बाहरी धर्म, राष्ट्रीयता और मान्यताओं में भिन्नता के बावजूद समस्त मानवता एक है। इस अवसर पर निःशुल्क नेत्र जांच एवं मोतियाबिंद ऑपरेशन शिविर, वस्त्र वितरण और रक्तदान शिविर लगाए गए। ब्यूरो

ड्रोन शो के साथ वार्षिक महोत्सव का समापन

नई दिल्ली। दिल्ली टेक्नोलॉजिकल यूनिवर्सिटी में तीन दिवसीय वार्षिक तकनीकी महोत्सव का समापन हो गया। इसमें ड्रोन शो का प्रदर्शन हुआ, जिसमें हजार से अधिक छात्रों ने हिस्सा लिया। रोबो वॉर्स, ड्रोन रेसिंग और कोडिंग मैराथन जैसी 70 से अधिक प्रतियोगिताओं में युवाओं ने तकनीकी कौशल का प्रदर्शन किया। उभरते उद्यमियों को अपने विचार विशेषज्ञों के सामने रखने का मंच मिला। साथ ही एआई और रोबोटिक्स पर कार्यशालाएं भी हुईं। समारोह का मुख्य आकर्षण ड्रोन लाइट शो रहा, जिसमें सैकड़ों ड्रोनों ने आकाश में तिरंगे और आधुनिक तकनीक की आकृतियां उकेरीं। ब्यूरो

पिंक कार्ड अनिवार्य करने के फैसले पर आप ने भाजपा को घेरा

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी ने डीटीसी बसों में महिलाओं के लिए पिंक कार्ड अनिवार्य करने के फैसले पर भाजपा सरकार को घेरा है। पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष सौरभ भारद्वाज ने आरोप लगाया कि निर्णय से पूर्वांचल की गरीब महिलाओं का मुफ्त यात्रा का अधिकार छीना जा रहा है। उन्होंने आरोप लगाया कि कार्ड बनवाने के लिए दिल्ली के आधार कार्ड जैसी शर्तें लागू की जा सकती हैं, जिससे उत्तर प्रदेश, बिहार, हरियाणा और पूर्वांचल की उन महिलाओं को परेशानी होगी, जिनके पास अपने मूल राज्य का आधार कार्ड है। ब्यूरो

उद्योग जगत

स्वदेशी स्टील से तैयार हुआ आईएनएस अंजदीप, जल्द होगा नौसेना में शामिल

नई दिल्ली। कंपनी स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड (सेल) ने भारतीय नौसेना के लिए बनाए जा रहे युद्धपोत आईएनएस अंजदीप के निर्माण में इस्तेमाल होने वाली विशेष ग्रेड स्टील की पूरी आपूर्ति की है। यह पोत जल्द ही नौसेना के बेड़े में शामिल होने जा रहा है। आईएनएस अंजदीप, एंटी-सबमरीन वारफेयर शैलो वॉटर क्राफ्ट (एएसडब्ल्यू-एसडब्ल्यूसी) श्रेणी का तीसरा युद्धपोत है। इससे पहले आईएनएस अरनाला और आईएनएस एंड्रोथ को नौसेना में शामिल किया जा चुका है। इन जहाजों का निर्माण कोलकाता स्थित गार्डन रीच शिपबिल्डर्स एंड इंजीनियर्स लिमिटेड द्वारा किया जा रहा है। नौसेना के पुराने अभय-श्रेणी के जहाजों को बदलने के लिए कुल आठ एएसडब्ल्यू-एसडब्ल्यूसी कार्वेट बनाए जा रहे हैं। इस परियोजना के तहत सेल ने लगभग 3,500 टन विशेष-ग्रेड स्टील की आपूर्ति की है। यह स्टील सेल के बोकारो, भिलाई और राउरकेला स्थित संयंत्रों से भेजी गई है, जिससे देश की मजबूत घरेलू आपूर्ति श्रृंखला का प्रदर्शन होता है।

आईआईटी रोपड़ ने मनाया 18वां स्थापना दिवस, कई नई पहल की घोषणा

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान रोपड़ (आईआईटी रोपड़) ने अपना 18वां स्थापना दिवस उत्साह के साथ मनाया। इस मौके पर संस्थान ने अनुसंधान, तकनीक और उद्यमशीलता को बढ़ावा देने के लिए कई नई पहलों की घोषणा की। कार्यक्रम का विषय देश में अनुसंधान, नवाचार और उद्यमशीलता को गति देना रहा। कार्यक्रम में पंजाब के राज्यपाल एवं चंडीगढ़ के प्रशासक गुलाब चंद कटारिया मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि आईआईटी रोपड़ जैसे संस्थान आत्मनिर्भर भारत की मजबूती के स्तंभ हैं। उन्होंने संस्थान के शोध कार्यों, नवाचार और छात्रों की उपलब्धियों की सराहना की। आईआईटी रोपड़ के निदेशक प्रो. राजीव आहूजा ने स्वागत भाषण में कहा कि वर्ष 2008 में शुरू हुआ यह संस्थान आज देश के प्रमुख शोध संस्थानों में अपनी पहचान बना चुका है। उन्होंने बताया कि यहां के छात्र और शिक्षक उच्च स्तर के शोध कर रहे हैं, पेटेंट दाखिल कर रहे हैं और ऐसे स्टार्टअप शुरू कर रहे हैं जो समाज की वास्तविक समस्याओं का समाधान कर रहे हैं। कार्यक्रम में संस्थान के संस्थापक निदेशक (पूर्व) प्रो. एमके सुरप्पा ने भी अपने विचार साझा किए और संस्थान की प्रगति पर संतोष व्यक्त किया। अंत में डॉ. पुष्पेंद्र पी सिंह ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

एनबीसीसी और डीडीए के बीच 775 करोड़ रुपये की पुनर्विकास परियोजना पर समझौता

एनबीसीसी (इंडिया) लिमिटेड ने दिल्ली विकास प्राधिकरण (डीडीए) के साथ ओल्ड राजिंदर नगर और सफदरजंग विकास क्षेत्र में स्थित डीडीए स्टाफ क्वार्टरों के पुनर्विकास के लिए दो अलग-अलग समझौता ज्ञापनों (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए हैं। यह डीडीए के साथ एनबीसीसी की पहली पुनर्विकास पहल है। दोनों परियोजनाओं की कुल अनुमानित लागत करीब 775 करोड़ रुपये है। इन परियोजनाओं के तहत लगभग 1.66 लाख वर्ग मीटर क्षेत्र का विकास किया जाएगा। ओल्ड राजिंदर नगर (ओआरएन) में लगभग 1 लाख वर्ग मीटर क्षेत्र का विकास होगा, जिसकी लागत करीब 438 करोड़ रुपये है। सफदरजंग विकास क्षेत्र (एसडीए) में लगभग 66 हजार वर्ग मीटर क्षेत्र का विकास होगा, जिसकी लागत करीब 337 करोड़ रुपये है। फिलहाल ओल्ड राजिंदर नगर में 117 और सफदरजंग विकास क्षेत्र में 152 आवासीय इकाइयाँ डीडीए स्टाफ क्वार्टर के रूप में उपयोग हो रही हैं। इन पुराने भवनों को आधुनिक सुविधाओं और बेहतर बुनियादी ढांचे के साथ दोबारा विकसित किया जाएगा।

महाराष्ट्र की ट्रांसमिशन परियोजना उमरेड पावर ट्रांसमिशन लिमिटेड का हस्तांतरण

महाराष्ट्र के अंतराराज्यीय ट्रांसमिशन सिस्टम प्रोजेक्ट के तहत बनी विशेष कंपनी उमरेड पावर ट्रांसमिशन लिमिटेड को सफल बोलीदाता महाराष्ट्र राज्य विद्युत संचरण कंपनी लिमिटेड (महाट्रांसको) को सौंप दिया गया है। यह हस्तांतरण आरईसी पावर डेवलपमेंट एंड कंसल्टेंसी लिमिटेड (आरईसीपीडीसीएल) द्वारा 26 फरवरी 2026 को औपचारिक रूप से हुआ। यह परियोजना टैरिफ आधारित प्रतिस्पर्धी बोली प्रक्रिया के जरिए आवंटित की गई थी। इस प्रक्रिया में आरईसीपीडीसीएल ने बोली समन्वयक की भूमिका निभाई। प्रतिस्पर्धी बोली के बाद महाराष्ट्र स्टेट इलेक्ट्रिसिटी ट्रांसमिशन कंपनी लिमिटेड को परियोजना विकसित करने के लिए चुना गया। परियोजना का निर्माण बिल्ड, ओन, ऑपरेट एंड ट्रांसफर मॉडल पर किया जाएगा। इसकी निर्धारित अवधि 24 माह रखी गई है।

Jharkhand Industrial Infrastructure Development Corporation Limited (JIIDCO)
(A Govt. of Jharkhand Undertaking)
5th Floor, Udyog Bhawan, Ratu Road, Ranchi – 834001 (Jharkhand)
e-mail- jiidcoltd@gmail.com,www.jiidco.co.in, Phone no. 0651-3512851
CIN U45208JH2004GOI011078

Letter no: -134 **dated: -02.03.2026**

NOTICE INVITING TENDER

(through e-procurement mode only-www.jharkhandtenders.gov.in)
NIT No.- JIIDCO/27/SBD/2025-2026

Designation and Address of the Advertiser : - Chief Engineer, JIIDCO, 5th Floor, Udyog Bhawan, Ratu Road, Ranchi-834001
1. Mode of submission of tender : - Online through www.jharkhandtenders.gov.in
2. Date of publishing on portal and website : - 09.03.2026
3. Start date for downloading of the Bid Documents: - 09.03.2026, 2:00 P.M onwards
4. Last date for submission of Bidding Documents : - 30.03.2026, up to 4:00 P.M.
5. Bid opening date (Technical) : - 01.04.2026 at 5:00 P.M.
6. Details of works: -

Bid No/ Ref.no.	Name of work	Estimated Cost/ECV (Rupees)	Amount of Earnest money (E.M.D) (Rupees)	Cost of BOQ (Non-refundable in Rupees)	Time of completion of work (Months)
1	2	3	4	5	6
01	Construction of PCC Road Over Existing Road at 6th phase Adityapur Industrial Area JIADA.	4,60,56,572.00	4,61,000.00	11,800.00	06 Months
02	Construction of PCC Road Over Existing Road at 5th phase Adityapur Industrial Area JIADA.	4,59,11,600.00	4,59,500.00	11,800.00	06 Months
03	Construction of PCC Road Over Existing Road at 4th phase Adityapur Industrial Area JIADA.	3,89,70,945.00	3,90,000.00	11,800.00	06 Months
04	Construction of PCC Road Over Existing Road at 3rd phase Adityapur Area JIADA.	4,48,38,730.00	4,48,500.00	11,800.00	06 Months
05	Construction of PCC Road Over Existing Road at 3rd phase and 4th phase Adityapur Industrial Area JIADA.	4,22,92,333.00	4,23,000.00	11,800.00	06 Months
06	Construction of PCC Road Over Existing Road at near 2nd & 3rd phase Adityapur Industrial Area JIADA.	4,42,85,165.00	4,43,000.00	11,800.00	06 Months
07	Construction of PCC Road Over Existing Road at 2nd phase Adityapur Industrial Area JIADA.	4,46,72,660.00	4,47,000.00	11,800.00	06 Months

7. Tender fee (non-refundable) & EMD is to be received through online mode only. Bidders can use internet banking facility for faster processing of Tender fee Alternatively, Bidders can use NEFT/RTGS challan generated for the tender from http://jharkhandtenders.gov.in. portal.
Refund will only be issued to Originated bank account used for the payment of EMD. So, bidders are advised NOT to close the above Bank Account used for online payment NEFT/RTGS of EMD.
No Hardcopy/Physical copy is required to be submitted for tender opening/evaluation. However, Department may ask original documents for verification before award of contract.
8. Bid Validity :- 180 days
9. Place of opening of Technical Bid : - JIIDCO, 5th Floor, Udyog Bhawan, Ratu Road, Ranchi-834001
10. For any information/complaints the department helpline no. M.b.no. 7004785102 may be contacted.
11. Further details can be seen on website- www.jharkhandtenders.gov.in.
12. Any Corrigendum or Addendum will be notified on website:- www.jharkhandtenders.gov.in only.
Note: (i) Any change can be seen on website www.jharkhandtenders.gov.in
(ii) Any other information can be seen on www.jharkhandtenders.gov.in
(iii) The estimated cost mentioned above in sl. No.6 column no. 3 is approximate which may increase or decrease.

Sd/-
Chief Engineer
JIIDCO Ranchi

PR 374040 Jharkhand Industrial Infrastructure Dev Co Ltd(25-26).D

राइट्स ने वार्षिक खेल दिवस स्पर्धा का आयोजन किया

गुरुग्राम (वि)। राइट्स लिमिटेड ने गुरुग्राम के बोटानिक्स नेचर रिसॉर्ट्स में अपना वार्षिक खेल दिवस-सह-पिकनिक स्पर्धा का आयोजन किया। राइट्स स्पोर्ट्स एसोसिएशन (आरएसए) द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में निदेशक (तकनीकी) और आरएसए के अध्यक्ष डॉ. दीपक त्रिपाठी ने खेल भावना और टीम वर्क की शपथ दिलाई। इस दौरान कर्मचारियों और उनके परिवारों ने विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं में भाग लिया। इनमें ट्रैक-एंड-फील्ड स्पर्धाएं और रस्साकशी प्रमुख थीं। बच्चों के लिए भी 100 मीटर दौड़ सहित विशेष खेल कार्यक्रम आयोजित किए गए। स्पर्धा-बैटल ऑफ द बैचेस के तहत टीम-बिल्डिंग गतिविधियां भी शामिल थीं। उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वालों को सम्मानित किया गया।

ऑटिज्म सीमा नहीं, बल्कि संसार देखने का अलग-समृद्ध नजरिया

व्यूज फ्रॉम प्लैनेट ऑटिज्म प्रदर्शनी का आयोजन

संवाद न्यूज एजेंसी

नई दिल्ली। इंडिया हैबिटेट सेंटर के ओपन पाम कोर्ट गैलरी में ऑटिस्टिक कलाकारों की सृजनात्मकता को समर्पित सामूहिक कला प्रदर्शनी व्यूज फ्रॉम प्लैनेट ऑटिज्म का आयोजन किया गया।

एक्शन फॉर ऑटिज्म की क्यूरेट की गई यह प्रदर्शनी में देश के विभिन्न हिस्सों से आए 30 से अधिक कलाकारों ने अपनी कलाकृतियां प्रस्तुत कीं। इसके माध्यम से कलाकारों ने अपनी भावनाओं और कल्पनाओं को कैनवास पर उतारा। इसमें प्रखर गर्ग, परीक्षित ऋषि, अभिषेक सरकार और अदिति गांगुली समेत अन्य कलाकारों की कृतियां शामिल रहीं। आयोजन का उद्देश्य ऑटिस्टिक व्यक्तियों की स्वायत्तता और उनकी विशिष्ट पहचान को सम्मान देना है। कलाकृतियों के विविध रूपों ने दर्शकों को यह संदेश दिया कि ऑटिज्म कोई सीमा नहीं, बल्कि संसार को देखने का एक अलग और समृद्ध नजरिया है।

इंडिया हैबिटेट सेंटर के ओपन पाम कोर्ट गैलरी में ऑटिस्टिक कलाकारों की सृजनात्मकता को समर्पित सामूहिक कला प्रदर्शनी। संवाद

झूठी शिकायत, हलफनामे पर हो दंड का प्रावधान

अमर उजाला ब्यूरो

नई दिल्ली। देश में लंबित मामलों की बड़ी संख्या को देखते हुए राघव गर्ग और बीजेपी नेता और सुप्रीम कोर्ट के वकील अश्विनी उपाध्याय ने प्रेस वार्ता की। इस दौरान लोकसभा में 13 फरवरी को लोकसभा पटल पर रखे गए सतयुग विधेयक पर चर्चा की।

अश्विनी उपाध्याय ने कहा कि भारत में 5 करोड़ लंबित मामलों की समस्या केवल अधिक न्यायाधीश या डिजिटलीकरण से दूर नहीं होगा। इसके लिए मिथ्यावेदन पर दंड का प्रावधान सुनिश्चित करना होगा।

लोकसभा ने भी झूठी गवाही को प्रमुख कारण के रूप में रेखांकित किया है। झूठी शिकायतें, हलफनामे के इनकार पर वास्तविक दंड लगभग नहीं के बराबर है। जिससे मुकदमेबाजी कम जोखिम और विलंब प्रधान रणनीति बन गई है। इससे पहले 26 फरवरी को सर्वोच्च न्यायालय में इस संबंध में दाखिल एक जनहित याचिका पर केंद्र सरकार समेत सभी पक्षकारों को नोटिस जारी किया है। इस याचिका में शिकायतकर्ताओं के देवारा अनिवार्य सत्य प्रतिज्ञा, थानों, न्यायालयों में दंडात्मक परिणामों का प्रमुख प्रदर्शन अनिवार्य करने की बात कही गई है। प्रस्तावित सतयुग विधेयक सरल विधायी सुधार का प्रस्ताव करता है।

जो असत्य दावों को हतोत्साहित कर झूठे मुकदमों में कमी ला सकता है। हाल के दिनों में अदालतों ने झूठी शिकायतों पर कई बार वादियों पर जुर्माने इत्यादि लगाए हैं, लेकिन सख्त कानून उन्हे उल्लेखनीय रूप से कम कर पाएगा।

गेल (इंडिया) के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक बने दीपक गुप्ता

नई दिल्ली (वि)। दीपक गुप्ता ने 1 मार्च, 2026 को गेल (इंडिया) लिमिटेड के अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक का कार्यभार संभाल लिया है। दिल्ली कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग से मैकेनिकल इंजीनियर गुप्ता को तेल एवं गैस क्षेत्र में 35 वर्षों से अधिक का अनुभव है। वह फरवरी 2022 में गेल में निदेशक (परियोजनाएं) के रूप में शामिल हुए थे, जहां उन्होंने प्राकृतिक गैस और एलपीजी पाइपलाइनों सहित कई महत्वपूर्ण परियोजनाओं का नेतृत्व किया। गुप्ता ने तालचेर फर्टिलाइजर्स और ओएनजीसी पेट्रो-एडिशंस जैसे गेल के संयुक्त उद्यमों के बोर्ड सदस्य के रूप में भी कार्य किया है। इससे पहले इंजीनियर्स इंडिया लिमिटेड में 32 साल के करिअर में उन्होंने कई बड़ी परियोजनाओं का नेतृत्व किया।

सेंचूरियन डिफेंस के 'उमंग 2026' में कवियों ने छात्रों के बीच नई ऊर्जा का संचार किया

लखनऊ (वि)। सेंचूरियन डिफेंस एकेडमी में रविवार को होली के उपलक्ष्य पर 'उमंग 2026' (रंगोत्सव काव्य उमंग) का आयोजन हर्षोल्लास से हुआ। कार्यक्रम में देश के स्माइल मैन कवि सर्वेश अस्थाना एवं हास्य कवयित्री शिखा श्रीवास्तव ने कविताओं से डिफेंस अभ्यर्थियों और अतिथियों को न केवल ठहाकों से सराबोर किया, बल्कि उनमें नई ऊर्जा और प्रेरणा का संचार भी किया। कवि रामू ध्यानी, मेजर सूबेदार ऋषि दीक्षित एवं प्रोफेसर डॉ. पवन दीक्षित (संस्कृत विवि, लखनऊ) तथा आईईएसएल टीम की उपस्थिति ने कार्यक्रम को विशेष बना दिया। सेंचूरियन डिफेंस एकेडमी चेयरमैन एवं सीएमडी शिशिर दीक्षित ने बताया कि एनडीए 155 में एआईआर 1, 2, 3 सहित टॉप 10 में 5 रिकमेंडेशन तथा 200+ से अधिक सेलेक्शन्स के साथ संस्थान ने उत्कृष्ट परिणाम दिए हैं। इस मौके पर शिक्षकों एवं स्टाफ सदस्यों को सम्मानित किया गया। उमंग 2026– एनुअल स्पोर्ट्स डे 'जोश से जीत' के अंतर्गत क्रिकेट, टग ऑफ वॉर, वॉलीबॉल एवं बैडमिंटन चैम्पियनशिप के विजेताओं को ट्रॉफी एवं प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया।

संपादकीय जागरण

मंगलवार, 3 मार्च, 2026 : फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा वि. 2082

रंग जीवन का सौंदर्य बढ़ाते हैं

विश्व के सामने नया संकट

ईरान के खिलाफ इजरायल-अमेरिका की संयुक्त सैन्य कार्रवाई फिलहाल किसी नतीजे पर पहुंचती नहीं दिख रही है। न तो इजरायल-अमेरिका के हमले थम रहे हैं और न ही ईरान की जवाबी कार्रवाई। भले ही ट्रंप यह कह रहे हों कि ईरान वार्ता के लिए राजी हो गया है, पर ईरानी नेता इससे साफ इन्कार कर रहे हैं। कहना कठिन है कि यह सैन्य टकराव कब और कैसे खत्म होगा, क्योंकि इसके आसार नहीं कि ईरान के सर्वोच्च नेता खामेनेई की मौत से वहां सत्ता परिवर्तन सुनिश्चित हो गया है। ईरान फिलहाल भले ही नेतृत्व विहीन सा दिख रहा हो, लेकिन उसकी सेना और विशेष रूप से इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड्स कोर अपने कदम पीछे खींचने के लिए तैयार नहीं। वह इजरायल और अमेरिका के ठिकानों को निशाना बनाने के साथ खाड़ी के देशों के नागरिक क्षेत्रों में भी ड्रोन और मिसाइलें दाग रही है। इससे इन देशों में अफरा-तफरी का माहौल है। पता नहीं ईरान पड़ोसी देशों के नागरिक ठिकानों को किस मकसद से निशाना बना रहा है, क्योंकि इससे वह अपने विरोधी तो बढ़ा ही रहा है, पहले से अधिक अलग-थलग भी पड़ता जा रहा है।

ईरान जिस तरह ऊर्जा आपूर्ति के मार्गों और विशेष रूप से होर्मुज जल मार्ग के लिए खतरे पैदा कर रहा है, उससे तेल और गैस की आपूर्ति पर असर पड़ना शुरू हो गया है। यह समुद्री जल मार्ग लगभग 25 प्रतिशत तेल और 30 प्रतिशत एलएनजी आपूर्ति का रास्ता है, जो इसे वैश्विक ऊर्जा सुरक्षा के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण बनाता है। इस जल मार्ग के बाधित होने का मतलब है तेल और गैस के दाम बढ़ना और एशिया, यूरोप समेत दुनिया के अन्य हिस्सों की अर्थव्यवस्था प्रभावित होना। यह ध्यान रहे कि तेल के दाम बढ़ने शुरू हो गए हैं। यदि वे इसी तरह बढ़ते रहे तो पहले से ही अनिश्चितता से गुजर रही विश्व अर्थव्यवस्था का संकट और बढ़ जाएगा। इसके लिए अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप ही जिम्मेदार होंगे, क्योंकि यह एक तथ्य है कि इजरायल अमेरिका की सहमति और सहायता के बिना ईरान पर हमला बोलने की स्थिति में नहीं था। इस विनाशकारी सैन्य टकराव का केंद्र बिंदु भले ही पश्चिम एशिया हो, लेकिन उससे पूरा विश्व प्रभावित हो रहा है। कठिनाई यह है कि कोई भी बीच-बचाव करने की स्थिति में नहीं। यह सैन्य संघर्ष जितनी जल्दी थमे, उतना ही पश्चिम एशिया समेत विश्व के लिए अच्छा, लेकिन इसकी सूरत तब बनेगी, जब दोनों पक्ष यह समझेंगे कि वे अपनी ही नहीं चला सकते। ईरान भले ही इजरायल-अमेरिका को सबक सिखाने का दम भर रहा हो, लेकिन वह इन दोनों देशों की सैन्य शक्ति का लंबे समय तक सामना करने की स्थिति में नहीं। इसी तरह अमेरिका और इजरायल के लिए यह आसान नहीं कि वे ईरान में आनन-फानन सत्ता परिवर्तन कर सकें।

स्वागतयोग्य कदम

राजधानी में महिलाओं से जुड़ी दिल्ली सरकार की चार योजनाओं की शुरुआत होना स्वागतयोग्य है। राष्ट्रपति ने सोमवार को महिला कल्याण से जुड़ी दिल्ली लखपति बिटिया योजना, सहेली पिंक स्मार्ट कार्ड योजना व होली-दीवाली पर निश्शुल्क गैस सिलेंडर योजना की शुरुआत की। इसके साथ ही लाडली योजना के तहत बालिका लाभार्थियों के खाते में राशि ट्रांसफर करने का कार्य भी शुरू हो गया। दिल्ली की महिला सीएम से यहां की महिलाओं को बड़ी अपेक्षाएं थीं। चुनाव प्रचार के दौरान भाजपा ने महिलाओं के कल्याण के लिए कई योजनाएं शुरू करने के वादे किए थे। ऐसे में सरकार के एक साल पूरे होने के फौरन बाद ही इन योजनाओं का शुरू होना महिलाओं को समृद्ध बनाने की दिशा में बड़े कदम के रूप में देखा जा सकता है।

> राजधानी में महिलाओं को ऐसा वातावरण उपलब्ध कराया जाए, जहां वे बिना किसी दबाव या भय के स्वयं से जुड़े निर्णय स्वतंत्र रूप से ले सकें

राष्ट्रीय राजधानी की महिला समृद्ध और सशक्त होनी ही चाहिए। राष्ट्रपति ने भी मुख्यमंत्री से अपेक्षा जताई है कि दिल्ली में महिलाओं को ऐसा वातावरण उपलब्ध कराया जाए, जहां वे किसी दबाव या भय के स्वयं से जुड़े निर्णय स्वतंत्र रूप से ले सकें। साथ ही उनका यह कहना भी सर्वथा उचित है कि समृद्ध दिल्ली और विकसित भारत की परिकल्पना को साकार करने में महिलाएं अहम भूमिका निभाएं और इसके लिए सरकार और समाज को उन्हें फलने-फूलने के लिए बेहतर वातावरण उपलब्ध कराना होगा।

कह के रहेंगे

माधव जोशी

जागरण जनमत

कल का परिणाम

क्या खामेनेई की मौत के बाद ईरान में सत्ता परिवर्तन आसान होगा?

आज का सवाल

क्या इजरायल-अमेरिका और ईरान युद्ध में कुछ और देशों के दखल की आशंका है?

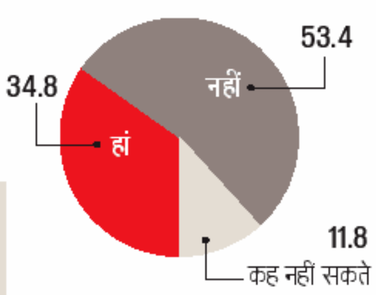

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है। सभी आंकड़े प्रतिशत में।

ईरान का त्रासदी भरा सफर

अर्शिया मलिक

खुमैनी से खामेनेई तक की यात्रा पर दृष्टि डालें तो ईरानी समाज क्रांति के उत्साह को पीछे छोड़ते हुए दमन और अलगाव की ओर ही बढ़ा है

वर्ष 1979 में अयातुल्ला रुहेल्ला खुमैनी के नेतृत्व में ईरान एक राजशाही से मजहबी गणराज्य में परिवर्तित हुआ, लेकिन उनके उत्तराधिकारी अयातुल्ला अली खामेनेई के शासनकाल में स्थिति और बिगड़ गई। इन 46 वर्षों में ईरानी समाज का सफर कट्टरपंथी इस्लामवाद, परोक्ष युद्ध, जनता की कीमत पर अत्यधिक सैन्य खर्च, पश्चिम एवं यहूदी विरोधी विचारधाराओं और गहरी जड़ें जमा चुकी स्त्री-द्वेषी संस्कृति से भरा रहा। इसने आधी आबादी का दम घोंटा और ईरान को वैश्विक स्तर पर अलग-थलग किया। उसके सामाजिक ताने-बाने को भी खोखला किया। इस पतन की नींव 1979 की ईरानी क्रांति में पड़ी, जिसने शाह मोहम्मद रजा पहलवी को सत्ता से हटाकर खुमैनी को सर्वोच्च नेता बनाया।

खुमैनी ने एक ऐसी व्यवस्था स्थापित की, जहां मजहबी सत्ता ने लोकतांत्रिक इच्छा को पीछे छोड़ दिया और मजहबी तंत्र को लोकलुभावन बयानबाजी के साथ मिला दिया। यह महज राजनीतिक बदलाव नहीं, एक सामाजिक उथल-पुथल थी, जिसने ईरानी जीवन के हर पहलू में कट्टरता का संचार कर दिया। 1989 में सलमान रुश्दी के खिलाफ खुमैनी का फतवा इसी कट्टरता का उदाहरण था, जिसने साहित्यिक आलोचना को हत्या के वैश्विक आह्वान में बदल दिया और ईरान को वैचारिक आतंक के निर्यातक के रूप में स्थापित कर दिया। ईरान ने परोक्ष आतंकवाद को विदेश नीति के एक अंग के रूप में अपनाया। 1980 के दशक में ईरान ने इजरायली और पश्चिम का मुकाबला करने के लिए लेबनान में हिजबुल्ला की स्थापना कर उसे पैसा, हथियार और प्रशिक्षण दिया। यह कथित क्रांति के निर्यात की एक सोची-समझी रणनीति थी। खुमैनी ने कहा था कि इस्लाम का प्रसार तब तक आवश्यक है, जब तक कि 'अल्लाह के सिवा कोई ईश्वर नहीं है' का नारा विश्व भर में गूंज न उठे।

1989 में जब खामेनेई ने सत्ता संभाली तो उग्रवाद और तीव्र हो गया। उनके शासनकाल में इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड कोर (आइआरजीसी) ने कुद्स फोर्स का विस्तार किया। एक समय ईरान इराक में शिया मिलीशिया, गाजा में हमास और सीरिया में असद शासन का समर्थन करने के साथ ही भारी खर्च कर रहा था। अक्टूबर 2024 में ईरान द्वारा इजरायल पर किए गए मिसाइल हमले तेहरान में हमास नेता इस्माइल हानिये की हत्या के प्रतिशोध में किए गए। इससे परोक्ष आतंकवाद प्रत्यक्ष टकराव में बदल गया। दिसंबर 2024 में असद के पतन से ईरान को झटका लगा, फिर भी खामेनेई शासन ने अपना रुख नहीं बदला। उनकी रणनीति ने युद्धों को लंबा खींचा, लाखों को विस्थापित किया और ईरान को अछूत देश बना दिया।

अवधेश राजपूत

हथियारों पर केंद्रित रहना ईरान के लिए विनाशकारी साबित हुआ। क्रांति के बाद ईरान की तेल पर निर्भर अर्थव्यवस्था को सैन्य शक्ति की ओर मोड़ दिया गया। खामेनेई के शासनकाल में सैन्य खर्च में भारी वृद्धि हुई। 2005 में अंतरराष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी के प्रस्तावों का उल्लंघन करते हुए यूरेनियम संवर्धन शुरू किया गया। इस कारण अमेरिका के साथ वार्ता रुक गई। कड़े आर्थिक प्रतिबंधों ने ईरान की अर्थव्यवस्था को पंगु बना दिया। मुद्रास्फीति, बेरोजगारी और भ्रष्टाचार के कारण हालात खराब हुए। इससे गरीबी बढ़ी और लाखों कुशल कामगारों का बड़े पैमाने पर पलायन हुआ। पश्चिम और यहूदी विरोध ही ईरानी की मजहबी सत्ता को टिकाए रखने वाली वैचारिक धुरी बनी रही। खुमैनी ने अमेरिका को 'बड़ा शैतान' करार देते हुए 1979-1981 के बंधक संकट के बाद उससे संबंध ही तोड़ लिए। खामेनेई ने खुमैनी के उन्मादी रवैये को और आगे बढ़ाया। ईरान इजरायल का नाम लेने के बजाय उसे 'जायोनी सत्ता' बताता है। वह फलस्तीन के लिए लड़ रहे हमास जैसे समूहों को समर्थन देते हुए गाजा के 90 प्रतिशत बजट का प्रबंध भी करता है। ईरान में ठीक-ठाक संख्या वाले यहूदियों की आबादी लगातार सिमट रही है। जो बचे हैं, वे भी प्रतिबंधों के शिकार हैं।

कहने को तो इस्लामी मानकों के अनुरूप बना संविधान महिलाओं को बराबरी के दर्जे की बात करता है, लेकिन वास्तविकता इसके उलट है। आधी आबादी का संस्थागत दमन होता है। महिलाओं की गवाही का प्रभाव पुरुषों की तुलना में आधा माना जाता है। महिलाओं के जीवन का मोल भी आधा है। हिजाब के लिए कड़ी बंदिशें हैं। खुमैनी ने फतवा जारी करके लड़कियों के लिए विवाह की न्यूनतम आयु को घटाकर नौ वर्ष कर दिया था। खामेनेई के दौर में हिजाब की अनिवार्यता को लेकर बड़ी सख्ती कई गई। इसके अनुपालन के लिए तेहरान में 70,000 पुलिसकर्मियों की तैनाती हुई। इसका नतीजा तमाम गिरफ्तारियों के रूप में सामने आया। महिलाओं के स्टेडियम में प्रवेश से लेकर ग्लैमरस हेयरस्टाल और कुत्ते पालने तक पर प्रतिबंध है। 2022 में कथित अनुचित हिजाब के आरोप में हिरासत के दौरान महसा अमीनी की मौत के बाद देशव्यापी विरोध-प्रदर्शन हुए। उनमें 500 से अधिक लोग मारे गए और हजारों गिरफ्तार हुए। पक्षपाती कानूनों की वजह से दुष्कर्मों के मामले में दोष सिद्धि असंभव सी है। यह सही है कि महिला साक्षरता बढ़कर 80 प्रतिशत तक हो गई और उनका संसद में प्रतिनिधित्व बढ़ा है, पर ये उपलब्धियां उस असमानता की खाई को नहीं ढक सकतीं, जिनसे महिलाओं को जूझना पड़ रहा है।

ईरान की 1979 से अब तक की यात्रा पर दृष्टि डालें तो ईरानी समाज क्रांति के उत्साह को पीछे छोड़ते हुए दमन और अलगाव की ओर ही बढ़ा है। पश्चिम-विरोधी और यहूदी-विरोधी नीतियों से जहां सहयोगी छिटकते गए, वहीं स्त्री-विरोध ने महिलाओं की आवाज को दबाकर समाज की मूल संरचना को ही आहत किया। ईरान आज जिस स्थिति में है, उससे कहीं बेहतर का हकदार है। एक ऐसी स्थिति का, जहां समाज मजहबी जकड़नों से मुक्त हो, उग्रता की जगह समानुभूति का भाव हो और महिलाओं, अल्पसंख्यकों और असहमति रखने वाले लोगों को भी फलने-फूलने का अवसर मिले। सच्ची क्रांति के भाव भीतर से ही उपजेंगे और वही भाव उन मानवीय मूल्यों की भरपाई करेंगे, जो बीते दशकों में तिरोहित होते गए।

(लेखिका शिक्षाविद् एवं इस्लामी सामाजिक-राजनीतिक मामलों की विश्लेषक हैं)
response@jagran.com

भीतर की चेतना रंगते हैं बाहरी रंग

डा. शिवनी कटारा

जैसे अनेक रंग इंद्रधनुष को रचते हैं, वैसे ही विभिन्न समुदाय मिलकर राष्ट्र के आत्मा को पूर्ण बनाते हैं

'मैं' से 'हम' की ओर ले जाती है होली की उमंग ● पेट्र

भारत उत्सवों की भूमि है, तीज-त्योहारों की पावन धरा है। किसी समाज में पर्वों की निरंतरता उसकी सांस्कृतिक समृद्धि और सामूहिक उल्लास का संकेत मानी जाती है। होली केवल एक पर्व नहीं, बल्कि भारत की धड़कनों में गूंजता समरसता का संगीत है। फाल्गुन पूर्णिमा को होलिका दहन और फिर धुलेंडी पर रंगोत्सव रंगों का एक ऐसा संवाद है, जिसमें अतीत की राख से भविष्य के रंग जन्म लेते हैं। होली का दार्शनिक आधार भारतीय चेतना की गहराइयों में निहित है। प्रह्लाद की अटूट श्रद्धा और होलिका के दहन की कथा केवल पौराणिक आख्यान नहीं, बल्कि मनुष्य के भीतर चलने वाले सत्य और असत्य के संघर्ष का रूपक है। जब हिरण्यकशिपु का अहंकार अग्नि में भस्म होता है, तब यह केवल एक पात्र का अंत नहीं, बल्कि अन्याय, दंभ और विभाजनकारी मानसिकता का अंत है। जब तक हमारे भीतर की असमानता नहीं जलेगी, तब तक बाहर की समरसता अधूरी रहेगी और फिर रंगोत्सव के दिन जब रंग चेहरे पर लगते हैं, तब असर मन पर होता है। उस क्षण न कोई ऊंच-नीच का प्रश्न रह जाता है, न अमीर-गरीब का अंतर। रंग सबको एक-सा बना देते हैं-एक ही हंसी, एक ही उमंग, एक ही स्पर्श। यह बताता है कि विविधता विरोध नहीं, सौंदर्य है। जैसे अनेक रंग मिलकर इंद्रधनुष रचते हैं, वैसे ही विभिन्न समुदाय मिलकर राष्ट्र के आत्मा को पूर्ण बनाते हैं।

भारत के कोने-कोने में होली के रूप भिन्न हैं, पर भाव एक है। ब्रज मंडल में होली वसंत पंचमी से शुरू होकर रंगभरनी एकादशी के बाद चरम पर पहुंचती है। लड्डूमार से लट्ठमार तक अनोखे उत्सव मनते हैं और देश-विदेश से लोग ब्रज पहुंचते हैं। बरसाने की लट्ठमार होली में हंसी सचमुच हवा में घुली रहती है। गलियों में उड़ता गुलाल, छतों पर खिलखिलाहट और चौक की ठिठोली से पूरा ब्रज मुस्कुराता दिखता है। सजी महिलाएं लाठियां थामे बढ़ती हैं, पुरुष ढाल संभाले शरारती अंदाज में बचते हैं। यह सब प्रेम की मीठी नोक-झोंक का उत्सव है। इस हंसी-ठिठोली के बीच परंपरा केवल निभाई नहीं जाती, बल्कि उल्लास के साथ जी जाती है। ऊपर से दृश्य चंचल दिखता है, पर भीतर गहरी सांस्कृतिक स्मृति धड़कती है। यह राधा-कृष्ण की आनंदमयी लीलाओं का स्मरण कराती है, जहां रूठना-मनाना भी प्रेम का ही एक रंग है। यहां स्त्री उत्सव की केंद्र-बिंदु बनकर उभरती है, उसकी सक्रियता शक्ति और स्नेह के सुंदर संतुलन का प्रतीक बनती है। एक ऐसा संतुलन, जिसमें हास्य भी है, सम्मान भी और अपनापन भी। वहीं वृंदावन की फूलों की होली में जब रंगों के स्थान पर पुष्प बरसते हैं तो वातावरण मानो सुगंधित भक्ति से भर उठता है। ब्रज की होली वस्तुतः अद्वैत का उत्सव है, जहां बाहरी रंग भीतर की चेतना को रंग देते हैं।

होली के पकवान भी जैसे समरसता का स्वाद हैं। गुजिया की मिठास, दही-बड़े की कोमलता, मालपुए की सुगंध और ठंडाई की शीतलता केवल व्यंजन नहीं, बल्कि साझा संस्कृति की थाली हैं। इस पर्व की सबसे बड़ी शक्ति यही है कि यह सामाजिक दीवारों को नरम कर देता है और हमें याद दिलाता है कि यदि एक दिन के लिए हम भेद भूल सकते हैं तो सदा के लिए क्यों नहीं? रंग केवल बाहरी पदार्थ नहीं, बल्कि भावनाओं के प्रतीक हैं। लाल प्रेम का, पीला आशा का, हरा नवजीवन का, नीला विश्वास का। वे हमें सिखाते हैं कि जीवन श्वेत-श्याम नहीं, उसमें अनेक स्वर और छायाएं हैं। यदि हम केवल अपने ही रंग को सर्वोच्च मानेंगे तो संघर्ष जन्म लेगा, पर यदि हम सब रंगों को स्वीकार करेंगे तो एक अद्भुत चित्र बनेगा-समरसता का चित्र। आज जब समाज भिन्न विचारों और पहचानों से बंटता जा रहा है, तब होली का उत्सव हमें संदेश देता है-मतभेद छोड़ो, मनभेद छोड़ो, क्षमा करो, गले मिलो। यह पुनर्मिलन का संस्कार है।

मनोवैज्ञानिक दृष्टि से होली आज की भागदौड़ और दबाव भरी जीवनशैली में एक सशक्त तनाव-नाशक उत्सव है। रंगों के साथ खुलकर हंसने, नाचने और गले मिलने से तनाव और अकेलेपन की भावना कम होती है। यह पर्व दबे हुए भावों को सहज वातावरण में व्यक्त करने का अवसर देता है। गिले-शिकवे भूलकर मेल-मिलाप करना मानसिक बोझ हल्का करता है और संबंधों में नई ऊष्मा भरता है। सामूहिक उल्लास व्यक्ति को 'मैं' से 'हम' की ओर ले जाता है। डिजिटल युग में, जहां संबंध स्क्रीन की रोशनी में सिमटते जा रहे हैं, होली वास्तविक स्पर्श का महत्व पुनः स्थापित करती है। जेन-जी के लिए यह केवल इंस्टाग्राम की रील या रंगीन सेल्फी का अवसर नहीं, बल्कि वास्तविक संवाद का उत्सव है। यह पीढ़ी विविधता, समावेशिता और समानता की बात करती है। होली उन्हें इन मूल्यों को जीने का अवसर देती है। जब वे पर्यावरण अनुकूल रंग चुनते हैं, सामुदायिक कार्यक्रमों में भाग लेते हैं और विभिन्न पृष्ठभूमि के लोगों के साथ खुलकर मिलते हैं, तब वे समरसता को केवल शब्द नहीं, कर्म बना देते हैं। इस प्रकार होली केवल रंगों का उत्सव नहीं, बल्कि मानसिक ताजगी, भावनात्मक संतुलन और सामाजिक जुड़ाव का प्रभावी माध्यम है। यह मृदुता, सहजता और अपनत्व का वह त्रिवेणी पर्व है, जो मन के मैल को प्रेम की वर्षा में बहा देता है। 'होली है...' कहकर हम विविध रंगों में एक चेतना का उत्सव मनाते हैं और समरसता को जीते हैं।

(लेखिका लोक स्वास्थ्य एवं सामाजिक मामलों की अध्येता हैं)
response@jagran.com

ऊर्जा

स्वार्थ

स्वार्थ की भावना अग्नि के समान है। वह चुपचाप नहीं रहती, तीव्र गति से फैलती है। जब फैलती है तो संबंधों, संस्कारों और समाज की जड़ों को झुलसा देती है। आज यदि राष्ट्र और विश्व की स्थिति पर दृष्टि डालें तो स्पष्ट प्रतीत होता है कि मनुष्य की चेतना 'मैं' तक सिमटती जा रही है, परंतु यह अटल सत्य है कि स्वार्थ पर आधारित समाज कभी सुखी, शांत और आदर्श नहीं बन सकता।

स्वार्थ मन को अशांत और तन को अस्वस्थ करता है, जबकि निःस्वार्थता आत्मा को ऊर्जा से भर देती है। सच्ची मुस्कान और करुणा भाव से शरीर में प्रसन्नता देने वाले हार्मोन स्रवित होते हैं, जो तनाव को कम करते हैं। निःस्वार्थता केवल व्यवहार नहीं, चेतना का रूपांतरण है। जब हम किसी के दुख को कम करते हैं, तब अपने भीतर का अंधकार भी घटने लगता है। निःस्वार्थ प्रेम का कोई एक रूप नहीं। वह स्पर्श में हो सकता है, मुस्कान में या मौन सहअनुभूति में संभव है। स्वयं को पाने का सर्वोत्तम मार्ग है, स्वयं को दूसरों की सेवा में खो देना। सेवा केवल दान नहीं, दृष्टिकोण है-हर प्राणी में आत्मा का सम्मान देखना। जब हम कृतज्ञता से जीते हैं, तब जीवन का प्रत्येक क्षण प्रसाद बन जाता है। गरिमा और आत्मसम्मान निःस्वार्थता की जड़ हैं। आत्मावलोकन ही स्वार्थ की दीवारें गिराता है।

स्वार्थ और संकीर्णता हमारे सुखों की सबसे बड़ी बाधाएं हैं। हमें लगता है कि दूसरों का जीवन अधिक सरल है, पर यह केवल दृष्टि का भ्रम है। सच्ची प्रसन्नता तुलना में नहीं, तृप्ति में है। जब हमारी चेतना 'मैं' से 'हम' की ओर विस्तृत होती है, तभी आध्यात्मिक ऊर्जा का स्रोत फूटता है। आइए, स्वार्थ चेतना को साधकर निःस्वार्थता की ज्योति जलाएं, क्योंकि प्रेम और करुणा सुविधा नहीं, जीवन की अनिवार्य आवश्यकता हैं। यही ऊर्जा व्यक्ति को भी ऊर्ध्वगामी बनाती है और समाज को भी प्रकाशमय।

ललित गर्ग

पाठकनामा

pathaknama@nda.jagran.com

सरकारों की अकर्मण्यता

'मुकदमों का बोझ बढ़ाती सरकार' शीर्षक से प्रकाशित आलेख में लेखक डा. ब्रजेश कुमार तिवारी ने न्यायपालिका और उसके कामकाज को लेकर आम जनता की बहुत सी गलतफहमियां दूर कर दी हैं। वास्तव में कई बार लोकप्रिय बने रहने के लिए और दो पक्षों के बीच बुरा नहीं बनने के लिए सरकारें जानबूझकर विवादों का हल नहीं करतीं और अपनी जिम्मेदारियों का निर्वाह नहीं करतीं और मामला न्यायपालिका के ऊपर छोड़ देती हैं। सरकारों के इस गैर-जिम्मेदाराना रवैये के कारण भी न्यायपालिका पर अनावश्यक मुकदमों का बोझ बढ़ता है। जब सरकारों की अकर्मण्यता के कारण जनता को न्याय दिलाने के लिए न्यायपालिका पहल करती है तो इसे सरकारें 'न्यायपालिका की अति सक्रियता' का आरोप लगाकर उसे बदनाम करती हैं। यह प्रवृत्ति उचित नहीं। सरकारें कामकाज का तरीका सुधारें, जनता के प्रति जिम्मेदार और जवाबदेह बनें, नहीं तो अदालतों पर मुकदमों का बोझ यूं ही बढ़ता रहेगा। यह कभी कम नहीं होगा और आमजन को समय पर न्याय मिलना दूभर बना रहेगा।

ललित दुबे, रतलाम

जंग की चपेट में दुनिया

संपादकीय आलेख 'अनिश्चितता से घिरा ईरान' में उचित विश्लेषण किया गया है कि ईरान और पश्चिमी देशों के बीच बढ़ता तनाव निश्चित रूप से वैश्विक शांति और अर्थव्यवस्था के लिए एक बड़ी चुनौती है। ईरान के सर्वोच्च शासक एवं मजहबी नेता अयातुल्ला अली खामेनेई ने वास्तव में दशकों से ईरान पर शासन किया है। उनके शासनकाल के बारे में दो विपरीत विचार हैं पश्चिमी और विपक्षी दृष्टिकोण। कई अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार संगठन और पश्चिमी देश उनके शासन को 'निरंकुश' मानते हैं, जहां अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और महिलाओं के अधिकारों (जैसे हिजाब विरोधी प्रदर्शन) पर कड़ा नियंत्रण है। जबकि उनके समर्थक उन्हें इस्लामी क्रांति का रक्षक और पश्चिमी साम्राज्यवाद के खिलाफ एक मजबूत दीवार मानते हैं। ईरान ने कबूल कर लिया कि खामेनेई की मौत इजरायल और अमेरिकी हमले में हो गई है। खामेनेई मौत के बाद ईरान ने 40 दिन का राजकीय शोक घोषित किया है। सच क्या है? इसकी जानकारी कुछ ही दिनों में दुनिया को हो जाएगी। लेकिन फिलहाल ईरान -अमेरिका और इजरायल युद्ध की जंग तो लड़ रहे हैं परंतु इसके चपेट में भारत सहित पूरी दुनिया आ गई है। कई देशों पर ऊर्जा का संकट मंडराने लगा है। मध्य पूर्व के कच्चे तेल के बेंचमार्क दुबई का प्रीमियम सोमवार को बढ़कर लगभग 5.90 डालर प्रति बैरल हो गया, जो 2022 के बाद का उच्चतम स्तर है। बेंचमार्क की कीमतों में यह उछाल शनिवार को अमेरिकी-इजरायल हमलों में ईरानी सर्वोच्च नेता अयातुल्ला अली खामेनेई की हत्या के बाद आया, जिसके परिणामस्वरूप खाड़ी शहरों में ईरान के जवाबी हमलों के कारण अराजकता फैल गई और तेल और अन्य उत्पादों से भरे टैंकरों ने होर्मुज जलडमरूमध्य से अपना आवागमन रोक दिया। इस रास्ते के रोकने से कई देशों में उर्जा से संबंधित समस्या का सामना करना पड़ सकता है।

युगल किशोर राही, ग्रेटर नोएडा

मुद्दाविहीन विपक्ष

कांग्रेस सांसद व नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी कहते हैं कि मोदी समझौतावादी है। अमेरिका से ट्रेड डील कर उन्होंने किसानों के डेथ वारंट पर साइन किए हैं। यही नहीं मोदी अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप से डरते हैं निस्संदेह सफेद झूठ और मनगढ़ंत कहानी है। वहीं आम आदमी पार्टी को शराब घोटाले में राऊज एवेन्यू कोर्ट से क्लीन चिट मिलने के बाद मनीष सिसोदिया का अतिउत्साह में ये कहना कि प्रधानमंत्री मोदी को पद से हटाना भी राष्ट्रभक्ति होगा, एक गंभीर तंज, कटाक्ष ही नहीं वर्ना राग-द्वेष व मनभेद की राजनीति को ज्यादा उजागर करता है। प्रधानमंत्री मोदी भारत के प्रधानमंत्री हैं ना कि देश की न्याय व्यवस्था के मुखिया। वहीं आप के राज्यसभा सांसद संजय सिंह कहते हैं कि इजरायली हमले में खामेनेई की मौत का विरोध करना चाहिए। भारत की अपनी स्वतंत्र विदेश नीति है, और प्रथम राष्ट्र व वसुधैव कुटुंबकम् की नीति पर काम करता है। भारत फलस्तीन का भी समर्थन करता है और रूस यूक्रेन युद्ध का भी विरोध करता है। प्रधानमंत्री ने कहा भी है यह वक्त युद्ध का नहीं बुद्ध का है। भारत के नेतृत्व व क्षमताओं से परिपूर्ण कार्यशैली की वजहों से ही वैश्विक स्तर पर भारत का मान-सम्मान और प्रतिष्ठा को पंख लगे हैं। मोदी अंधविरोध की राजनीति की वजह से विपक्षी दलों की बयानबाजी कुंठित नजर आती है। परंपरागत, एक ही विषय को बार-बार दोहराना, मुद्दाविहीन और उबाऊ राजनीति से ज्यादा कुछ नहीं है।

दीपक गौतम, सोनीपत

पोस्ट

अमेरिकी मरीन्स के हाथों मारे गए पाकिस्तानियों की मौत पर पाकिस्तानी मीडिया ने मौन धारण किया हुआ है।

फहीम मरवत@AfghaNarrative

ईरान को भारत का हजारों साल पुराना दोस्त बताने वाले लोग जान लें कि जब नादिरशाह भारत से लूटपाट और बर्बरता करके वापस लौटा तो उसने ईरान में तीन साल के लिए टैक्स माफ कर दिया था।

अभिषेक@AbhishBanerj

अमेरिका ने जो जंग शुरू की है, उम्मीद करते हैं कि उसे खत्म करने का तरीका भी सोचा होगा, क्योंकि बीते तीन दिनों में ईरान पर हमले का हासिल कुछ भी नहीं दिख रहा, सिवाय इसके कि खाड़ी देशों में भी बर्बादी हो रही है।

मीनाक्षी जोशी@IMinakshiJoshi

मासूम लोग मर रहे हैं। शेयर बाजार में लाखों करोड़ रुपये डूब गए। तेल की कीमतें चढ़ने लगी हैं। यही हाल रहा तो महंगाई बढ़ेगी सो अलग और सबका जिम्मेदार कौन... ट्रंप और उनका देश अमेरिका, जिन्हें लगता है कि पूरी दुनिया को उनके हिसाब से ही चलना होगा।

सुशांत सिन्हा@SushantBSinha

जनपथ

अमरीका का राष्ट्रपति करके सबसे युद्ध,
ढोल पीटता शांति का बनकर 'गौतम बुद्ध'।
बनकर 'गौतम बुद्ध' करे नोबेल पर दावा,
फूटेगा अब जल्द विश्व का उस पर लावा।
ट्रंप रहे दौड़ाय अश्व अपनी मर्जी का,
इसका फल इक रोज चखेगा अब अमरीका।

– ओमप्रकाश तिवारी

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त. पूर्व प्रधान संपादक-स्व.नरेन्द्र मोहन. नॉन एग्जीक्यूटिव चेयरमैन-महेन्द्र मोहन गुप्त. प्रधान संपादक-संजय गुप्त, नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा जागरण प्रकाशन लि. के लिए डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा -201309 से मुद्रित एवं 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित
संपादक (दिल्ली एनसीआर)-विष्णु प्रकाश त्रिपाठी दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय : 0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No 50755/90 समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई शुल्क अतिरिक्त। वर्ष 36 अंक 228

कट्टरता के संदेशों से भरा है जीशान का इंस्टाग्राम अकाउंट

सलीम वास्तिक पर हमले के बाद जीशान का हुआ था एनकाउंटर

आशुतोष गुप्ता ● जागरण

साहिबाबाद: मजहबी कट्टरता के खिलाफ आवाज उठाने वाले यूट्यूबर सलीम अहमद उर्फ सलीम वास्तिक पर हुए जानलेवा हमले में पुलिस मुठभेड़ में मारा गया एक लाख रुपये का इनामी जीशान कट्टरपंथी विचारधारा से प्रभावित था। उसके मोबाइल से पुलिस को इंस्टाग्राम पर अकाउंट भी मिला है। उसने इंस्पायर विद जीशान के नाम से अकाउंट बनाया था। उसने खुद को इस्लामिक स्पीकर बताया है। यह अकाउंट कट्टरपंथी संदेशों से भरा है। इस अकाउंट पर उसने दर्जनों वीडियो अपलोड किए हैं, जिसमें अधिकांश धार्मिक व कट्टरपंथी संदेशों से भरे हैं। उसने 26 सितंबर 2025 को अकाउंट बनाया था। अंतिम वीडियो 17 फरवरी को अपलोड किया है।

साबिर रजा अजहरी नाम के शायर से वह खासा प्रभावित था, इनकी सबसे अधिक शायरी उसने अकाउंट पर अपलोड की है। जीशान पिछले करीब दो साल से बड़े भाई गुलफाम के साथ खोड़ा में रह रहा था और वह नोएडा में लकड़ी के इंटीरियर का काम करता था। गुलफाम पर भी पुलिस ने एक लाख रुपये का इनाम घोषित कर दिया है। उसकी तलाश में पुलिस की 10 टीमें लगी हैं। गुलफाम रविवार रात मुठभेड़ के दौरान मौके से फरार हो गया था। पुलिस को अंदेशा है कि वह एनसीआर क्षेत्र में ही कहीं छिपा है। पुलिस की टीमें गाजियाबाद, लोनी, दिल्ली समेत अन्य संभावित स्थानों पर दबिश दे रही हैं।

जीशान ने सर्जिकल ब्लेड व

बाइक चला रहा आरोपित गुलफाम व पीछे बैठा जीशान ● वीडियो ग्रैब

- इंस्टाग्राम पर जीशान ने खुद को बताया इस्लामिक स्पीकर, कट्टरपंथी वीडियो किए प्रसारित
- जीशान के बड़े भाई गुलफाम पर भी पुलिस ने घोषित किया है एक लाख रुपये का इनाम

गुलफाम ने मेज के पाये से किया था हमला : घटनास्थल के पास लगे एक सीसीटीवी फुटेज पुलिस के हाथ लगी है। इसमें जीशान सर्जिकल ब्लेड से सलीम पर ताबड़तोड़ वार करता दिखा रहा है और गुलफाम ने पास रखी एक मेज का पाया तोड़कर उससे हमला किया। शोर मचने पर दोनों बाइक से फरार हो गए। इस दौरान दोनों ने सफेद कुर्ता पयजामा पहना था जो खून से सना था। उनके फरार होते हुए बाइक के पीछे चल रहे एक राहगीर ने वीडियो बनाई। बाइक का नंबर उन्होंने मिटाया था। सोमवार को यह वीडियो इंटरनेट मीडिया पर प्रसारित हुआ है।

जांच में आया है कि हमला कर भाग रहे जीशान और गुलफाम की आसपास के एकत्र लोगों से बहस हो गई थी। लोगों ने हमले का विरोध किया तो दोनों ने उन्हें सलीम को लेकर उल्टा-सीधा कहा। इन्होंने लोगों से कहा कि शर्म आनी चाहिए ये मुस्लिम होकर ऐसी गतिविधियां कर रहा है। हमने इलाज कर दिया। इसके बाद दोनों मौके से भाग निकले। आर्मी मेहदी माडरेटर ग्रुप इराकी शिया मिलिशिया ग्रुप है। इस ग्रुप को 2003 में अमेरिका के खिलाफ बनाया था। इस ग्रुप में मिलिटिंस जुड़े हैं। जीशान और गुलफाम इसी ग्रुप से प्रभावित थे और कट्टरपंथी विचारधारा के बन गए थे। पुलिस को जीशान के मोबाइल से इस ग्रुप के बारे में जानकारी भी मिली है।

बेटे का शव देख रो पड़ा जीशान का पिता

जीशान का पिता बुनियाद अली सोमवार को मोर्चरी पहुंचा और वहां बेटे का शव देखकर रो पड़ा। उसका कहना था अगर उसे बेटे के कृत्यों का पता होता, तो उसे संभालने का प्रयास करता। वारदात के बाद से उसका दूसरा बेटा फरार है। उसका भी कुछ पता नहीं है।

गुलफाम पर भी एक लाख रुपये का इनाम घोषित किया है। तलाश में पुलिस की 10 टीमों को लगाया है। आरोपित को जल्द गिरफ्तार किया जाएगा।
– **सुरेंद्र नाथ तिवारी**, डीसीपी ग्रामीण

गोतस्करों का पीछा कर रहे युवकों की गोली से सड़क किनारे खड़े ट्रक चालक की मौत

जागरण संवाददाता, भिवाड़ी: चौपानकी थाना क्षेत्र के गांव सारेकलां में सोमवार सुबह गोतस्करों का पीछा कर रहे कुछ युवकों के फायरिंग करने से सड़क किनारे खड़े एक ट्रक के चालक की मौत हो गई, जिसकी पहचान पलवल के गांव उटावड़ निवासी आमिर के रूप में हुई है। पुलिस ने 12 युवकों के विरुद्ध हत्या धारा में केस दर्ज किया है।

मृतक आमिर

गांव उटावड़ के रहने वाले याहया ने बताया कि आमिर ट्रक चालक था और किसी काम से सारेकलां गांव आया था। सोमवार अलसुबह तावड़ू के रहने वाले छुट्टन के साथ आमिर सड़क के किनारे खड़ा था। इसी दौरान भिवाड़ी की ओर से गोवंशी से भरी एक पिकअप गाड़ी आई, जिसका पीछा करते हुए भिवाड़ी के रहने वाले सोनू व देवेंद्र, रेवाड़ी के रहने वाले रोहित व फिदुड़ी सरपंच सहित करीब 10 से 12 युवक तीन गाड़ियों में सवार होकर वहां पहुंचे। गाड़ियों से आमिर को टक्कर मारते हुए फायरिंग शुरू कर दी। फायरिंग के दौरान एक गोली आमिर की आंख के पास लगी, जिससे वह मौके पर ही गिर पड़ा। उसके साथ खड़ा छुट्टन डर के कारण जान बचाकर वहां से भाग गया।

- पलवल जिले के गांव सारेकलां का रहने वाला था मृतक आमिर
- पुलिस ने हत्या सहित विभिन्न धाराओं में दर्ज किया मुकदमा

घटना की सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और घायल आमिर को भिवाड़ी जिला अस्पताल पहुंचाया, जहां चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। स्वजन ने भिवाड़ी का रहने वाला सोनू और देवेंद्र, रेवाड़ी का रहने वाला फिदुड़ी सरपंच व रोहित सहित 10-12 अन्य युवकों के विरुद्ध हत्या का मामला दर्ज कराया है। आरोपितों में तीन युवक झज्जर जिले के रहने वाले बताए जा रहे हैं। पुलिस ने अज्ञात युवकों के विरुद्ध गोतस्करी का मुकदमा दर्ज किया है। पुलिस मामले में जांच कर रही है।

गाजियाबाद में दिल्ली पुलिस के दारोगा पर हमला, अस्पताल में भर्ती

जासं, गाजियाबाद: दिल्ली पुलिस में तैनात दारोगा प्रेमपाल पर राहुल विहार में कुछ लोगों ने जानलेवा हमला कर दिया। यह घटना एक लड़की को लेकर हुए विवाद के दौरान हुई, जिसमें पत्थरबाजी और फायरिंग भी की गई। इस हमले में दारोगा के माथे पर चोट आई है, जिसके बाद उन्हें नोएडा के फोर्टिस अस्पताल ले जाया गया, जहां से उन्हें यशोदा अस्पताल भेज दिया गया है। दारोगा की पत्नी अनीता देवी की शिकायत पर तीन नामजद आरोपितों, जिनमें अखिलेश, कालू और अखिलेश के चाचा शामिल हैं, के खिलाफ क्रासिंग रिपब्लिक थाने में केस दर्ज किया गया है।

पुलिस के मुताबिक, राहुल विहार निवासी प्रेमपाल दिल्ली पुलिस में दारोगा हैं। शनिवार की देर रात उनके बेटे का बहरामपुर में किसी युवती से विवाद हो गया था। विवाद होने के बाद युवती ने स्वजन को पूरी बात बताई। आरोप है कि युवती पक्ष के लोगों ने दारोगा के घर के बाहर हमला कर दिया। पीड़ित पक्ष का कहना है कि पत्थरबाजी और फायरिंग भी हुई है। हमले में घायल दारोगा प्रेमपाल का यशोदा अस्पताल में उपचार चल रहा है।

दिल्ली की महिला की हत्या कर नोएडा में फेंका शव

जागरण संवाददाता, नोएडा : एक्सप्रेसवे थाना क्षेत्र स्थित गुलशन माल के सामने सर्विस रोड पर सोमवार सुबह एक महिला का शव पड़ा मिला। सूचना पर पहुंची पुलिस ने फोरेंसिक टीम बुलाकर साक्ष्य जुटाए। घटनास्थल से मिले पैन कार्ड के आधार पर शव दिल्ली की एक विवाहित महिला का निकला। पते पर महिला के पति के नहीं मिलने से उस पर हत्या करने का शक जताया जा रहा है। पुलिस की तीन टीम महिला के पति की तलाश में जुटी हैं। करीब एक दिन पुराना शव होने के चलते दूसरी जगह हत्या कर नोएडा में ठिकाने लगाना सामने आया है।

एक राहगीर ने डायल 112 पुलिस को सूचना दी कि गुलशन माल के सामने सर्विस रोड पर किसी महिला का शव पड़ा है। एक्सप्रेसवे थाना पुलिस मौके पर पहुंची। महिला ने नाइट शूट पहना हुए था। गले समेत शरीर पर चोट आदि के निशान नहीं मिलने से मौत का स्पष्ट कारण पता नहीं चल सका।

पुलिस ने शव पोस्टमार्टम को भिजवा दिया। महिला के पास से एक पैन कार्ड मिला। इससे महिला की पहचान दिल्ली कनाट प्लेस स्थित काली मंदिर के पास रहने वाली कंचन पुत्री जय सिंह के रूप में हुई। स्थानीय लोगों ने पति-पत्नी में विवाद होने की जानकारी दी। इससे पुलिस प्रेम प्रसंग या व्यक्तिगत विवाद को हत्या का मुख्य कारण मानकर चल रही है।

- गुलशन माल के सामने सर्विस रोड पर पड़ा मिला शव
- पुलिस महिला के स्वजन और हत्यारोपित का पता करने में लगी

रेल पहिया कारखाना

यलहंका, बेंगलुरु -560 064
वेब साइट: www.rwf.indianrailways.gov.in

अधिसूचना

1. रेल पहिया कारखाना, येलाहांका, बेंगलुरु - **560064**, अप्रेंटिस अधिनियम, **1961** के अधीन वर्ष **2025-26** के लिए विभिन्न निर्धारित ट्रेडों, जैसे फिटर, मशीनिस्ट, मैकेनिक (मोटर व्हीकल), टर्नर, सीएनसी प्रोग्रामिंग-कम-ऑपरेटर, इलेक्ट्रीशियन और इलेक्ट्रॉनिक मैकेनिक आदि, में **192** अभ्यर्थियों को प्रशिक्षण देने का प्रस्ताव कर रहा है।
2. अभ्यर्थीगण इसके विवरण रेल पहिया कारखाना की वेबसाइट www.rwf.indianrailways.gov.in पर उपलब्ध अधिसूचना में देख सकते हैं और तदनुसार आवेदन कर सकते हैं।

आवेदन जमा करने की अंतिम तिथि **01/04/2026** है।

प्रधान मुख्य कार्मिक अधिकारी

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार

दिल्ली अधीनस्थ सेवा चयन बोर्ड

डी.एस.एस.एस.बी.
एफ सी–18, इंस्टिट्यूशनल एरिया, कड़कड़डूमा दिल्ली–110092
Website : https://dsssb.delhi.gov.in

पत्रांक: एफ.1(443)/पी&पी/दि.अ.से.च.बोर्ड/2025/विज्ञापन/4620 दिनांक:– 25.02.2026

रिक्ति सूचना

विज्ञापन संख्या 02/2026

दिल्ली सरकार के अंतर्गत विभिन्न विभागों/स्थानीय/स्वायत्त निकायों के अंतर्गत विभिन्न पदों के लिए पात्र उम्मीदवारों से ऑनलाइन आवेदन आमंत्रित किए जाते हैं, जिनका विवरण नीचे दिया गया है :–

कुल पोस्ट कोड्स/रिक्तियों की संख्या	20 पोस्ट कोड्स/216 रिक्तियां
ऑनलाइन आवेदन शुरू होने की तिथि	27th फ़रवरी, 2026
ऑनलाइन आवेदन जमा करने की अंतिम तिथि	28th मार्च, 2026

योग्य उम्मीदवारों को सलाह दी जाती है कि वे विस्तृत विज्ञापन देखने और मांग विभाग के भर्ती नियमों के आधार पर उपरोक्त रिक्तियों के लिए अपनी पात्रता की पुष्टि करने के लिए DSSSB की वेबसाइट **https://dsssb.delhi.gov.in/dsssb-vacancies** पर जाएँ। उम्मीदवारों को वेबसाइट **https://dsssbonline.nic.in/** के माध्यम से ऑनलाइन आवेदन करना होगा। ऑनलाइन आवेदन जमा करने की अंतिम तिथि 28/03/2026 (रात 11:59 बजे तक) है, जिसके बाद लिंक निष्क्रिय हो जाएगा।

विज्ञापन डाउनलोड करने के लिए, स्कैन करें ->

–हस्ताक्षरित–
उप सचिव (नीति व प्रकाशन शाखा)
दि.अ.से.च.बोर्ड

DIP/SHABDARTH/CLASSIFIED/0456/25-26

दैनिक जागरण

क्लासीफाइड

कम दाम, ज्यादा काम

बुकिंग के लिए संपर्क करें टोल फ्री नम्बर 1800 203 8030

- दिल्ली: 9717992054/64
- गाजियाबाद: 7836083223
- ग्रेटर नोएडा: 9711833750
- गुरुग्राम: 9015633399
- नोएडा: 9911962566
- फरीदाबाद: 9650325028

आवश्यकता

आवश्यकता है लग्जरी गाडियो हेतु कार रेंटल कंपनी को कमर्शियल लाइसेन्सधारी ड्राईवरों की, मासिक वेतन रू 24,000 संपर्क करें Ten Travels महिपालपुर नई दिल्ली, 8800029310, 9953595950, 9999666615

रेडियंस मैनपावर ग्रुप को तत्काल आवश्यकता है अनुभवी मार्केटिंग मैनेजर / फील्ड ऑफिसर की स्थान:– गुरुग्राम, दिल्ली, नोएडा और ग्रेटर नोएडा संपर्क करें: 7055220326 / 7055220582

सूचना

My client Smt. Nitu Sinha, R/o F–338, Galaxy North Avenue–2, Gaur City–2, Greater Noida (West), Sector–16C, Chipyana Khurd (Tigri), Gautam Buddha Nagar, Uttar Pradesh 201009, hereby declares that she has debarred/disowned her son Rahul Prakash, from all her movable & immovable properties, assets, rights, titles and interests whatsoever. Due to his misconduct and misbehavior, she has severed all relations with him. Henceforth, he shall have no claim, right, title or interest of any nature in any of her properties or assets. Any person dealing with him in respect of her properties or on her behalf shall do so at his/her own risk and responsibility. She shall not be liable for any act, deed, transaction, liability or obligation incurred by him. Prashant Kumar (Advocate)

मेरे मुवक्किल शांति प्रकाश पुत्र जयन्ती प्रकाश निवासी– 36/28–29, त्रिलोकपुरी दिल्ली–110091, ने अपनी पुत्री नीलम को उसके दुर्व्यवहार के कारण अपनी चल–अचल संपत्ति से बेदखल कर सम्बन्ध विच्छेद कर लिए है। भविष्य में उसके किसी कार्य के लिए मेरे मुवक्किल जिम्मेदार नहीं होंगे। (एडवोकेट) दीपक बंसल

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि मेरे मुवक्किल श्रीमती प्रेम वती पत्नी स्व. श्री महेन्द्र सिंह, निवासी मकान नं.– B–10–A, खसरा नं.–2145/3246, अमर कॉलोनी, नांगलोई, पश्चिम दिल्ली, दिल्ली–110041, ने अपने पुत्र प्रवीन कुमार और पुत्रवधू जानवी का मेरे मुवक्किल के प्रति अभद्र व्यवहार तथा कन्ट्रोल से बाहर होने के कारण, उनसे अपने सभी संबंध समाप्त कर लिए हैं तथा अपनी सभी चल व अचल सम्पत्ति से बेदखल कर दिया है। भविष्य में उनके किए गए किसी भी कार्य या लेन देन के प्रति मेरे मुवक्किल जिम्मेदार नहीं हैं। एस के श्रीवास्तव एडवोकेट

मेरे मुवक्किल राधेश्याम पुत्र मुन्नीलाल, निवासी– C 1/454, नन्द नगरी, उत्तर पूर्वी दिल्ली, दिल्ली–110093 ने अपने पुत्र गगन कुमार को उसके गलत आचरण व दुर्व्यवहार के कारण अपनी समस्त चल-अचल सम्पत्ति से बेदखल कर सम्बन्ध विच्छेद कर लिये है। भविष्य में उनके किसी भी कृत्य/लेन–देन के लिए मेरे मुवक्किल जिम्मेदार नहीं होंगे। रवि शंकर, अधिवक्ता

मैं दिनेश कुमार व मेरी पत्नी स्वीटी, नि. पॉकिट ई–18, सेक्टर–3, रोहिणी, दिल्ली, घोषणा करते है कि मेरी पत्नी स्वीटी की माताजी नीलम खरबंदा, स्वीटी के भाई सौरव खरबंदा और उनकी पत्नी बुलबुल खरबंदा सभी निवासी सेक्टर–2, रोहिणी, दिल्ली, से उनके हमारे साथ आये दिन लड़ाई झगड़ें के कारण हम अपने सभी सम्बन्ध विच्छेद करते हैं। भविष्य में उक्त तीनो अपने द्वारा किए गए समस्त कृत्यों एवं लेन–देन के लिए स्वयं जिम्मेदार होंगे, हमारी किसी भी प्रकार की कोई भी जिम्मेदारी नहीं होगी।

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि, मेरी मुवक्किल श्रीमती राज कुमारी पत्नी स्व0 कुन्दन सिंह, निवासी–म0 नं0–511, ब्लॉक 3, सैक्टर 5, दक्षिणपुरी, अम्बेडकर नगर, नई दिल्ली–110062, ने अपने पुत्र विक्रम सिंह और मोहन सिंह को सपरिवार, उनके हिंसक, क्रूर स्वच्छंद, अभद्र व्यवहार, बुरे आचरण तथा विगत 20 वर्षो से अपने नियंत्रण से बाहर होने के साथ देखभाल न करने के कारण उनसे अपने सारे संबंध विच्छेद कर लिये हैं साथ ही इनको अपनी चल और अचल संपत्ति से भी बेदखल कर दिया है। भविष्य में इनके द्वारा किये गये किसी भी कार्य, लेनदेन और कानूनी कार्यवाही के लिये मेरी मुवक्किल किसी भी प्रकार से जिम्मेदार नहीं होगीं तथा इनका कभी भी मेरी मुवक्किल की चल और अचल संपत्ति पर कोई अधिकार नहीं होगा। अनिल देवलाल अधिवक्ता।

मेरे मुवक्किल रामतीरथ पुत्र श्री रामनाथ, निवासी : संगम विहार, लोनी, गाजियाबाद, U.P–201102, ने अपने पुत्र सत्यम एवं पुत्र–बधु प्रिया तिवारी को उनके गलत आचरण एवं दुर्व्यवहार करने के कारण, अपनी समस्त चल-अचल संपत्ति से बेदखल कर सम्बन्ध-बिच्छेद कर लिए है भविष्य में उनके किसी कार्य /लेनदेन हेतु मेरा मुबक्किल जिम्मेदार नही होगा। शशिकांत (अधिवक्ता)

मेरी मुवक्किल श्रीमति प्रेम लता पत्नी स्व. श्री दीपक अग्रवाल, निवासी बी–226/5, गली नं 7, अशोक नगर, ईस्ट दिल्ली–110032 ने अपने पुत्र मयंक अग्रवाल व उसकी पत्नी मेघना जैन को उनके दुर्व्यवहार व गलत–आचरण के कारण अपनी सभी चल–अचल सम्पत्ति से बेदखलकर संबंध–विच्छेद कर लिया है। उनके किसी कृत्य हेतु मेरी मुवक्किल जिम्मेदार नहीं होंगी। Sumit Advocate

My Client Mr. Khalil Ahamad S/o Shri Late Abdul Hamid R/o B–179, Dakshinpuri, Deoli, South Delhi, New Delhi–62, hereby disown his son Mr. Tofik Ahamed, his wife Mrs. Nusrat Bano and their children due to their misconduct. Henceforth, they shall have no right, title, interest or claim in any of my client's movable or immovable properties, present or future. My client shall not be responsible for any of their acts or liabilities. Anand Prakash (Advocate)

मेरे मुवक्किल अमर कांत कुमार और उनकी पत्नी संगीता, निवासी– A–96 राजा विहार समयपुर जिला– उत्तरी दिल्ली–42, ने अपने बेटे कल्याण तथा उसकी पत्नी सोनी झा को उनके दुर्व्यवहार व नियंत्रण में न रहने के कारण अपनी समस्त चल अचल संपत्ति से बेदखल कर अपने सभी सम्बन्ध विच्छेद कर लिए है भविष्य में इनके द्वारा किए गए कृत्यों के लिए वह स्वयं जिम्मेदार होंगे। काजल कौर (अधिवक्ता)

नाम परिवर्तन

I, Anisha D/o : Kameshwar Prasad Singh & W/o : Amit Kumar Singh R/o : K2–172, IBCP, Sec–103, Gurgaon have changed my name from Anisha to Anisha Singh. Henceforth, I shall be known as Anisha Singh for all future purposes.

I, AFROJA KHATUN, W/o Mansur Alam, R/o H. No. 101, Sector A–9, Pocket–4, Narela, Delhi–110040, hereby declare that the name of my father and mother have been wrongly printed in my passport as BDUL JALIL and SUKIJAN NESSA. The correct name of my father is ABDUL JALIL and mother is NASERA KHATUN. I request the concerned authorities to treat the correct names for all official purposes.

I, Lonkeswar Mistri legally is Father of Kartik Mistri residing at Village Ramnagar, PO Kishorepur, Dist. Nadia, State West Bengal, Pin 741165 declare that my name and DOB is wrongly mentioned as Lonkeswar Mistri and 01 July 1956 in my son's service documents. My correct Name & DOB is Lankeshwar Mistri and 04 May 1950

I Love Reddy S/o, Vinod Reddy R/o S–105/221 Arjun Camp Mahipalpur South West Delhi –110037 have changed my name to Pedini Luv Reddy for all purposes.

शेयर मार्केट में निवेश कर मोटी कमाई का झांसा देकर 56 लाख रुपये ठगे, छह धरे

जागरण संवाददाता, सोनीपत : थाना साइबर पुलिस ने शेयर मार्केट में कमाई का लालच देकर 56 लाख रुपये की ठगी करने वाले गिरोह का भंडाफोड़ किया है। पुलिस ने गुजरात और राजस्थान के रहने वाले छह आरोपितों को गिरफ्तार किया है। आरोपित संजीत अहमदाबाद सिटी, राहुल उर्फ मोंट्र अलवर, ऋषभ, सचिन, तरुण, विशाल जयपुर के रहने वाले हैं। पुलिस ने आरोपितों को अहमदाबाद, अलवर और जयपुर से गिरफ्तार किया हैं। पुलिस ने 4,68,608 रुपये बैंक में फ्रीज करवाए हैं, जबकि दो मोबाइल फोन और 11,620 रुपये बरामद किए हैं। फिलहाल पुलिस ने आरोपितों को न्यायालय में पेश कर न्यायिक हिरासत में भेज दिया हैं।

पुलिस के मुताबिक सेक्टर-8 में रहने वाले गुलशन ने शिकायत दी थी। गुलशन ने बताया था कि 21 जुलाई, 2025 को उनके पास वाट्सएप एक मैसेज आया था, जिसमें आनलाइन ट्रेडिंग के बारे में बताया गया था। इसके बाद उसने वाट्सएप ग्रुप ज्वाइन कर लिया। करीब 10 दिन तक उनकी गतिविधि देखी, जिसमें निवेश के बारे में बताया था। झांसे में आकर उसने भी उनके कहे मुताबिक निवेश करना शुरू कर दिया। शुरुआत में उसे निवेश पर लाभ भी दिया गया। इसके बाद वह उनके बताए गए बैंक खातों में ज्यादा ट्रांजेक्शन करने लगा। उसने 56.18 लाख रुपये निवेश किए। जब वह रुपये निकालने लगे तो ला क्रेडिट का बहाना बनाया गया। उसे कुल राशि का दो प्रतिशत जमा कराने के लिए कहा जाने लगा। वह अपने रुपये निकाल पाए। अपने स्तर पर पता किया तो जानकारी मिली कि उसके साथ फर्जी वेबसाइट, एप और फर्जी दस्तावेजों पर खुलवाए गए खातों से ठगी की गई है। शिकायत पर पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया था। अब पुलिस ने छानबीन कर ठगी गिरोह के छह आरोपितों को गिरफ्तार किया है। सोनीपत के साइबर थाना प्रभारी बसंत कुमार ने बताया कि साइबर ठग इंटरनेट मीडिया के जरिए लोगों से संपर्क करते हैं। इसके बाद शेयर मार्केट में निवेश का झांसा देकर रुपये ठग लेते हैं। लोगों को ठगी से बचने के लिए जागरूक होना पड़ेगा।

सोनीपत के रहने वाले व्यक्ति से की थी ठगी, साइबर ठग लोगों को वाट्सएप ग्रुप में जोड़कर रुपये निवेश करने के बताते थे स्कीम

कार्यालय जिलाधिकारी, बुलन्दशहर

संख्या: 269/1/ जि0आ0अ0/विषाक्त मदिरा/चेतावनी/2025–26/बु0शहर/दि0 मार्च 02, 2026

चेतावनी/अपील

होली पर्व के अवसर पर जनसामान्य को सूचित किया जाता है कि परचून की दुकानों एवं अन्य अनधिकृत स्थलों से बिकने वाली अवैध मदिरा का सेवन न करें, क्योंकि अवैध स्थलों/अड्डों से मिलने वाली मदिरा जहरीली हो सकती है तथा मिथाइल अल्कोहल भी हो सकता है, जो एक तीव्र विष है तथा इसके सेवन से आंखों की रोशनी जाने के साथ व्यक्ति की मृत्यु भी हो सकती है।

सस्ते के चक्कर में जान न गवायें, जहरीली शराब पीने से बचें। इसलिए अपना एवं अपने परिवार की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए अधिकृत आबकारी दुकानों से ही बारकोडयुक्त एवं सीलबन्द मदिरा ही खरीदें तथा अधिकृत दुकानों के सेल्समैनों को निर्धारित प्रिन्ट (एम0आर0पी0) रेट का ही भुगतान करें। यदि किसी व्यक्ति को अवैध मदिरा की बिक्री की सूचना प्राप्त होती है तो तत्काल जनहित में निम्न दूरभाष नम्बर/मोबाइल नम्बर पर सूचना देने का कष्ट करें। सूचना देने वाले व्यक्ति का नाम व पता गोपनीय रखा जायेगा।

प्रदेश स्तर पर संचालित टोल फ्री नम्बर–14405 तथा व्हाटसएप नम्बर–9454466019

जिला आबकारी अधिकारी बुलन्दशहर मोबाइल नम्बर–9454465652

1–आबकारी निरीक्षक, क्षेत्र–एक (तहसील सदर)	– मो0नं0–9454466430
2–आबकारी निरीक्षक, क्षेत्र–दो (तहसील खुर्जा)	– मो0नं0–9454466431
3–आबकारी निरीक्षक, क्षेत्र–तीन (तहसील अनूपशहर)	– मो0नं0–9454466432
4–आबकारी निरीक्षक, क्षेत्र–चार (तहसील डिबाई)	– मो0नं0–9454466433
5–आबकारी निरीक्षक, क्षेत्र–पांच (तहसील सिकन्द्राबाद)	– मो0नं0–9454466437
6–आबकारी निरीक्षक, क्षेत्र–छः (तहसील स्याना)	– मो0नं0–9454466434
7–आबकारी निरीक्षक, क्षेत्र–सात (तहसील शिकारपुर)	– मो0नं0–9454466776

जिला आबकारी अधिकारी
बुलन्दशहर

(श्रुति)
जिलाधिकारी, बुलन्दशहर

सिलिंडर से गैस लीक होने से लगी आग, मामा-भांजे घायल

जागरण संवाददाता, नोएडा: फेज दो थाना क्षेत्र स्थित नया गांव में सोमवार की सुबह खाना पकाते समय एलपीजी सिलिंडर से गैस लीकेज होने पर मामा-भांजे घायल गए। सूचना पर पुलिस और अग्निशमन टीम पहुंची, लेकिन लोगों ने पहले ही आग बुझा दी।

नोएडा सेक्टर 87 स्थित नया गांव में रिंकू अपने भांजे बंटू के साथ किराये पर रहते हैं और मेहनत मजदूरी करते हैं। किराये के कमरे में ही चार किलो के गैस सिलिंडर पर खाना बनाते हैं। सोमवार सुबह करीब 10 बजे रिंकू और बंटू गैस के चूल्हे पर खाना पका रहे थे। सिलिंडर के पाइप से गैस लीक होने पर एकाएक आग लग गई। उनके कपड़ों ने भी आग पकड़ ली।

मामा और भांजा ने बचने के लिए भागने का प्रयास किया तो वह गिरकर घायल हो गए। शोर सुनकर स्थानीय लोगों ने आग बुझाने का प्रयास करते हुए अग्निशमन विभाग को सूचना दी। मुख्य अग्निशमन अधिकारी प्रदीप कुमार चौबे ने बताया कि एलपीजी गैस सिलिंडर फटने की सूचना मिली थी, लेकिन मौके पर कोई सिलिंडर फटा नहीं मिला। सिलिंडर से गैस लीकेज के चलते आग लगी थी। हादसे में घायल रिंकू का अस्पताल में उपचार जारी है, जबकि उसके भांजे बंटू को प्राथमिक उपचार के बाद छुट्टी दे दी गई।

डायरेक्टर जनरल मेडिकल एजुकेशन एंड रिसर्च, हरियाणा, पंचकूला

चौथी मंजिल, DHL सायबर, प्लॉट नंबर 9, IT पार्क, सैक्टर 22, पंचकूला, हरियाणा 134112
फ़ोन नंबर 0172 2584633, 2580798 ईमेल: dmer_hry@nic.in
वेबसाइट: https://dmer.haryana.gov.in/

सार्वजनिक सूचना

सभी संबंधित छात्रों/अभिभावकों और अन्य हितधारकों को सूचित किया जाता है कि राज्य सरकार शैक्षणिक सत्र 2026-27 के लिए नर्सिंग, फिजियोथेरेपी और पैरामेडिकल कार्यक्रमों में स्नातक डिग्री पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए सरकारी और निजी नर्सिंग/फिजियोथेरेपी और पैरामेडिकल संस्थानों में NEET (UG)-2026 की मेरिट के आधार पर प्रवेश प्रक्रिया पर विचार कर रही है।

राष्ट्रीय पात्रता-सह-प्रवेश परीक्षा (NEET) UG-2026 का आयोजन राष्ट्रीय परीक्षण एजेंसी (NTA) द्वारा देश भर में विभिन्न स्नातक चिकित्सा कार्यक्रमों में प्रवेश के लिए किया जाता है। NEET (UG)–2026 के लिए ऑनलाइन आवेदन पत्र जमा करने की अंतिम तिथि 8 मार्च, 2026 है। तदनुसार, उपर्युक्त पाठ्यक्रमों में प्रवेश लेने के इच्छुक और पात्र सभी छात्रों को NEET (UG)–2026 के लिए आवेदन करने और अंतिम तिथि, यानी 8 मार्च, 2026 से पहले अपने आवेदन पत्र जमा करने की सलाह दी जाती है। उम्मीदवार राष्ट्रीय शिक्षा प्राधिकरण (NTA) के आधिकारिक वेब पोर्टल https://neet.nta.nic.in के माध्यम से आवेदन कर सकते हैं।

यह सूचना छात्रों के व्यापक हित में जारी की गई है ताकि वे राज्य सरकार द्वारा अपनाए जाने की स्थिति में NEET (UG)–2026 मेरिट के आधार पर प्रवेश के लिए विचार किए जाने का अवसर न चूकें।

अधिक जानकारी के लिए, उम्मीदवारों को NEET (UG)–2026 की आधिकारिक वेबसाइट https://neet.nta.nic.in और विभाग की वेबसाइट https://dmer.haryana.gov.in तथा पं. बी.डी. शर्मा, यूएचएस, रोहतक (अर्थात: https://uhsr.ac.in) की वेबसाइट पर नियमित रूप से जाने की सलाह दी जाती है।

हस्ता/–
निदेशक
चिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान,
हरियाणा, पंचकूला

PRDH-1058/11/1297/2026/43472/67/7

BIHAR STATE POWER (HOLDING) CO. LTD.,PATNA

Govt. of Bihar

(A Government of Bihar Undertaking)
Regd. Office – Vidyut Bhawan, Bailey Road, Patna, 800021
(GST - 10AAFCB2394A2ZD CIN – U40102BR2012SGC018495)
(Power Management Cell, BSPHCL)
Email ID – pmc1.bsphcl@gmail.com

Tender Notice

NIT No. - 08 /PR/BSPHCL/2026

PROCUREMENT OF POWER ON SHORT-TERM BASIS FROM VARIOUS SOURCES THROUGH TARIFF BASED COMPETITIVE BIDDING PROCESS

(Through e-bidding mode only – www.mstcecommerce.com)

Online Application are invited by Chief Engineer, Power Management Cell, Bihar State Power (Holding) Company Limited, 3rd Floor, Vidyut Bhawan-I, Jawahar Lal Nehru Marg, Patna-800021 on behalf of Discoms (NBPDCL & SBPDCL) from eligible applicants to participate in e-bidding process for the procurement of power on short term basis from utilities /traders/generators/discoms :

Sl. No.	Particular	Time/Date
1	Cost of Request for Proposal (Tender Document)	Rs. 10,000/- plus 18% GST
2	Publication of Tender Document/ Activation of Event	From 10:00 Hrs of 16.03.2026
3	Last date of submission of Bids including EMD & Cost of Tender Document.	Upto 16:00 Hrs of 23.03.2026
4	Opening of non-financial technical Bids	At 12:00 Hrs of 24.03.2026
5	Opening of IPOs	At 13:00 Hrs of 25.03.2026
	Start of e-RA	At 15:00 Hrs of 25.03.2026
7	Issuance of LOA	After the approval of Hon'ble BERC
	Period for supply of power	16.04.2026 to 30.09.2026

Bidding will be done through e-bidding portal (DEEP) only as per the guidelines for short term procurement of power notified by the Ministry of Power as amended from time to time. The link for the bidding portal is and is also available on the website of Ministry of power (www.powermin.nic.in) and PFC Consulting Limited (www.pfcclindia.com). Bidders are requested to familiarize the revised guidelines notified by the Ministry of power carefully before submitting the offer. Further BSP(H)CL reserves the right to amend/cancel the tender notice without assigning any reasons whatsoever and without any liability. **However for any enquiry, bidders may contact on 9264449860 / 7033291928 or mail to pmc1.bsphcl@gmail.com**

For further details please visit : **www.state.bihar.gov.in/prdbihar**

PR- 025434 (B & C) 2025-26

Chief Engineer (PMC)

नशे से बचने का है एक ही उपचार, दृढ़ संकल्प और परिवार से प्यार।

संपादकीय जागरण

मंगलवार, 3 मार्च, 2026 : फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा वि. 2082

रंग जीवन का सौंदर्य बढ़ाते हैं

विश्व के सामने नया संकट

ईरान के खिलाफ इजरायल-अमेरिका की संयुक्त सैन्य कार्रवाई फिलहाल किसी नतीजे पर पहुंचती नहीं दिख रही है। न तो इजरायल-अमेरिका के हमले थम रहे हैं और न ही ईरान की जवाबी कार्रवाई। भले ही ट्रंप यह कह रहे हों कि ईरान वार्ता के लिए राजी हो गया है, पर ईरानी नेता इससे साफ इन्कार कर रहे हैं। कहना कठिन है कि यह सैन्य टकराव कब और कैसे खत्म होगा, क्योंकि इसके आसार नहीं कि ईरान के सर्वोच्च नेता खामेनेई की मौत से वहां सत्ता परिवर्तन सुनिश्चित हो गया है। ईरान फिलहाल भले ही नेतृत्व विहीन सा दिख रहा हो, लेकिन उसकी सेना और विशेष रूप से इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड्स कोर अपने कदम पीछे खींचने के लिए तैयार नहीं। वह इजरायल और अमेरिका के ठिकानों को निशाना बनाने के साथ खाड़ी के देशों के नागरिक क्षेत्रों में भी ड्रोन और मिसाइलें दाग रही है। इससे इन देशों में अफरा-तफरी का माहौल है। पता नहीं ईरान पड़ोसी देशों के नागरिक ठिकानों को किस मकसद से निशाना बना रहा है, क्योंकि इससे वह अपने विरोधी तो बढ़ा ही रहा है, पहले से अधिक अलग-थलग भी पड़ता जा रहा है।

ईरान जिस तरह ऊर्जा आपूर्ति के मार्गों और विशेष रूप से होर्मुज जल मार्ग के लिए खतरे पैदा कर रहा है, उससे तेल और गैस की आपूर्ति पर असर पड़ना शुरू हो गया है। यह समुद्री जल मार्ग लगभग 25 प्रतिशत तेल और 30 प्रतिशत एलएनजी आपूर्ति का रास्ता है, जो इसे वैश्विक ऊर्जा सुरक्षा के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण बनाता है। इस जल मार्ग के बाधित होने का मतलब है तेल और गैस के दाम बढ़ना और एशिया, यूरोप समेत दुनिया के अन्य हिस्सों की अर्थव्यवस्था प्रभावित होना। यह ध्यान रहे कि तेल के दाम बढ़ने शुरू हो गए हैं। यदि वे इसी तरह बढ़ते रहे तो पहले से ही अनिश्चितता से गुजर रही विश्व अर्थव्यवस्था का संकट और बढ़ जाएगा। इसके लिए अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप ही जिम्मेदार होंगे, क्योंकि यह एक तथ्य है कि इजरायल अमेरिका की सहमति और सहायता के बिना ईरान पर हमला बोलने की स्थिति में नहीं था। इस विनाशकारी सैन्य टकराव का केंद्र बिंदु भले ही पश्चिम एशिया हो, लेकिन उससे पूरा विश्व प्रभावित हो रहा है। कठिनाई यह है कि कोई भी बीच-बचाव करने की स्थिति में नहीं। यह सैन्य संघर्ष जितनी जल्दी थमे, उतना ही पश्चिम एशिया समेत विश्व के लिए अच्छा, लेकिन इसकी सूरत तब बनेगी, जब दोनों पक्ष यह समझेंगे कि वे अपनी ही नहीं चला सकते। ईरान भले ही इजरायल-अमेरिका को सबक सिखाने का दम भर रहा हो, लेकिन वह इन दोनों देशों की सैन्य शक्ति का लंबे समय तक सामना करने की स्थिति में नहीं। इसी तरह अमेरिका और इजरायल के लिए यह आसान नहीं कि वे ईरान में आनन-फानन सत्ता परिवर्तन कर सकें।

स्वागतयोग्य कदम

राजधानी में महिलाओं से जुड़ी दिल्ली सरकार की चार योजनाओं की शुरुआत होना स्वागतयोग्य है। राष्ट्रपति ने सोमवार को महिला कल्याण से जुड़ी दिल्ली लखपति बिटिया योजना, सहेली पिंक स्मार्ट कार्ड योजना व होली-दीवाली पर निश्शुल्क गैस सिलेंडर योजना की शुरुआत की। इसके साथ ही लाडली योजना के तहत बालिका लाभार्थियों के खाते में राशि ट्रांसफर करने का कार्य भी शुरू हो गया। दिल्ली की महिला सीएम से यहां की महिलाओं को बड़ी अपेक्षाएं थीं। चुनाव प्रचार के दौरान भाजपा ने महिलाओं के कल्याण के लिए कई योजनाएं शुरू करने के वादे किए थे। ऐसे में सरकार के एक साल पूरे होने के फौरन बाद ही इन योजनाओं का शुरू होना महिलाओं को समृद्ध बनाने की दिशा में बड़े कदम के रूप में देखा जा सकता है।

> राजधानी में महिलाओं को ऐसा वातावरण उपलब्ध कराया जाए, जहां वे बिना किसी दबाव या भय के स्वयं से जुड़े निर्णय स्वतंत्र रूप से ले सकें

राष्ट्रीय राजधानी की महिला समृद्ध और सशक्त होनी ही चाहिए। राष्ट्रपति ने भी मुख्यमंत्री से अपेक्षा जताई है कि दिल्ली में महिलाओं को ऐसा वातावरण उपलब्ध कराया जाए, जहां वे किसी दबाव या भय के स्वयं से जुड़े निर्णय स्वतंत्र रूप से ले सकें। साथ ही उनका यह कहना भी सर्वथा उचित है कि समृद्ध दिल्ली और विकसित भारत की परिकल्पना को साकार करने में महिलाएं अहम भूमिका निभाएं और इसके लिए सरकार और समाज को उन्हें फलने-फूलने के लिए बेहतर वातावरण उपलब्ध कराना होगा।

कह के रहेंगे

माधव जोशी

जागरण जनमत

कल का परिणाम

क्या खामेनेई की मौत के बाद ईरान में सत्ता परिवर्तन आसान होगा?

आज का सवाल

क्या इजरायल-अमेरिका और ईरान युद्ध में कुछ और देशों के दखल की आशंका है?

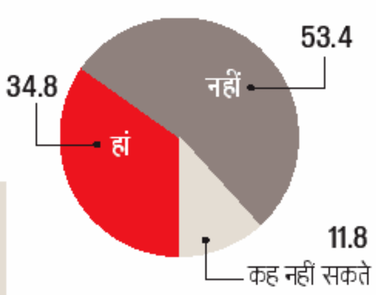

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है। सभी आंकड़े प्रतिशत में।

ईरान का त्रासदी भरा सफर

अर्शिया मलिक

खुमैनी से खामेनेई तक की यात्रा पर दृष्टि डालें तो ईरानी समाज क्रांति के उत्साह को पीछे छोड़ते हुए दमन और अलगाव की ओर ही बढ़ा है

वर्ष 1979 में अयातुल्ला रुहेल्ला खुमैनी के नेतृत्व में ईरान एक राजशाही से मजहबी गणराज्य में परिवर्तित हुआ, लेकिन उनके उत्तराधिकारी अयातुल्ला अली खामेनेई के शासनकाल में स्थिति और बिगड़ गई। इन 46 वर्षों में ईरानी समाज का सफर कट्टरपंथी इस्लामवाद, परोक्ष युद्ध, जनता की कीमत पर अत्यधिक सैन्य खर्च, पश्चिम एवं यहूदी विरोधी विचारधाराओं और गहरी जड़ें जमा चुकी स्त्री-द्वेषी संस्कृति से भरा रहा। इसने आधी आबादी का दम घोंटा और ईरान को वैश्विक स्तर पर अलग-थलग किया। उसके सामाजिक ताने-बाने को भी खोखला किया। इस पतन की नींव 1979 की ईरानी क्रांति में पड़ी, जिसने शाह मोहम्मद रजा पहलवी को सत्ता से हटाकर खुमैनी को सर्वोच्च नेता बनाया।

खुमैनी ने एक ऐसी व्यवस्था स्थापित की, जहां मजहबी सत्ता ने लोकतांत्रिक इच्छा को पीछे छोड़ दिया और मजहबी तंत्र को लोकलुभावन बयानबाजी के साथ मिला दिया। यह महज राजनीतिक बदलाव नहीं, एक सामाजिक उथल-पुथल थी, जिसने ईरानी जीवन के हर पहलू में कट्टरता का संचार कर दिया। 1989 में सलमान रुश्दी के खिलाफ खुमैनी का फतवा इसी कट्टरता का उदाहरण था, जिसने साहित्यिक आलोचना को हत्या के वैश्विक आह्वान में बदल दिया और ईरान को वैचारिक आतंक के निर्यातक के रूप में स्थापित कर दिया। ईरान ने परोक्ष आतंकवाद को विदेश नीति के एक अंग के रूप में अपनाया। 1980 के दशक में ईरान ने इजरायली और पश्चिम का मुकाबला करने के लिए लेबनान में हिजबुल्ला की स्थापना कर उसे पैसा, हथियार और प्रशिक्षण दिया। यह कथित क्रांति के निर्यात की एक सोची-समझी रणनीति थी। खुमैनी ने कहा था कि इस्लाम का प्रसार तब तक आवश्यक है, जब तक कि 'अल्लाह के सिवा कोई ईश्वर नहीं है' का नारा विश्व भर में गूंज न उठे।

1989 में जब खामेनेई ने सत्ता संभाली तो उग्रवाद और तीव्र हो गया। उनके शासनकाल में इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड कोर (आइआरजीसी) ने कुद्स फोर्स का विस्तार किया। एक समय ईरान इराक में शिया मिलीशिया, गाजा में हमास और सीरिया में असद शासन का समर्थन करने के साथ ही भारी खर्च कर रहा था। अक्टूबर 2024 में ईरान द्वारा इजरायल पर किए गए मिसाइल हमले तेहरान में हमास नेता इस्माइल हानिये की हत्या के प्रतिशोध में किए गए। इससे परोक्ष आतंकवाद प्रत्यक्ष टकराव में बदल गया। दिसंबर 2024 में असद के पतन से ईरान को झटका लगा, फिर भी खामेनेई शासन ने अपना रुख नहीं बदला। उनकी रणनीति ने युद्धों को लंबा खींचा, लाखों को विस्थापित किया और ईरान को अछूत देश बना दिया।

अवधेश राजपूत

हथियारों पर केंद्रित रहना ईरान के लिए विनाशकारी साबित हुआ। क्रांति के बाद ईरान की तेल पर निर्भर अर्थव्यवस्था को सैन्य शक्ति की ओर मोड़ दिया गया। खामेनेई के शासनकाल में सैन्य खर्च में भारी वृद्धि हुई। 2005 में अंतरराष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी के प्रस्तावों का उल्लंघन करते हुए यूरेनियम संवर्धन शुरू किया गया। इस कारण अमेरिका के साथ वार्ता रुक गई। कड़े आर्थिक प्रतिबंधों ने ईरान की अर्थव्यवस्था को पंगु बना दिया। मुद्रास्फीति, बेरोजगारी और भ्रष्टाचार के कारण हालात खराब हुए। इससे गरीबी बढ़ी और लाखों कुशल कामगारों का बड़े पैमाने पर पलायन हुआ। पश्चिम और यहूदी विरोध ही ईरानी की मजहबी सत्ता को टिकाए रखने वाली वैचारिक धुरी बनी रही। खुमैनी ने अमेरिका को 'बड़ा शैतान' करार देते हुए 1979-1981 के बंधक संकट के बाद उससे संबंध ही तोड़ लिए। खामेनेई ने खुमैनी के उन्मादी रवैये को और आगे बढ़ाया। ईरान इजरायल का नाम लेने के बजाय उसे 'जायोनी सत्ता' बताता है। वह फलस्तीन के लिए लड़ रहे हमास जैसे समूहों को समर्थन देते हुए गाजा के 90 प्रतिशत बजट का प्रबंध भी करता है। ईरान में ठीक-ठाक संख्या वाले यहूदियों की आबादी लगातार सिमट रही है। जो बचे हैं, वे भी प्रतिबंधों के शिकार हैं।

कहने को तो इस्लामी मानकों के अनुरूप बना संविधान महिलाओं को बराबरी के दर्जे की बात करता है, लेकिन वास्तविकता इसके उलट है। आधी आबादी का संस्थागत दमन होता है। महिलाओं की गवाही का प्रभाव पुरुषों की तुलना में आधा माना जाता है। महिलाओं के जीवन का मोल भी आधा है। हिजाब के लिए कड़ी बंदिशें हैं। खुमैनी ने फतवा जारी करके लड़कियों के लिए विवाह की न्यूनतम आयु को घटाकर नौ वर्ष कर दिया था। खामेनेई के दौर में हिजाब की अनिवार्यता को लेकर बड़ी सख्ती कई गई। इसके अनुपालन के लिए तेहरान में 70,000 पुलिसकर्मियों की तैनाती हुई। इसका नतीजा तमाम गिरफ्तारियों के रूप में सामने आया। महिलाओं के स्टेडियम में प्रवेश से लेकर ग्लैमरस हेयरस्टाल और कुत्ते पालने तक पर प्रतिबंध है। 2022 में कथित अनुचित हिजाब के आरोप में हिरासत के दौरान महसा अमीनी की मौत के बाद देशव्यापी विरोध-प्रदर्शन हुए। उनमें 500 से अधिक लोग मारे गए और हजारों गिरफ्तार हुए। पक्षपाती कानूनों की वजह से दुष्कर्मों के मामले में दोष सिद्धि असंभव सी है। यह सही है कि महिला साक्षरता बढ़कर 80 प्रतिशत तक हो गई और उनका संसद में प्रतिनिधित्व बढ़ा है, पर ये उपलब्धियां उस असमानता की खाई को नहीं ढक सकतीं, जिनसे महिलाओं को जूझना पड़ रहा है।

ईरान की 1979 से अब तक की यात्रा पर दृष्टि डालें तो ईरानी समाज क्रांति के उत्साह को पीछे छोड़ते हुए दमन और अलगाव की ओर ही बढ़ा है। पश्चिम-विरोधी और यहूदी-विरोधी नीतियों से जहां सहयोगी छिटकते गए, वहीं स्त्री-विरोध ने महिलाओं की आवाज को दबाकर समाज की मूल संरचना को ही आहत किया। ईरान आज जिस स्थिति में है, उससे कहीं बेहतर का हकदार है। एक ऐसी स्थिति का, जहां समाज मजहबी जकड़नों से मुक्त हो, उग्रता की जगह समानुभूति का भाव हो और महिलाओं, अल्पसंख्यकों और असहमति रखने वाले लोगों को भी फलने-फूलने का अवसर मिले। सच्ची क्रांति के भाव भीतर से ही उपजेंगे और वही भाव उन मानवीय मूल्यों की भरपाई करेंगे, जो बीते दशकों में तिरोहित होते गए।

(लेखिका शिक्षाविद् एवं इस्लामी सामाजिक-राजनीतिक मामलों की विश्लेषक हैं)
response@jagran.com

भीतर की चेतना रंगते हैं बाहरी रंग

डा. शिवनी कटारा

जैसे अनेक रंग इंद्रधनुष को रचते हैं, वैसे ही विभिन्न समुदाय मिलकर राष्ट्र के आत्मा को पूर्ण बनाते हैं

'मैं' से 'हम' की ओर ले जाती है होली की उमंग ● पेट्र

भारत उत्सवों की भूमि है, तीज-त्योहारों की पावन धरा है। किसी समाज में पर्वों की निरंतरता उसकी सांस्कृतिक समृद्धि और सामूहिक उल्लास का संकेत मानी जाती है। होली केवल एक पर्व नहीं, बल्कि भारत की धड़कनों में गूंजता समरसता का संगीत है। फाल्गुन पूर्णिमा को होलिका दहन और फिर धुलेंडी पर रंगोत्सव रंगों का एक ऐसा संवाद है, जिसमें अतीत की राख से भविष्य के रंग जन्म लेते हैं। होली का दार्शनिक आधार भारतीय चेतना की गहराइयों में निहित है। प्रह्लाद की अटूट श्रद्धा और होलिका के दहन की कथा केवल पौराणिक आख्यान नहीं, बल्कि मनुष्य के भीतर चलने वाले सत्य और असत्य के संघर्ष का रूपक है। जब हिरण्यकशिपु का अहंकार अग्नि में भस्म होता है, तब यह केवल एक पात्र का अंत नहीं, बल्कि अन्याय, दंभ और विभाजनकारी मानसिकता का अंत है। जब तक हमारे भीतर की असमानता नहीं जलेगी, तब तक बाहर की समरसता अधूरी रहेगी और फिर रंगोत्सव के दिन जब रंग चेहरे पर लगते हैं, तब असर मन पर होता है। उस क्षण न कोई ऊंच-नीच का प्रश्न रह जाता है, न अमीर-गरीब का अंतर। रंग सबको एक-सा बना देते हैं-एक ही हंसी, एक ही उमंग, एक ही स्पर्श। यह बताता है कि विविधता विरोध नहीं, सौंदर्य है। जैसे अनेक रंग मिलकर इंद्रधनुष रचते हैं, वैसे ही विभिन्न समुदाय मिलकर राष्ट्र के आत्मा को पूर्ण बनाते हैं।

भारत के कोने-कोने में होली के रूप भिन्न हैं, पर भाव एक है। ब्रज मंडल में होली वसंत पंचमी से शुरू होकर रंगभरनी एकादशी के बाद चरम पर पहुंचती है। लड्डूमार से लट्ठमार तक अनोखे उत्सव मनते हैं और देश-विदेश से लोग ब्रज पहुंचते हैं। बरसाने की लट्ठमार होली में हंसी सचमुच हवा में घुली रहती है। गलियों में उड़ता गुलाल, छतों पर खिलखिलाहट और चौक की ठिठोली से पूरा ब्रज मुस्कुराता दिखता है। सजी महिलाएं लाठियां थामे बढ़ती हैं, पुरुष ढाल संभाले शरारती अंदाज में बचते हैं। यह सब प्रेम की मीठी नोक-झोंक का उत्सव है। इस हंसी-ठिठोली के बीच परंपरा केवल निभाई नहीं जाती, बल्कि उल्लास के साथ जी जाती है। ऊपर से दृश्य चंचल दिखता है, पर भीतर गहरी सांस्कृतिक स्मृति धड़कती है। यह राधा-कृष्ण की आनंदमयी लीलाओं का स्मरण कराती है, जहां रूठना-मनाना भी प्रेम का ही एक रंग है। यहां स्त्री उत्सव की केंद्र-बिंदु बनकर उभरती है, उसकी सक्रियता शक्ति और स्नेह के सुंदर संतुलन का प्रतीक बनती है। एक ऐसा संतुलन, जिसमें हास्य भी है, सम्मान भी और अपनापन भी। वहीं वृंदावन की फूलों की होली में जब रंगों के स्थान पर पुष्प बरसते हैं तो वातावरण मानो सुगंधित भक्ति से भर उठता है। ब्रज की होली वस्तुतः अद्वैत का उत्सव है, जहां बाहरी रंग भीतर की चेतना को रंग देते हैं।

होली के पकवान भी जैसे समरसता का स्वाद हैं। गुजिया की मिठास, दही-बड़े की कोमलता, मालपुए की सुगंध और ठंडाई की शीतलता केवल व्यंजन नहीं, बल्कि साझा संस्कृति की थाली हैं। इस पर्व की सबसे बड़ी शक्ति यही है कि यह सामाजिक दीवारों को नरम कर देता है और हमें याद दिलाता है कि यदि एक दिन के लिए हम भेद भूल सकते हैं तो सदा के लिए क्यों नहीं? रंग केवल बाहरी पदार्थ नहीं, बल्कि भावनाओं के प्रतीक हैं। लाल प्रेम का, पीला आशा का, हरा नवजीवन का, नीला विश्वास का। वे हमें सिखाते हैं कि जीवन श्वेत-श्याम नहीं, उसमें अनेक स्वर और छायाएं हैं। यदि हम केवल अपने ही रंग को सर्वोच्च मानेंगे तो संघर्ष जन्म लेगा, पर यदि हम सब रंगों को स्वीकार करेंगे तो एक अद्भुत चित्र बनेगा-समरसता का चित्र। आज जब समाज भिन्न विचारों और पहचानों से बंटता जा रहा है, तब होली का उत्सव हमें संदेश देता है-मतभेद छोड़ो, मनभेद छोड़ो, क्षमा करो, गले मिलो। यह पुनर्मिलन का संस्कार है।

मनोवैज्ञानिक दृष्टि से होली आज की भागदौड़ और दबाव भरी जीवनशैली में एक सशक्त तनाव-नाशक उत्सव है। रंगों के साथ खुलकर हंसने, नाचने और गले मिलने से तनाव और अकेलेपन की भावना कम होती है। यह पर्व दबे हुए भावों को सहज वातावरण में व्यक्त करने का अवसर देता है। गिले-शिकवे भूलकर मेल-मिलाप करना मानसिक बोझ हल्का करता है और संबंधों में नई ऊष्मा भरता है। सामूहिक उल्लास व्यक्ति को 'मैं' से 'हम' की ओर ले जाता है। डिजिटल युग में, जहां संबंध स्क्रीन की रोशनी में सिमटते जा रहे हैं, होली वास्तविक स्पर्श का महत्व पुनः स्थापित करती है। जेन-जी के लिए यह केवल इंस्टाग्राम की रील या रंगीन सेल्फी का अवसर नहीं, बल्कि वास्तविक संवाद का उत्सव है। यह पीढ़ी विविधता, समावेशिता और समानता की बात करती है। होली उन्हें इन मूल्यों को जीने का अवसर देती है। जब वे पर्यावरण अनुकूल रंग चुनते हैं, सामुदायिक कार्यक्रमों में भाग लेते हैं और विभिन्न पृष्ठभूमि के लोगों के साथ खुलकर मिलते हैं, तब वे समरसता को केवल शब्द नहीं, कर्म बना देते हैं। इस प्रकार होली केवल रंगों का उत्सव नहीं, बल्कि मानसिक ताजगी, भावनात्मक संतुलन और सामाजिक जुड़ाव का प्रभावी माध्यम है। यह मृदुता, सहजता और अपनत्व का वह त्रिवेणी पर्व है, जो मन के मैल को प्रेम की वर्षा में बहा देता है। 'होली है...' कहकर हम विविध रंगों में एक चेतना का उत्सव मनाते हैं और समरसता को जीते हैं।

(लेखिका लोक स्वास्थ्य एवं सामाजिक मामलों की अध्येता हैं)
response@jagran.com

ऊर्जा

स्वार्थ

स्वार्थ की भावना अग्नि के समान है। वह चुपचाप नहीं रहती, तीव्र गति से फैलती है। जब फैलती है तो संबंधों, संस्कारों और समाज की जड़ों को झुलसा देती है। आज यदि राष्ट्र और विश्व की स्थिति पर दृष्टि डालें तो स्पष्ट प्रतीत होता है कि मनुष्य की चेतना 'मैं' तक सिमटती जा रही है, परंतु यह अटल सत्य है कि स्वार्थ पर आधारित समाज कभी सुखी, शांत और आदर्श नहीं बन सकता।

स्वार्थ मन को अशांत और तन को अस्वस्थ करता है, जबकि निःस्वार्थता आत्मा को ऊर्जा से भर देती है। सच्ची मुस्कान और करुणा भाव से शरीर में प्रसन्नता देने वाले हार्मोन स्रवित होते हैं, जो तनाव को कम करते हैं। निःस्वार्थता केवल व्यवहार नहीं, चेतना का रूपांतरण है। जब हम किसी के दुख को कम करते हैं, तब अपने भीतर का अंधकार भी घटने लगता है। निःस्वार्थ प्रेम का कोई एक रूप नहीं। वह स्पर्श में हो सकता है, मुस्कान में या मौन सहअनुभूति में संभव है। स्वयं को पाने का सर्वोत्तम मार्ग है, स्वयं को दूसरों की सेवा में खो देना। सेवा केवल दान नहीं, दृष्टिकोण है-हर प्राणी में आत्मा का सम्मान देखना। जब हम कृतज्ञता से जीते हैं, तब जीवन का प्रत्येक क्षण प्रसाद बन जाता है। गरिमा और आत्मसम्मान निःस्वार्थता की जड़ हैं। आत्मावलोकन ही स्वार्थ की दीवारें गिराता है।

स्वार्थ और संकीर्णता हमारे सुखों की सबसे बड़ी बाधाएं हैं। हमें लगता है कि दूसरों का जीवन अधिक सरल है, पर यह केवल दृष्टि का भ्रम है। सच्ची प्रसन्नता तुलना में नहीं, तृप्ति में है। जब हमारी चेतना 'मैं' से 'हम' की ओर विस्तृत होती है, तभी आध्यात्मिक ऊर्जा का स्रोत फूटता है। आइए, स्वार्थ चेतना को साधकर निःस्वार्थता की ज्योति जलाएं, क्योंकि प्रेम और करुणा सुविधा नहीं, जीवन की अनिवार्य आवश्यकता हैं। यही ऊर्जा व्यक्ति को भी ऊर्ध्वगामी बनाती है और समाज को भी प्रकाशमय।

ललित गर्ग

पाठकनामा

pathaknama@nda.jagran.com

सरकारों की अकर्मण्यता

'मुकदमों का बोझ बढ़ाती सरकार' शीर्षक से प्रकाशित आलेख में लेखक डा. ब्रजेश कुमार तिवारी ने न्यायपालिका और उसके कामकाज को लेकर आम जनता की बहुत सी गलतफहमियां दूर कर दी हैं। वास्तव में कई बार लोकप्रिय बने रहने के लिए और दो पक्षों के बीच बुरा नहीं बनने के लिए सरकारें जानबूझकर विवादों का हल नहीं करतीं और अपनी जिम्मेदारियों का निर्वाह नहीं करतीं और मामला न्यायपालिका के ऊपर छोड़ देती हैं। सरकारों के इस गैर-जिम्मेदाराना रवैये के कारण भी न्यायपालिका पर अनावश्यक मुकदमों का बोझ बढ़ता है। जब सरकारों की अकर्मण्यता के कारण जनता को न्याय दिलाने के लिए न्यायपालिका पहल करती है तो इसे सरकारें 'न्यायपालिका की अति सक्रियता' का आरोप लगाकर उसे बदनाम करती हैं। यह प्रवृत्ति उचित नहीं। सरकारें कामकाज का तरीका सुधारें, जनता के प्रति जिम्मेदार और जवाबदेह बनें, नहीं तो अदालतों पर मुकदमों का बोझ यूं ही बढ़ता रहेगा। यह कभी कम नहीं होगा और आमजन को समय पर न्याय मिलना दूभर बना रहेगा।

ललित दुबे, रतलाम

जंग की चपेट में दुनिया

संपादकीय आलेख 'अनिश्चितता से घिरा ईरान' में उचित विश्लेषण किया गया है कि ईरान और पश्चिमी देशों के बीच बढ़ता तनाव निश्चित रूप से वैश्विक शांति और अर्थव्यवस्था के लिए एक बड़ी चुनौती है। ईरान के सर्वोच्च शासक एवं मजहबी नेता अयातुल्ला अली खामेनेई ने वास्तव में दशकों से ईरान पर शासन किया है। उनके शासनकाल के बारे में दो विपरीत विचार हैं पश्चिमी और विपक्षी दृष्टिकोण। कई अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार संगठन और पश्चिमी देश उनके शासन को 'निरंकुश' मानते हैं, जहां अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और महिलाओं के अधिकारों (जैसे हिजाब विरोधी प्रदर्शन) पर कड़ा नियंत्रण है। जबकि उनके समर्थक उन्हें इस्लामी क्रांति का रक्षक और पश्चिमी साम्राज्यवाद के खिलाफ एक मजबूत दीवार मानते हैं। ईरान ने कबूल कर लिया कि खामेनेई की मौत इजरायल और अमेरिकी हमले में हो गई है। खामेनेई मौत के बाद ईरान ने 40 दिन का राजकीय शोक घोषित किया है। सच क्या है? इसकी जानकारी कुछ ही दिनों में दुनिया को हो जाएगी। लेकिन फिलहाल ईरान -अमेरिका और इजरायल युद्ध की जंग तो लड़ रहे हैं परंतु इसके चपेट में भारत सहित पूरी दुनिया आ गई है। कई देशों पर ऊर्जा का संकट मंडराने लगा है। मध्य पूर्व के कच्चे तेल के बेंचमार्क दुबई का प्रीमियम सोमवार को बढ़कर लगभग 5.90 डालर प्रति बैरल हो गया, जो 2022 के बाद का उच्चतम स्तर है। बेंचमार्क की कीमतों में यह उछाल शनिवार को अमेरिकी-इजरायल हमलों में ईरानी सर्वोच्च नेता अयातुल्ला अली खामेनेई की हत्या के बाद आया, जिसके परिणामस्वरूप खाड़ी शहरों में ईरान के जवाबी हमलों के कारण अराजकता फैल गई और तेल और अन्य उत्पादों से भरे टैंकरों ने होर्मुज जलडमरूमध्य से अपना आवागमन रोक दिया। इस रास्ते के रोकने से कई देशों में उर्जा से संबंधित समस्या का सामना करना पड़ सकता है।

युगल किशोर राही, ग्रेटर नोएडा

मुद्दाविहीन विपक्ष

कांग्रेस सांसद व नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी कहते हैं कि मोदी समझौतावादी है। अमेरिका से ट्रेड डील कर उन्होंने किसानों के डेथ वारंट पर साइन किए हैं। यही नहीं मोदी अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप से डरते हैं निस्संदेह सफेद झूठ और मनगढ़ंत कहानी है। वहीं आम आदमी पार्टी को शराब घोटाले में राऊज एवेन्यू कोर्ट से क्लीन चिट मिलने के बाद मनीष सिसोदिया का अतिउत्साह में ये कहना कि प्रधानमंत्री मोदी को पद से हटाना भी राष्ट्रभक्ति होगा, एक गंभीर तंज, कटाक्ष ही नहीं वर्ना राग-द्वेष व मनभेद की राजनीति को ज्यादा उजागर करता है। प्रधानमंत्री मोदी भारत के प्रधानमंत्री हैं ना कि देश की न्याय व्यवस्था के मुखिया। वहीं आप के राज्यसभा सांसद संजय सिंह कहते हैं कि इजरायली हमले में खामेनेई की मौत का विरोध करना चाहिए। भारत की अपनी स्वतंत्र विदेश नीति है, और प्रथम राष्ट्र व वसुधैव कुटुंबकम् की नीति पर काम करता है। भारत फलस्तीन का भी समर्थन करता है और रूस यूक्रेन युद्ध का भी विरोध करता है। प्रधानमंत्री ने कहा भी है यह वक्त युद्ध का नहीं बुद्ध का है। भारत के नेतृत्व व क्षमताओं से परिपूर्ण कार्यशैली की वजहों से ही वैश्विक स्तर पर भारत का मान-सम्मान और प्रतिष्ठा को पंख लगे हैं। मोदी अंधविरोध की राजनीति की वजह से विपक्षी दलों की बयानबाजी कुंठित नजर आती है। परंपरागत, एक ही विषय को बार-बार दोहराना, मुद्दाविहीन और उबाऊ राजनीति से ज्यादा कुछ नहीं है।

दीपक गौतम, सोनीपत

पोस्ट

अमेरिकी मरीन्स के हाथों मारे गए पाकिस्तानियों की मौत पर पाकिस्तानी मीडिया ने मौन धारण किया हुआ है।

फहीम मरवत@AfghaNarrative

ईरान को भारत का हजारों साल पुराना दोस्त बताने वाले लोग जान लें कि जब नादिरशाह भारत से लूटपाट और बर्बरता करके वापस लौटा तो उसने ईरान में तीन साल के लिए टैक्स माफ कर दिया था।

अभिषेक@AbhishBanerj

अमेरिका ने जो जंग शुरू की है, उम्मीद करते हैं कि उसे खत्म करने का तरीका भी सोचा होगा, क्योंकि बीते तीन दिनों में ईरान पर हमले का हासिल कुछ भी नहीं दिख रहा, सिवाय इसके कि खाड़ी देशों में भी बर्बादी हो रही है।

मीनाक्षी जोशी@IMinakshiJoshi

मासूम लोग मर रहे हैं। शेयर बाजार में लाखों करोड़ रुपये डूब गए। तेल की कीमतें चढ़ने लगी हैं। यही हाल रहा तो महंगाई बढ़ेगी सो अलग और सबका जिम्मेदार कौन... ट्रंप और उनका देश अमेरिका, जिन्हें लगता है कि पूरी दुनिया को उनके हिसाब से ही चलना होगा।

सुशांत सिन्हा@SushantBSinha

जनपथ

अमरीका का राष्ट्रपति करके सबसे युद्ध,
ढोल पीटता शांति का बनकर 'गौतम बुद्ध'।
बनकर 'गौतम बुद्ध' करे नोबेल पर दावा,
फूटेगा अब जल्द विश्व का उस पर लावा।
ट्रंप रहे दौड़ाय अश्व अपनी मर्जी का,
इसका फल इक रोज चखेगा अब अमरीका।

– ओमप्रकाश तिवारी

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त. पूर्व प्रधान संपादक-स्व.नरेन्द्र मोहन. नॉन एग्जीक्यूटिव चेयरमैन-महेन्द्र मोहन गुप्त. प्रधान संपादक-संजय गुप्त, नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा जागरण प्रकाशन लि. के लिए डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा -201309 से मुद्रित एवं 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित
संपादक (दिल्ली एनसीआर)-विष्णु प्रकाश त्रिपाठी दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय : 0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No 50755/90 समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई शुल्क अतिरिक्त। वर्ष 36 अंक 228

चिंतन

जंग रुकवाने को शांति समर्थक देश आगे आएं

मुद्दा
अवधेश कुमार

पश्चिम एशिया में बढ़ता सैन्य टकराव एक बार फिर पूरी दुनिया को अस्थिरता की ओर धकेल रहा है। हाल के हमलों में अमेरिका और इजराइल द्वारा ईरान पर की गई कार्रवाई ने हालात को और विस्फोटक बना दिया है। बिना दूरगामी परिणामों की परवाह किए किए गए ऐसे हमले केवल सैन्य ठिकानों तक सीमित नहीं रहते, बल्कि उनका दुष्प्रभाव आम नागरिकों तक पहुंचता है। सैकड़ों निर्दोष लोगों की जान जाना, रिहायशी इमारतों और बुनियादी ढांचे का नष्ट होना, अस्पतालों और जरूरी सेवाओं का ठप पड़ना ये सब संकेत हैं कि यह संघर्ष यदि नहीं रुका तो एक गहरे मानवीय संकट में बदल सकता है। युद्ध का सबसे बड़ा खामियाजा हमेशा आम जनता को ही भुगतना पड़ता है। जब बम गिरते हैं तो सीमाएं नहीं देखते, वे स्कूल, बाजार, घर और सपनों को भी तबाह कर देते हैं। खाद्य आपूर्ति बाधित होती है, दवाइयों की कमी हो जाती है और विस्थापन की समस्या विकराल रूप ले लेती है। यदि यह टकराव लंबा खिंचता है, तो प्रभावित क्षेत्रों में लोगों को खाने के लाले पड़ सकते हैं। शरणार्थियों की नई लहरें पैदा होंगी, जिससे पड़ोसी देशों पर भी दबाव बढ़ेगा। वैश्विक अर्थव्यवस्था पहले ही कई संकटों से जूझ रही है, ऐसे में तेल आपूर्ति और व्यापार मार्गों पर असर पड़ने से अनेक देशों की अर्थव्यवस्थाएं डगमगा सकती हैं। इजराइली हमलों के बाद क्षेत्रीय संगठनों की सक्रियता भी चिंता का विषय है। हिजबुल्ला जैसे संगठन यदि प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से संघर्ष में कूदते हैं, तो हालात बहुपक्षीय युद्ध का रूप ले सकते हैं। इससे न केवल संघर्ष का दायरा बढ़ेगा, बल्कि नियंत्रण और भी कठिन हो जाएगा। इतिहास गवाह है कि जब क्षेत्रीय युद्धों में बाहरी और गैर-राज्य तत्व शामिल होते हैं, तो शांति की राह और लंबी तथा जटिल हो जाती है। ऐसे समय में शांति समर्थक देशों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। वैश्विक मंच पर प्रभाव रखने वाले देशों जैसे रूस, भारत और चीन की जिम्मेदारी बढ़ जाती है कि वे केवल बयानबाजी तक सीमित न रहें, बल्कि ठोस कूटनीतिक पहल करें। संयुक्त राष्ट्र जैसे मंचों पर सक्रिय हस्तक्षेप, आपातकालीन बैठकें और तत्काल युद्धविराम का प्रस्ताव इस दिशा में महत्वपूर्ण कदम हो सकते हैं। इन देशों के पास न केवल राजनीतिक प्रभाव है, बल्कि वे संवाद के ऐसे सेतु भी बन सकते हैं जिन पर चलकर विरोधी पक्ष वार्ता की मेज तक पहुंचें। हालांकि, ताकतवर देश होने के नाते पहल की पहली जिम्मेदारी अमेरिका पर ही आती है। यदि वह ईमानदारी से मध्यस्थता की भूमिका निभाए और अपने सहयोगियों के साथ मिलकर तनाव घटाने की दिशा में कदम बढ़ाए, तो समाधान की संभावना प्रबल हो सकती है। शक्ति का वास्तविक अर्थ केवल सैन्य क्षमता नहीं, बल्कि संकट की घड़ी में संयम और नेतृत्व दिखाना भी है। यदि अमेरिका इस विवाद को बातचीत के जरिए सुलझाने की दिशा में ठोस प्रयास करे, तो अन्य देश भी सहयोग देने को आगे आएंगे। सामूहिक कूटनीति ही इस संकट का वास्तविक समाधान है। युद्ध का लंबा चलना किसी के हित में नहीं है। इससे न तो स्थायी सुरक्षा मिलती है और न ही राजनीतिक समाधान निकलता है। इसके विपरीत, यह कट्टरता को बढ़ावा देता है, नई पीढ़ियों में अविश्वास बोता है और मानवता को गहरे घाव देता है। इसलिए आज आवश्यकता है साहसिक शांति पहल की ऐसी पहल जो हथियारों की आवाज को खामोश कर सके और संवाद की आवाज को बुलंद करे।

खामेनेई का अंत और इस्लामी क्रांति

सामान्यतः आम इस्लामी देशों से थोड़ा उदार और खुले जीवन जीने वाले ईरान में 1979 के इस्लामी क्रांति और अयातुल्लाह के सर्वोच्च नेता के रूप में स्थापना संपूर्ण विश्व की दृष्टि से एक नई घटना थी। इसमें केवल ईरान नहीं संपूर्ण अरब और कुछ मायनों में इससे बाहर भी गैर इस्लामी या इस्लाम विरोधी शासनों के अंत और इसके विस्तार का विचार प्रबल था। यहूदी देश इजराइल को इस्लाम का दुश्मन घोषित करते हुए ईरान राष्ट्र का लक्ष्य धरती से उसका नामोनिशान मिटाना हो गया। इस्लामी क्रांति के साथ 1979 में अमेरिकी दूतावास पर हमले और उसके बाद की तस्वीरें आज भी सिहरन पैदा करती हैं।

अमेरिका और इजराइल के संयुक्त मामले में ईरान के सर्वोच्च मजहबी नेता अयातुल्लाह अल खामेनेई का मारा जाना 21वीं सदी की ऐसी बड़ी घटना है जिसका प्रभाव कई रूपों में संपूर्ण विश्व पर पड़ेगा। इस्लामी शासन होने के कारण वे व्यावहारिक रूप से ईरान के सर्वोच्च नेता थे। राष्ट्रपति मसूद पेजेशकियन की भूमिका खामेनेई की नीतियों के क्रियान्वयन की रही है। अयातुल्लाह होने के कारण उन्हें विश्व भर के शिया मुसलमान अपने शीर्ष मजहबी नेता के रूप में देखते थे। पाकिस्तान, ईरान, भारत सहित कई देशों में शिया मुसलमानों का विरोध सामने है। किंतु यहां महत्वपूर्ण बात यह है कि ईरान के एक भी पड़ोसी देश ने ईरान का पक्ष नहीं लिया है। हालांकि पिछले वर्ष खामेनेई ने संपूर्ण विश्व के मुसलमानों की एकता का आह्वान किया था। ईरान और उसके बाहर उनके समर्थकों की कल्पना में कभी उनके इस तरह की मौत की बात नहीं आई होगी। हालांकि पिछले वर्ष जून में पहले इजराइल और बाद में अमेरिका के हमले के समय अटकलें लगी थी कि शायद वे देश छोड़कर चले गए। ऐसा हुआ नहीं।

इस घटना की संपूर्ण परिणतियों का स्पष्ट पूर्वावलोकन अभी कठिन है। इतना स्पष्ट कहा जा सकता है कि ईरान में 1979 से इस्लामी क्रांति का एक दौर तत्काल समाप्त हो गया है। ऐसा नहीं है कि इस्लामी क्रांति के बाद हुए परिवर्तनों, स्थापित ढांचें, विचारधाराएं समाप्त हो गईं हैं पर कम से कम उस रूप में आने वाले लंबे समय तक मुक्त और स्वतंत्र शिया इस्लामी शासन नहीं हो सकता। यह कथन सामान्य क्रांतियों के संदर्भ में है कि क्रांति के शिशु ही क्रांति को खा जाते हैं। ईरान के इस्लामी क्रांति के बारे में भी तत्काल यह निष्कर्ष सही दिखता है। सामान्यतः आम इस्लामी देशों से थोड़ा उदार और खुले जीवन जीने वाले ईरान में 1979 के इस्लामी क्रांति और अयातुल्लाह के सर्वोच्च नेता के रूप में स्थापना संपूर्ण विश्व की दृष्टि से एक नई घटना थी। इसमें केवल ईरान नहीं संपूर्ण अरब और कुछ मायनों में इससे बाहर भी गैर इस्लामी या इस्लाम विरोधी शासनों के अंत और इसके विस्तार का विचार प्रबल था। यहूदी देश इजराइल को इस्लाम का दुश्मन घोषित करते हुए ईरान राष्ट्र का लक्ष्य धरती से उसका नामोनिशान मिटाना हो गया। अमेरिका और उसके नेतृत्व वाले पश्चिमी देशों को शैतान कहा गया। यह व्यावहारिक तौर पर विश्व में एक इस्लामी विद्रोह की सत्ता का स्वरूप था। सच कहें तो इसी अतिवादी भाव के व्यवहार ने ईरान को उस अवस्था में पहुंचा दिया जहां उसका शांत, स्थिर, सशक्त और सुरक्षित रहना असंभव था। जब आप किसी एक देश के धरती पर नहीं रहने के अधिकार की घोषणा करेंगे और उसके अनुसार देश का व्यवहार होगा, बाहर अलग-अलग हिंसक समूह पैदा कर उसकी मदद करेंगे तो इसकी प्रतिक्रिया आपको झेलनी पड़ेगी। आखिर कोई देश ऐसे शासन को कायम रहने देने के पक्ष में क्यों होगा जो उसके अंत को अपना लक्ष्य बनाकर काम कर रहा हो?

इस्लामी क्रांति के साथ 1979 में अमेरिकी दूतावास पर हमले और उसके बाद की तस्वीरें आज भी सिहरन पैदा करती हैं। अमेरिकी कर्मचारियों के हाथ बांध कर बाहर लाया गया, वे बंधक बनाए गए। तब से हर अमेरिकी राष्ट्रपति की कामना होती थी ईरान से इस्लामी शासन का अंत हो। तत्कालीन ईरानी शासक राजा शाह

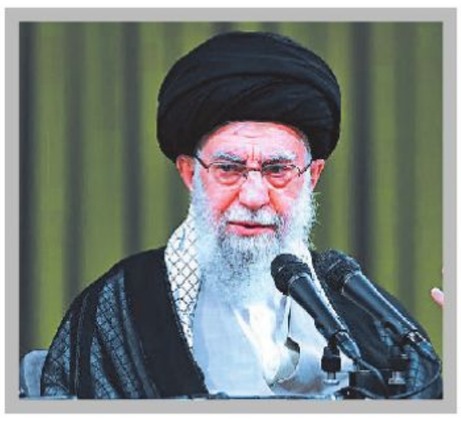

पहलवी को अपने परिवार और समर्थकों के साथ अमेरिका में शरण लेनी पड़ी। आज उनके पुत्र रेजा शाह पहलवी और परिवार अमेरिका में ही है। पिछले लगभग 3 महीने से ईरान के अंदर विरोध प्रदर्शनों में हमने देखा कि लोग उनकी तस्वीरें लिए वापस आओ के नारे लगा रहे थे। ये लोग अमेरिका से भी हस्तक्षेप की भी मांग कर रहे थे। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने विरोधियों का समर्थन किया, ईरान को चेतावनी दी पर तत्काल सीधा हस्तक्षेप नहीं किया। कुछ वक्तव्यों और घटनाओं से लग रहा था कि डोनाल्ड ट्रंप इस बार परिणामकारी सैन्य हस्तक्षेप करने की तैयारी कर रहे हैं। उन्होंने खामेनेई शासन को चेतावनी दी, न्यूक्लियर कार्यक्रमों को समाप्त करने की शर्तें रखी, ओमान में बातचीत भी आरंभ की किंतु सब रणनीति के तहत था। उसके साथ-ईरान के आसपास अब्राहम लिंकन जैसा सबसे बड़ा नौसैनिक बेरा और अन्य तैयारी होती रही।

दरअसल, 7 अक्टूबर, 2023 को हमास द्वारा उत्सव मना रहे निर्दोष निरपराध यहूदियों पर हमला कर लगभग 1200 लोगों का सरेआम कत्लेआम और बंधक बना लेने की घटना ने पश्चिम एशिया खासकर ईरान इजराइल, ईरान अमेरिका संबंधों को ऐसे मोड़ पर ला दिया जिसे अयातुल्लाह सहित उनके परिवार के अनेक सदस्यों, प्रमुख कमांडरों और रक्षा मंत्री आदि की मृत्यु की पृष्ठभूमि माना जा सकता है। गाजा में हमास, लेबनान में हिजबुल्लाह, यमन में हुती अयातुल्लाह के ईरान के ही गैर राज्यीय आतंकवादी समूह हैं।

इजराइल और अमेरिका का ऑपरेशन तभी से आगे बढ़ने लगा। लेबनान में हिजबुल्लाह तथा गाजा में हमास को पूरी तरह समाप्त करने के लक्ष्य से इजरायली प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतान्याहू ने कार्रवाई आरंभ की। हिजबुल्लाह प्रमुख नजीबुल्लाह और उसके ज्यादातर शीर्ष साथियों की मृत्यु, उसके केंद्र काफी हद तक नष्ट होने आदि के साथ उसकी शक्ति इतनी क्षीण हो गई कि पहले की तरह संघर्ष नहीं कर सकते थे। गाजा में भी संघर्ष जारी रहा और अपने लोगों को सुरक्षित लाने की विवशता रहते हुए भी इजरायल ने हमास के ढांचे को जितना संभव था अंत करने की कोशिश की। डोनाल्ड ट्रंप के शासन में आने के बाद कुछ समय के लिए लगा कि शायद इजरायल की उनको लेकर अपेक्षाएं गलत साबित हो सकतीं हैं, लेकिन 22 जून 2025 को अमेरिका के शक्तिशाली जीबी 57ए/ बी मैसिव ऑर्डिनेंस पेनिट्रेट या एमोपी जिसे बंकर बस्टर बम भी कहा जाता है, के हमलों में ईरान के तीन महत्वपूर्ण फोर्डो, नतांज और इस्फाहान न्यूक्लियर ठिकानों को नष्ट किया। वस्तुतः अमेरिका और इजराइल क्रमबद्ध तरीके से यहां तक पहुंचे हैं। ईरान पर पिछले एक दशक से ज्यादा के प्रतिबंधों ने उसके तेल व्यापार को लगभग समाप्त कर दिया और आर्थिक संकट बढ़ता गया। डोनाल्ड ट्रंप ने उन प्रतिबंधों को सख्ती से लागू करने के उपाय किए और उनके तेवर ऐसे थे जिसका असर हुआ। इस बीच ईरान रिवॉल्यूशनरी कोर्प्स गार्ड से लेकर प्रमुख रक्षा वैज्ञानिकों आदि की हत्यायें होती रहीं । इजरायल ने भी बीच-बीच में हमले किए।

अभी भविष्य की स्पष्ट तस्वीर नहीं प्रस्तुत की जा सकती। ईरान के बचे-खुचे कमांडर अपनी शक्ति से संघर्ष करेंगे, दुनिया भर के शिया अतिवादी समूह अपने स्तर से हिंसा और विरोध करेंगे, लेकिन ईरान के शासन का लंबे समय तक समूचे देश पर नियंत्रण रहना कठिन होगा। ईरान पर कब्जा कर किसी को सत्ता पर बिठाना अमेरिका के लिए कठिन है। बड़ी संख्या में ईरानी भी किसी बाहरी हस्तक्षेप वाले शासन को स्वीकार नहीं करेंगे। जो भी हो 1979 इस्लामी क्रांति के सिद्धांत वाली ऐसी शासन व्यवस्था वहां कायम नहीं रह सकती, जिसका संपूर्ण देश पर प्रभावी नियंत्रण हो।

(लेखक वरिष्ठ स्तंभकार हैं, ये उनके अपने विचार हैं।)

लेख पर अपनी प्रतिक्रिया haribhoomi@gmail.com पर दे सकते हैं।

त्योहार
ममता कुशवाहा

रंग, रिवाज़ और रज़ामंदी होली के बदलते मायने

होली भारतीय समाज का ऐसा पर्व है, जो रंगों, हंसी और आपसी मेल-जोल के माध्यम से जीवन की नीरसता को तोड़ता है। यह उत्सव ऋतुओं के परिवर्तन का संकेत देता है, सामाजिक दूरी को कम करता है और मनुष्य के भीतर दबे उल्लास को बाहर आने का अवसर देता है। परंतु समय के साथ होली केवल आनंद और रंगों का पर्व भर नहीं रही, बल्कि इसके साथ उन्माद, अराजकता और सहमति जैसे जटिल प्रश्न भी जुड़ते चले गए हैं। आज होली केवल उत्सव नहीं, बल्कि समाज के मनोविज्ञान को परखने का एक आईना भी बन चुकी है। भारतीय परंपरा में होली का मूल भाव समरसता का रहा है। यह वह दिन था जब ऊंच-नीच, अमीर-गरीब, स्त्री-पुरुष की दीवारें कुछ समय के लिए ढह जाती थीं। लोग एक-दूसरे को रंग लगाते, गले मिलते और पुराने वैर-भाव भूल जाते थे। रंग यहां केवल भौतिक तत्व नहीं, बल्कि समानता और साझेपन का प्रतीक था। होली का हास्य, फाग और ठिठोली जीवन के तनाव को हल्का करने का सामाजिक उपकरण भी रहा है। किंतु परंपरा और आधुनिकता के बीच के तनाव ने इस उत्सव के स्वरूप को कहीं-कहीं विकृत भी किया है। सामूहिक उत्सवों का मनोविज्ञान व्यक्ति के एकांत व्यवहार से भिन्न होता है। जब व्यक्ति भीड़ का हिस्सा बनता है, तो उसका विवेक कई बार समूह की मानसिकता में विलीन हो जाता है। होली जैसे पर्व में यह प्रक्रिया और तीव्र हो जाती है। रंग, संगीत, नशा और भीड़, ये सभी मिलकर एक ऐसा वातावरण रचते हैं, जिसमें व्यक्ति स्वयं को जवाबदेही से मुक्त समझने लगता है। यही वह बिंदु है, जहाँ उत्सव धीरे-धीरे उन्माद में बदलने लगता है। व्यक्ति वह आचरण करने लगता है, जिसे वह सामान्य परिस्थितियों में गलत मानता। सामूहिक उन्माद का मनोविज्ञान बताता है कि भीड़ में व्यक्ति की पहचान धुंधली हो जाती है। वह "मैं" से "हम" में बदल जाता है, और यह "हम" कई बार अनियंत्रित हो सकता है। होली के दौरान यह उन्माद अक्सर "बुरा न मानो होली है" जैसे वाक्यों के पीछे छिपा दिया जाता है। यह वाक्य परंपरागत रूप से सौहार्द और मज़ाक का संकेत था, लेकिन आज कई बार इसे असहमति को कुचलने के औजार की तरह इस्तेमाल किया जाता है। मज़ाक और उत्पीड़न के बीच की महीन रेखा यहीं टूटती है। यहीं से सहमति का प्रश्न जन्म लेता है। किसी पर रंग डालना, पानी फेंकना या स्पर्श करना तब तक उत्सव का हिस्सा है, जब तक वह सामने वाले की इच्छा से हो। जैसे ही यह इच्छा अनदेखी होती है, उत्सव हिंसा का रूप ले लेता है भले ही वह हिंसा शारीरिक न होकर मानसिक या भावनात्मक क्यों न हो। समाज में लंबे समय तक यह मान्यता रही कि होली के दिन सब कुछ "चल जाता है", लेकिन आधुनिक संवेदनशीलता इस धारणा को चुनौती देती है। आज यह प्रश्न अधिक मुखर है कि क्या परंपरा के नाम पर किसी की असहमति को नज़रअंदाज़ किया जा सकता है? विशेषकर महिलाओं के संदर्भ में यह प्रश्न और भी गंभीर हो जाता है। कई स्त्रियों के लिए होली आनंद का नहीं, बल्कि भय और असहजता का दिन बन जाती है। अनचाहा स्पर्श, अश्लील टिप्पणियां और जबरन रंग लगाना, इन सबको सामाजिक स्वीकृति मिल जाती है, क्योंकि इन्हें उत्सव के आवरण में ढक दिया जाता है। यह स्थिति केवल व्यक्तिगत नैतिकता का नहीं, बल्कि सामूहिक सामाजिक चेतना का सवाल है। यदि समाज उत्सव के नाम पर असहमति को कुचलता है, तो वह मूलतः अपने ही मानवीय मूल्यों से समझौता करता है। होली और उन्माद का एक पहलू नशे से भी जुड़ा है। भांग और शराब जैसे पदार्थ व्यक्ति के संयम को और कम कर देते हैं। नशे में व्यक्ति अपने व्यवहार के परिणामों के प्रति और अधिक असंवेदनशील हो जाता है। सामूहिक नशा सामूहिक उन्माद को जन्म देता है, जहां किसी एक का गलत आचरण भी पूरे समूह द्वारा सही ठहराया जाने लगता है। इस स्थिति में नैतिकता व्यक्तिगत नहीं रहती, बल्कि भीड़ द्वारा तय की जाती है और यही सबसे खतरनाक स्थिति होती है। हालांकि, इसका अर्थ यह नहीं कि होली स्वभावतः हिंसक या नकारात्मक पर्व है। वास्तव में होली हमें आईना दिखाती है हमारे समाज के भीतर छिपे उल्लास का भी और हमारी असंवेदनशीलता का भी। यदि हम चाहें, तो होली को फिर से वही बना सकते हैं, जो वह मूलतः थी- रंगों का, रिश्तों का और सम्मान का पर्व। इसके लिए ज़रूरी है कि हम उत्सव को उन्माद से अलग करें और परंपरा को मानवीय मूल्यों के साथ पुनर्परिभाषित करें। जब रंग सहमति से लगेंगे और हँसी किसी की पीड़ा पर नहीं, बल्कि साझे आनंद पर आधारित होगी, तभी होली वास्तव में अपने अर्थ को साकार कर पाएगी।

(लेखिका वरिष्ठ शिक्षिका हैं, ये उनके अपने विचार हैं।)

व्यक्ति को कैसे मिल सकती है दुखों से मुक्ति

संकलित
दर्शन

छठी शताब्दी ईसा पूर्व में संपूर्ण विश्व दर्शन के नए क्षितिज स्पर्श कर रहा था। चीन में कन्फ्यूशियस और लाओत्से, ईरान में जरथुस्त्र, यूनान में पाइथागोरस नए तर्क गढ़ रहे थे तो भारत में महावीर स्वामी और गौतम बुद्ध वैदिक दर्शन को नया आयाम देने में लगे थे। गौतम बुद्ध ने बताया कि जन्म से लेकर मृत्यु तक संपूर्ण जीवन दुखमय है। मृत्यु भी दुख का अंत नहीं है, बल्कि नए दुख का आरंभ है, क्योंकि मृत्यु के बाद भी पुनर्जन्म होता है। उनका मानना था कि प्राणी की इच्छा अपूर्ण रहती है तो पुनर्जन्म लेना पड़ता है। बुद्ध अनात्मवादी और अनीश्वरवादी तो थे, किंतु भौतिकवादी नहीं थे। उनका मत है कि सृष्टि में जो कुछ है वह क्षणिक है, परिवर्तनशील है। द्वितीय आर्य सत्य है कि प्रत्येक कार्य का कारण अवश्य होता है, जिसे बुद्ध ने प्रतीत्यसमुत्पाद कहा। इस दुख के कारणता सिद्धांत को द्वादश निदान चक्र भी कहा जाता है। इस दुख का मूलभूत कारण अविद्या है। अविद्या से संस्कार या पूर्व में किए गए कर्मों की प्रवृत्तियां उत्पन्न होती हैं। संस्कार से विज्ञान, विज्ञान से नामरूप, नामरूप से षडायतन, षडायतन से स्पर्श, स्पर्श से वेदना, वेदना से तृष्णा, तृष्णा से उपादान, उपादान से भव, भव से जाति, जाति या जन्म से जरा-मरण का दुख भोगना पड़ता है। बौद्ध दर्शन का तृतीय आर्यसत्य दुख-निरोध है। दुखों के मूल कारण अविद्या को दूर करके इसी जीवन में दुखों का अंत किया जा सकता है। दुखों का निरोध ही निर्वाण है।

पैसा, सेहत और ज्ञान से जुड़े कामों में देर न करें

संकलित
प्रेरणा

एक दिन श्रीकृष्ण उद्धव की भेंट हुई तो श्रीकृष्ण ने उद्धव को एक ब्राह्मण की कहानी सुनाई। श्रीकृष्ण ने बताया कि एक ब्राह्मण ने खेती और व्यापार करके खूब धन कमाया था। वह धनी था, वह बहुत ही कंजूस भी था। धन आया तो उसका मन गलत कामों में लग गया, वह लालची भी था। बुरी आदतों के साथ ही उसे अहंकार भी हो गया, बात-बात पर वह गुस्सा करने लगा। अपने मित्रों से और रिश्तेदारों से भी ठीक से व्यवहार नहीं करता था। ब्राह्मण के व्यवहार की वजह से उसके घर-परिवार के लोग और मित्र लोग दुखी रहने लगे। वह धनी था, लेकिन और धन कमाना चाहता था। कंजूस इतना था कि वह अपने ऊपर भी खर्च नहीं करता था, लेकिन समय के साथ धीरे-धीरे उसका धन खर्च होने लगा। कुछ धन उसके घर-परिवार वालों ने ही छीन लिया। कुछ चोरी हो गया। कुछ चीजें अपने आप नष्ट हो गई। धनी ब्राह्मण का बुरा समय शुरू हुआ तो उसे व्यापार में भी नुकसान हो गया। इसी तरह कुछ ही दिनों में उसका पूरा धन बर्बाद हो गया। अब वह गरीब हो गया तो किसी ने उसकी मदद नहीं की। गरीबी के दिनों में उस ब्राह्मण को अपनी गलतियां याद आने लगीं। वह सोचने लगा कि उसने कभी भी किसी पर धन खर्च नहीं किया। घर-परिवार के लोगों से और मित्रों से बुरा व्यवहार किया। अब मेरी कोई मदद नहीं कर रहा है, ये सब मेरे ही कर्मों का फल है। मैंने कभी भी अपने धन का सही उपयोग नहीं किया।

अंतर्मन

आज की पाती

विज्ञान वरदान बने, अभिशाप नहीं

28 फरवरी को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनाया जाता है। इसका मुख्य उद्देश्य देश में विद्यार्थियों और लोगों की विज्ञान के प्रति रुचि बढ़ाना भी है। हमारा देश विज्ञान के क्षेत्र में भी तेजी से आगे बढ़ रहा है। सूरज-चांद तक नए-नए आविष्कार करने की ओर अग्रसर हो गया है। हमारे देश के वैज्ञानिक भी उन देशों से कम नहीं हैं, जो तकनीक और विज्ञान के क्षेत्र में अपने आपको सुपर पावर मानते हैं। अगर सरकारें विज्ञान की पढ़ाई को देश में दुरुस्त करने के लिए गंभीरता दिखाएं तो हमारा देश विज्ञान के क्षेत्र में दुनिया के सभी देशों को पीछे छोड़ दे। यह प्रश्न भी अहम है कि विज्ञान एक वरदान है या अभिशाप? यह मानव के वश में ही है कि विज्ञान को अभिशाप बनने से रोका जाए। तभी वह वरदान बना रहेगा। *- प्रदीप सोनी, भाटापारा*

ट्रेंड

आत्मनिर्भर बनेंगी बेटियां

'मेरी पूंजी, मेरा अधिकार', सहेली स्मार्ट कार्ड और दिल्ली लखपति बिटिया जैसी योजनाएं महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं। सभी कल्याणकारी योजनाएं दिल्ली की महिलाओं के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाकर समृद्ध दिल्ली के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान देगी। **-दौपदी मुर्मु,** राष्ट्रपति

तनाव से भारत चिंतित

पश्चिम एशिया में तनाव से भारत चिंतित है। भारत विश्व में शांति और स्थिरता चाहता है। हर समस्या का समाधान बातचीत के जरिए निकाला जाना चाहिए। हम इस बात से सहमत है कि आतंकवाद, उग्रवाद और कट्टरता न केवल हमारे बल्कि पूरी मानवता के सामने गंभीर चुनौतियां है। **-नरेंद्र मोदी,** प्रधानमंत्री

घुसपैठिए छीन रहे अवसर

बंगाल के युवाओं को मिलने वाले अवसर घुसपैठिए छीन रहे है। राज्य की डेमोग्राफी बदल रही है। टीएमसी ने सीएए के बारे में भी झूठ फैलाया, क्योंकि वे इन घुसपैठियों को बसाना चाहते हैं। टीएमसी की सरकार हर स्तर पर भारतीय संविधान का गला घोंट रही है। **-राजनाथ सिंह,** रक्षा मंत्री

नशे की लत घातक

हम मद्यपान पर नियंत्रण के प्रयासों का पूरा समर्थन करते है, क्योंकि नशे की लत परिवार और समाज दोनों के लिए घातक है। शराब के सेवन और निर्माण पर रोक लगाने का विचार सामाजिक दृष्टि से उचित है। इसलिए इस पर रोक लगाई जाए। **-चिराग पासवान,** केंद्रीय मंत्री

करंट अफेयर

नेपाल के पहाड़ी क्षेत्रों में मनाई जा रही होली

नेपाल में सोमवार को होली का उत्सव शुरू हो गया और राष्ट्रपति रामचंद्र पौडेल ने कहा कि यह त्योहार लोगों को सामाजिक विकृतियों और बुरी प्रथाओं को समाप्त करने के लिए प्रेरित करता है। राष्ट्रपति पौडेल ने देश के पहाड़ी जिलों में मनाए जा रहे रंगों के त्योहार के अवसर पर शुभकामनाएं दीं। हालांकि, तराई क्षेत्र में यह त्योहार मंगलवार को मनाया जाएगा। उन्होंने कहा कि यह त्योहार लोगों को सामाजिक विकृतियों और बुरी प्रथाओं को समाप्त करने के लिए प्रेरित करने के साथ ही देश में सामाजिक सद्भाव और एकता बनाए रखने में मदद कर सकता है। उत्सव की औपचारिक शुरूआत सात फरवरी को काठमांडू के बसंतपुर दरबार चौक पर 32 फुट से अधिक लंबी बांस की छड़ी 'चिर' की स्थापना के साथ हुयी। रंग-बिरंगे कपड़े छड़ी पर बांधे गए, जो उत्सव के प्रारंभ का प्रतीक था। हालांकि, लोग होली का मुख्य दिन फाल्गुन महीने की पूर्णिमा के दिन मनाते हैं, जो हिंदू पंचांग का एक महत्वपूर्ण महीना है और मुख्य रूप से सर्दियों से वसंत ऋतु में आने का प्रतीक है। सोमवार की आधी रात नेपाल में पांच मार्च को होने वाले प्रतिनिधि सभा चुनावों से पहले चुनाव प्रचार का आखिरी दिन भी है।

ऑफ बीट

बायोएक्टिव ही सब्जियों के कड़वे स्वाद का कारण

यह विकास की एक दुर्भाग्यपूर्ण विचित्रता है कि सब्जियाँ हमारे लिए बहुत अच्छी हैं लेकिन वे हम सभी के लिए तुरंत स्वादिष्ट नहीं होती हैं। हम उच्च ऊर्जा वाले खाद्य पदार्थों के मीठे या उम्दा स्वाद का आनंद लेने के लिए विकसित हुए हैं, क्योंकि भुखमरी दीर्घकालिक स्वास्थ्य की तुलना में अधिक तात्कालिक जोखिम है। सब्जियाँ विशेष रूप से उच्च ऊर्जा वाली नहीं होती हैं, लेकिन वे आहार फाइबर, विटामिन और खनिजों और स्वास्थ्य को बढ़ावा देने वाले यौगिकों से भरपूर होती हैं जिन्हें बायोएक्टिव कहा जाता है। ये बायोएक्टिव ही सब्जियों के कड़वे स्वाद का कारण बनते हैं। पादप बायोएक्टिव, जिन्हें फाइटोन्यूट्रिएंट्स भी कहा जाता है, पौधों द्वारा पर्यावरणीय तनाव और शिकारियों से खुद को बचाने के लिए बनाए जाते हैं। वही चीज़ें जो पौधों के खाद्य पदार्थों को कड़वा बनाती हैं, वही चीज़ें उन्हें हमारे लिए अच्छा बनाती हैं। दुर्भाग्य से, कड़वा स्वाद हमें जहरों से और संभवतः एक ही पौधे को अधिक खाने से बचाने के लिए विकसित हुआ, तो एक तरह से, पादप खाद्य पदार्थों का स्वाद जहर जैसा हो सकता है। हममें से कुछ के लिए, यह कड़वी अनुभूति विशेष रूप से तीव्र है, और दूसरों के लिए यह इतनी बुरी नहीं है। यह आंशिक रूप से हमारे जीन के कारण है।

अपने विचार

हरिभूमि कार्यालय

टिकरापारा, रायपुर में पत्र के माध्यम से या फैक्स : 0771-4242222, 23 पर या सीधे मेल से hbcgpati@gmail.com पर भेज सकते हैं।

पश्चिम बंगाल के लोग अब बदलाव की तलाश में, भ्रष्टाचार चरम पर: शाह

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने दक्षिण 24 परगना के रायदीघी से भाजपा की "परिवर्तन यात्रा" का किया शुभारंभ

हरिभूमि ब्यूरो ⏭ नई दिल्ली

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने सोमवार को दक्षिण 24 परगना के रायदीघी से भारतीय जनता पार्टी की "परिवर्तन यात्रा" का शुभारंभ करते हुए कहा कि पश्चिम बंगाल के लोग अब बदलाव की तलाश में हैं। अमित शाह ने कहा कि यहां के लोग सत्तारूढ़ अखिल भारतीय तृणमूल कांग्रेस के कुशासन से व्याकुल हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि मौजूदा सरकार के शासन में भ्रष्टाचार चरम पर है और राज्य सरकार विकास को ठप्प करने के लिए जिम्मेदार है। केंद्रीय गृह मंत्री ने घुसपैठ का मुद्दा भी उठाया और भाजपा के उस पुराने आरोप को दोहराया कि अवैध अप्रवासन राज्य में एक बड़ी चिंता का विषय है। उन्होंने कहा कि उनकी पार्टी घुसपैठियों को देश से बाहर निकालने के लिए प्रतिबद्ध है।

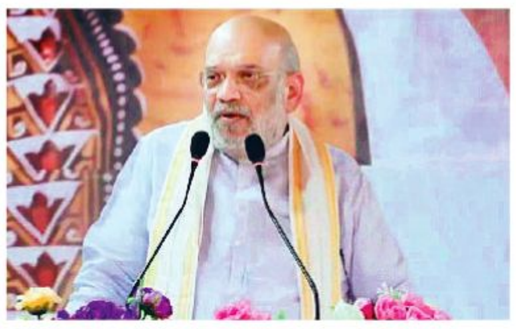

ममता अपने भतीजे को सीएम बनाना चाह रहीं

अपने संबोधन में शाह ने मुख्यमंत्री ममता बनर्जी और तृणमूल कांग्रेस के नेतृत्व पर तीखा हमला किया। वंशवादी राजनीति के प्रचलन का आरोप लगाते हुए उन्होंने दावा किया कि परिवारवाद पूरे देश में फैल रहा है और आरोप लगाया कि पश्चिम बंगाल में अभिषेक बनर्जी को अगले मुख्यमंत्री के रूप में पदोन्नत करने के प्रयास किए जा रहे हैं। शाह ने राज्य भाजपा अध्यक्ष सुकांत मजूमदार और अन्य पार्टी नेताओं की उपस्थिति में यात्रा का उद्घाटन किया। भाजपा ने घोषणा की है कि विधानसभा चुनावों से पहले चलाए जा रहे राज्यव्यापी प्रचार अभियान के तहत पश्चिम बंगाल के नौ अलग-अलग स्थानों से परिवर्तन यात्रा निकाली जाएगी।

बंगाल में 480 कंपनियों की होगी तैनाती

चुनाव के मद्देनजर पश्चिम बंगाल में सुरक्षा व्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिए निर्वाचन आयोग ने केंद्रीय अर्द्धसैनिक बलों की तैनाती का अंतिम खाका जारी कर दिया है। दूसरे चरण की तैनाती के तहत राज्य के विभिन्न जिलों में कुल 480 कंपनियों को चरणबद्ध तरीके से तैनात किया जा रहा है।

आयोग के अनुसार 10 मार्च से कई जिलों में अतिरिक्त कंपनियां सक्रिय हो जाएंगी। पहले चरण में 280 कंपनियां पहले ही राज्य के अलग-अलग जिलों में तैनात की जा चुकी हैं। अब शेष 280 कंपनियों का भी जिला-वार आवंटन तय कर दिया गया है। राज्य में सबसे अधिक केंद्रीय बलों की तैनाती उत्तर 24 परगना में की जा रही है। यहां तीन पुलिस जिलों और दो पुलिस कमिश्नरेट क्षेत्रों को मिलाकर 10 मार्च से कुल 58 कंपनियां तैनात होंगी।

नितिन नवीन ने सिलीगुड़ी में ट्रेड, कॉमर्स और बिज़नेस सेक्टर के प्रोफेशनल्स को किया

ममता सरकार की अराजकता के कारण 6 हजार से अधिक कंपनियां पलायन कर गईः नवीन

भाजपा अध्यक्ष बोले, तृणमूल सरकार में बंगाल को कॉरिडोर और गेटवे बनाकर बांग्लादेश के लोगों

हरिभूमि ब्यूरो ⏭ नई दिल्ली

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नवीन ने सोमवार को पश्चिम बंगाल के सिलीगुड़ी में ट्रेड, कॉमर्स और बिज़नेस सेक्टर के प्रोफेशनल्स को संबोधित किया। इससे पूर्व उन्होंने दार्जिलिंग हिल्स, तराई और डुआर्स के जाने-माने गोरखा संगठनों और प्रमुख लोगों से मुलाकात की। उन्होंने पश्चिम बंगाल में, तृणमूल कांग्रेस के शासन में चल रहे भ्रष्टाचार और कटमनी के खेल की जमकर आलोचना की। भाजपा अध्यक्ष ने कहा कि ममता बनर्जी, बंगाल को कॉरिडोर और गेटवे बनाकर बांग्लादेश के लोगों की घुसपैठ करा रही, राज्य से औद्योगिक इकाइयां पलायन कर रही हैं और राज्य में कानून व्ययस्थ पूरी तरह ध्वस्त हो चुकी है। कार्यक्रम के दौरान सिलीगुड़ी के सांसद राजू बिस्टा, पश्चिम बंगाल विधानसभा के मुख्य सचेतक डॉ शंकर घोष, विधायक आनंदमई बर्मन, अरुण मंडल, जिलाध्यक्ष इंदिरा बोस सहित अन्य नेतागण उपस्थित रहे।

पीएम ने पश्चिम बंगाल को विशेष महत्व दिया

नवीन ने कहा कि सत्य है कि पिछले 15 वर्षों में 6000 से अधिक कंपनियां, जो पश्चिम बंगाल में व्यवसाय करती थीं, पलायन कर अन्य प्रांतों में चली गईं। इससे बड़े क्षेत्र को मिलने वाले रोजगार के अवसर समाप्त हो गए, और यह स्थिति पिछले 15 वर्षों में देखने को मिली है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने पश्चिम बंगाल को विशेष महत्व दिया है। कई वंदे भारत ट्रेनें इस केंद्र से प्रारंभ हो रही हैं और यहां तक आ रही हैं। गुवाहाटी सहित पूरे नॉर्थ ईस्ट को जोड़ने की दिशा में कदम बढ़ाए गए हैं। यहीं से कोलकाता, बनारस तथा पटना के माध्यम से मुगलसराय क्षेत्र को भी कनेक्टिविटी प्रदान की जा रही है।

भारत की अर्थव्यवस्था में बंगाल की हिस्सेदारी घटी

नवीन ने कहा कि एक समय बंगाल एक बड़ा औद्योगिक क्षेत्र था, लेकिन आज इसका पतन तेजी से हो रहा है। राज्य सरकार ने जिस प्रकार इस क्षेत्र को महत्व देना चाहिए था, वह महत्व नहीं दिया। केवल इस इलाके की नहीं, बल्कि पूरे बंगाल की स्थिति पर विचार करना चाहिए। एक समय भारत की अर्थव्यवस्था में बंगाल की भागीदारी 10 प्रतिशत से अधिक थी यानी देश की समग्र वृद्धि में लगभग 10 प्रतिशत योगदान बंगाल की अर्थव्यवस्था का होता था, जो अब घटकर लगभग 5 प्रतिशत रह गया है। यह गिरावट अपने आप में बहुत बड़ी है। जब यह कहा जाता है कि बंगाल के विकास के बिना भारत का विकास संभव नहीं है, तो ये आँकड़े उसी तथ्य को स्पष्ट करते हैं। कई बड़ी कंपनियों का पलायन हो रहा है। उन्होंने कहा कि मुझे याद है कि जब उस समय की कम्युनिस्ट सरकार मारुति के सेंटर को यहां स्थापित होने की अनुमति नहीं दे रही थी, तब टाटा के मुद्दे पर एक बड़ा आंदोलन खड़ा किया गया था। आज उस आंदोलन को

भारतीय नागरिकों को अधिकार मिलेंगे

भाजपा अध्यक्ष ने कहा कि यह अत्यंत चिंता का विषय है, जब बांग्लादेशी घुसपैठ की बात की जाती है तो उसे अलग दृष्टि से देखा जाता है। भारत में रहने वाले प्रत्येक नागरिक, चाहे वह हिंदू हो, मुस्लिम हो, सिख हो या ईसाई, सभी को उनका अधिकार मिलेगा। लेकिन विदेश के लोगों को लाकर भारत में बसाना और उन्हें यहाँ के लोगों के अधिकार देना स्वीकार नहीं किया जा सकता। पीएम नरेंद्र मोदी जी जब कोई योजना लाते हैं तो उसका उद्देश्य केवल यह होता है कि जो गरीब है उसे लाभ मिले और जो पिछड़ा है वह आगे बढ़े। परंतु यह स्वीकार्य नहीं हो सकता कि कोई व्यक्ति देश को आश्रयस्थल समझकर यहाँ के नागरिकों का अधिकार छीन ले। जब केंद्रीय सहायता की चर्चा होती है तो आँकड़ों पर ध्यान देना चाहिए। पिछले 10 वर्षों में, जब केंद्र में वर्तमान सरकार नहीं थी और कांग्रेस तथा टीएमसी समर्थित सरकार थी, तब बंगाल के विकास के लिए लगभग साढ़े चार लाख करोड़ रुपये प्राप्त हुए। जबकि यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में पिछले 11 वर्षों में 15 लाख करोड़ रुपये से अधिक की राशि बंगाल के विकास पर खर्च की गई। पहले पूरे बंगाल में कोई एम्स नहीं था और उपचार के लिए दिल्ली जाना पड़ता था, लेकिन अब राज्य में एम्स की स्थापना हुई है, जो वर्तमान सरकार की देन है। रेलवे क्षेत्र में भी यूपीए सरकार के 10 वर्षों में लगभग 15,000 करोड़ रुपये का निवेश हुआ था, जबकि पिछले 11 वर्षों में 1 लाख करोड़ रुपये से अधिक का निवेश किया गया है।

ममता बांग्लादेशियों की घुसपैठ करवा रहीं

नवीन ने कहा कि बंगाल को कॉरिडोर और गेटवे बनाकर बांग्लादेश के लोगों की घुसपैठ कराई जा रही है, जिससे कई राज्यों की जनसांख्यिकी प्रभावित हो रही है। राज्य को जो नुकसान हो रहा है, उसके संबंध में वे पहले ही एक आँकड़ा प्रस्तुत कर चुके हैं और ये वही आँकड़े हैं जो डिलीट हो चुके हैं। 50 लाख से अधिक मामलों की जाँच इस समय निर्वाचन आयोग द्वारा न्यायपालिका और सर्वोच्च न्यायालय की निगरानी में की जा रही है। इन्हीं

सीमा पर फेंसिंग लगाने से किया मना

जब केंद्र ने सीमा पर फेंसिंग के लिए जमीन मांगी ताकि बॉर्डर को सील किया जा सके, तब उस जमीन की फाइल वर्षों तक लंबित रखी गई। जमीन इसलिए नहीं दी गई क्योंकि सीमा पर फेंसिंग हो जाने से ममता बनर्जी के वोट बैंक को नुकसान पहुंचता। ममता बनर्जी आखिर किसके पक्ष में हैं? यदि वे सच में बंगाल के लोगों के साथ होतीं, तो उनके साथ ऐसा सौतेला व्यवहार नहीं किया जाता।

बंगाल में वसूली का खेल जारी

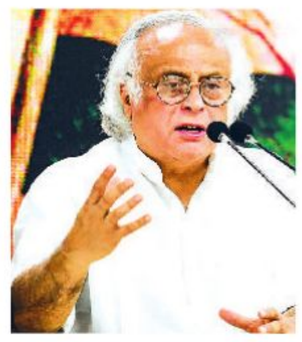

उन्होंने कहा कि व्यवसायियों के लिए सबसे बड़ा विषय सुरक्षा का होता है। जिस प्रकार से पूरे बंगाल में वसूली का खेल चल रहा है, उससे सभी भली-भांति परिचित हैं। गिट्टी और बालू खरीदने पर भी टैक्स देना पड़ता है और यदि मोहल्ले में कोई नया विकास कार्य करना हो तो उसके लिए भी टैक्स देना पड़ता है। यदि यह टैक्स सरकार के खाते में जाता तो किसी को आपत्ति नहीं होती, लेकिन जब वह ममता बनर्जी के खाते में जाता है तो तकलीफ होती है। मैं यह विषय विशेष रूप से इसलिए उठा रहा हूं क्योंकि सामने ऐसे व्यवसायी और बुद्धिजीवी उपस्थित हैं, जो समाज को दिशा देने की क्षमता रखते हैं। आप सभी लोगों का मत देश को सुरक्षित करेगा, बंगाल को नया और विकसित बंगाल बनाने में सहयोग देगा और भारत को विकसित भारत बनाने में भी महत्वपूर्ण योगदान देगा।

भारत-कनाडा के बीच यूरेनियम आपूर्ति और लघु मॉड्यूलर रिएक्टर पर समझौता कांग्रेस की देन

जयराम रमेश ने किए कई दावे

हरिभूमि ब्यूरो ⏭ नई दिल्ली

भारत और कनाडा के बीच यूरेनियम की आपूर्ति तथा लघु मॉड्यूलर रिएक्टरों के निर्माण में सहयोग को लेकर एक महत्वपूर्ण समझौते पर हस्ताक्षर हुए हैं। इस समझौते को लेकर कांग्रेस के वरिष्ठ नेता जयराम रमेश ने कहा है कि यह 2008 में हुए भारत-अमेरिका असैन्य परमाणु समझौते का ही परिणाम है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

भारत का पहला वाणिज्यिक परमाणु ऊर्जा संयंत्र महाराष्ट्र स्थित तारापुर एटॉमिक पावर स्टेशन में स्थापित किया गया था। इसके बाद कनाडा ने भारत को भारी जल रिएक्टर स्थापित करने में तकनीकी सहयोग दिया। तमिलनाडु के कलपक्कम सहित अन्य स्थानों पर स्थापित इन रिएक्टरों को कनाडा ड्यूटेरियम यूरेनियम तकनीक के कारण 'कैंडू रिएक्टर' कहा गया। लेकिन 18 मई 1974 को राजस्थान के पोखरण में भारत द्वारा किए गए शांतिपूर्ण परमाणु विस्फोट के बाद कनाडा ने अपना सहयोग रोक दिया था। उस समय कई पश्चिमी देशों ने भारत के परमाणु कार्यक्रम पर आपत्ति जताई थी।

2008 का समझौता बना आधार

जयराम रमेश ने अपने बयान में कहा कि भारत और कनाडा के बीच आज जो समझौता संभव हुआ है, उसकी पृष्ठभूमि अक्टूबर 2008 में हुए भारत-अमेरिका असैन्य परमाणु समझौते से जुड़ी है। यह समझौता तत्कालीन प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह की दृढ़ इच्छाशक्ति और लगातार प्रयासों का परिणाम था।

उन्होंने यह भी कहा कि उस समय भारतीय जनता पार्टी ने इस समझौते का जोरदार विरोध किया था, लेकिन इसी समझौते के कारण भारत को वैश्विक परमाणु व्यापार में भागीदारी का अवसर मिला और अन्य देशों के साथ सहयोग के रास्ते खुले।

लघु मॉड्यूलर रिएक्टरों का महत्व

लघु मॉड्यूलर रिएक्टरों को भविष्य की सुरक्षित, स्वच्छ और किफायती परमाणु ऊर्जा तकनीक माना जा रहा है। इनका आकार पारंपरिक परमाणु संयंत्रों की तुलना में छोटा होता है, जिससे इन्हें स्थापित करना अपेक्षाकृत आसान होता है। विशेषज्ञों का मानना है कि इससे भारत की ऊर्जा क्षमता में वृद्धि होगी और स्वच्छ ऊर्जा के लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद मिलेगी।

स्टडी इन इंडिया एजु-डिप्लोमैटिक एन्क्लेव 2026 में शिक्षा मंत्री बोले

नई शिक्षा नीति से वैश्विक शिक्षा के क्षेत्र में भारत की स्थिति हुई मजबूत

एजेंसी ⏭ नई दिल्ली

केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने कहा है कि वर्ष 2047 तक, जब देश आजादी के 100 साल पूरे करेगा, तब तक भारत को एक विकसित राष्ट्र बनाना है। इसके लिए शिक्षा सबसे बड़ा हथियार है। भारत की ताकत उसकी युवा आबादी है। बड़ी संख्या में युवा पढ़ रहे हैं, नए विचार ला रहे हैं और नई तकनीक पर काम कर रहे हैं। धर्मेंद्र प्रधान नई दिल्ली में आयोजित स्टडी इन इंडिया एजु-

धर्मेंद्र प्रधान

डिप्लोमैटिक एन्क्लेव 2026 में बोल रहे थे। यहां उन्होंने 50 से अधिक देशों के राजनयिकों को संबोधित किया। उन्होंने बताया कि सरकार चाहती है कि दुनिया के बड़े विश्वविद्यालय भारत में अपने परिसर

भारत वैश्विक शैक्षणिक केंद्र बन रहा

शिक्षा मंत्री ने विदेशी उच्च शिक्षा संस्थानों से भारत की तेजी से विकसित हो रही, नवाचार-आधारित शिक्षा प्रणाली के साथ सहयोग करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि भारत अब सिर्फ पढ़ाई करने की जगह नहीं, बल्कि एक बड़ा शैक्षणिक केंद्र बन रहा है। भारत चाहता है कि न केवल विदेशी संस्थान बल्कि दूसरे देशों

यूट्यूबर सलीम पर हमला करने वाला ढेर

गाजियाबाद। यूट्यूबर सलीम वास्तिक की गला रेतकर हत्या का प्रयास करने वाले दो

कट्टरपंथियों में से एक पुलिस ने रविवार की रात लोनी थाना क्षेत्र में एनकाउंटर में ढेर कर दिया। मारे गए बदमाश पर एक लाख रुपए का इनाम घोषित था। वहीं इस पुलिस ऑपरेशन में दो पुलिसकर्मी भी गोली लगने से घायल हो गए हैं।

महाराष्ट्र के पालघर में ओलियम गैस लीक

फैला धुंआ, सड़कों पर बेहोश हुए लोग, 2 किमी तक असर

आसपास की फैक्ट्रियां खाली कराईं

आपदा प्रबंधन टीमें मौके पर पहुंची

एजेंसी ⏭ पालघर

महाराष्ट्र के पालघर जिले के एक औद्योगिक क्षेत्र में स्थित एक रासायनिक यूनिट से दोपहर को ओलियम (फ्यूमिंग सल्फ्यूरिक एसिड) गैस का रिसाव हुआ। गैस लीक शुरू होते ही कंपनी के कर्मचारी जान बचाकर बाहर भागने लगे। आसपास की अन्य इकाइयों से करीब 2600 कामगारों को तत्काल सुरक्षित स्थान पर शिफ्ट किया गया। कई लोग सड़क पर ही बेहोश होते हुए दिखाई दिए, जिससे इलाके में दहशत फैल गई। अधिकारियों ने बताया कि एमआईडीसी डी-जोन क्षेत्र में स्थित भागेरिया केमिकल्स कंपनी (पूर्व में जेनिथ केमिकल्स के नाम से जानी जाती थी) की इकाई से जहरीली गैस का रिसाव हुआ, जिसके चलते जिला प्रशासन और आपातकालीन सेवाओं ने तुरंत कार्रवाई की।

गैस लीक से सड़कों पर प्रभावित पीड़ित

लोगों में दहशत का माहौल

स्थानीय निवासियों और कामगारों में घबराहट का माहौल रहा। खबर मिलते ही फायर ब्रिगेड और आपदा प्रबंधन दल मौके पर पहुंचे और लीकेज बंद करने की कोशिशें की गई। घटना की सूचना मिलते ही फायर टेंडर, आपदा प्रबंधन टीमें और प्रशासन मौके पर पहुंच गया। ओलियम गैस को रोकने और टैंक को सुरक्षित करने का काम युद्धस्तर पर किया जा रहा है।

दोपहर 2 बजे शुरू हुआ रिसाव

जानकारी के अनुसार, गैस लीकेज दोपहर करीब 2 बजे उस टैंक/सिस्टम से शुरू हुआ जिसमें ओलियम भरा था। दरअसल ओलियम हवा के संपर्क में आते ही सल्फर डाइऑक्साइड और अन्य सल्फर ऑक्साइड में बदल जाता है, जिसके कारण क्षेत्र में घने धुएं के बादल फैलने लगे। लीक के समय हवा पश्चिम से पूर्व दिशा में बह रही थी, जिससे गैस तेजी से दूर तक पहुंच गई। इसका प्रभाव 2 किलोमीटर के दायरे तक महसूस किया गया। गैस के संपर्क में आए लोगों में घबराहट फैल गई। उन्होंने लाल आंख और तेज जलन, गले में खराश, सूखापन और सांस लेने में मुश्किल, सीने में जलन, मितली और घबराहट जैसी स्थिति बताई।

हिन्दुस्तान 1936 सत्य • सार्थक • सदैव

लंबा खिंचता युद्ध

ईरान-अमेरिका युद्ध को तीन दिन बीत चुके हैं और करीब एक हजार लोग मारे जा चुके हैं या बुरी तरह घायल हुए हैं। संघर्ष के तीसरे दिन भी अमेरिका और इजरायल ने निश्चित ठिकानों को निशाना बनाया है, जबकि ईरान ने इजरायल सहित कुवैत, लेबनान और बहरीन को निशाने पर ले रखा है। दोनों तरफ से बड़े हमले हुए हैं और बमों की वर्षा जारी है। आशंका है कि मृतकों की जितनी संख्या बताई जा रही है, उससे कहीं ज्यादा लोग मारे जा रहे हैं। अचरज नहीं, हर देश अपनी जनहानि को कम करके बताने की कोशिश करेगा। फेक न्यूज का भी सहारा लिया जा रहा है और इससे बचना मुश्किल है। अफसोस! मध्य पूर्व या एशिया के एक बड़े क्षेत्र में जनजीवन पूरी तरह से प्रभावित हो गया है। अनेक देशों में हवाई अड्डे बंद हो गए हैं या सही तरीके से काम नहीं कर रहे हैं। ईरान अपनी क्षमता के मुताबिक माकूल जवाब दे रहा है। हालांकि, पूरा ईरान अब निशाने पर है और अमेरिकी रुख से लगता है कि हमला दिनोंदिन आक्रामक होता जाएगा। अमेरिका जल्दी से जल्दी अपने मकसद पूरे करना चाहता है। यहां ईरान की रणनीति हमले की ही नहीं, अपने लोगों को बचाने की भी होनी चाहिए।

हालांकि, इस युद्ध में सबसे बड़ी चिंता की बात है कि ईरान के पास परमाणु ठिकाने हैं और बताया जा रहा है, एक ठिकाने के पास बमबारी भी हुई है। अगर अमेरिका परमाणु ठिकानों को ऐसे निशाना बनाने की गलती कर रहा है, तो उसे सचेत हो जाना चाहिए। दुनिया एक और हिरोशिमा-नागासाकी देखना नहीं चाहेगी। परमाणु ताकत सहेजकर रखने की चीज है, उसका किसी भी युद्ध में परोक्ष या प्रत्यक्ष प्रयोग नहीं होना चाहिए। हालांकि, युद्ध नीति बहुत निर्मम होती है, अमेरिकी इरादा अपनी आक्रामकता से ईरान को विचलित करने का होगा। ईरान के ऐसे ठिकानों को वह निशाना बनाएगा, ताकि ईरानी ताकत की रीढ़ ही नहीं, उसका मनोबल भी टूट जाए। ईरान इस बात को जानता है कि अमेरिका मानसिक स्तर पर भी युद्ध लड़ रहा है। अमेरिकी इरादा चाहे जो हो, दुनिया कतई नहीं चाहेगी कि कहीं भी किसी परमाणु प्रतिष्ठान या भंडार को क्षति पहुंचे। ईरान से कहीं अधिक जिम्मेदारी और समझदारी की उम्मीद हम अमेरिका से कर सकते हैं। हालांकि, चिंता की बात है, अमेरिकी राष्ट्रपति ने चार-पांच सप्ताह तक युद्ध चलने के संकेत दिए हैं। इसका मतलब है, एक महीने तक चिंता बनी रहेगी। जब दो ताकतवर देश लड़ते हैं, तब जीत या अपने बचाव के लिए किसी भी सीमा तक जाने का जोखिम उठा सकते हैं। अतः संयुक्त राष्ट्र को यह बात बार-बार दोहरानी चाहिए- युद्ध में कहीं संयम ऐसे न टूट जाए कि पूरी इंसानियत कराह उठे।

दुनिया नहीं चाहेगी कि कहीं भी परमाणु प्रतिष्ठान को क्षति पहुंचे। ईरान से कहीं अधिक जिम्मेदारी और समझदारी की उम्मीद हम अमेरिका से कर सकते हैं।

एक अन्य चिंता यह है कि आतंकी संगठन भी इस युद्ध या संघर्ष में अपना हाथ साफ करने उतर आए हैं। आतंकी संगठन हिजबुल्लाह ने इजरायल को निशाना बनाना शुरू कर दिया है। हिजबुल्लाह को ईरान का समर्थन हासिल रहा है। संघर्ष के बीच यह एक ऐसा प्रतिकूल बदलाव है, जिससे चिंता बहुत बढ़ जाती है। किसी आतंकी संगठन के लिए कोई सीमा खींचना बहुत कठिन कार्य है। मध्यपूर्व के देशों ने अनेक आतंकी संगठनों को पाल रखा है और इन संगठनों को काबू में रखने की जिम्मेदारी उनके पैतृक देशों को उठानी चाहिए। इसमें कोई शक नहीं कि मध्यपूर्व में स्थित अमेरिका और उसके सहयोगियों के ठिकानों, दूतावासों, कार्यालयों को बहुत नुकसान हो रहा है। कोई पर्ल हार्बर जैसा हादसा न हो, ऐसी उम्मीद रखना जरूरी है।

हिन्दुस्तान Hindustan | 75 साल पहले 03 मार्च, 1951

भारत की अस्वीकृति

जब काश्मीर के बारे में एंग्लो-अमरीकी प्रस्ताव प्रकाशित हुआ था, तभी एक संवाद एजेंसी ने यह समाचार प्रसारित किया था कि भारत उसे अस्वीकार कर देगा। संभवतः भारत सरकार ने एंग्लो-अमरीकी प्रस्ताव पर पूरी तरह विचार भी नहीं किया था, किन्तु काश्मीर के बारे में भारत के विचारों को जानने वाला कोई भी व्यक्ति प्रस्ताव को देख कर यह कह दे सकता था कि भारत उसे स्वीकार नहीं कर सकता। सुरक्षा परिषद की ताजा बैठक में भारतीय प्रतिनिधि श्री नृसिंह राव ने जो विचार प्रकट किये हैं, उससे यह तथ्य सामने आ गया है कि भारत एंग्लो-अमरीकी प्रस्ताव को स्वीकार करने में सर्वथा असमर्थ है। श्री राव ने उन कारणों को सुसंगत रूप में सुरक्षा परिषद के सामने रख दिया है, जिनके आधार पर भारत सरकार एंग्लो-अमरीकी प्रस्तावों को स्वीकार नहीं कर सकती।

जनमत संग्रह के पहले काश्मीर में विसैन्यीकरण किस रूप में किया जाये, यह विवाद का मुख्य विषय है। एंग्लो-अमरीकी प्रस्ताव में कहा गया है कि सर ओवन डिक्सन की जगह नियुक्त होने वाला संयुक्त राष्ट्रीय प्रतिनिधि सर डिक्सन के सुझावों के आधार पर, जरूरत हो तो उनमें कुछ हेर फेर कर काश्मीर का विसैन्यीकरण कराये और काश्मीर में विदेशी फौजों के रखे जाने की संभावना पर भी विचार करे। सर ओवन का यह कहना था कि पाकिस्तान की फौजों के साथ भारत को भी अपनी फौजें काश्मीर से हटा लेनी चाहिए। सर ओवन डिक्सन ने एक सुझाव यह भी दिया था कि कुछ उद्देश्यों के लिये पाकिस्तानी फौजों को काश्मीर में रहने दिया जाये। एक उद्देश्य यह बताया गया था कि पाकिस्तानी फौजें कबायलियों और अन्य हमलावरों को काश्मीर घाटी में प्रविष्ट नहीं होने देंगी। किन्तु जिस पाकिस्तान ने शुरू में हमलावरों को सहायता दी और जो बाद में स्वयं ही हमलावर बन गया हो, उस पर भविष्य के लिए कैसे भरोसा किया जा सकता है। भारत का यह कहना है कि एंग्लो-अमरीकी प्रस्ताव काश्मीर कमीशन के उन निर्णयों के विरुद्ध जाता है, जिनको दोनों पक्षों ने मान्य किया है। काश्मीर कमीशन ने अपने प्रस्तावों में यह स्वीकार किया है कि पाकिस्तानी फौजों को काश्मीर से पूर्णतया हटाया जायेगा और उतनी भारतीय फौजों को काश्मीर में बने रहने दिया जायेगा, जितनी राज्य की सुरक्षा के लिये आवश्यक होंगी।

हर भारतीय को बचाने की प्रतिबद्धता

ईरान-इजरायल युद्ध में शामिल तमाम देशों के साथ हमारे ताल्लुकात लगातार बने रहने चाहिए, ताकि वहां फंसे भारतीयों की हर हाल में सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके।

यहां स्कैन करें

अनिल त्रिगुणायत | पूर्व राजदूत, जॉर्डन

ईरान-इजरायल जंग में भारत का कूटनीतिक कदम संतुलित ही कहा जाएगा। वास्तव में, 2014-15 के बाद से हमने अपने रिश्ते को 'डी-हायफनेट' किया है। इसका मतलब है, हम तमाम देशों से द्विपक्षीय संबंध बनाने लगे हैं, पर वह एक-दूसरे के अधीन नहीं है। मसलन, हमारे रिश्ते यदि इजरायल के साथ हैं, तो ईरान के साथ भी हैं और उन दोनों की आपसी दुश्मनी से हमारा संबंध प्रभावित नहीं हो रहा। मध्यपूर्व में तो हमने कई 'रणनीतिक साझेदारियां' की हैं, जिनमें इजरायल, ईरान, सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात, कतर, मिस्र जैसे सभी देश शामिल हैं। अभी चूंकि हमारे तीनों 'स्ट्रैटिजिक साझेदार' (ईरान, इजरायल व अमेरिका, जो हमारा 'ग्लोबल कॉम्प्रिहेंसिब स्ट्रैटिजिक पार्टनर' है), जंग में उलझे हुए हैं, इसलिए हमारा किसी एक देश की तरफदारी न करना ही उचित है।

ऐसा इसलिए भी नहीं किया जा सकता, क्योंकि हम 70-80 फीसदी ऊर्जा संसाधन के लिए पश्चिम एशिया पर निर्भर हैं और करीब एक करोड़ प्रवासी भारतीय वहां बसते हैं, जो लगभग 45 अरब डॉलर राशि 'रेमिटेंस' के रूप में वहां से भारत भेजते हैं। ऐसे में, किसी एक का पक्ष लेना प्रवासी भारतीयों को वहां प्रभावित कर सकता है, इसलिए भारत सोच-समझकर कदम उठा रहा है।

इस युद्ध की निंदा करते हुए जो बयान जारी किया गया है, उसमें दो चीजें महत्वपूर्ण हैं। पहली, 'संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता का सम्मान' होना चाहिए, और दूसरी- इस जंग का कूटनीतिक समाधान निकलना चाहिए। जब हम संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता की वकालत करते हैं, तो उसका महत्व दोनों पक्षों के लिए है। अमेरिका और इजरायल ने निस्संदेह ईरान की संप्रभुता पर चोट की है, पर जवाब में ईरान ने खाड़ी के तमाम देशों पर जो मिसाइलें दागीं, उसका अर्थ है कि तेहरान ने भी इन देशों की संप्रभुता का हनन किया है। हमारा मत स्पष्ट है, हम दोनों पक्षों से रुकने को कह रहे हैं। विदेश मंत्री एस जयशंकर पश्चिम एशिया के देशों के संपर्क में हैं। खुद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने संयुक्त अरब अमीरात के राष्ट्रपति शेख मोहम्मद बिन जायद अल नाहयान और इजरायली प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू से दोबारा बातचीत की है।

मध्यपूर्व सुलगा

बहरहाल, जिस तरह से मिसाइलें दागी जा रही हैं, यह जंग फिलहाल थमती नहीं दिख रही। ऊर्जा संकट तो कुछ दिन तक हम झेल सकते हैं, क्योंकि लगभग 45 दिनों का भंडार अपने पास है। हां, इसकी कीमत कुछ बढ़ सकती है, पर सबसे बड़ी दिक्कत प्रवासी भारतीयों को बचाने की होगी। अभी तो लक्षित हमले हो रहे हैं, पर इन हमलों का दायरा बढ़ सकता है, क्योंकि ईरान का शीर्ष नेतृत्व करीब-करीब खत्म हो चुका है। लिहाजा, संघर्ष में शामिल तमाम देशों के साथ हमारे ताल्लुकात लगातार बने रहने चाहिए, ताकि वहां फंसे भारतीयों की हर हाल में सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके। संयुक्त अरब अमीरात ने अपने यहां फंसे तमाम प्रवासियों के खान-पान और मुफ्त में ठहरने की सुविधा सुनिश्चित की है, जिसकी भारत सरकार ने उचित ही सराहना की है।

अब संभव हो, तो हमें अपने 'विशेष दूत' इन देशों में भेजने चाहिए, खास तौर से ईरान और इजरायल में। इतना ही नहीं, यह युद्ध जल्द से जल्द खत्म हो, इसके लिए भी प्रयास होने चाहिए। इस बारे में बयान दूसरे देशों में जाकर दिए जा सकते हैं। पश्चिम एशिया की लड़ाई भारत के खास हितों पर असरंदाज होती है, इसलिए क्षेत्रीय सुरक्षा व स्थिरता को लेकर नई दिल्ली लगातार प्रयत्नशील रही है। बावजूद इसके कभी-कभी स्थितियां प्रतिकूल हो जाती हैं, जैसी कि अभी दिख रही हैं।

फिलहाल लग यही रहा है कि भारतीयों को सुरक्षित निकालने के प्रयास किए जाएंगे। रविवार की रात सुरक्षा मामलों की मंत्रिमंडलीय समिति (सीसीएस) की बैठक में इस बात को लेकर चर्चा होने की भी खबर है। हालांकि, निजी अनुभव के आधार पर कहूं, तो सभी भारतीयों को इन देशों से निकालना काफी कठिन हो सकता है। मुझे साल 2011 के वे दिन अब भी याद हैं, जब लीबिया में क्रांति हो रही थी और मैं वहां अपनी सेवा दे रहा था। उस वक्त 17 से 18 हजार प्रवासी भारतीय फंसे हुए थे, जिनकी निकासी हवाई मार्ग से और पड़ोसी देश के माध्यम से हो सकी। ऐसा इसलिए संभव हुआ, क्योंकि मुअम्मर गद्दाफी की सरकार थी। हालांकि, एक कटु सत्य यह भी है कि लोग आसानी से निकलना नहीं चाहते, जिनकी अलग-अलग वजहें हो सकती हैं। एक कारण मैं बताना चाहूंगा।

जब हम लीबिया से भारतीयों की सुरक्षित निकासी में लगे थे, तब गद्दाफी के जन्मस्थान सिरते में कहा गया कि जो यहां रुकेगा, उनकी तनख्वाह तीन गुना तक कर दी जाएगी। नतीजतन, महज सात भारतीयों को ही हम उस स्थान से वापस ला सके, जबकि आंकड़ों के मुताबिक वहां करीब 1,000 भारतवंशी रह रहे थे।

जाहिर है, युद्धरत क्षेत्रों से लोगों को बहुत आसानी से नहीं निकाला जा सकता। फिर, इस बार तो प्रवासी भारतीयों की संख्या भी अधिक है और देश भी कई हैं। अकेले संयुक्त अरब अमीरात में 40 लाख के करीब भारतवंशी रहते हैं। ईरान में 10 हजार, इजरायल में लगभग एक लाख, बहरीन में तीन लाख, इराक व जॉर्डन में 17-17 हजार, कुवैत में 10 लाख, सऊदी अरब में 25 लाख और कतर में नौ लाख से अधिक भारतीय रह रहे हैं। युद्ध के बीच में इनको निकालने में मुश्किलें पेश आएंगी, इसलिए इस जंग का रुकना आवश्यक है। हां, कुछ लोगों को मिस्र होकर निकालने के प्रयास किए जा सकते हैं, पर चूंकि हवाई सेवा पूरी तरह से ठप है और समुद्री मार्ग भी सुरक्षित नहीं है, इसलिए यह भी कोई आसान काम नहीं होगा।

हालांकि, सच यह भी है कि अमेरिका अपने सैनिकों की मौत बर्दाश्त नहीं कर सकता। इससे वहां की सरकार पर घरेलू दबाव बढ़ जाता है। फिर, यह युद्ध तो अमेरिकी कानून के हिसाब से भी न्यायसंगत नहीं है। अमेरिकी सरकार को किसी भी युद्ध में उतरने से पहले कांग्रेस (संसद) की अनुमति लेनी होती है, इसलिए राष्ट्रपति ट्रंप ने इसे 'ऑपरेशन' बताया है, 'युद्ध' नहीं, पर जिस तरह से इसमें अमेरिकी सैनिकों के भी मारे जाने की खबर आने लगी है, उससे उनकी पेशानी पर बल पड़ सकते हैं। हालांकि, यह जब तक नहीं होता, तब तक हमारे लिए हालात प्रतिकूल ही हैं। फिर भी, हर भारतीय जान को बचाने के लिए हम प्रतिबद्ध हैं।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

चुनावी मोर्चाबंदी को मजबूत कर रहे तमिल महारथी

दक्षिण एक्सप्रेस

यहां स्कैन करें

एस श्रीनिवासन | वरिष्ठ पत्रकार

तमिलनाडु विधानसभा का चुनाव एक दिलचस्प चरण में प्रवेश कर गया है। इस चुनाव की तारीखों की घोषणा किसी भी समय हो सकती है। इसलिए, सभी सियासी खिलाड़ी अपने-अपने दांव चल रहे हैं। सत्तारूढ़ द्रमुक ने 16 दलों का एक जंबो गठबंधन तैयार किया है, तो उसके मुकाबले विपक्षी अन्नाद्रमुक गठजोड़ में लगभग दस पार्टियां हैं। ये दोनों गठबंधन पूरी तरह चुनावी मूड में आ गए हैं, पर अभिनेता विजय की नई नवेली पार्टी टीवीके अभी अधर में है।

द्रमुक नेता एम के स्टालिन 2021 से मुख्यमंत्री के पद पर हैं और अगर वह दूसरी बार सत्ता में आते हैं, तो तमिलनाडु में वह इतिहास बनाएंगे। स्टालिन ने अपने पिता एम करुणानिधि से सत्ता ग्रहण की थी। अपने बेटे को उप-मुख्यमंत्री बनाकर उन्होंने सत्ता के लिए तीसरी पीढ़ी का दावेदार तैयार कर दिया है। उनके एक मंत्री को भ्रष्टाचार के आरोप में एक साल तक जेल में रहना पड़ा था, इससे स्टालिन पर वंशवाद और भ्रष्टाचार के आरोप भी लगे हैं, मगर उनके निरापद बने रहने की एक वजह पलानीस्वामी के नेतृत्व में विपक्ष का कमजोर रहना भी है। दरअसल, अन्नाद्रमुक अंदरूनी कलह में ही उलझा रहा। पिछले चुनाव में द्रमुक ने विधानसभा की कुल 234 सीटों में से 173 जगहों पर अपने उम्मीदवार खड़े किए थे और बाकी सीटें गठबंधन के घटकों के लिए छोड़ दीं। इस बार द्रमुक 160 सीटों पर चुनाव लड़ सकती है।

द्रमुक नेता स्टालिन 2021 से मुख्यमंत्री के पद पर हैं और अगर वह दूसरी बार सत्ता में आते हैं, तो तमिलनाडु में वह इतिहास बनाएंगे।

उधर, पूर्व मुख्यमंत्री जे जयललिता के बेहद भरोसेमंद ओ पनीरसेल्वम भी 27 फरवरी को अपने बेटे के साथ द्रमुक में शामिल हो गए, जो साल 2019 में तमिलनाडु से एनडीए के इकलौते लोकसभा सदस्य थे। द्रमुक ने उन्हें दो विधानसभा सीटें और उनके बेटे रवींद्रनाथ को राज्यसभा भेजने का वादा किया है।

दिवंगत अभिनेता विजयकांत की पार्टी 'डीएमडीके' को एक राज्यसभा सीट और छह विधानसभा सीटें मिलने की संभावना है। इसी तरह, कांग्रेस को एक राज्यसभा सीट और पिछली बार की 25 की जगह इस बार 28 सीटें देने पर द्रमुक के भीतर गंभीर चर्चा है।

भाजपा ने अपने क्षत्रप के अन्नामलाई को प्रदेश अध्यक्ष पद से हटाकर पार्टी की कमान नयनार नागेंद्रन को सौंप दी और राज्य एनडीए में अपना दबदबा कुछ कम दिखाने की कोशिश की है। साल 2024 के आम चुनाव में अकेली मैदान में उतरी अन्नाद्रमुक पार्टी इस बार एनडीए में लौट आई है। हालांकि, गठबंधन को बढ़ाने में उसके नेता पलानीस्वामी नाकाम रहे हैं और उन्होंने पनीरसेल्वम, जयललिता की सहेली शशिकला नटराजन और टीटीवी दिनाकरन के साथ भी तालमेल से इनकार कर दिया। हालांकि, केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने टीटीवी दिनाकरन की पार्टी को एनडीए में लाकर मुश्किलें कुछ कम कीं। उन्होंने अंबुमणि रामदास के दल 'पीएमके' के साथ समझौता किया, जिससे पिता-पुत्र में सुलह की उम्मीदें जगी हैं। भाजपा अभिनेता विजय को भी एनडीए में लाने की कोशिश कर रही है। शुरू में उसका ख्याल था कि विजय को अकेला छोड़ दिया जाए, ताकि वह द्रमुक के वोट काट सकें, मगर जब जमीनी रिपोर्टें आने लगीं कि विजय कमजोर होती अन्नाद्रमुक को ही और नुकसान पहुंचा सकते हैं, तो भाजपा सक्रिय हो गई।

इस बीच, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने राज्य में अपने अभियान को दोगुना कर दिया है। उन्होंने रविवार को पुडुचेरी व मदुरै का दौरा किया और 6,700 करोड़ रुपये की नई योजनाओं व कार्यक्रमों की घोषणा की। प्रधानमंत्री ने थिरुपरनकुंद्रम के मुरुगन मंदिर में प्रार्थना भी की। भाजपा और हिंदुत्ववादी लोग जहां इस जगह को 'दक्षिण का अयोध्या' कहते हैं, वहीं स्थानीय लोग शांत हैं, क्योंकि हिंदू और मुसलमान कई पीढ़ियों से इस मंदिर और नजदीकी दरगाह में एक साथ प्रार्थना करते आ रहे हैं।

अन्नाद्रमुक के क्षरण से भाजपा की दीर्घकालिक रणनीति को लाभ होता दिख रहा है। द्रमुक व अन्नाद्रमुक, दोनों द्रविड़ पार्टियां हैं, पर अन्नाद्रमुक अधिक मध्यमार्गी है। इसलिए धार्मिक प्रवृत्ति वाले राज्य में वह भाजपा के ज्यादा मुफीद है। प्रधानमंत्री मोदी फिर 5 व 11 मार्च को तमिलनाडु में होंगे। अटकलें हैं कि इसके तुरंत बाद चुनाव की तारीखों का एलान हो सकता है, क्योंकि नई विधानसभा मई के पहले हफ्ते तक गठित हो जानी है।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

मनसा वाचा कर्मणा

रुद्र का अर्थ सिर्फ रौद्र नहीं

रुद्र को क्यों गहराई से समझने की जरूरत है? रुद्र नाम लेते ही मन में एक विराट, करुणामय सत्ता की छवि उभरती है। भारतीय दर्शन में रुद्र को सृष्टि का आदि जनक कहा गया है। आपके मन में यह सहज सवाल उठ सकता है कि यदि समस्त जीव-जगत का एक ही परमपिता है, तो फिर मानव समाज में ऊंच-नीच, कुल-गोत्र और भेदभाव की दीवारें क्यों? जब मूल स्रोत एक है, तो उसकी संतानों में विभाजन का आधार क्या हो सकता है? इस दृष्टि से देखा जाए, तो पूरी मानवता एक ही परिवार है। जो लोग समाज में भेद उत्पन्न करते हैं, वे वस्तुतः उस एकत्व की भावना से दूर हैं।

रुद्र का अर्थ है- अनंत सत्ता। इसका शाब्दिक अर्थ 'रुलाने वाला' अवश्य है, किंतु यह अधूरा है। परमपुरुष केवल रुलाते नहीं, हंसाते भी हैं। जीवन की चरम पीड़ा में भी आंसू आते हैं और परम आनंद में भी। अंतर केवल इतना है कि शोक के अश्रु आंखों के मध्य भाग से गिरते हैं और आनंद के कोनों से। जैसे, मां अपनी पुत्री के विदा होने पर भी रोती है और उसके लौटने पर भी- एक बिछोह की पीड़ा से, दूसरी बार सुख से। यही जीवन का द्वंद्व है और इसी द्वंद्व के बीच रुद्र की लीला प्रवाहित होती है।

यह संसार आपेक्षिक है- क्षणभंगुर, परिवर्तनशील। इसकी सत्ता सापेक्ष है, जबकि परमपुरुष इस सापेक्षता से परे हैं। वह परम सत्ता हैं। जब मानव मन उस एक की ओर उन्मुख होता है, तब उसे बुद्धि का प्रकाश मिलता है। अग्रबुद्धि जागृत होते ही वह परमसत्ता का बोध कर लेता है। तब साधक ठहरता नहीं, वह सत्य की ओर दौड़ पड़ता है। इसी भाव से प्रार्थना उठती है- 'हे प्रभु, हमें अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलो।' यहां अंधकार अविद्या है, अज्ञान है, जो सत्य के प्रकाश को ढक देता है।

रुद्र को गुरु भी कहा गया है, पिता भी और शिक्षक भी। वे सब मिलकर एक ही हैं। इसी सत्य को प्रतीकात्मक रूप में 'पंचमुखी रुद्र' के जरिये समझाया गया है। रुद्र एक ही हैं, किंतु व्यवस्था के लिए उनके पांच मुख माने गए हैं- पांच दायित्व, पांच भूमिकाएं।

पहला है, दक्षिणेश्वर मुख। यह स्नेहिल पिता का है। इससे करुणा बरसती है। दूसरा है- बामदेव। यह अनुशासन का प्रतीक है। जब संतति मर्यादा भंग करती है, तो इससे डांट निकलती है, दंड मिलता है। तीसरा है ईशान मुख। यह समझाता है। चौथा है कालाग्नि मुख- कठोर फटकार का प्रतीक। यह डांटता, झकझोरता है, पर दंड नहीं देता। पांचवां मुख है-कल्याणसुंदरम्। यही रुद्र का परम स्वभाव है- अप्रतिम सौंदर्य, गंभीर करुणा से भरा हुआ। जैसे माता-पिता अपने शिशु को देखते हैं, जिसमें केवल स्नेह होता है। यही रुद्र की अंतःप्रकृति है। दक्षिण और वाम मुख व्यवस्था के लिए हैं, मध्य का यह करुणामय स्वरूप ही उनका वास्तविक हृदय है।

मां अपनी पुत्री के विदा होने पर भी रोती है और उसके लौटने पर भी- एक बार बिछोह की पीड़ा से, दूसरी बार सुख से। यही जीवन का द्वंद्व है और इसी द्वंद्व के बीच रुद्र की लीला प्रवाहित होती है।

श्री श्री आनंदमूर्ति

पोप लियो XIV | ईसाई धर्मगुरु

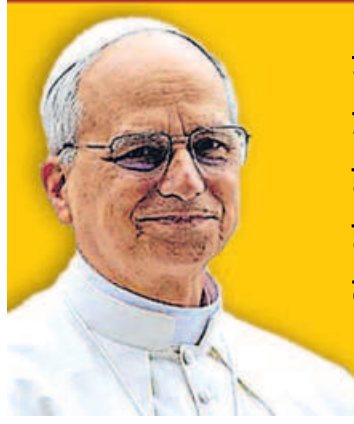

मध्यपूर्व और ईरान में जो हो रहा है, उसे मैं बहुत चिंता के साथ देख रहा हूं। स्थायित्व और शांति धमकियों या हथियारों के इस्तेमाल से नहीं मिलती, बल्कि सिर्फ सच्ची और जिम्मेदार बातचीत से मिलती है।

युद्ध समस्या का स्थायी समाधान नहीं

इतिहास साक्षी है कि युद्ध केवल तबाही का अध्याय लिखते हैं, सृजन का नहीं। यह किसी भी समस्या का स्थायी समाधान नहीं है। अमेरिका-इजरायल और ईरान के बीच चल रहे युद्ध में इस्लामिक क्रांति का चेहरा अयातुल्ला खामेनेई को बेशक मार दिया गया है, लेकिन युद्ध अब तक बंद नहीं हो सका है। खामेनेई की मौत के बाद शिया समुदाय में जबर्दस्त नाराजगी है और वह जवाबी प्रतिक्रिया देने की बात कह रहा है। इसलिए, विश्व के लिए यह चिंता का विषय है कि आखिर युद्धोन्माद से प्रभुत्ववादी शक्तियां कौन सा शांति-संदेश देना चाहती हैं?

स्थिति यह है कि भारत जैसे पंथनिरपेक्ष देश में भी इस युद्ध को लेकर कड़ी प्रतिक्रिया देखने को मिली है। देश भर में शिया बाहुल्य इलाकों में प्रदर्शनकारी सड़कों पर उतर आए हैं और अमेरिका व इजरायल विरोधी नारे लगा रहे हैं। इस युद्ध के लिए किस-किस देश को उत्तरदायी ठहराया जाए, यह स्पष्ट नहीं है, पर इतना अवश्य है कि विश्व भयावह कल की ओर अग्रसर है। प्रभुत्ववादी शक्तियां अपनी शक्ति के दंभ में अन्य राष्ट्रों के सामने स्वायत्तता एवं स्वतंत्रता को बचाये रखने की चुनौतियां पेश कर रही हैं। इसको किसी भी स्थिति में उचित कृत्य नहीं ठहराया जा सकता। इस युद्ध से उत्पन्न स्थिति पर जब अनेक राष्ट्र प्रमुखों की टिप्पणियां प्रकाश में आती हैं, तो लगता है कि दूसरों के शीशे के घरों पर पत्थर फेंकने वाले लोग स्वयं को शांति-दूत सिद्ध करने में लगे हैं। रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने युद्ध को मानवीय नैतिकता और अंतरराष्ट्रीय कानून के सभी मानदंडों का उल्लंघन बताया है, जबकि स्वयं वह यूक्रेन के खिलाफ युद्ध में उतरे हुए हैं। चीन, जो अपनी विस्तारवादी नीतियों के चलते पड़ोसी देशों की सीमाओं के अतिक्रमण का दोषी है, इस युद्ध को अंतरराष्ट्रीय कानून का उल्लंघन बताते हुए कह रहा है कि दुनिया के जंगल के कानून की ओर लौटने का विरोध होना चाहिए।

बहरहाल, मानवाधिकार आयोग इस प्रकार के युद्धोन्माद को रोकने के लिए क्या भूमिका निभाता है, यह तो भविष्य के गर्भ में है, लेकिन इतना अवश्य है कि भारत जैसे देश में आंतरिक जातीय और वर्ग-संघर्ष को बढ़ावा देने के कुत्सित प्रयास करने वाले तत्वों के लिए यह चिंतन का विषय होना चाहिए कि युद्ध के मुहाने पर खड़े विश्व के सम्मुख जब अस्तित्व को बचाए रखने की चुनौती हो, तब भारत के भीतर स्वार्थवश अमानवीय विघटनकारी कृत्य करने को सही ठहराने का औचित्य क्या है? क्या उन्हें भारत की अनेकता में एकता की समृद्ध परंपरा अच्छी नहीं लगती?

सुधाकर आशावादी, टिप्पणीकार

अनुलोम-विलोम

युद्ध बनाम शांति

शांति के लिए कभी-कभी जंग भी जरूरी

यह सही है कि युद्ध हर समस्या का समाधान नहीं है, लेकिन कभी-कभी शांति लाने के लिए जंग की जरूरत होती है। पश्चिम एशिया का मौजूदा टकराव कुछ यही संदेश दे रहा है। ईरान जिस तरह से अपने परमाणु कार्यक्रम आगे बढ़ा रहा था, उससे स्वाभाविक ही खतरे की बू आ रही थी। जब कूटनीतिक प्रयास कमजोर हो गए, तभी इस युद्ध की शुरुआत की गई। अन्यथा, पहले दबाव बनाकर ईरान के परमाणु कार्यक्रम को रोकने की पुरजोर कोशिश की गई थी। बहरहाल, अब जबकि युद्ध का आगाज हो गया, यह जरूरी है कि ईरान को इस कदर बेहाल कर दिया जाए कि वह फिर से अपनी नापाक मंशा के बारे में सोच न सके। संप्रभुता का ख्याल रखना निश्चय ही जरूरी है, लेकिन जब कोई अपनी संप्रभुता को अपने कवच के रूप में इस्तेमाल करने लगे, तो विश्व शांति के लिए उस कवच को भेदना भी जरूरी होता है।

यह करना क्यों जरूरी था, इसका एहसास इससे भी होता है कि फिलहाल दुनिया कई मोर्चों पर अस्थिर है, फिर भी इस युद्ध की शुरुआत की गई। रूस व यूक्रेन का युद्ध तो चौथे वर्ष में प्रवेश कर गया है और इजरायल व हमास के बीच भी तनाव बना हुआ है। यहां तक कि अफगानिस्तान और पाकिस्तान भी आपसी संघर्ष में उतर चुके हैं। ऐसे समय में, ईरान पर हमला किया गया, क्योंकि वहां की व्यवस्था वैश्विक शांति व्यवस्था के प्रतिकूल थी। यही कारण है कि ऊर्जा संकट की आशंका बढ़ने, आयात-निर्यात पर असर होने व विश्व अर्थव्यवस्था के प्रभावित होने के बावजूद अमेरिका-इजरायल ने मिलकर ईरान पर निशाना साधा, और उसके सर्वोच्च नेता को मार गिराया। अब चूंकि इस युद्ध का दायरा बढ़ चुका है, इसलिए समुद्री मार्ग की सुरक्षा कहीं अधिक अहम है।

अच्छा तो यही होता कि वैश्विक संस्थाएं ईरान को रोकने का काम करतीं। संयुक्त राष्ट्र से उम्मीद कहीं अधिक रही है, लेकिन दुखद है कि वह उम्मीदों पर खरा नहीं उतर पाती। अगर संयुक्त राष्ट्र ने पहल की होती, तो संभव है कि ईरान पर दबाव बनता और वह अपने परमाणु कार्यक्रम को रोक देता। मगर हुआ यूं कि संयुक्त राष्ट्र जैसी संस्थाएं बेअसर साबित हुईं और ईरान अपनी मंशा में आगे बढ़ता रहा। अब जबकि एक बड़ा क्षेत्र इस युद्ध की चपेट में है, जरूरी है कि ईरान में पूरी तरह से इस्लामी सत्ता का अंत कर दिया जाए। वैसे भी, वहां के लोग अपनी शासन-व्यवस्था से नाराज हैं। उनकी नाराजगी को दूर करने के लिए शाह शासन की फिर से स्थापना हो जानी चाहिए।

दीपक, टिप्पणीकार

आओ खेलें, प्रेम और आनंद की होली

रंगभरी होली की अपनी मौज है। अपनी मस्ती है। उसका अपना एक अलग ही आनंद है, पर ज्ञान की होली बिल्कुल विचित्र होती है। ज्ञान की होली के लिए पहले आपको स्वच्छ होना पड़ता है। वैराग्य का साबुन अपने मन पर लगाना पड़ता है। जिसने यह होली एक बार खेल ली और इसके रंग से सराबोर हो गया, तो यह रंग जीवन भर नहीं उतरेगा।

अध्यात्म

आनंदमूर्ति गुरुमां

होली (04 मार्च)

हमारे उत्सवों में प्रेम जुड़ा है। भक्ति जुड़ी है। योग जुड़ा है। आनंद जुड़ा है। साधारणतः लोगों को जिस होली का ज्ञान है- वह है रंगों की होली, फूलों की होली, जल की होली, लेकिन एक होली जो अक्सर भक्तों के चित्त से छूट जाती है, वह है- प्रेम की होली, ज्ञान की होली। मेरे कृष्ण कन्हाई को जो प्रिय है, उस होली में सिर्फ बाहरी रंग नहीं होते हैं, उसमें वास्तविक रंग प्रेम का है, भक्ति का है।

हमारे यहां ज्ञानियों और योगियों ने एक दूसरी तरह की होली की बात की है, जो वे अपने सद्गुरु के साथ खेलते हैं। यह बहुत शिष्टाचार से खेली जाती है। बहुत संयम से खेली जाती है। वहां आप अभद्रता, अशिष्टता नहीं कर सकते हैं। श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ गुरु कहता है कि ऐसी होली खेलो, जिसमें आपको ऐसा रंग लगे, जो अलौकिक हो, अवर्णनीय हो, अकथनीय हो। ऐसा रंग क्या लगाना, जो लगाया और नहाने से उतर जाए।

ज्ञान की होली, वैराग्य का साबुन

हालांकि, रंगों की होली की अपनी एक मौज है, एक मस्ती है, उसका एक अपना आनंद है, पर ज्ञान की होली बिल्कुल विचित्र होती है। ज्ञान की होली के लिए पहले आपको स्वच्छ होना पड़ता है, इसलिए कहा कि वैराग्य का साबुन अपने मन को लगाओ।

जिसके मन में वैराग्य नहीं है, वहां भगवान से प्रीति और संसार की भोग वासना, ये दो चीजें एक साथ नहीं हो सकती। भोगों की वासना है, संसार की तड़प है, मैं बड़ा हो जाऊं, मैं प्रसिद्ध हो जाऊं। ऐसी कामना है, तो ये सब तुम्हारे अंहकार की शोभा बन जाएंगे। चाहे कोई गृहस्थ हो या संन्यासी या ब्रह्मचारी या त्यागी हो या कोई योगी हो या फिर कोई भक्त हो, वैराग्य के साबुन का उपयोग सबको करना चाहिए।

राग-द्वेष छोड़कर मन को रंगे

अब प्रश्न आता है कि वैराग्य क्या है? संसार की वस्तुएं हों या स्वर्ग की वस्तुएं हों या बह्मलोक की वस्तुएं हों, तुम्हारे मन में किसी भी विषय-भोग की चाह नहीं रह गई है। अगर तुम्हारे लिए वे तृण समान हैं, तो इसी को हम वैराग्य कहते हैं। सिर्फ पत्नी, एक परिवार, एक घर छोड़ देने का नाम वैराग्य नहीं होता। अगर एक स्वामी, एक संन्यासी, एक महात्मा के लिए वैराग्य आवश्यक है, तो जानिए फिर वह आपके लिए भी उतना ही आवश्यक हो जाता है। जो महात्मा, ज्ञानी, गुणी, विवेकी है, जिसके पास शास्त्र का बोध है, समझ है, अगर उसको वैराग्य की जरूरत है, तो फिर एक साधारण व्यक्ति को तो उससे भी ज्यादा जरूरत है।

इस शरीर के साथ रहते हुए, जीते हुए यह सदैव याद रहे कि शरीर मरणधर्मा है। इस वैराग्य वृत्ति को पालना चाहिए। दिन हो, रात हो, यह याद रहे कि मन को हम राग रहित रखें, द्वेष रहित रखें। वैराग्य के साबुन से अपने दिल को साफ करो और मल-मल के उजला बनाओ।

अंदर का मैल करें साफ

हमारे देश में समय के साथ कुछ चीजें बदल गई हैं। पहले होली के अवसर पर सफेद कपड़े खासतौर पर बनवाए जाते थे, क्योंकि सफेद रंग पर जब गुलाबी, हरा, नीला, पीला रंग पड़ता है, तो उसकी छटा ही कुछ और होती है, लेकिन आजकल लोग होली पर फटे-पुराने, घिसे हुए कपड़े पहनते हैं, जिस पर रंग चढ़ता ही नहीं है। एक जमाना था, जब होली के दिन के लिए विशेष रूप से सफेद कपड़े धारण किए जाते थे। होली से पहली रात्रि को होलिका की पूजा करने के बाद अगली सुबह स्नान करके श्वेत वस्त्र पहनते थे, ताकि होली का रंग चढ़ सके। अपने मन से राग, द्वेष और आसक्ति की सब गंदगियों को वैराग्य और सुमिरन से दूर करो।

जब बज उठे अनहद नाद

आप वैराग्य और सुमिरन से परिपूर्ण होंगे, तो प्रेम तुमको एक ऐसी अवस्था का अनुभव दे सकता है, जिसे प्राप्त करके मन निश्छल और शांत हो जाए। फिर इस ठहरे हुए मन में अनहद नाद बज उठता है। यह ज्ञानियों की होली है।

जब मन को बाहर के शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध से हम भीतर लौटा लेते हैं, तब मन अंतर्मुखी हो जाता है। अपने परमात्मा के नाम सुमिरन में एकाग्र हो जाता है, तो पूर्णरूपेण ठहरे हुए इस मन में श्री कृष्ण आकर विराजमान हो जाते हैं।

जब परमात्मा के संग हमारा प्रेम का बंधन बंध जाता है, तो यही बहार है। इसी को हम फागुन मास बोलते हैं। मीरा क्या कह रही हैं कि मन को परमात्मा के साथ जोड़कर रखो, प्रेम के रंग में भरकर रखो। ऐ मन! खूब खेल इस होली को, प्रेम की इस होली को, ज्ञान की इस होली को। इस जीवन को प्रभु का प्रसाद समझकर ग्रहण करिए। इस प्रेम और आनंद की सोच के साथ आप जीवन को जीते हैं, तो हमारा हर दिन फागुन मास है, हर दिन होली है।

सप्ताह के व्रत-त्योहार

03 मार्च से 09 मार्च 2026 तक

03 मार्च (मंगलवार) : फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा तिथि सायं 05.08 मिनट तक। फाल्गुन पूर्णिमा। ग्रस्तोदय खग्रास चंद्रग्रहण। होली पर्व। श्री चैतन्य महाप्रभु जयंती। गंडमूल प्रातः 07.32 मिनट तक।

04 मार्च (बुधवार) : चैत्र कृष्ण प्रतिपदा तिथि सायं 04.49 मिनट तक। चैत्र कृष्ण पक्ष प्रारंभ। वसंतोत्सव। धुलेंडी। होलाष्टक समाप्त।

05 मार्च (गुरुवार) : चैत्र कृष्ण द्वितीया तिथि सायं 05.04 मिनट तक। भद्रा रात्रि 05.29 मिनट (सूर्योदय पूर्व) से। संत तुकाराम जयंती।

06 मार्च (शुक्रवार) : चैत्र कृष्ण तृतीया तिथि सायं 05.54 मिनट तक। भद्रा सायं 05.54 मिनट तक। श्रीगणेश चतुर्थी व्रत।

07 मार्च (शनिवार) : चैत्र कृष्ण चतुर्थी तिथि सायं 07.18 मिनट तक।

08 मार्च (रविवार) : चैत्र कृष्ण पंचमी तिथि रात्रि 09.12 मिनट तक पश्चात षष्ठी तिथि। श्री रंग पंचमी।

09 मार्च (सोमवार) : चैत्र कृष्ण षष्ठी तिथि रात्रि 11.28 मिनट तक पश्चात। भद्रा रात्रि 11.28 मिनट से। एकनाथ षष्ठी।

-पं. ऋभुकांत गोस्वामी

देवताओं की होली रंग पंचमी

रंग पंचमी (08 मार्च)

होली के पांचवें दिन यानी चैत्र माह के कृष्ण पक्ष की पंचमी तिथि को रंग पंचमी मनाई जाती है। इसकी शुरुआत होली के अगले दिन से हो जाती है, जो पंचमी तक चलती है। ऐसी मान्यता है कि रंग पंचमी के दिन सभी देवता अपने भक्तों साथ होली खेलने के लिए पृथ्वी पर आते हैं, इसलिए रंग पंचमी को देव पंचमी भी कहा जाता है।

पौराणिक कथाओं के अनुसार रंग पंचमी की परंपरा द्वापर युग में कृष्ण ने शुरू की थी। कृष्ण ने राधा के साथ चैत्र मास के कृष्ण पक्ष की पंचमी तिथि को होली खेली थी। यह देखकर गोपियां भी राधा-कृष्ण के साथ होली खेलने लगीं। देवी-देवताओं ने जब पृथ्वी पर आनंद की ऐसी अनोखी छटा देखी, तो उनके अंदर भी राधा-कृष्ण के साथ होली खेलने की इच्छा हुई। अपनी इस इच्छा को पूरी करने के लिए सभी देवी-देवताओं ने गोपियों और ग्वालों का रूप धारण लिया और उनके साथ होली खेलने ब्रज में आ गए, इसलिए रंग पंचमी को देवताओं की होली माना जाता है। द्वापर युग में शुरू हुई यह परंपरा आज भी चल रही है। ऐसी मान्यता है कि रंग पंचमी के दिन राधा-कृष्ण अपना वेश बदलकर भक्तों के साथ होली खेलने पृथ्वी पर आते हैं।

एक मान्यता यह भी है कि कृष्ण ने गोपियों के साथ रासलीला रचाने के बाद रंग खेल कर उत्सव मनाया था। एक अन्य कथा कहती है, फाल्गुन पूर्णिमा के दिन पूतना का वध हुआ था। इस खुशी में नंदगांववासियों ने पांच दिन तक रंग खेलकर उत्सव मनाया था। पूतना पूर्व जन्म में राजा बलि की पुत्री रत्नमाला थी। एक दिन राजा बलि के यहां वामन पधारे। भगवान वामन की सुंदर और मनमोहक छवि देखकर रत्नमाला के मन में ममत्व जाग उठा। वह मन-ही-मन सोचने लगी कि मेरा भी ऐसा ही पुत्र हो, ताकि उसे हृदय से लगाकर दुलार करती। भगवान ने उसकी मन की इच्छा को जान लिया और तथास्तु कहा।

इसके बाद भगवान ने राजा बलि का अहंकार दूर करने के लिए तीन पग भूमि मांगी, तो रत्नमाला को बहुत क्रोध आया। उसके मन में विचार आया कि अगर ऐसा मेरा पुत्र होता, तो मैं उसे विष दे देती। भगवान ने उसके इस भाव को भी जानकर तथास्तु कह दिया। भगवान के इस वरदान के कारण ही रत्नमाला का अगला जन्म पूतना के रूप में हुआ।

एक अन्य पौराणिक कहानी के अनुसार फाल्गुन पूर्णिमा के दिन होलिका के मरने और प्रह्लाद के बचने की खुशी में लोगों ने पांच दिन तक रंग खेल कर उत्सव मनाया। भगवान शिव ने फाल्गुन पूर्णिमा के दिन ही रति को कामदेव को जीवित करने का आशीर्वाद दिया था। इसके बाद चारों ओर खुशियां छा गईं और देवताओं ने हर्षोल्लास के साथ रंगोत्सव मनाया, इसलिए इसे देव होली भी कहा जाता है। इस दिन पंचमी तिथि थी।

होलिका दहन के दिन जहां होलिका, प्रह्लाद और नृसिंह भगवान की पूजा की जाती है, वहीं धुलेंडी के दिन विष्णु और लक्ष्मी की पूजा का प्रचलन है। रंग पंचमी के दिन राधा-कृष्ण की पूजा की जाती है। खासतौर पर बरसाने में इस दिन उनके मंदिर में विशेष पूजा होती है। ब्रज क्षेत्र में रंग पंचमी के दिन को पांच दिन तक चलने वाले होली पर्व के समापन का दिन भी माना जाता है।

अश्वनी कुमार

जितने भक्त, उतने ही भक्ति के रूप

चिंतन

रामकिंकर उपाध्याय

मानस में भक्त के चार प्रकार बताए गए हैं- ज्ञानी, जिज्ञासु, अर्थार्थी एवं आर्त। चार प्रकार के भक्तों की बात कह देना बहुत सरल है। भक्ति में वास्तविकता-अवास्तविकता का प्रश्न पहले नहीं उठाया जाता। जब तैरना सीख जाएंगे, तभी नदी में उतरेंगे, ऐसा नहीं कहा जा सकता।

इसका तो श्रीगणेश ही व्यक्ति की अपनी मान्यता से होता है। संसार सत्य है या असत्य? विषय को चाहना उचित है या अनुचित? प्रारंभिक स्थिति में इन विवादों की कोई आवश्यकता नहीं। यहां तो सीधा आमंत्रण है।

तुम संकट से त्राण पाना चाहते हो! ये सब प्रभु से ही संभव है। ब्रह्म-सुख पाना चाहते हो, तो आओ, प्रारंभ कर दो प्रभु के चरणों में भक्ति। अर्थ और अभिलाषाओं की पूर्ति चाहते हो! रहस्य जानना चाहते हो! सब सर्वदा प्रभु द्वारा साध्य होगा। भय और लोभ की सहज वृत्ति से भक्ति का श्रीगणेश होता है। भगवान की जिज्ञासा भक्ति का मध्यभाग है। भगवान का सुख पाना, उसमें एक हो जाना, भक्ति की चरम परिणति है। भय से संत्रस्त आर्त हैं। लोभ से प्रेरित अर्थार्थी हैं। जानने की इच्छा वाला जिज्ञासु है। जान पाने वाला ज्ञानी है। मानस में-'ग्यानी प्रभुहि बिसेषि पिआरा' कहकर गोस्वामीजी ने पुष्ट कर दिया है।

मानस में भक्तों की ओर देखें, तो साधारण से लेकर असाधारण चरित्र वाले अनेक पात्र हमारे सामने आते हैं। दशरथ, गीध, वाल्मीकि, शबरी, कोल, भील, वानर, निशाचर आदि सब वहां (भक्ति में) एक पंक्ति में खड़े हुए दिखाई देंगे। ऐसी उदारता, जो कि अन्यत्र असंभव है। पात्रों में स्वभाव, आचार, विचार, आकांक्षा आदि किसी में भी साम्य नहीं है। बस, एकता का एक केंद्र है-'राम से संबंध।'

मानस में भक्ति की भी अनेक प्रसंगों में व्याख्या है। उसका विभाजन भी अनेक रूपों में किया गया है। भक्ति के नव भेद हैं। इस नवधा भक्ति का विभाजन भी दो भिन्न-भिन्न प्रसंगों में पृथक-पृथक रूपों में किया गया है। शबरी से कथित नवधा भक्ति और लक्ष्मण को दिए गए उपदेश में भक्ति का वर्णन भिन्न रूपों में किया गया है। वाल्मीकि द्वारा राम-आवास के लिए बनाए गए स्थानों में भक्ति का विभाजन चौदह रूपों में किया गया।

इस प्रकार बाह्य दृष्टि से देखें, तो बड़ी उलझन प्रतीत होती है, पर इसका निष्कर्ष एक ही है। वस्तुतः संसार में जितनी भांति की मनोवृत्ति वाले भक्त हैं, भक्ति के उतने ही भेद हो सकते हैं। अब वर्णन की सुविधा के लिए उसका विभाजन कुछ स्थिर रूपों में किया जा सकता है। उसे चार, नव, चौदह की सीमा में बांधकर जान लीजिए! एक भक्त है, जो भगवान की आराधना करता है, इस आराधना में उसका पूरा परिवार 'साथी' है।

भक्ति शास्त्र में यदि आर्त या अर्थार्थी को भक्त मान लिया गया, तो इसका तात्पर्य इन वस्तुओं को साध्य बना लेना नहीं है। भक्ति में मानसिक वृत्तियों के संकोचन की प्रणाली बड़ी अनोखी है। साधारण व्यक्ति के जीवन में विविध आकांक्षाएं हैं और उनकी पूर्ति के लिए अनेक आलंबन। अतएव वह अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए यत्र-तत्र भटकता रहता है। फिर भी जरूरी नहीं कि उसकी सभी इच्छाएं पूरी हों। भक्ति का प्रथम पग यही है कि इच्छाएं भले ही अनेक हों, पर उनके अनेक आलंबनों के स्थान पर एक आलंबन 'भगवान मात्र को' स्वीकार कर लिया जाए। स्वार्थ-पूर्ति की दृष्टि से भी भक्ति मत में यही मार्ग श्रेष्ठ है।

आस्था-अनास्था

समीर उपाध्याय ज्योतिर्विद्

चंद्र ग्रहण का आप पर क्या असर पड़ेगा

होली पर पड़ने वाले चंद्र ग्रहण का बारह राशियों पर क्या प्रभाव होगा?

-तारा जैन, दिल्ली

ज्योतिषीय गणना के अनुसार साल का पहला चंद्र ग्रहण 03 मार्च, 2026 को अपराह्न 03.20 से प्रारंभ होकर शाम 06.47 तक रहेगा। सूतक ग्रहण शुरू होने के 09 घंटे पहले लगेगा और ग्रहण अंत के साथ खत्म होगा।

यह ग्रहण पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र अर्थात सिंह राशि में लगेगा। पूर्ण चंद्र ग्रहण की अवधि 03 घंटे 27 मिनट होगी। ग्रहण भारत में चंद्रोदय के अनुसार अलग-अलग शहरों में सीमित समय तक नजर आएगा। भारत के पूर्वोत्तर राज्यों में 01 घंटे से ज्यादा, जबकि मुंबई, दिल्ली, चेन्नई, बंगलुरु जैसे पश्चिमी एवं दक्षिणी शहरों में 05 से 25 मिनट तक नजर आएगा। चंद्र ग्रहण ग्रहण का आपकी राशि पर पड़ने वाला प्रभाव :

मेष : पारिवारिक अशांति। निकटस्थ लोगों से दूरी। पूर्वानुमान गलत होंगे।

वृष : कार्यक्षेत्र में लाभप्रद परिवर्तन। निर्माण कार्य एवं खरीदारी पर खर्च।

मिथुन : प्रतियोगिता एवं विवाद में सफलता। खर्च व सम्मान में वृद्धि।

कर्क : स्वास्थ्य, मरम्मत तथा खरीदारी पर खर्च। गलत निर्णय से आर्थिक क्षति। अतिरिक्त प्रयास से काम बनेंगे।

सिंह : चिंताओं में वृद्धि। रोजगार का तनाव। माता-पिता को कष्ट।

कन्या : पराक्रम में वृद्धि। भाई-बंधुओं से तनाव। गृह व वाहन सुख में बाधा।

तुला : आय के साधनों में वृद्धि। संतान को लेकर चिंता। मनोवांछित सफलता।

वृश्चिक : मन अशांत। स्वास्थ्यगत समस्या। नौकरी में तरक्की।

धनु : उच्चाधिकारी से तनाव। कार्य बाधा। गृह व भौतिक सुख में कमी।

मकर : धन हानि। दांपत्य सुख एवं प्रेम संबंध में वृद्धि। अतिरिक्त प्रयास से विद्या में प्रगति।

कुंभ : विवाह एवं साझेदारी संबंधी मामलों में समस्या। खर्च की अधिकता। जोखिमपूर्ण कार्यों से परहेज।

मीन : स्वास्थ्य, कार्यक्षेत्र एवं आर्थिक पक्ष में सफलता कम। ठगी संभव।

भेजें अपने सवाल

स्वर्ग-नरक की कल्पना का आधार क्या है?

पाप क्या है, पुण्य क्या है? धर्म क्या है, अधर्म क्या है? ईश्वर की आराधना कैसे करें? ऐसे सवाल अकसर हमारे मन में उठते हैं, पर इनका जवाब हमारे पास नहीं होता। मन-मस्तिष्क में आने वाले ऐसे ही सवालों के जवाब हमारे पैनल में शामिल धर्माचार्य आपको देंगे।

अपने सवाल हमें इस पते पर भेजें :
धर्मक्षेत्रे, हिन्दुस्तान, 11वां तल, द आइकॉन टॉवर, एफ सी-24 सी, फिल्म सिटी, सेक्टर-16ए, नोएडा, गौतम बुद्ध नगर-201301 (उत्तर प्रदेश)

रोजनामचा

पं. राघवेन्द्र शर्मा
ज्योतिषाचार्य

स्कैन करें
भविष्यफल और व्रत-त्योहार जानने के लिए

मेष : मन प्रसन्न रहेगा, लेकिन धैर्यशीलता बनाए रखें। बातचीत में भी संतुलित रहें। नौकरी में कार्यक्षेत्र में बदलाव हो सकता है। परिश्रम अधिक रहेगा।

वृष : आत्मविश्वास भरपूर रहेगा। फिर भी धैर्यशीलता बनाए रखें। परिवार का साथ मिलेगा। नौकरी में तरक्की के मार्ग प्रशस्त होंगे। कार्यक्षेत्र में वृद्धि होगी।

मिथुन : मन प्रसन्न रहेगा। शैक्षिक कार्यों में सफलता मिलेगी। किसी मित्र के सहयोग से आय के साधन बन सकते हैं। कार्यक्षेत्र में परिश्रम अधिक रहेगा।

कर्क : वाणी में मधुरता रहेगी, परंतु मन परेशान भी हो सकता है। पिता की सेहत का ध्यान रखें। परिवार का साथ मिलेगा। शैक्षिक कार्यों में कठिनाइयां आ सकती हैं।

सिंह : मन में उतार-चढ़ाव हो सकते हैं। नौकरी में बदलाव के योग बन रहे हैं। तरक्की के अवसर भी मिल सकते हैं। आय में वृद्धि होगी। यात्रा पर भी जा सकते हैं।

कन्या : आत्मविश्वास में कमी रहेगी। मन परेशान भी हो सकता है। नौकरी में बदलाव के साथ तरक्की के अवसर मिल सकते हैं। मित्रों का सहयोग मिलेगा।

तुला : आत्मविश्वास में कमी रहेगी। मन में उतार-चढ़ाव हो सकते हैं। कारोबार के लिए किसी दूसरे स्थान पर जा सकते हैं। पिता से धन की प्राप्ति हो सकती है।

वृश्चिक : आत्मविश्वास से लबरेज रहेंगे। पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा। संतान की सेहत का ध्यान रखें। किसी मित्र के सहयोग से भवन सुख में वृद्धि हो सकती है।

धनु : आत्मविश्वास तो बहुत रहेगा, परंतु पिता की सेहत का ध्यान रखें। नौकरी में बदलाव भी हो सकता है। कार्यक्षेत्र में बदलाव भी हो सकता है। आय में वृद्धि होगी।

मकर : आत्मविश्वास तो भरपूर रहेगा, परंतु मन परेशान भी हो सकता है। जीवनसाथी की सेहत का ध्यान रखें। कारोबार में बदलाव भी हो सकता है।

कुंभ : मन में उतार-चढ़ाव हो सकते हैं। किसी मित्र के सहयोग से कारोबार में सुधार हो सकता है। परिवार का साथ मिलेगा। भागदौड़ भी अधिक रहेगी।

मीन : आत्मविश्वास तो भरपूर रहेगा, परंतु संतान की सेहत का ध्यान रखें। खर्चों की अधिकता रहेगी। पिता का साथ मिलेगा। रहन-सहन अव्यवस्थित हो सकता है।

व्रत और त्योहार | पंचांग | पं. ऋभुकांत गोस्वामी

03 मार्च, मंगलवार, **शक संवत्** : 12 फाल्गुन (सौर) 1947, **पंजाब पंचांग** : 20 फाल्गुन मास प्रविष्टे 2082, **इस्लाम** : 13 रमजान, 1447, **विक्रमी संवत्** : फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा तिथि सायं 05.08 बजे तक। पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र, सुकर्मा योग प्रातः 10.25 बजे तक पश्चात धृति योग, बव करण। चंद्रमा सिंह राशि में (दिन-रात)। **सूर्य उत्तरायण**। अपराह्न 03 बजे से सायं 04.30 मिनट तक राहुकालम्। फाल्गुन पूर्णिमा। ग्रस्तोदय खग्रास चंद्रग्रहण। होली पर्व। श्री चैतन्य महाप्रभु जयंती। गंडमूल प्रातः 07.32 मिनट तक।

वास्तु सलाह | आचार्य मुकुल रस्तोगी

कृपया यह बताएं कि होली वाले दिन वास्तु के अनुसार क्या करें, जिससे हमें लाभ हो?

-रुनझुन झा, पटना

- होली वाले दिन अपने घर के चारों कोनों को गंगाजल से धोएं।
- उसके बाद वहां पर पांच तरह के रंगों के गुलाल रखें।
- घर के ब्रह्मस्थान में पीले रंग के गुलाल से एक कमल का फूल बनाएं। उसके ऊपर थोड़ा लाल रंग बीच में डालें।
- शाम को इन पांचों स्थान पर एक दीया रंगों के ऊपर रखें।
- एक दिया घर के बाहर मुख्य द्वार के बाहर दायीं ओर रखें, जिसमें थोड़ा गुलाल डालें।

वर्ग पहेली : 8257

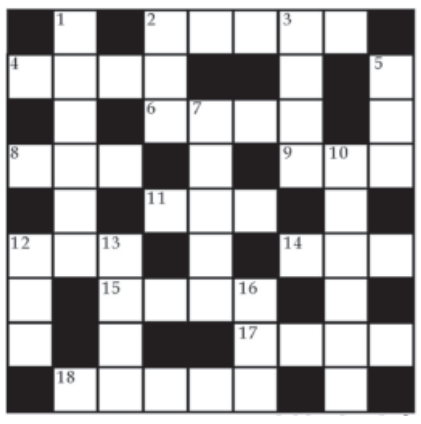

बाएं से दाएं
2. कर चोर; कर न देने वाला (5)
4. उद्यान; कानन; कुंज; कुसुमाकर; चमन; वाटिका (4)
6. वर्णमाला; आरंभिक ज्ञान; एक तरह की कविता जिसके चरण अक्षरक्रम से आरंभ होते हैं (4)
8. खौफ खाना; पलायन करना; भयभीत होना; हिचकना (3)
9. निश्छल; निष्कपट; सच्चा; सहज; आसान (3)
11. कोना; छोर; सिरा; कूल; तट (3)
12. उत्पीड़ित; क्षतिग्रस्त; घायल; चोटिल; शस्त (3)
14. गड़ना; झुकना; तल नीचा होना; बोझ के नीचे आना; विवश होना (3)
15. झपटना; तेजी से आगे बढ़ना; पकड़ना (4)
17. परिक्षेत्र; परिधि; भवन क्षेत्र (4)
18. उपहार देना; पुरस्कार देना; बख्शीश देना (3,2)

ऊपर से नीचे
1. अस्पताल; उपचार स्थल; चिकित्सा केंद्र (6)
2. कंचन; स्वर्ण; धतूरा (3)
3. धातु की छोटी पट्टी जिसे पेटी या परतले में लगाकर अरदली, चौकीदार, सिपाही आदि पहनते हैं; बैज; मुलम्मा करने की कलम; मालखंभ की एक कसरत (4)
5. बेचैन; व्याकुल; हतोत्साह (3)
7. कल्पना का लोक; काल्पनिक संसार; खयाली दुनिया (5)
10. आनंद आना; रंग व आनंद में मग्न होना; रसमय होना (2,4)
12. आश्रय; अवलंब; मूल (3)
13. कड़कते घी में डालकर पकवाना (4)
16. नाप लेना; पैमाइश करना; मापना (3)

हरीश चन्द्र सन्सी, विविधा विधा, दिल्ली
(उत्तर अगले अंक में)

वर्ग पहेली : 8256

सुडोकू : 8239 *आसान

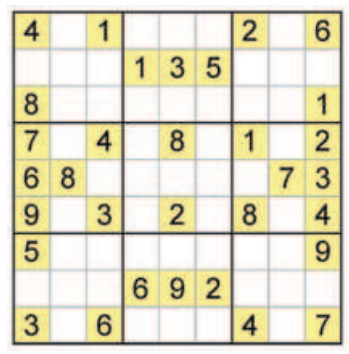

खेलने का तरीका : दिमागी खेल और नंबरों की पहेली है यह। ऊपर नौ-नौ खानों के नौ खाने दिए गए हैं। आपको 1 से 9 की संख्याएं इस तरह लिखनी हैं कि खड़ी और पड़ी लाइनों के हरेक खाने में 1 से 9 की सभी संख्याएं आएं। साथ ही 3×3 के हरेक बक्से में भी 1 से 9 तक की संख्याएं हों। पहेली का हल हम कल देंगे।

सुडोकू : 8238

5	3	7	4	6	9	1	2	8
4	6	8	5	2	1	7	9	3
9	1	2	3	8	7	4	6	5
6	5	4	9	1	3	2	8	7
8	9	1	7	5	2	3	4	6
2	7	3	6	4	8	9	5	1
7	8	6	1	9	4	5	3	2
1	2	9	8	3	5	6	7	4
3	4	5	2	7	6	8	1	9